



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 28] नई दिल्ली, शनिवार, जुलाई 12, 2008—जुलाई 18, 2008 (आषाढ़ 21, 1930)

No. 28] NEW DELHI, SATURDAY, JULY 12, 2008—JULY 18, 2008 (ASADHA 21, 1930)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।  
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

## विषय-सूची

भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .....	575	भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं).....	*
भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं .....	655	भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश .....	*
भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं .....	7	भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं .....	5415
भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं ...	825	भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेंटों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस .....	359
भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम .....	*	भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं .....	*
भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ .....	*	भाग III—खण्ड-4—विधिक अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं .....	3889
भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट .....	*	भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस ....	157
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं) .....	*	भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्मूह .....	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं .....	*		

## CONTENTS

PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court .....	575	than the Administration of Union Territories).....	*
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court .....	655	PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories) .....	*
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence.....	7	PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence .....	*
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence.....	825	PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India .....	5415
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations.....	*	PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs.....	359
PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi languages of Acts, Ordinances and Regulations .....	*	PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners.....	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills.....	*	PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies.....	3889
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules including Orders, Bye-laws, etc. of general character issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories).....	*	PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies .....	157
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other		PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi.....	*

\*Folios not received.

## भाग I—खण्ड 1

## [PART I—SECTION 1]

[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]  
**[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]**

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक २ जुलाई, २००८

सं. ४३-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री मनुकोण्डा वेंकट नागेश्वर राव  
 कांस्टेबल

(मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

कुरनूल जिले में पेड्डा अहोबिलम के आस-पास के जंगलों में माओवादियों की हलचलों की जानकारी ३ अगस्त, २००६ को प्राप्त हुई। क्षेत्र में छानबीन करने के लिए ५ ग्रेहाउण्ड यूनिटों को भेजा गया, जबकि नाकाबंदी पार्टी के रूप में ५ जिला विशेषज्ञ दल भेजे गए। ग्रेहाउण्ड यूनिट को जिसमें एम.वी. नागेश्वर राव थे, ३ अगस्त, २००६ को २३३० बजे कलसापाडु थाने की सीमा के अन्तर्गत "ज्योति नरसिम्हा स्वामी मंदिर" के पास पहुँचाया गया। यह यूनिट ३ अगस्त को रात भर चली और ४ अगस्त को मुख्य क्षेत्र में पहुँची और उसके कुछ हिस्से की छानबीन की। उन्होंने रात्रि को ८०५ स्पॉट ऊँचाई पर शिविर लगाया। यह यूनिट आस-पास के क्षेत्र की गहराई से जाँच करने के लिए ५ अगस्त, २००६ को प्रातः आगे बढ़ी। एक पहाड़ी से नीचे उतरते समय वे एक नाले में माओवादियों के आमने-सामने आ गए जिन्होंने उन पर गोली चला दी। तुरन्त यूनिट ने अपने को ३ दलों में बांट लिया और जवाबी कार्रवाई की। स्वर्गीय श्री एम वी नागेश्वर राव पहली पार्टी में थे। श्री एम वी नारायणराव और अन्य वरिष्ठ जे सी परिरेखा के दाहिनी ओर को कवर करने की कोशिश कर रहे थे ताकि माओवादी उस दिशा से बचकर न भाग जाएं। माओवादियों ने बाईं और पुलिस को देख दाहिनी ओर से भाग जाने की कोशिश की। ग्यारह सदस्यों के पहले दल ने शत्रु द्वारा पुलिस को नजदीक देख पुलिस दल पर स्वचालित राइफलों से की जा रही गोलीबारी की परवाह किए बिना, उनका पीछा किया। एम वी नागेश्वर राव, फुर्ती भरे पैरों से आगे बढ़े तथा पुलिस पार्टी एवं माओवादियों के बीच की दूरी

जब बहुत कम रह गई तब अपनी एस एल आर से गोलीबारी करते हुए वह प्रत्येक से आगे बढ़ गए। उन्होंने अपनी एस एल आर से फायरिंग करते हुए शत्रु दल को सकते में डाले रखा जिससे शेष पुलिस दल को उन पर हमला करने का मौका मिल गया। उन्होंने एक माओवादी को मार गिराया तथा दो अन्य को घायल कर दिया। मृत माओवादी की शिनाख्त जिला समिति सचिव अनन्तपुर, क्रान्ति उर्फ दाम साथी के रूप में हुई जो भारी पैमाने पर भर्ती करने और अनन्तपुर जिले में पुलिसजनों और निर्दोष लोगों को पुलिस इन्फार्मर बताते हुए मारने की घन्य हिंसा करने के लिए जिम्मेदार था। अपनी मैगजीन खाली हो जाने पर वह अपने हथियार को पुनः लोड कर रहा था तभी दो जख्मी माओवादियों में से एक ने फायरिंग से मोहलत पाकर उस पर बहुत नजदीक से गोलीबारी करके उसे मार दिया क्योंकि जे सी ने उनकी रक्षा का कोई कवच नहीं बना रखा था। यह जख्मी माओवादी अगले दिन झाड़ियों में बुरी तरह से जख्मी पड़ा पाया गया था और उसे मार डाला गया जब वह अपनी ए के ४७ से पुलिस पार्टी को रोकने के लिए गोलियां चला रहा था। उसकी राज्य समिति के सदस्य ओबुलेश के अंगी गन मैन के रूप में शिनाख्त हुई। एक अन्य जख्मी माओवादी, ओबुलेश बच निकला जो नवम्बर, २००६ में हुई एक अन्य मुठभेड़ में मारा गया। अभियान में एक ए के ४७ दो ३०३ राइफलें, एक ८ एम एम राइफल, एक तपन्चा, गोलाबारूद, ग्रेनेड, माइन्स तथा स्कैनर्स जैसी अन्य मदें प्राप्त हुईं। श्री एम वी नागेश्वर राव ने माओवादियों पर, जो स्वचालित एवं कम्पनी मेड हथियारों से लैस थे, अत्यधिक साहसिक हमला किया और एक डी सी एस को मार गिराया, राज्य समिति सदस्य तथा उसके एक गनमैन को जख्मी कर दिया। हालांकि नजदीक ही माओवादियों का शिविर था परन्तु श्री एम वी नागेश्वरराव के साहसिक हमले को देखते हुए कोई भी उन्हें बचाने नहीं आया क्योंकि उन्हें पुनः हमला करने का मौका ही नहीं मिला। तथापि उन्होंने माओवादियों को मार गिराने में और अपने साथियों को बचाने में मनोबल और अप्रतिम बलिदान का प्रदर्शन किया। उन्होंने नल्लामाला के विपरीत एवं अत्यधिक प्रतिकूल जंगली क्षेत्र में, जिसे माओवादियों ने अपने लिए अत्यधिक सुरक्षित आश्रय स्थल समझ रखा था, अपना जीवन खतरे में डालने के अदम्य साहस का एक दुर्लभ प्रदर्शन किया।

इस मुठभेड़ में, श्री (स्व.) मनुकोंडा वेंकट नागेश्वर राव, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ५ अगस्त, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव



सं. ४४-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- |    |                                    |               |
|----|------------------------------------|---------------|
| १. | तंगा रामकृष्ण<br>रिजर्व इंस्पेक्टर | (पी पी एम जी) |
| २. | चप्पिडी रामुडु<br>हैड कांस्टेबल    | (पी एम जी)    |

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

इस विश्वसनीय सूचना पर कि कुख्यात माओवादी काडर कडपा जिले के बडवेल रिजर्व फारेस्ट के गोपावरम विस्तर में कैम्पिंग कर रहे हैं, ग्रेहाउण्ड की २ यूनिटों को आप्रेशन के लिए भेजा गया। वे १०.११.०६ को ०२३० बजे ड्रापिंग प्वाइंट पर पहुँचे और उत्तर-पश्चिम में टीले की ओर बढ़े। पहली ग्रेहाउण्ड यूनिट का नेतृत्व रिजर्व इंस्पेक्टर श्री तंगा रामकृष्णन द्वारा किया जा रहा था और श्री चप्पिडी रामुडु हैड कांस्टेबल दल के सदस्यों में से एक थे। दो ग्रेहाउण्ड यूनिटें रात में आगे बढ़ीं और छिपने के कुछ ज्ञात स्थानों की तलाशी ली परन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। उन्होंने सारी रात खोजबीन की और तलाशी जारी रखी और वे १०.११.२००६ को ०८०० बजे एक अन्य आश्रय स्थल पर पहुँचे जहाँ २ यूनिटें ३ दलों में बंट गईं और क्षेत्र की तलाशी ली। बाद में वे क्षेत्र में सर्वोच्च बाह्य रेखा पर पुनः समूहों में बंट गए और यह उम्मीद करते हुए कि माओ लोग आसपास ही होंगे, उन्होंने अपने किटबैग द्वितीय ग्रेहाउण्ड यूनिट के छोटे से ५ सदस्यीय पर्यवेक्षण दल के पास छोड़ दिए। संदिग्ध क्षेत्र पहाड़ी के दक्षिण की ओर था जिसकी ढालान भी दक्षिण की ओर ही थी। इस क्षेत्र में दोनों ओर दो नाले थे। नालों के एक ओर दो उभरी हुई अत्यधिक ढाल थीं। पहली ग्रेहाउण्ड यूनिट २ टीमों में बंट गई। इस दल का नेतृत्व श्री तंगा रामकृष्ण रिजर्व इंस्पेक्टर द्वारा किया जा रहा था उनके साथ में थे श्री चप्पिडी रामुडु, हैड कांस्टेबल और ४ अन्य जिन्हें दूरस्थ स्थान पर जाना था और नाले के दक्षिण पश्चिम तथा संदिग्ध क्षेत्र के दक्षिण में तलाशी लेनी थी। ए ए सी (आर एस आई) गोविन्द राव के नेतृत्व में पहली ग्रेहाउण्ड यूनिट को उत्तरी कण्टूर की तलाशी लेते हुए आगे बढ़ना था। द्वितीय ग्रेहाउण्ड यूनिट ने ५ सदस्यीय पर्यवेक्षण दल को उच्च कण्टूर पर छोड़ दिया और ए ए सी (आर एस आई), राजू के नेतृत्व में पूर्व में नाले की ओर आगे बढ़ी। उस क्षेत्र की एक घण्टे तक सावधानीपूर्वक खोजबीन करने के पश्चात ए ए सी गोविन्द राव की टीम के एक सदस्य ने उत्तर में उच्चतम कण्टूर की जाँच करते समय कुछ माओवादियों को पैकिंग करते और अपने रुकने के स्थान को छोड़ते हुए देखा। उसने तत्काल अपनी टीम को इसकी सूचना दी जिसने श्री तंगा रामकृष्ण, रिजर्व इंस्पेक्टर जो दक्षिण पश्चिम और दक्षिणी क्षेत्र को कवर कर रहा था, को सूचित किया। सभी तीनों टीमों ने माओवादियों के छुपने वाले स्थानों की ओर प्रयाण करना शुरू कर दिया। इसी बीच माओवादियों ने अपना सामान बांधकर ऊपर की ओर चढ़ना शुरू कर दिया। उन्होंने पर्यवेक्षण टीम को टाप कण्टूर पर देखा और पुलिस की नजर से बचने के लिए उन्होंने दक्षिण की ओर चलना शुरू कर दिया। तथापि, श्री तंगा रामकृष्ण, रिजर्व इंस्पेक्टर के नेतृत्व वाली टीम सभी रणनीतिक

पूर्वसातधानियों का पालन करते हुए आगे बढ़ी तथा ऐसे स्थान पर पहुंच गई जहाँ से माओवादियों के पीछे हटने के लिए कोई जगह नहीं थी। अन्य दो टीमों भी पार्श्वभाग को कवर करती हुई समानान्तर रूप से आगे बढ़ी। जब माओवादी, जिनकी संख्या ९ थी, उनके निकट पहुँचे तो श्री तंगा रामकृष्ण, रिजर्व इंस्पेक्टर के नेतृत्व वाली ६ सदस्यीय टीम ने माओवादियों से आत्मसमर्पण करने को कहा। माओवादियों ने इसका स्वचालित राइफलों तथा अन्य राइफलों से गोलियों की बौछार करके जवाब दिया। श्री तंगा रामकृष्ण, रिजर्व इंस्पेक्टर और श्री चप्पिडि रामुडु, हैड कांस्टेबल अपनी टीम के साथ बंदूकों के साये में आगे बढ़े तथा शत्रु पर हमला बोल दिया। इस साहसिक हमले, जिसमें २ माओवादी मारे गए, से घबड़ाकर अन्य माओवादी पूर्व की ओर भाग खड़े हुए जहाँ उन्हें ए ए सी राजू के नेतृत्व वाली टीम के साथ गोलियों का सामना करना पड़ा। उस ओर भारी मात्रा में पुलिस की मौजूदगी देखकर माओवादियों ने दक्षिण की ओर से भागने की सोची जहाँ श्री तंगा रामकृष्ण, रिजर्व इंस्पेक्टर के नेतृत्व वाले एक छोटे से पुलिस दल ने शुरु में उन्हें ललकारा। श्री तंगा रामकृष्ण, रिजर्व इंस्पेक्टर और श्री चप्पिडि रामुडु, हैड कांस्टेबल ने अपनी टीम की सहायता से उनको भाग जाने से रोका। दोनों पक्षों के बीच, केवल २० फीट की दूरी से, बड़े निकट से तीव्र गोलीबारी हुई। इस उत्साहबर्धक एवं साहसिक गोलीबारी में छह उग्रवादी मारे गए। शेष दो अतिवादियों ने पोजीशन ले ली और श्री तंगा रामकृष्ण, रिजर्व इंस्पेक्टर के नेतृत्व वाली अदम्य पुलिस टीम को अधिकाधिक क्षति पहुंचाते हुए भागने का मार्ग पाकर भाग जाने के इरादे से अपनी एके-४७ तथा एस एल आर राइफलों से पुलिस पार्टी पर गोलीबारी करते रहे। छह सदस्यीय पुलिस दल ने अपनी प्रत्युत्पन्न बुद्धि का प्रयोग करते हुए शेष माओवादियों पर दबाव बनाए रखा। अन्ततः शेष २ माओवादियों को भी मार गिराना पड़ा क्योंकि वे आत्मसमर्पण किए बिना पुलिस दल पर लगातार गोलियों की वर्षा कर रहे थे। इस गोलीबारी में माओवादी गुट के सभी नौ सदस्यों, जिनमें राज्य समिति का एक सदस्य, जिला समिति के दो सचिव, जिला समिति का एक सदस्य, तीन दलम कमाण्डर और दो दलम सदस्य थे, को मार गिराया गया जिससे घटनास्थल से एक एके-४७, तीन एस एल आर, चार .३०३ राइफलों, दो कार्बाइन, दो पिस्तौलें, एक एस बी बी एल बंदूक, दो तपन्वा (देशी रिवाल्वर) और दो ग्रेनेड बरामद हुए। इस गोलीबारी तथा तदुपरान्त १० दिनों के अन्दर आमसमर्पण से आर एस डी अर्थात् रायलसीमा डिवीजन आफ माओइस्ट पूर्णतयाः नष्ट हो गई। ऐसा पहली बार हुआ है कि सम्पूर्ण क्षेत्र को माओवादी काडरों से पूर्णतया मुक्त करा दिया गया। हालांकि दोनों ग्रेहाउण्ड यूनिटों ने माओवादियों की बिना संसूचना के घेराबंदी करने में अत्यधिक पेशेवर दक्षता का प्रदर्शन किया, फिर भी श्री तंगा रामकृष्ण, रिजर्व इंस्पेक्टर के नेतृत्व वाली छह सदस्यीय टीम उल्लेखनीय है। इनमें से भी, हालात का आकलन करने, अभियान की योजना बनाने, और अपने जीवन को आसन्न खतरे की परवाह किए बिना हमले का नेतृत्व करने में श्री तंगा रामकृष्ण, रिजर्व इंस्पेक्टर द्वारा प्रदर्शित साहसिक संकल्प और श्री चप्पिडि रामुडु, हैड कांस्टेबल द्वारा शुरुआती हमले एवं जीवन को गंभीर खतरे के बावजूद माओवादियों पर जो पुलिस रैंकों की हताहत करने एवं बच कर भाग निकलने का इरादा बना चुके थे दबाव बनाए रखने के सतत प्रयासों द्वारा प्रदर्शित सहयोग सराहनीय एवं पुरस्कार योग्य है।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री तंगा रामकृष्ण, रिजर्व इंस्पेक्टर और चप्पिडि रामुडु, हैड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक १० नवम्बर, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ४५-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस/राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- |    |                     |               |
|----|---------------------|---------------|
| १. | शैले सिंह           | (पी पी एम जी) |
|    | पुलिस उपाधीक्षक     |               |
| २. | सुनील सिंह जसरोतिया | (पी एम जी)    |
|    | निरीक्षक            |               |

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

जम्मू-कश्मीर की पुलिस को दिनांक २७.२.२००७ को सूचना प्राप्त हुई कि कठुआ जिले के बिलावर क्षेत्र के साकियान गाँव में आतंकवादी मौजूद हैं। तुरन्त एक अभियान की योजना बनाई गई और तलाशी अभियान के लिए पुलिस उपाधीक्षक एस पी सिंह, एस ओ जी, जम्मू के नेतृत्व में एक पुलिस पार्टी प्रतिनियुक्त की गई। सतत वर्षों में और दुर्गम पहाड़ी रास्ते से होकर वह पुलिस दल साकियान पहुँचा और उस घर को ढूँढ़ निकाला जहाँ आतंकवादियों के छुपे होने का संदेह था। पुलिस पार्टी के आने की भनक पाकर आतंकवादी उस घर से भाग निकले और दौड़ते समय उन्होंने पुलिस दल पर एक ग्रेनेड फेंका जिसका निशाना चूक गया। उस पुलिस दल ने आतंकवादियों का पीछा किया और पुलिस उपाधीक्षक, शैले सिंह ने उस आतंकवादी को दबोच लिया जिसने ग्रेनेड फेंका था, और काफी हाथापाई के उपरान्त उसे अपने कब्जे में कर लिया। पूछताछ करने पर उसकी शिनाख्त नसीर अहमद उर्फ बिट्टू उर्फ राजू निवासी सरना भ्रदवाह के रूप में हुई। उसने खुलासा किया कि अबू ताल्लाह नामक एक अन्य आतंकवादी जो लश्कर तैयबा का डिवीजनल कमाण्डर है, जंगल की ओर भाग गया है। यह जानकार कि अबू ताल्लाह, जो भाग गया, एक ऐसा कट्टर आतंकवादी है जो अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों की कई सामूहिक हत्याओं में संलिप्त था, पुलिस उपाधीक्षक शैले सिंह ने बिना समय गंवाये और खतरनाक भू-भागीय क्षेत्र, अंधेरी रात, घने जंगल और भारी वर्षा की परवाह किए बिना अपने आठ आदमियों के पुलिस दल को पुनः संगठित किया और घने जंगल में तलाशी अभियान शुरू कर दिया। तीन घण्टे की लगातार तलाशी के उपरान्त पुलिस दल के ऊपर झंगीरा क्षेत्र के जंगलों से किसी ने एकाएक भारी गोलीबारी शुरू कर दी। आतंकवादी ने पुलिस दल पर तीन हथगोले भी फेंके

जिनमें एक कांस्टेबल अनिल कुमार ३७३/जे के ए पी ७वीं बटालियन के दाहिनी बाँह में काफी चोट लग गयी और वह गिर पड़े। इंस्पेक्टर सुनील जसरोतिया, अपने जीवन की परवाह किए बिना, गोलियों की बौछार के बीच से पेट के बल घिसटते हुए गए और कांस्टेबल अनिल कुमार को एक सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया तथा फिर पुलिस उपाधीक्षक शैले सिंह के साथ हो लिए जिनके बाएं पैर में इस लड़ाई में चोट लग गई थी। बहादुर अधिकारी अपना मानसिक संतुलन बनाए रखते हुए, जमीन पर लेट गए और पेट के बल रेंगते हुए लक्ष्य की ओर बढ़ना शुरू कर दिया, साथ ही वे अन्य पुलिस कार्मिकों को उनके साथ आगे बढ़ने और आतंकवादियों को विभिन्न दिशाओं से घेरने को उत्साहित करते रहे। आतंकवादी बेहतर स्थिति में छुपे थे। इंस्पेक्टर सुनील जसरोतिया आतंकवादियों को गोलीबारी में उलझाए रहे जबकि पुलिस उपाधीक्षक श्री शैले सिंह घने जंगल से रेंगते हुए लक्ष्य की ओर आगे बढ़े और अपने जीवन को जोखिम में डालते हुए लश्कर कमाण्डर पर अन्तिम हमला बोल दिया। घटनास्थल से एक ए के-५६ राइफल, दो मैग्जीन्स, २८ राउण्ड्स, एक सेल फोन और अन्य दस्तावेज बरामद हुए। इस मृतक की शिनाख्त अहू तल्लाह के रूप में हुई जिस पर २.५० लाख रुपये का नकद इनाम था क्योंकि उसका डोडा और कठुआ जिलों में सिविलियनों के कई सामूहिक नरसंहार करने में हाथ था। छह घण्टे की ट्रैकिंग के पश्चात मृत आतंकवादी का शव, गिरफ्तार आतंकवादी और घटनास्थल से बरामद सामान कानूनी औपचारिकताओं के लिए बिलावर थाने को सौंप दिया गया। थाना बिल्लावर में प्राथमिकी सं. २३/०७ के तहत एक मामला दर्ज किया गया। श्री शैले सिंह, पुलिस उपाधीक्षक और इंस्पेक्टर सुनील जसरोतिया सं. ५८८१/एन जी ओ ने आसन्न खतरे का सामना करते हुए अनुकरणीय साहस एवं उत्कृष्ट बहादुरी का प्रदर्शन किया तथा अपने जीवन के जोखिम पर एक अभियान का नेतृत्व किया।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री शैले सिंह, पुलिस उपाधीक्षक और सुनील सिंह जसरोतिया, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २८ फरवरी, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ४६-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक/शौर्य के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- |                      |                         |
|----------------------|-------------------------|
| १. अब्दुल गनी मीर    | (पी एम जी)              |
| वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक |                         |
| २. हरमीत सिंह        | (पी एम जी का प्रथम बार) |
| पुलिस उपाधीक्षक      |                         |
| ३. फारुख अहमद        | (पी पी एम जी)           |
| सारजेन्ट कांस्टेबल   |                         |
| ४. मोहम्मद इकबाल     | (पी पी एम जी)           |
| कांस्टेबल            |                         |

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

शिरपुरा फ्रिसेल स्थित मोहम्मद यूसुफ इतू पुत्र श्री वली मोहम्मद इतू के आवास में आतंकवादियों की मौजूदगी के संबंध में विशिष्ट सूचना पर एस ओ जी अनन्तनाग, प्रथम आर आर ९३वीं बटालियन, सी आर पी एफ ने ६/७-०८-२००६ के बीच की रात को उक्त आवास के चारो ओर घेराबंदी कर दी। घर में छुपे आतंकवादियों ने अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलाईं जिनसे प्रथम आर आर के एक जवान एल एन के राज कंवल सिंह (सं. ४५६९१४०४) की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई और एक अन्य की दाहिनी बांह में गंभीर चोट लगी। आतंकवादियों ने शिरपुरा निवासी फारुक अहमद गनी अब्दुल रहमान, मंजूर अहमद तन्त्रे पुत्र अली मोहम्मद और आबिद हुसैन मीर पुत्र अब्दुल अजीज को बंधक बना लिया। इन बंधकों को घर से बाहर निकालना बहुत मुश्किल हो गया। आतंकवादियों ने भारी गोलीबारी शुरू कर दी और बल इसका जवाब नहीं दे सके क्योंकि इससे सिविलियन हताहत होते। फंसे हुए सिविलियनों की सुरक्षित निकासी को उच्च प्राथमिकता दी गई। श्री अब्दुल गनी मीर, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अनन्तनाग, श्री हरमीत सिंह, पुलिस उपाधीक्षक (आप्स), अनन्तनाग और पुलिस उपाधीक्षक (आप्स) कुलगाँव ने अन्य बलों के साथ परामर्श करके सिविलियनों को सुरक्षित बाहर लाने की एक योजना बनाई। श्री अब्दुल गनी मीर, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, श्री हरमीत सिंह, पुलिस उपाधीक्षक अनन्तनाग उस भवन के बहुत नजदीक "रक्षक" में गए ताकि सिविलियनों को रिहा करने के लिए आतंकवादियों को मनाया जा सके। उसी वक्त वे सिविलियनों को भवन से बाहर आने के लिए प्रोत्साहित करने में समर्थ हो गए। आतंकवादियों से कहा गया कि वे बंधकों को रिहा कर दें परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। श्री अब्दुल गनी मीर, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक और श्री हरमीत सिंह, पुलिस उपाधीक्षक, श्री फारुक अहमद सारजेन्ट कांस्टेबल और श्री इकबाल, कांस्टेबल नामक दो कांस्टेबलों के साथ स्वयं को बड़े जोखिम में डालकर और घर के पीछे की ओर से उसके निकट पहुँच गए। श्री फारुक अहमद, सारजेन्ट कांस्टेबल और श्री इकबाल, कांस्टेबल नामक दो कांस्टेबल, अपने जीवन की परवाह किए बिना भवन

के बहुत निकट पहुँच गए और अन्त में तीनों सिविलियनों को बाहर निकालने में सफल हुए। फारूक अहमद गनी पुत्र अब्दुल रहमान निवासी शिरपुरा नामक प्रथम सिविलियन को भारी गोलीबारी के बीच बाहर लाया गया। श्री अब्दुल गनी मीर, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक और श्री हरमीत सिंह, पुलिस उपाधीक्षक पेट के बल भवन तक खिसकते हुए भवन के बहुत निकट तक पहुँच गए और दो अन्य सिविलियनों को भारी गोलीबारी के बीच से निकालकर बाहर ले आए। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अनन्तनाग के नेतृत्व वाला पुलिस दल अन्य बलों को किसी भी तरह की गोलीबारी करने से रोके रहा क्योंकि इससे तीनों सिविलियनों के जीवन को खतरा हो सकता था। सिविलियनों के सुरक्षित बाहर आने के पश्चात श्री फारूक अहमद, सारजेंट कांस्टेबल और श्री मोहम्मद इकबाल, कांस्टेबल, ने अन्य अधिकारियों के मार्गदर्शन में उस भवन के पिछवाड़े से भारी गोलीबारी की जिससे दो आतंकवादी मारे गए जिनकी पहचान (i) मुदासिर अहमद डार उर्फ सेठा उर्फ मुना डार पुत्र वली डार निवासी टेक्की, रिबन और (ii) फीरोज अहमद भट उर्फ जुबैर पुत्र जी एच. हसन भट निवासी फ्रिसाल के रूप में हुई।

इस वीरतापूर्ण कार्रवाई स्थल से (i) ए के-राइफल-१ (ii) इनसास राइफल-१ (iii) ए के मैग-२ (iv) इनसास मैग-१ (v) इनसास अम्यू-११ राउण्ड (vi) यू बी जी एल-१ (vii) पाउच-२ बरामद हुए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री अब्दुल गनी मीर, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, हरमीत सिंह, पुलिस उपाधीक्षक, फारूख अहमद, सरजेंट कांस्टेबल, मोहम्मद इकबाल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ७ अगस्त, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ४७-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. रघुराज सिंह (पी एम जी)

इंस्पेक्टर

२. मो. असलम चीची (पी पी एम जी)

हैड कांस्टेबल

- |    |             |               |
|----|-------------|---------------|
| ३. | डी.डी. बोरो | (पी पी एम जी) |
|    | कांस्टेबल   |               |
| ४. | सुरजीत सिंह | (पी एम जी)    |
|    | कांस्टेबल   |               |

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

एक विशिष्ट सूचना के आधार पर डी सी (जी) रावलपुरा के नेतृत्व में ४३ बटालियन बी.एस.एफ., हरवान (श्रीनगर) जम्मू-कश्मीर के एक सैन्यबल ने २१ जुलाई, २००६ को छुपकर एक घात लगाई। इन्स्पेक्टर (जी), रघुराज सिंह, कांस्टेबल डी डी बोरो, कांस्टेबल सुरजीत सिंह और कांस्टेबल महेश सिंह को मिलाकर बने एक दल को प्रवेश द्वार को कवर करते हुए बागवानी बगीचे में रखा गया और श्री मनोज कुमार डी सी (जी), रावलपुरा, कांस्टेबल मलकीत सिंह, हैड कांस्टेबल सिंगारा सिंह और हैड कांस्टेबल मोहम्मद असलम चीची को मिलाकर बने एक दूसरे दल ने उस बगीचे से होकर घने जंगल की ओर जाने वाले कच्चे रास्ते के किनारे पोजीशन ले ली। इसके अतिरिक्त बचकर भाग निकलने के रास्तों पर दो अन्य स्टाप दलों को घात लगाने के लिए तैनात किया गया। श्री एस एल शर्मा, ए सी तथा ९ अन्यो को मिलाकर बने प्रथम स्टाप दल को छुप कर घात लगाने के स्थान से २०० गज की दूरी पर हरवान गाँव की ओर तैनात किया गया तथा इन्स्पेक्टर (जी) जितेन्द्र सिंह तथा १२ अन्यो को मिलाकर बने दूसरे स्टाप दल को जंक्शन से लगभग २५० गज की दूरी पर डचिगाँव की ओर तैनात किया गया। लगभग २१२२४५ बजे दो संदिग्ध उग्रवादियों ने बगीचे में प्रवेश किया और उन्हें देखकर इन्स्पेक्टर (जी) रघुराज सिंह ने उन उग्रवादियों को रुकने के लिए कहा। एक उग्रवादी ने तुरन्त अपनी पिस्तौल निकाली तथा इन्स्पेक्टर (जी) रघुराज सिंह पर गोली चला दी परन्तु वह बाल-बाल बच गए। इसी तरह, तुरन्त प्रतिक्रियात्मक कार्रवाई में कांस्टेबल डी डी बोरो और कांस्टेबल सुरजीत सिंह ने इन्स्पेक्टर (जी) के साथ मिलकर, अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना, एक उग्रवादी को दबोच लिया। इसी बीच बहादुर बी एस एफ कार्मिकों की पकड़ से अपने साथी को छुटाने के उद्देश्य से दूसरे उग्रवादी ने पुलिस पार्टी पर ग्रेनेड फेंका जिससे कांस्टेबल डी डी बोरो और कांस्टेबल सुरजीत सिंह के क्रमशः जांघ और हाथ पर चोट लगी। दोनों कांस्टेबलों के चोट लग जाने के कारण उस उग्रवादी ने खुद को छुड़ा लिया और बचकर भाग निकलने की कोशिश करने लगा, परन्तु कांस्टेबल डी.डी.बोरो ने अनुकरणीय साहस, व्यावसायिक कौशल का प्रदर्शन करते हुए तथा अपनी चोटों की परवाह किए बिना, उस उग्रवादी का पीछा किया और उसे दबोच लिया। कांस्टेबल डी डी बोरो की बहादुरी देखकर दूसरे उग्रवादी ने कांस्टेबल डी डी बोरो और कांस्टेबल सुरजीत सिंह जो उस उग्रवादी के साथ हाथापाई कर रहे थे, पर एक अन्य ग्रेनेड फेंका जिसके कारण कांस्टेबल डी डी बोरो को कई जगह चोट लग गई। जगह-जगह पर घातक चोटें लगने के बावजूद कांस्टेबल डी डी बोरो उच्चकोटि की पेशेवर कुशलता और साहस का प्रदर्शन करते हुए अपने चोट लगे हाथ से अपने निजी हथियार से गोलीबारी करते रहे और उग्रवादी को गंभीर रूप से घायल कर दिया। इसी समय इन्स्पेक्टर (जी), रघुराज सिंह और कांस्टेबल सुरजीत सिंह ने कोई भी समय गंवाये बिना उग्रवादी पर गोली चला दी और उसे बुरी तरह से जख्मी कर दिया। इसी समय श्री मनोज कुमार डी सी (जी) के कमाण्ड वाली दूसरी एम्बुश पार्टी ने दूसरे उग्रवादी को ढूंढ निकाला जो ग्रेनेड फेंक रहा था

और उससे आत्मसमर्पण करने को कहा। परन्तु आत्मसमर्पण करने के बजाय उसने उन पर दूसरा ग्रेनेड फेंका जिससे हैड कांस्टेबल मोहम्मद असलम चीची के चोट लग गई। इस पर कांस्टेबल मलकीत सिंह खड़ा हो गया और उग्रवादी पर गोली चला दी और उसे घायल कर दिया। परन्तु चोट लगने के बावजूद उग्रवादी ने पुलिस पर पुनः ग्रेनेड फेंका। हालांकि उसका निशाना चूक गया और हैड कांस्टेबल मोहम्मद असलम चीची ने, गंभीर चोट लगे होने के बावजूद, उग्रवादी को दबोच लिया और उसके हथियार छीन लिए। तुरन्त ही, श्री मनोज कुमार डी सी (जी) और कांस्टेबल मलकीत सिंह ने उग्रवादी को हिरासत में ले लिया। दोनों घायल उग्रवादियों को थाना हरवान की जम्मू-कश्मीर पुलिस द्वारा एस एम एच एस अस्पताल श्रीनगर ले जाया गया और घायल बी एस एफ कार्मिकों को उपचार के लिए बी एस एफ कम्पोजिट अस्पताल श्रीनगर ले जाया गया। जब पुलिस उग्रवादियों को ले जा रही थी तभी एक उग्रवादी ने मार्ग में ही दम तोड़ दिया तथा द्वितीय उग्रवादी बून एंड ज्वाइंट अस्पताल, बारजुला में भर्ती कराया गया। क्षेत्र की तलाशी करने पर निम्नलिखित शस्त्र एवं गोलाबारुद बरामद किए गए :-

(i)	चीनी पिस्तौल	:	०१ नग
(ii)	पिस्तौल मैग	:	०१ नग
(iii)	पिस्तौल अम्यू	:	०२ आर डी एस
(iv)	लाइव एच/ग्रेनेड	:	०२ नग

बाद में मृत उग्रवादी की शिनाख्त मोहम्मद अशरफ डार उर्फ सेठा उर्फ आसलान पुत्र अली मोहम्मद डार निवासी लिथेर जिला पुलवामा और घायल एवं गिरफ्तार उग्रवादी की पहचान गलाम हसन डार उर्फ सज्जाद उर्फ फुरकान पुत्र मोहम्मद इस्लाइल डार निवासी इशबार, निशात, श्रीनगर के रूप में हुई।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री रघुराज सिंह, इंस्पेक्टर, मो. असलम चीची, हैड कांस्टेबल, डी.डी.बोरो, कांस्टेबल, सुरजीत सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २१ जुलाई, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव



सं. ४८-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### **अधिकारी का नाम और रैंक**

श्री दीनबन्धु पाल,  
कांस्टेबल

(मरणोपरान्त)

### **उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:**

दिनांक ६ जून, २००७ को लगभग ०६२० बजे इंस्पेक्टर जी बी साहु की कमान के अन्तर्गत बी एस एफ की एक्स-१९४ बटालियन के "डी" काय के १० ओ आर क्षेत्र को नियंत्रित करने के लिए बी ओ पी सिकन्दर करने हेतु गश्त की ओर निकले। कांस्टेबल दीनबन्धु पाल गश्त के अग्रणी स्काउट थे। वे काफी चुस्त और सतर्क थे और स्काउट होने के कारण काफी युक्तिपूर्वक आगे बढ़ रहे थे। लगभग ०६३५ बजे बी ओ पी सिकन्दर से अनुमानतः ९०० गज की दूरी पर स्थित गांव रतन नगर, पुलिस स्टेशन गांडा चेरा, जिला-ढलाई, त्रिपुरा को जाने वाले मार्ग पर स्थित पहाड़ी को पार करते समय कांस्टेबल दीनबन्धु पाल ने मार्ग के नजदीक जंगल की घनी झाड़ियों में कुछ असामान्य हरकत देखी तथा शोर मचाकर अपने गश्त कमान्डर को तत्काल सतर्क कर दिया। गश्त कमान्डर ने तत्काल गश्त की हरकत को रोक दिया तथा गश्त पार्टी के सभी सदस्यों को मोर्चा संभालने का आदेश दिया। कांस्टेबल दीनबन्धु पाल ने उसी समय अपनी राइफल निकाल ली तथा उस स्थान की तरफ चुनौती दी जहां झाड़ियों में उन्होंने संदिग्ध हरकत देखी थी। गश्त पार्टी के स्काउट को अपने नजदीक तथा उन पर गोली चलाने की स्थिति में पाकर, आतंकवादियों के एक समूह ने, जिन्होंने रास्ते पर व्यापक घात लगा रखी थी, ५ मीटर से भी कम की दूरी से कांस्टेबल दीनबन्धु पाल पर अंधाधुंध गोलीबारी की जोकि उनकी दोनों अंतर्जघिकाओं पर लगी। गोली से लगीं चोटों की परवाह किए बिना कांस्टेबल दीनबन्धु पाल ने आतंकवादियों की संदिग्ध दिशा की तरफ निरन्तर गोलीबारी की जिसके कारण कुछ आतंकवादी हताहत हो गए। आतंकवादियों की गोलीबारी की दूसरी बौछार के प्रहार से कांस्टेबल दीनबन्धु पाल जमीन पर गिर पड़े परन्तु उन्होंने निरन्तर गोलीबारी से आतंकवादियों को लगातार व्यस्त रखा। अचानक गोलीबारी के विनिमय के कारण तथा बुरी तरह घायल होने की वजह से वे कोई आड़ नहीं ले सके तथा उन्हें आतंकवादियों की गोलीबारी का सामना करना पड़ा। आतंकवादियों की गोलीबारी की दूसरी बौछार उनकी छाती पर लगी तथा वे जमीन पर गिर पड़े तथा उनकी राइफल उनके हाथ से गिर पड़ी जो लगभग दो मीटर तक पहाड़ी पर लुढ़क गई। कांस्टेबल दीनबन्धु पाल द्वारा गश्त पार्टी के अग्रणी तत्वों को सतर्क किए जाने पर, उन्होंने रक्षात्मक मोर्चा संभाला तथा घात स्थल की सामान्य दिशा की तरफ गोलीबारी की जिसके कारण गश्त पार्टी और आतंकवादियों के बीच भारी गोलीबारी हुई। गश्त पार्टी को समीपवर्ती बी एस एफ बी ओ पी से भी कवरिंग गोलीबारी प्राप्त हुई। गश्त पार्टी की प्रभावपूर्ण गोलीबारी और समीपवर्ती एस एफ चौकी से कवरिंग गोलीबारी के कारण व्यस्त होने की वजह से आतंकवादियों ने घात स्थल से अपना मोर्चा हटा लिया। कांस्टेबल दीनबन्धु पाल की त्वरित कार्यवाई, बुद्धिमता और पेशेवर सुझबूझ के कारण बी एस एफ गश्त पार्टी को अधिकतम नुकसान पहुंचाने के आतंकवादियों के नापाक इरादे विफल हो गए। उन्होंने

गश्त पार्टी का स्काउट होने के कारण त्वरित और पराक्रमी भूमिका निभायी तथा आतंकवादियों की गोलीबारी की बौछार से अपने कामरेड को बचाने के लिए लौह स्तम्भ के रूप में खड़े रहे तथा अपनी आखरी सांस तक बहादुरी से लड़ते रहे जिसके कारण आतंकवादी अपने मोर्चे की स्थिति को छोड़ने के लिए विवश हो गए। तथापि, इस अभियान में कांस्टेबल दीनबन्धु पाल ने राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। अभियान के दौरान निम्नलिखित शस्त्र/गोला बारुद बरामद किए गए :-

- (i) चीन निर्मित ऑटोफाल मेगजीन - ०१ संख्या
- (ii) ई एफ सी ७.६२ एम एम - ४१ संख्या
- (iii) ७.६२ एम एम सजीव राउन्ड - २२ संख्या
- (iv) ई एफ सी ए के ४७ - २९ संख्या
- (v) ए के ४७ सजीव राउन्ड - ०१ संख्या
- (vi) ग्रेनेड पिन - ०१ संख्या

इस मुठभेड़ में, श्री दीनबन्धु पाल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ६ जून, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ४९-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- |                                    |                           |             |
|------------------------------------|---------------------------|-------------|
| १. कप्तान बोइपाइ,<br>सब-इंस्पेक्टर | (राष्ट्रपति का पुलिस पदक) | (मरणोपरांत) |
| २. होशियार सिंह,<br>कांस्टेबल      | (राष्ट्रपति का पुलिस पदक) | (मरणोपरांत) |
| ३. दलीप सिंह,<br>कांस्टेबल         | (पुलिस पदक)               |             |
| ४. भगवती सिंह,<br>कांस्टेबल        | (पुलिस पदक)               |             |

- |    |                |             |
|----|----------------|-------------|
| ५. | आर.बी. सिंह,   | (पुलिस पदक) |
|    | उप-कमांडेंट    |             |
| ६. | मोहम्मद इरफान, | (पुलिस पदक) |
|    | इंस्पेक्टर     |             |

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक ०६.०४.२००७ की रात लगभग १९४५ बजे खासमहल शिविर की पहली दीवार से पेट्रोल बम और हथगोले फेंके जाने से हुए विस्फोटों के साथ ही स्वचालित और अर्द्ध-स्वचालित हथियारों से अचानक गोलीबारी होने पर सी आई एस एफ के जवानों ने तत्काल मोर्चा संभाल लिया। संतरी की ड्यूटी पर तैनात दो सशस्त्र जवानों नामतः मुख्य गेट के मोर्चे पर तैनात कांस्टेबल होशियार सिंह और पिछली तरफ बांये कोने के मोर्चे पर तैनात कांस्टेबल भगवती सिंह ने तत्काल जबाबी गोलीबारी कर दी। कांस्टेबल भगवती सिंह ने तुरंत ही वायरलेस सेट से डी आई जी कार्यालय, करगली में स्थित सी आई एस एफ के मुख्य नियंत्रण कक्ष को सूचित कर दिया। सब-इंस्पेक्टर/कार्यापालक कप्तान बोइपाइ ने इस बात को महसूस करते हुए कि मुख्य गेट का छोटा फाटक खुला है, गोलियों और बमों का मुकाबला करते हुए उसे बंद करने के लिए दौड़ पड़े। मुख्य गेट का दरवाजा बंद करने के बाद जब ये मुख्य गेट के मोर्चे की ओर जा रहे थे तो इन्हें ग्रेनेड और पेट्रोल बम लग गया जिनसे ये गंभीर रूप से घायल हो गए। कांस्टेबल होशियार सिंह ने अपनी एस एल आर से चारों तरफ गोलीबारी करके हमलावरों को रोके रखा। हमला होने के डेढ़ घंटे बाद कांस्टेबल होशियार सिंह के सिर में गोली लगी जिसके कारण इनकी मृत्यु हो गई। इसी बीच उग्रवादियों ने कंपनी कार्यालय के पिछवाड़े की एक तरफ की दीवार, एस ओ कक्ष और किचन तथा बैरक की आगे की दीवार उड़ा दी। कांस्टेबल दलीप सिंह तुरंत दौड़े और इन्होंने मुख्य गेट पर मोर्चा संभाला और गोलीबारी शुरू कर दी। लगभग २२१५ बजे इनके पास उपलब्ध गोली-बारूद समाप्त हो गया; इन पर एक पेट्रोल बम लगा और ये अचेत हो गए। इन बहादुर जवानों ने केवल चार एस एल आर की सहायता से ४०० वामपंथी उग्रवादियों को लगभग तीन घंटे तक रोके रखा। असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर/कार्यपालक एम एम अली और कांस्टेबल भगवती सिंह ने अस्थाई कोटे का दरवाजा तोड़ा तथा दो एस एल आर और गोलीबारूद लिया और शिविर के बायें कोने में एक और मोर्चा संभाल लिया। सब-इंस्पेक्टर/कार्यपालक कप्तान बोइपाइ के नेतृत्व में कुछ जवानों और हैड कांस्टेबल एस पी भारती ने मैगजीनों में राउंद भरने और उन्हें उन जवानों को सौंपने शुरू कर दिए जो अलग-अलग मोर्चों से गोलीबारी कर रहे थे। कुछ जवानों ने तुरंत ही बैरक की लाइट बंद कर दी। जिन वामपंथी उग्रवादियों ने शिविर के चारों तरफ मोर्चा संभाल लिया था अब वे पिछली दीवार की ओर बढ़ रहे थे और स्वचालित/अर्द्ध-स्वचालित हथियारों, ३०३ बोल्ट एक्शन राइफलों से अंधाधुंध गोलीबारी करने के साथ-साथ पेट्रोल बमों, हथगोलों, केन बमों और एसिड बमों का भी इस्तेमाल कर रहे थे। कांस्टेबल भगवती सिंह और हैड कांस्टेबल एस पी भारती तब तक गोलीबारी करते रहे जब तक इनके पास उपलब्ध सभी गोलियां समाप्त नहीं हो गई। वामपंथी उग्रवादी मेगा फोनों का इस्तेमाल कर रहे थे और कार्मिकों से बार-बार यह कह रहे थे कि वे समर्पण कर दें और अपने हथियार डाल दें। यद्यपि इन कार्मिकों की संख्या कम थी लेकिन सीआई एस एफ के उक्त जवानों ने हार नहीं मानी और मोर्चे पर डटे रहे।

लगभग २ घंटे की लड़ाई के बाद जब लड़ते हुए कांस्टेबल होशियार सिंह की मृत्यु हो गई, कांस्टेबल भगवती सिंह और हैड कांस्टेबल एस पी भारती के पास उपलब्ध गोली-बारुद समाप्त हो गया तो उग्रवादियों ने मेगा फोन पर घोषणा की कि उन्होंने शिविर घेर लिया है और शिविर के चारों ओर उन्होंने बारूदी सुरंगें बिछा दी हैं और यदि तीन मिनट के अंदर शिविर में उपस्थित कार्मिक समर्पण नहीं करते हैं तो वे शिविर को उड़ा देंगे और शिविर के सभी कार्मिकों को मार डालेंगे। इसी बीच जब कांस्टेबल दलीप सिंह को होश आया और इन्होंने यह महसूस किया कि अब उग्रवादी शिविर में घुस आएंगे तो इन्होंने मोर्चे से नीचे आकर और मोर्चे के नीचे स्थित शौचालय में अपनी राइफल छिपा कर अत्यधिक सूझ-बूझ का परिचय दिया। उग्रवादियों ने लगभग २२३० बजे गोलीबारी बंद की। इसके बाद वे शिविर में घुसे। वे यह शिवास नहीं कर पाये कि केवल चार एस एल आर की सहायता से कुछ ही जवानों ने लगभग तीन घंटे तक ४०० हमलावरों को रोके रखा। हथियारों के बारे में पूछताछ करने के लिए उन्होंने कई जवानों को मारा-पीटा। इनमें से दो कार्मिक कांस्टेबल आर एन गिरी और कांस्टेबल जगजीत सिंह को पेट्रोल बम भी लगे और ये जलने से घायल भी हो गए थे। गोलीबारी के दौरान एक और कांस्टेबल आर डी ओरान की जांघ में गोली लगी थी जिससे ये घायल हो गए थे। बाद में जब वामपंथी उग्रवादियों को यह आशंका हुई कि बचाव दल आ रहे हैं तो वे ०४ एस एल आर, एक मोटोरोला वाकीटाकी सैट, १९ एस एल आर मैग्जीन ले कर शिविर से चले गए।

लगभग १९५० बजे हमले की सूचना मिलने पर यूनिट में वरिष्ठतम अधिकारी होने के नाते उप-कमांडेंट श्री आर.बी. सिंह तत्काल निकटवर्ती "डी" कंपनी लाइन में गए और इंस्पेक्टर मोहम्मद इरफान को निदेश दिया कि वे उपलब्ध सभी सशस्त्र कार्मिकों को अपने साथ ले जाएं। ०४ एस एल आर, एक कार्बाइन और एक पिस्तौल के साथ श्री आर बी सिंह, उप-कमांडेंट ने तत्काल खासमहल की ओर कूच किया। रास्ते में इन्हें बताया गया कि कुरपनिया, जहां राज्य पुलिस के एस टी एफ, सी आर पी एफ और सी आई एस एफ, क्यू आर टी को रोके रखा गया है, में पेट्रोल पंप से आगे की सड़क पर घात लगाई हुई है। इन्होंने अपना रास्ता बदल दिया और जरादिह रेलवे लेवल क्रॉसिंग पर आ गए जहां पर इन्होंने वाहन छोड़ दिया तथा रेलवे लाइन के साथ-साथ पैदल ही आगे बढ़ना शुरू कर दिया। आड़े-तिरछे ढंग से दौड़ने के बाद खुले स्थान पर खासमहल पहुंचे। पूरे रास्ते यह वामपंथी उग्रवादियों की घात से चतुराईपूर्ण ढंग से बचते हुए आगे बढ़े। खुले स्थान में पहुंचने पर अचानक ही उन पर गोलीबारी हुई जिसका इन्होंने चपलता से करारा जबाव दिया जिसके लिए इन्होंने गोलीबारी से बचने-बचाने और छिपने के सिद्धांतों का पालन किया और "ई" कंपनी लाइन से २०० मीटर की दूरी तक पहुंचे। आगे बढ़ कर नेतृत्व करते हुए श्री आर.बी.सिंह, उप-कमांडेंट ने घुप्प अंधेरे में गोलियों का चतुराई से मुकाबला किया और अपने कर्तव्य का निर्वहन करने के लिए असाधारण साहस और बहादुरी का परिचय दिया। लगभग २२४५ बजे जे कंपनी लाइन के साथ संपर्क स्थापित कर सके जहां यह अपनी टीम के साथ खासमहल शिविर पहुंचे। शिविर की तरफ जाने वाली सड़कों और रास्तों पर जब वामपंथी उग्रवादियों ने सुरंगें बिछा रखी थी तो घुप्प अंधेरे में इन्होंने स्थिति को संभाला और सभी सहायक कार्मिकों को गाइड किया तथा शहीदों और घायलों को अस्पताल पहुंचाने की व्यवस्था की। इन्होंने छिपे हुए उग्रवादियों या बिछाई हुई उन सुरंगों का पता लगाने के लिए तत्काल आस-पास के क्षेत्रों की तलाशी शुरू कर दी जिन्हें कुमुक आने की भनक मिलने पर उग्रवादियों ने जल्दबाजी में छोड़ दिया हो।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री(स्व.) कप्तान बोइपाइ, सब-इंस्पेक्टर, (स्व.) होशियार सिंह, कांस्टेबल,

दलीप सिंह, कांस्टेबल, भगवती सिंह, कांस्टेबल, आर.बी.सिंह, उप-कमांडेंट और मोहम्मद इरफान, इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ६ अप्रैल, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ५०-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. जगदीश पटेल,

(राष्ट्रपति का पुलिस पदक)

कांस्टेबल

२. रामाशीष तिवारी,

(पुलिस पदक)

सब-इंस्पेक्टर

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक ०३.०७.२००६ को आई जी पी, श्रीनगर से, जिन्होंने फिर अपनी स्वयं की बटालियन सहित एस ओ जी सिविल पुलिस और ११२वीं बटालियन के क्यू आर टी के साथ सी आर पी एफ की ११२वीं बटालियन के सब-इंस्पेक्टर/जी डी रामाशीष तिवारी को अभियान चलाने के बारे में सूचित किया था, ११२वीं बटालियन के कमांडेंट को इस आशय की विशिष्ट आसूचना प्राप्त हुई कि पुलिस स्टेशन हरवान के तहत तेलबाल में बांगुंड गांव के क्षेत्र में उग्रवादी मौजूद हैं। इसके तुरंत बाद सी आर पी एफ की ११२वीं बटालियन के सब-इंस्पेक्टर/जी डी रामाशीष तिवारी ने अपनी टुकड़ी को इस बारे में बताया और एस ओ जी और सिविल पुलिस के साथ पुलिस स्टेशन हरवान के तहत तेलबाल के बांगुंड गांव के क्षेत्र में संयुक्त घेराव और तलाशी अभियान चलाया। एस ओ जी और सब-इंस्पेक्टर/जी डी रामाशीष तिवारी, ११२वीं बटालियन, सी आर पी एफ वाली तलाशी टीम द्वारा गुलाम मोहम्मद बट पुत्र अली मोहम्मद बट के मकान की ली गई तलाशी के दौरान उन्हें ज्ञात हुआ कि दो उग्रवादी मकान में छिपे हुए हैं। जैसे ही एस ओ जी के सब-इंस्पेक्टर गुलाम मुस्तफा, घेराव दल को सतर्क करने और सुदृढ़ करने के लिए गए वैसे ही सी आर पी एफ की ११२वीं बटालियन के सब-इंस्पेक्टर/जी डी रामाशीष तिवारी और एस ओ जी के कांस्टेबल मुस्ताक अहमद बाउंड्री की अंदर वाली दीवार पर कूद गए और मकान के आंगन में पहुंच गए। इसी बीच दो उग्रवादी मकान की एक तरफ वाली खिड़की से बाहर आए और मकान की बाहरी बाउंड्री की ओर दौड़ने लगे। जब वे

दौड़ रहे थे तो दोनों तरफ गोलीबारी भी करते जा रहे थे। इस पर सी आर पी एफ की ११२वीं बटालियन के सब-इंस्पेक्टर/जी डी रामाशीष तिवारी ने तुरंत गोलीबारी शुरू कर दी और दूसरे उग्रवादी को घायल करने में सफल हो गए। उग्रवादी ने लकड़ी की सीढ़ी से, जिसे संभवतः शीघ्र ही भाग निकलने के लिए पहले से रखा गया था, लगभग ६'६" ऊंची बाउंड्री की दीवार पर चढ़ने की कोशिश की। दीवार से कूदने के बाद पहले उग्रवादी ने घेराव दल पर गोलियों की बौछार कर दी और फिर लगातार गोलीबारी करते हुए दाईं तरफ मुड़ा और सूखे नाले और घने वन की ओर दौड़ने लगा। सी आर पी एफ की ११२वीं बटालियन के कांस्टेबल/जी डी जगदीश पटेल, सं. ०३५२२०९८५ ने उस तरफ से घेरा डाला हुआ था और इन्होंने तुरंत ही उस उग्रवादी पर गोलीबारी कर दी जो लगातार गोलीबारी कर रहा था। इस गोलीबारी में सी आर पी एफ की ११२वीं बटालियन के कांस्टेबल/जी डी जगदीश पटेल के दांये कंधे और बायें हाथ की मध्यमिका पर गोली लग गई लेकिन इन्होंने अपने जीवन की परवाह किए बगैर गोलीबारी जारी रखी और उग्रवादी को मार गिराया। थोड़ी देर बाद दूसरा उग्रवादी भी दीवार से कूद पड़ा और हैड कांस्टेबल/जी डी राजपाल सिंह, कांस्टेबल/बग.जय भगवान और कांस्टेबल/जी डी अर्जुन सिंह से युक्त घेराव दल ने दूसरे उग्रवादी को भी मार गिराया। पूरे अभियान के दौरान सं. ०३५२२०९८५ कांस्टेबल/जी डी जगदीश पटेल, ११२वीं बटालियन, सी आर पी एफ ने अनुकरणीय साहस, अद्वितीय वीरता, बहादुरी, ड्यूटी के प्रति अत्यधिक समर्पण की भावना प्रदर्शित की और किसी भी प्रकार की संपार्श्विक हानि के बगैर एक उग्रवादी को धराशायी कर दिया। सं. ७३०३१०१३५ सब-इंस्पेक्टर/जी डी रामाशीष तिवारी, ११२वीं बटालियन, सी आर पी एफ ने वीरता और बहादुरी से दीवार से कूद कर और मकान के अंदर वाले आंगन में घुस कर असाधारण साहस और टुकड़ियों को कमांड करने में उत्कृष्ट नेतृत्व का परिचय दिया तथा गोलीबारी कर एक उग्रवादी को घायल कर दिया। इस मुठभेड़ के दौरान सब-इंस्पेक्टर/जी डी रामाशीष तिवारी द्वारा की गई कार्रवाई इस दृष्टि से महत्वपूर्ण समझी जाती है कि हमारे कार्मिकों को किसी भी प्रकार की हानि पहुंचे बगैर उग्रवादियों को मार गिराने में इन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया। अभियान के दौरान इनके साहसिक कृत्य ने निश्चित ही बल में आने कनिष्ठ कार्मिकों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री जगदीश पटेल, कांस्टेबल और रामाशीष तिवारी, सब-इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ३ जुलाई, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ५१-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- |                      |            |
|----------------------|------------|
| १. रास बिहारी सिंह   | (पीएमजी)   |
| सेकिण्ड-इन-कमांड     |            |
| २. गोपाल प्रसाद सिंह | (पीपीएमजी) |
| इंस्पेक्टर           |            |
| ३. गुरुदेव हुगेर     | (पीएमजी)   |
| कांस्टेबल            |            |
| ४. सुनील कुमार सिंह  | (पीएमजी)   |
| कांस्टेबल            |            |

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक ३०.०८.२००६ को विशेष सूचना मिलने पर, मीरहामा गांव, कुलगाम के एक घर में छिपे आतंकवादियों को पकड़ने के लिए एस ओ जी कुलगाम और ९ आर आर के साथ, सी आर पी एफ की १६१वीं और १६२ वीं बटालियन के जवानों सहित सी आर पी एफ की ५ वीं बटालियन की ई कंपनी की एक प्लाटून द्वारा पुलिस स्टेशन और जिला कुलगाम दक्षिणी कश्मीर घाटी के अंतर्गत मीरहामा गांव में संयुक्त घेराबंदी और तलाशी अभियान चलाया गया। चूंकि वह ३५० घरों वाला एक बड़ा गांव था इस कारण गांव को घेरने के लिए विभिन्न यूनिटों /बलों से बड़ी संख्या में जवानों को तैनात किया गया और इसके अतिरिक्त घर-घर की तलाशी लेने के लिए छोटी टीमों का गठन किया गया। सी आर पी एफ की ५वीं बटालियन के सीटी/जीडी गुरुदेव हुगेर और सीटी/जीडी सुनील कुमार सिंह की सक्रिय सहायता से इंस्पेक्टर/जीडी गोपाल प्रसाद सिंह के नेतृत्व में तथा सी आरपीएफ की १६१वीं बटालियन के सेकिण्ड-इन-कमांड अधिकारी श्री रास बिहारी सिंह की देखरेख में तलाशी पार्टी ने चतुराई से उक्त घर और उसके बगल की इमारत के निवासियों को बचाया और अंधाधुंध गोलीबारी का तथा आतंकवादियों द्वारा नजदीक से फेंके गए हथगोलों का प्रभावी जवाब दिया। आर आर, एस ओ जी और सी आर पी एफ की भूमिका सम्मिलित /सामूहिक थी अर्थात् अपने जिम्मेवारी पूर्ण संबंधित क्षेत्रों में घेराबंदी करना तथा प्रत्येक बल से कुछ टीमों बनाकर घरों की तलाशी लेना। चूंकि आतंकवादी छुपे हुए थे इसलिए लक्षित घर की पहचान नहीं की जा सकी और एक बार जब आतंकवादियों से संपर्क हो गया तभी सी आर पी एफ की उक्त पार्टी ने वीरतापूर्वक कार्रवाई का प्रदर्शन किया। संयोग से, उल्लिखित तलाशी पार्टी नजदीक से गोलियों की बौछारों में आ गई और उनकी जाने खतरे में पड़ गई। अपनी जानों को खतरे में देखने के बावजूद भी श्री रास बिहारी सिंह सेकिण्ड इन कमान , इंस्पेक्टर /जीडी गोपाल प्रसाद सिंह, सीटी/जीडी गुरुदेव हुगेर और सीटी/जीडी सुनील कुमार सिंह आतंकवादियों को

उग्र गोलीबारी में व्यस्त रखे रहे। इंस्पेक्टर गोपाल प्रसाद सिंह के बाएं पैर में गोली लगने के बाद भी इन सी आर पी एफ कार्मिकों ने इमारत के नजदीक जाकर जो अदम्य साहस का परिचय दिया वह अनुकरणीय है। उन्होंने अपना धैर्य नहीं खोया और जवानों को उत्साहित करते रहे तथा अततः इल ई टी के सभी तीनों आतंकवादियों को मारने में सफल हुए जिनमें से एक अबु कासिम उर्फ गौरी था जो कि लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) के जिला कमांडर के रैंक का था और कुलगाम जिले में सक्रिय था। मृत आतंकवादियों की पहचान निम्न प्रकार हुई:

- i. अबु कासिम उर्फ गौरी, एलईटी के जिला कमांडर, निवासी पाकिस्तान
- ii. मुनेर अहमद गैनी, पुत्र अता मोहम्मद निवासी मारवाह, दयान
- iii. फैज अहमद राठेर पुत्र घमौहम्मद, निवासी हरशीवाह, सोपोर

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री रास बिहारी सिंह, सेकिण्ड-इन-कमान, गोपाल प्रसाद सिंह, इंस्पेक्टर, गुरुदेव हुगेर, कांस्टेबल और सुनील कुमार सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति के पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ३० जून, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ५२-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, सी आर पी एफ के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- |               |                           |
|---------------|---------------------------|
| १. बिनोद राय  | (पी पी एम जी) (मरणोपरांत) |
| कांस्टेबल     |                           |
| २. ध्यान सिंह | (पी एम जी)                |
| कांस्टेबल     |                           |
| ३. कुहाल राय  | (पी एम जी)                |
| कांस्टेबल     |                           |

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक १५.१२.२००६ को लगभग १८०५ बजे सी/१७१ बटालियन में ए/सी श्री आर.के.



मंडल, में श्री राजेश कुमार सिंह, पुलिस अधीक्षक, बांकुरा ने फोन करके सूचित किया कि सी पी आई (माओवादी) के कार्यकर्ताओं की एक स्कूड, घातक हथियारों सहित बांकुरा जिले (पश्चिम बंगाल) के बारीकुल पुलिस स्टेशन के अंतर्गत बागदुबी ग्राम में घुसी और उन्होंने गांव में कुछ सी पी आई (एम) सदस्यों को खोजना प्रारंभ किया ताकि वे उन्हें जान से मार सकें। पुलिस अधीक्षक, बांकुरा ने श्री आर के मंडल, अस्टैंट कमांडेंट, सी/१७१ बटालियन को तुरंत आप्रेशन प्रारंभ करने का निदेश दिया। उस दिन अर्थात् दिनांक १५.१२.२००६ को सेरेंगसोकरा स्थित शिविर में सी/१७१ बटालियन में श्री प्रशांत कुमार डे, उप पुलिस अधीक्षक (प्रशासन), पुलिस स्टेशन बारीकुल और बांकुरा पुलिस के एस आई सैक. अनामुल हक और एस आई संजय चटर्जी उपस्थित थे। पुलिस अधीक्षक बांकुरा के आदेशों के अनुरूप सी/१७१ बटालियन उक्त सिविल पुलिस कार्मिकों के साथ शस्त्रों से लैस होकर पैदल ही बागदुबी गांव की ओर गयी। जब प्लाटून उस गांव विशेष के प्राथमिक विद्यालय के निकट पहुंची तो प्लाटून ने देखा कि वहां पर नक्सलवादी एक सभा को संबोधित कर रहे थे। जब प्लाटून ने उस भूभाग की प्रतिकूल स्थिति के कारण युक्ति से एक ही पंक्ति में वहां पहुंचना और सभा स्थल में प्रवेश करना प्रारंभ किया तभी वे मुश्किल से २०-२५ गज की दूरी पर नक्सलियों की भारी गोलीबारी में घिर गए। हमारी टुकड़ी ने तत्काल जवाबी कार्रवाई की। स्काउट के रूप में बल की टुकड़ी के आगे चल रहे संख्या ०४१७१००६३ कांस्टेबल/जी डी (स्व.) बिनोद राय ने उन दो नक्सलियों को मार गिराया जो पुलिस बल पर सामने से गोलीबारी कर रहे थे, इसलिए उन्होंने उन पर गोली चला कर जवाबी कार्रवाई की थी। यह उनका आप्रेशन कौशल और सटीक निशाना ही था जिसके कारण वे लक्ष्य से चूके नहीं और दोनों ही नक्सलियों को मौके पर ही मार गिराने में सफल हुए। उन्होंने अपने सरकारी शस्त्र से चार चक्र गोली चलाई और अपने अचूक निशाने से हमलावरों को खामोश कर दिया। इससे उन्होंने अन्य पुलिस कार्मिकों और सभा में मौजूद ग्रामीणों के भी जीवन की रक्षा की लेकिन इस प्रक्रिया में उनके सिर में गोली लगने से वे घायल हो गए और उन्होंने राष्ट्रहित में अपने जीवन का बलिदान कर दिया। सशस्त्र आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ के दौरान सीटी/जीडी (स्व.) बिनोद राय द्वारा प्रदर्शित अदम्य साहस और वीरतापूर्ण कृत्य असाधारण, उत्साहवर्धक और आने वाले समय में अनुकरणीय था। संख्या ४१७१००६३ कां/जीडी बिनोद राय के पीछे चल रहे संख्या ४१७१५००३ कां/जीडी ध्यान सिंह और संख्या ०४१७१५१८२ कां/जी डी कुहाल राय ने उनको (कां/जी डी बिनोद राय को) गोली से घायल हो कर नीचे गिरते देखा। वे ०४१७१००६३ कां/जी डी बिनोद राय को बचाने के लिए तुरंत उनकी ओर गए और दोनों ही नक्सलियों की गोलीबारी में स्वयं भी घायल हो गए। गोलियों से गंभीर घावों के बावजूद उन्होंने अद्वितीय साहस का परिचय दिया और अपने जीवन का जोखिम उठा कर उन्होंने अपनी स्थिति संभाली और प्रभावी जवाबी गोलीबारी करके नक्सलियों को उलझाए रखा। उनके साहसिक कृत्य ने, सी आर पी एफ पार्टी पर भारी गोलीबारी कर रहे नक्सलियों को उनके छिपने के स्थान से बाहर निकालने के लिए और वापस भागने के लिए मजबूर कर दिया। इस प्रकार उक्त दोनों कार्मिकों ने अर्थात् कांस्टेबल (जीडी) कुहाल राय और जी टी (जी डी) ध्यान सिंह ने और अधिक मानव क्षति को होने से बचाया। इन दोनों सी आर पी एफ कार्मिकों द्वारा प्रदर्शित प्रतिरोध, कर्तव्यनिष्ठा और अचूकता तथा देशभक्ति उच्च स्तर की थी जिसने मौके पर मौजूद मासूम ग्रामीणों को बिल्कुल भी कोई क्षति नहीं होने दी। आप्रेशन के दौरान निम्नलिखित शस्त्र/गोलाबारुद की बरामदगी हुई:

- i. एक ३०३ बोर राईफल, आर्सेनल सं ए पी ७६८३ और बट संख्या १०५

- ii. एक ३०३ बोर राईफल, आर्सनल संख्या आर एफ आई-१९५२ और बट संख्या ४४४.
- iii. एक पुराना नायलोन थैला जिसमें १०० मीटर लम्बा बिजली का तार, ५ डिटोनेटर, एक फ्लेशगन, ३ पुराने रैग, ३ पुराने काले पोलीथिन, ग्राउंड शीट, सूखी पत्तियों की एक पुरानी चटाई और तीन माओवादी लीफलेट।
- iv. एक पुराना जैतूनी हरा वस्त्र रखने का बाक्स जिसमें छः ३०३ चार्जर, साथ में ३० गोली ३०३ सजीव बुलेट और अन्य चार्जर, एक चक्र के ३०३ सजीव बुलेट।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री स्व. बिनोद राय, कांस्टेबल, ध्यान सिंह, कांस्टेबल, कुहाल राय, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक १५ दिसम्बर, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ५३-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, आंध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. वेवीलपा नारायण राव,  
रिजर्व इंस्पेक्टर
२. पंतरंगम कटैया  
हैड कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक ३१.३.२००६ को विशिष्ट सूचना मिली कि कुछ माओवादी संवर्ग खम्माम और दांतेवाड़ा की सीमा क्षेत्र के जंगलों में केम्प लगा रहे हैं तभी ०२०० बजे के लगभग श्री वी नारायण राव के नेतृत्व में ग्रेहाउंड असॉल्ट यूनिट को पेरुर वेंकटापुरम रोड पर उतार दिया गया। यूनिट दुष्कर पहाड़ी क्षेत्र में पूर्वोत्तर की दिशा में आगे बढ़ी। यूनिट ने रात को और ०१.०४.२००६ की सुबह को १२ किमी की दूरी पहाड़ी क्षेत्र में कोर क्षेत्र तक पहुंचने के लिए ऐसी चाल से तय की जैसे कि कौवा आड़ी तिरछी उड़ान भरता है। यूनिट ने कोर क्षेत्र में ०१.०४.२००६ को छानबीन की और मकनुर गांव के बाहर रुक गई क्योंकि उस क्षेत्र में एक नाले को छोड़कर पानी का कोई स्रोत नहीं था और वो भी गांव वालों के लिए था। श्री वी नारायण राव ने सुनिश्चित किया कि वह अपनी यूनिट को पानी की झील के दोरान गांव वालों और दुश्मनों के सामने प्रकट नहीं करेंगे

औरक श्री वी नारायण राव और पी कटैया भी घाटी में कूद गए, यद्यपि दुश्मनों ने अपनी स्थिति संभाल लेने का फायदा पहले ही उठा लिया था। माओवादी, जिन्होंने गड्डे रुपी गुफा का सहारा लिया हुआ था, ने जैसे ही वे घाटी में कूदे उन्होंने पुलिस पार्टी पर गोलीबारी शुरू कर दी। श्री वी नारायण राव और पी कटैया अपनी जान की परवाह न करते हुए झाड़ियों और चट्टानों से होकर आगे बढ़े और माओवादियों पर गोलीबारी करते हुए उनमें से तीन को मार गिराया जिसमें चेरला गुरिला स्कवैड एक्शन कमांडर और दांतेवाड़ा गुरिला स्कवैड का डिप्टी दलम कमांडर शामिल था। श्री पी कटैया ने इस दुःसाहसी हमले में विशिष्ट बहादुरी का परिचय दिया।

चौथी माओवादी, एक महिला दलम सदस्य ने समीप के गांव की ओर बचने की कोशिश की लेकिन श्री वी नारायण राव ने गांव के रास्ते में नाकाबंदी पार्टी को सतर्क कर दिया। उन्होंने तुरंत उसका रास्ता रोका और परस्पर गोलीबारी में वह भी मारी गई। बाद में उसकी पहचान दलम सदस्य के रूप में हुई। उनके पास ५३ राउंडों के साथ दो .३०३ राईफल्स, २ एस बी बी एल गन, १८ राउंद, ७ किट बैग और अन्य मदे जैसे खाना और दवाई बरामद हुई। कुत्ते द्वारा सतर्क किए जाने के कारण एक सिविलियन और दो माओवादी बचकर भाग गए। यदि श्री वी. नारायण राव और पी कटैया ने रेंगते हुए माओवादी केम्प के नजदीक आने, घाटी में कूदने के बाद माओवादियों का पीछा करने में अदम्य साहस का परिचय नहीं दिया होता और यदि वे माओवादियों की गोलीबारी के बावजूद भी डटे नहीं रहते और यदि श्री वी नारायण राव ने गोलीबारी करते हुए माओवादियों को रोकने के लिए नाकाबंदी पार्टी को सतर्क नहीं किया होता तो ये चार आतंकवादी भी कुत्ते द्वारा सतर्क किए जाने से बच कर भाग सकते थे। श्री वी नारायण राव, डिप्टी असॉल्ट कमांडर (आर.आई) ने स्थिति का आकलन करने में, शुरू में टीम का विभिन्न गुप्तों में गठन और दोबारा दुश्मनों के बचने के रास्तों को रोकने के लिए नाकाबंदी पार्टी सहित २ टीमों को ३ टीमों में बांटकर उत्कृष्ट नेतृत्व प्रदान किया। श्री पी कटैया ने माओवादी केम्प की पहचान करने तथा गुप्तचर दूसरों को सतर्क करने में, कवर न होते हुए भी माओवादी केम्प के नजदीक पहुंचने और अपनी जान की परवाह न करते हुए श्री वी नारायण के साथ उसी घाटी में कूदकर माओवादियों का पीछा करते हुए अद्वितीय साहस और ४ माओवादियों को मार गिराने में अनुकरणीय कौशल का परिचय दिया। श्री वी नारायण राव ने इस गोलीबारी के आदान-प्रदान में सही तालमेल, टीम भावना, अटल दृढ़ संकल्प, अच्छा नेतृत्व और अदम्य साहस का परिचय दिया। इस घटना के परिणामस्वरूप ५ माओवादियों अर्थात् खम्माम जिले (आ.प्रे) के ३ और छत्तीसगढ़ राज्य के दांतेवाड़ा जिले के २ की मौत हुई। पुलिस की इस कार्रवाई ने रुखे और मुश्किल सीमा क्षेत्र में सी पी आई (माओवादी) को तगड़ा झटका दिया।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री वेवीलपा नारायण राव, रिजर्व इंस्पेक्टर और पंतरंगम कटैया, हैड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २३ अप्रैल, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ५४-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. कौडापल्ली अप्पाला नायडु  
रिजर्व सब इंस्पेक्टर
२. कंचापोल्लू संजीव कुमार  
हैड कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

आन्ध्र प्रदेश के महबूबनगर, कुरनूल, नलगौंडा, गुंटूर और प्रकासम जिलों के नल्लामाला वन सी पी आई माओवादियों की गतिविधियों से अत्यन्त ज्यादा प्रभावित क्षेत्र हैं जहां वे गोरिल्ला आधार सृजित करने के लिए उक्त जिलों के सघन जंगलों में रह रहे हैं। विगत तीन वर्षों में वे मासूम नागरिकों, पुलिस कार्मिकों और राजनैतिक नेताओं की बेतहाशा हत्या करने में संलिप्त हैं।

महबूबनगर जिले के पुलिस अधीक्षक को यह सूचना प्राप्त हुई कि लिंगाला पुलिस स्टेशन की सीमा क्षेत्र में अप्पैपल्ली, मेडीमंकला, नल्लामाला के सेंगीडिगुंडला जनजातीय ग्रामों के वन क्षेत्रों में महेश, डी सी एम, इंदिरा और अन्य माओवादी घूम रहे हैं और उनकी योजना घेराबंदी करके अथवा पुलिस स्टेशन पर हमला बोल कर पुलिस कर्मियों की हत्या करने की है। यह संभावना थी कि वे जैड पी टी सी/एम पी टी सी चुनावों से कुछ दिन पूर्व गंभीर गड़बड़ी फैलाएंगे। इसी वन क्षेत्र में माओवादियों और पुलिस दल के बीच परस्पर गोलीबारी हुई थी जिससे उनके जघन्य अपराध किए जाने की योजना का संकेत मिला था। यह सूचना मिलते ही श्री के अप्पाला नायडु, एस आई और डी ए सी श्री एन.शिव. प्रसाद, ए ए सी श्री के शिवराम कृष्णा और श्री एम. गजेन्द्र कुमार के नेतृत्व में २७ कार्मिकों सहित ग्रेहाउन्ड की एक एस २ सी ए/यूनिट को समस्त जानकारी देकर श्री के. संजीव कुमार, हैड कांस्टेबल के साथ २४.०६.०६ की रात को नल्लामाला के खतरनाक सघन जंगल में पहुंचाया गया। कमांडो ने ढाई दिन तक सौंपे गए क्षेत्र की छानबीन की। दुर्गम भू-भाग, वर्षा के कारण और चूंकि वह जंगल बहुत घना है, वहां कुछ दिखाई नहीं देता और उनमें चलना भी दूभर होता है इसलिए वह दल बहुत थक गया था। तथापि, आप्रेशन को सफल बनाने के लिए कटिबद्ध श्री के अप्पाला नायडु, एस आई ने अन्य कमांडो के साथ उन सभी क्षेत्रों की भी सघन जांच की जो उनके कार्यक्रम में शामिल भी नहीं थे और लगभग ११ बजे उन्होंने जनजातीय ग्राम मेडीमंकला के पास एक स्थान पर विश्राम किया। लगभग १२ बजे इस यूनिट के समीप के मार्ग पर सादा कपड़े पहने एक व्यक्ति को जाते हुए देखा गया। तत्काल, दो कांस्टेबलों ने उसको पकड़ा और उसके पास से दो उन्नत किस्म के हथगोले तथा कमर में बंधे हुए २०,००० रु. नकद बरामद किए। महम पूछताछ किए जाने पर उस व्यक्ति ने बताया कि वह माओवादी गुप का एक कार्यकर्ता है और वह वहां से ८ कि.मी. दूर पड़ाव डाले माओवादियों के एक गुप के

पास से आ रहा है। तत्काल ही यूनिट प्रभारी डी ए सी, श्री के. अप्पाला नायडु, एस आई यूनिट के अन्य कार्मिकों के साथ पकड़े गए माओवादी द्वारा बताए गए स्थान की ओर बिना कोई समय गंवाए चल पड़े क्योंकि माओवादी बार-बार स्थान परिवर्तित करने वालों के रूप में जाने जाते हैं। पकड़े गए माओवादी द्वारा दी गई जानकारी के अनुरूप पुलिस दल उस स्थान पर पहुँच गया किन्तु वे उनके शिविर को नहीं खोज सके। तत्पश्चात् दल को तीन भागों में बांटा गया। सर्व/श्री के. अप्पाला नायडु, एस आई और के संजीव कुमार हैड कांस्टेबल मुख्य आक्रामक दल में थे और अन्य दोनों दलों को नाकाबंदी के लिए भेजा गया।

दाएं और बाएं दलों से संकेत मिलने पर के अप्पाला नायडु और डी ए सी एन शिव प्रसाद के नेतृत्व में मुख्य आक्रामक दल आगे बढ़ा। तभी अचानक एक माओवादी महिला संतरी ने गोली चलाई और चिल्लाई कि उसने बाईं ओर की टुकड़ी की हलचल देखी है। संतरी द्वारा सचेत किए जाने पर अन्य सभी उग्रवादियों ने आक्रामक दल पर गोलियां चलाई। दल के नेता और अन्य सदस्यों ने उनसे आत्मसमर्पण करने के लिए कहा किन्तु पुलिस दल को मारने के आशय से माओवादी गोलियां चलाते रहे। चूंकि उग्रवादी उन्हें घेरने की स्थिति में थे इसलिए सर्व/श्री के अप्पाला नायडु, एस आई और के संजीव कुमार, हैड कांस्टेबल खुले मैदान में आ गए और उनके शिविर को उड़ाने के प्रयास में उनकी गोलियों का बहादुरी से सामना करते रहे। पुलिस दल विशेषकर सर्व/श्री के अप्पाला नायडु, एस आई और के संजीव कुमार, हैड कांस्टेबल का हमला देखकर उग्रवादियों ने गोलियां चलाते हुए पहाड़ी की ओर वापिस जाना शुरू कर दिया। तत्पश्चात् सर्व/श्री के अप्पाला नायडु, एस आई और के संजीव कुमार, हैड कांस्टेबल ने पहाड़ी पर उनका पीछा किया और घातक जवाबी गोलीबारी की। सर्व/श्री के अप्पाला नायडु, एस आई और के संजीव कुमार, हैड कांस्टेबल ने अन्य कमांडो के साथ लगातार गोलीबारी की और गोलीबारी कर रहे उग्रवादियों की ओर बढ़े। आधे घंटे के बाद माओवादियों की ओर से गोलीबारी बंद हो गई। सघन छानबीन करने पर पुलिस दल को शस्त्रास्त्र, हथगोलों, नकद राशि और अन्य सामान के साथ ८ माओवादियों के शव और एक एस एल आर, दो .३०३, दो ८ एम एम और दो ४१० मस्कट बरामद हुए। मारे गए उग्रवादियों (८) का ब्यौरा निम्नवत् है :-

१. कटमोनी मेड्डीलेटी उर्फ महेश (सी) कमांडर नल्लामाला दलम।
२. छत्रसाल सुकम्मा उर्फ इंदिरा प्लाटून सदस्य
३. पदमा उर्फ स्वरूप (नल्लामाला दलम का डिप्टी कमांडर)
४. सिवौडु, प्लाटून सदस्य
५. गंगम्मा, प्लाटून सदस्य
६. लिंगम्मा उर्फ सगुना, प्लाटून सदस्य
७. डोडला साईदमना उर्फ मादवी, प्लाटून सदस्य
८. कोटम्मा, प्लाटून सदस्य

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री कोंडापल्ली अप्पाला नायडु, रिजर्व सब इंस्पेक्टर और कंचापोल्लू संजीव कुमार, हैड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २७ जून, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ५५-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारी के नाम और रैंक

श्री टी. राजा सम्भैया  
हैड कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक २७.५.२००६ को करीमनगर के पुलिस अधीक्षक को एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई कि एक व्यक्ति करीमनगर पश्चिम प्रभाग के सी पी आई माओवादी ग्रुप के उग्रवादियों से मिलने सारंगपुर मंडल के राकुलपल्ली गांव की बाह्य सीमा की ओर जा रहा है और वहां सी पी आई माओवादी पश्चिम प्रभाग समिति के सदस्यों के उपस्थित होने की भी सूचना प्राप्त हुई। विमलवाड़ा और गोल्लापल्ली पुलिस स्टेशनों के एस आई के साथ श्री टी राजा सम्भैया को सूचना की सच्चाई का पता लगाने और सी पी आई माओवादी ग्रुप के उग्रवादियों के छिपने के स्थानों की जांच करने का कार्य सौंपा गया। उक्त सूचना के आधार पर, श्री टी राजा सम्भैया सहित ९ सदस्यों के एक आक्रमक दल को २७.५.२००६ को लगभग ११.०० बजे रवाना किया गया। इस दल को राकुलपल्ली की बाह्य सीमा में पहुँचाया गया और फिर श्री टी राजा सम्भैया ने दल को दो भागों में बांट दिया। एक दल का नेतृत्व श्री टी राजा सम्भैया ने किया और दूसरे दल का नेतृत्व विमलवाड़ा और गोल्लापल्ली पुलिस थानों के एस.आई ने किया। श्री टी राजा सम्भैया ने केकुलपल्ली गांव की बाह्य सीमा में स्थित एक विद्यालय में ग्रामीणों को कुछ बताए बिना लगभग छः घंटे तक घात लगाई। लगभग १९०० बजे श्री टी राजा सम्भैया ने एक व्यक्ति को देखा जिसके कंधे पर एक बैग लटक रहा था और जो सी पी आई माओवादी ग्रुप से मिलने जा रहा था। तत्काल श्री टी राजा सम्भैया ने लगभग एक किलोमीटर तक उसका पीछा किया। वह व्यक्ति सी पी आई माओवादियों के दल के पास पहुँचा दुर्भाग्य ने दल सदस्यों से श्री टी राजा सम्भैया को देख लिया और तुरंत उन्होंने श्री टी राजा सम्भैया को मारने के लिए उन पर स्वचालित और अर्धस्वचालित हथियारों से गोलियां चला दीं। श्री टी राजा सम्भैया ने तुरंत ही उन्हें चेतावनी देते हुए अपनी स्थिति संभाल ली और अन्य कोई चारा न होने पर आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी की। गोलीबारी ५ मिनट तक होती रही। गोलीबारी बंद हो जाने पर पुलिस दल ने कुछ देर तक प्रतीक्षा की और फिर आगे बढ़े। वहां उन्हें दो व्यक्तियों के शव मिले तथा घटनास्थल से एक २ एम एम स्टेनगन और उसकी गोलियां तथा एक लेपटाप कम्प्यूटर हासिल किए गए।

मृतक उग्रवादियों की बाद में पहचान १. कटकुरी रामुलु उर्फ प्रवीण, निवासी चंदुथी (एम), का मुदापल्ली, डी सी एम करीमनगर पश्चिम प्रभाग और २. बडगु अशोक, पुत्र नरसिया, आयु २९ वर्ष, निवासी कोनारेयोपेट (एम) का शिवंगुलपल्ली के रूप में हुई। यह मामला आई पी सी की धारा १४९, आई आर अधिनियम की धारा, २५(१) (ए), २७ सी आर पी सी धारा १७४ के साथ पठित धारा १४७, ३०७ के अधीन सारंगपुर पुलिस थाने के अपराध सं. ३७/०६ की विषय वस्तु है।

घातक उग्रवादी कटकुरी रामुलु उर्फ प्रवीण एक दुर्दांत उग्रवादी है और वह जघन्य हत्याओं, हत्याओं के प्रयास, आगजनी, गोलीबारी, लूटखसोट सहित करीमनगर जिले के पश्चिम प्रभाग के अनेक जघन्य अपराधों में शामिल था।

इस मुठभेड़ में, श्री टी. राजा सम्भैया, हैड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २७ मई, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ५६-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, आंध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

- सर्व/श्री
१. यानाबाथुला संजीव राव  
रिजर्व सब इंस्पेक्टर
  २. के रामाराव,  
कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक २६.३.३००५ की रात्रि को अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (आप्रेशन) वारंगल ने अपने स्रोतों से यह महत्वपूर्ण सूचना संकलित की कि सी पी आई (एम एल) प्रजाप्रगटना और आदिवासी लिबरेशन टाईगर (ए एल टी) अपने गुप्तों के अन्य केडरों के साथ महबूबाबाद ग्रामीण पुलिस स्टेशन की सीमा के अंतर्गत कम्बलपल्ली गांव की पहाड़ियों पर डेरा डाले हुए हैं और वहां पर किसानों, ठेकेदारों और व्यवसायियों को

बुलाकर उनसे धन ऐंठ रहे हैं। उक्त क्षेत्र महबूबाबाद ग्रामीण पुलिस स्टेशन से पूर्वोत्तर की ओर १८ किमी की दूरी पर स्थित है। यह क्षेत्र १० वर्ग किमी क्षेत्र में फैला है और पूरा क्षेत्र झाड़ियों छोटे गोल पत्थरों, चट्टानों और पहाड़ियों से आच्छादित है। संपूर्ण क्षेत्र खम्मन जिले की सीमा पर है और सी पी आई (एम एल) गुप्तों की गतिविधियों से प्रभावित है तथा इसके अधिकतम मार्ग जोखिमपूर्ण हैं। हासिल जानकारी के संबंध में कार्रवाई करते हुए अतिरिक्त एस पी (आप्रे.), वारंगल ने वन में डेरा डाले उग्रवादियों को निष्क्रिय करने के लिए एक आप्रेशन की योजना बनाई। योजना के अनुरूप आप्रेशन चलाने के लिए उन्होंने सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल के नेतृत्व में ४१ पुलिस कार्मिकों की दो यूनिटें प्रतिनियुक्त की। बलों की गतिविधियों को गुप्त रखने के लिए रात्रि में ही स्थल पर पहुंचने और पहली रात को ही आप्रेशन प्रारंभ करने की योजना बनाई गई। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (आप्रेशन) वारंगल द्वारा बनाई गई योजना के अनुरूप सभी पुलिस कार्मिक २७.३.२००५ को ०२०० बजे कम्बलपल्ली के वन क्षेत्र में पहुंच गए। श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर ने संयुक्त यूनिटों का नेतृत्व किया जिसमें जिला गार्ड की यूनिट I एवं II शामिल थीं। सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल जिला गार्ड यूनिटों को अपने नेतृत्व में साथ लेकर ०४३० बजे ऐरमा कंड्रा गड्डा (एस ओ आई मानचित्र सं. ६५सी/२ में ४८७ में) नामक पहाड़ी की तली में पहुंचे जहां सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल चार दलों में विभक्त हो गए और उनमें से तीन को पहाड़ी के चारों ओर नाकेबंदी पार्टी के रूप में भेज दिया गया और वे शेष पार्टी के साथ आक्रामक गुप्त के रूप में एक पहाड़ी के ऊपर तक चढ़ने के बाद जब उनको वहां उग्रवादियों की हलचल का कोई आभास नहीं हुआ सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल ने आस खोए बिना अपनी पार्टी को प्रेरित किया और पुनः दल को दो भागों में विभक्त करके क्षेत्र में खोजबीन की। खोजबीन के दौरान श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर को पानी की केन ले जाते हुए दो उग्रवादी (जो शस्त्र युक्त जंगल पैच ड्रेस में थे) एक अन्य पहाड़ी की ओर जाते हुए दिखे। तत्काल श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर श्री सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल को वी एच एफ सैट से सतर्क किया और उन्हें उग्रवादियों की नजर से बचाए रखा और गुप्त रूप से उनका पीछा किया। सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर ने दूसरी पहाड़ी पर कुछ शोर सा सुना और यह पाया कि कुछ सशस्त्र व्यक्ति पैच ड्रेस में पहाड़ी के ऊपर की ओर जा रहे हैं। उन्होंने सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर को सतर्क किया और उस क्षेत्र की ओर जाने की सलाह दी। श्री सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर अपनी गोपनीयता बनाए रखने के लिए सभी सावधानियां बरतते हुए सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर की टीम पास पहुंचे और फिर दोनों टीमों मिलकर एक बन गई और इस टीम ने पानी भरने आए उग्रवादियों का धीरे से पीछा किया। लगभग ०९०० बजे श्री सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल सीधी चढ़ाई होने के कारण बड़ी कठिनाई से पहाड़ी के ऊपर पहुंचे और वहां से उन्होंने डेरा डाले उग्रवादियों के डेरे के चारों ओर के शू भाग का परिमाण नापा और सामने से आक्रमण करने (सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल सहित ४ कार्मिक) और



नाकाबंदी करने (४+३कार्मिक) सहायक गोलीबारी करने और उग्रवादियों का बचकर भाग निकलना निषिद्ध करने का निर्णय लिया। चूंकि झाड़ियों, वन और उबड़-खाबड़ भूभाग के कारण दिखाई कुछ कम दे रहा था। इसलिए सर्वश्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर ने अपनी छोटी सी आक्रामक पार्टी के साथ बैठक कर रहे उग्रवादियों के नजदीक तक पहुँचने के लिए जमीन पर रेंगना शुरू किया। जब सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल अपनी पार्टी के साथ उनके बहुत नजदीक तक पहुँच गए तो उनमें से एक उग्रवादी ने उन्हें देख लिया और उन पर स्वचालित हथियार में लगातार गोलीबारी की। उग्रवादियों के बहुत नजदीक तक पहुँचे हुए सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल ने अपनी टीम के साथ तुरंत प्रतिक्रिया की और शेष दो पुलिस कांस्टेबलों की सहायता से आक्रमण किया। उग्रवादी ने सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल को जान से मारने के इरादे से उन पर स्वचालित हथियारों से गोलीबारी की। सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल और उनकी पार्टी ने कम संख्या में होने के बावजूद अपनी जान की परवाह न करते हुए बहादुरी से जवाबी कार्रवाई की। गोलीबारी को जारी रखते हुए वे उग्रवादियों के डेरे की ओर बढ़े और उन्होंने एस एफ राईफल और ८ एम एम राईफल से गोलीबारी कर रहे उग्रवादियों को मार गिराया। शत्रु की गनशोट पर बहुत नजदीक से गोलीबारी की गई। गोलियां सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल के पास से सनसनाहट करती गुजर रही थीं। इसी बीच सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल के अनुदेश पर नाकेबंदी पार्टी ने सुरक्षा कवर की गोलीबारी की और उग्रवादियों को बचकर भागने से रोक दिया। सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल ने उग्रवादियों पर गोलीबारी जारी रखते हुए, अपने जीवन की परवाह न करते हुए उग्रवादियों को मार गिराया। शेष दो उग्रवादी सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल के आक्रमण को भांप कर, घने जंगल और गोलपत्थरों की आड़ का लाभ उठाकर वहां से भाग गए। सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल ने अपनी टीम के साथ कुछ दूरी तक उग्रवादियों का पीछा किया। यह आप्रेशन १००० बजे समाप्त हो गया।

सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर, सिरा सतीश बाबू, सब इंस्पेक्टर और कुमारम रामा राव, कांस्टेबल और उनकी टीम की बहादुरी पूर्ण कार्रवाई से सी पी आई (एम एल) प्रजाप्रतिगटना और ए एल टी ग्रुपों की बहुत क्षति हुई और निम्नलिखित व्यक्ति मारे गए:-

- i. धन्नापाथुला कुमार स्वामी उर्फ वेणु, सुपुत्र कुमारैया, २९ वर्ष बढेरा, निवासी चात्वी(V), गोविन्द पेट (एम), स्टेट कमेटी का सदस्य और सी पी आई (एम एल) प्रजाप्रतिगटना का डी सी एस सम्भाम।
- ii. ए.एल टी उग्रवादी कुंज कोमलु उर्फ सत्यम मास्टर उर्फ सत्यम उर्फ चांद पुत्र कुमारैया, ४० वर्ष,

- कोया निवासी मुकलपल्ली (V) कोथागुडा (एम) आदिवासी लिब्रेशन टाईगर का दंडकारण्य सचिव।
- iii. थाती कृष्ण पुत्र वेंकया, ३० वर्ष निवासी तिरुमलगिरि (V) कोथागुडम (एम) प्रजाप्रतिगटना के वेणुदलम का दल सदस्य।
- iv. कंडाति लक्ष्मण उर्फ लक्ष्मैया पत्नी सत्यनारायण ३० वर्ष, कमारा निवासी गर्ला (V) जिला के एम एम प्रजाप्रतिगटना के वेणुदलम का दल सदस्य।

इस मुठभेड़ में घटनास्थल से एक स्पिंग राईफल, ३ राईफल ८ एमएम, एक एस बी बी एल और पार्टी साहित्य और कपड़ों से भरे १२ बैग तथा नकद १,७०,००० रुपये की बरामदगी हुई। यह घटना महबूबाबाद पुलिस स्टेशन (आर) में आई पी सी की धारा १४९, के साथ पठित धारा १४७, १४८, ३०७ और शस्त्र अधिनियम की धारा २५(१)(क) के अधीन अप.सं. ४०/०५ के रूप में दर्ज है।

इन घातक उग्रवादियों ने अनेक अपराध किए थे जिनमें शामिल हैं:- वारंगल और खम्माम जिलों में धन ऐंठना, हमला करना, आगजनी और हत्याएं करना और क्षेत्र के लोगों के बीच आतंक पैदा करना। धनपाथुला डूमरस्वामी उर्फ वेणु और कुंज कोमलु उर्फ राम क्षेत्र में कुख्यात थे और वे अपनी गुप्त गतिविधियों से लोगों को आतंकित करते रहते थे। इस मुठभेड़ के परिणामस्वरूप, प्रजाप्रतिगटना और ए एल टी दोनों का ही मनोबल गिरकर रसातल तक पहुंच गया।

इस मुठभेड़ में, सर्व श्री यानाबाथुला संजीव राव, रिजर्व सब इंस्पेक्टर और के. रामा राव, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २७ मार्च, २००५ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ५७-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. बिल्लू आदिनारायण  
असिस्टेंट असाल्ट कमांडर/रिजर्व सब इंस्पेक्टर
२. गुंटा केमदास  
हैड कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

यह आन्ध्र प्रदेश राज्य के नल्लामाला जंगल में दुर्दांत माओवादी गोरिल्लाओं के साथ परस्पर चली गोलीबारी का एक मामला है जिसमें अत्यन्त महत्वपूर्ण नेताओं सहित चार कुख्यात चरमपंथी मारे गए थे और एस एल आर और ३०३ राइफलों जैसे घातक हथियारों की बरामदगी हुई थी।

आन्ध्र प्रदेश राज्य के नलगोंडा, महबूबनगर, प्रकाशम, गुंटूर और कुरनूल जिले सी पी आई माओवादियों की गतिविधियों से अत्यधिक प्रभावित हैं। अपना गोरिल्ला आधार बनाने के लिए ये माओवादी उक्त जिलों के वन क्षेत्रों में बसे हुए हैं। वे परिवहन के लिए कृष्णा और डिन्डी नदियों का भी इस्तेमाल कर रहे हैं। विगत पांच वर्षों के दौरान वे अनेक मासूम नागरिकों और पुलिस कार्मिकों की बेतहाशा हत्या करने में संलिप्त रहे हैं। बोडु सैलु उर्फ कुर्मिया, जिला समिति सदस्य, नलगोंडा और महबूबनगर जिलों के गांवों में अपनी निर्ममता और भयावहता तथा आतंक के लिए कुख्यात है। चूंकि पुलिस उसका निरंतर पीछा करती रहती है, कुर्मिया पुलिस पर गोली चलाकर कम से कम १० बार भागा है और क्षेत्र में हत्याओं सहित जघन्य अपराधों को अंजाम दिया है। आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा माओवादियों के साथ शांतिवार्ता किए जाने के दौरान कुर्मिया के नेतृत्व में माओवादियों ने पार्टी फंड के नाम पर लोगों से लाखों रुपए लूटे।

दिनांक २९.४.०६ को ११.०० बजे, यह सूचना प्राप्त हुई कि ४-५ सदस्यों का एक माओवादी गुप मुड्डीमडुगु क्षेत्र में डिन्डी और कृष्णा नदी के संगम पर घूम रहा है और उनकी योजना कोई अपराध करने की है। तत्काल ही श्री बी. आदित्यनारायण के नेतृत्व में ग्रेहाउन्ड के २२ सदस्यों की एक एस-२ बी ए/यूनिट, एक कैडेट आर एस आई, और दो जिला पुलिस कार्मिकों को २९.४.०६ की रात्रि में उस क्षेत्र के लिए रवाना किया गया।

३०.४.०६ को १२.०० बजे कुर्मिया, डी सी एम के नेतृत्व में ४ माओवादियों ने नागार्जुग सागर के पास नागार्जुग कोंडा में आन्ध्र प्रदेश पर्यटन विभाग की २ नावों का अपहरण कर लिया। ये दोनों नावें आन्ध्र प्रदेश के पर्यटन विभाग द्वारा कृष्णा नदी में स्थित एक द्वीप नागार्जुग कोंडा तक नागार्जुग सागर से

पर्यटकों के लाने-ले-जाने के लिए इस्तेमाल की जा रही थी। चारों माओवादियों ने बंदूक की नोक पर पर्यटकों को धमकी दी और नाव से बाहर आने के लिए कहा। माओवादियों ने दोनों नावों का उसके ९ कर्मीदल सहित अपहरण कर लिया और दोनों नावों को रस्से बांध कर श्रीसेलम की ओर दक्षिण दिशा में भाग गए। कर्मीदल ने माओवादियों से उन्हें कोई नुकसान न करने की अपील की और नाव को नष्ट न किए जाने का भी अनुरोध किया। माओवादियों ने कर्मीदल की पिटाई की और दोनों नावों को श्रीसेलम की ओर ३० कि.मी. तक ले गए। लगभग १५.०० बजे माओवादियों ने कर्मीदल को नावों से बाहर किया और एक नाव को आग लगा दी तथा दूसरी नाव में बारूद भर कर उसमें धमाका कर दिया। इससे आन्ध्र प्रदेश के पर्यटन विभाग का लगभग १.५० करोड़ रु. का नुकसान हुआ। २ नावों के अपहरण की सूचना लगभग १७०० बजे ग्रेहाउन्ड दल को दी गई। तथापि, उस समय तक नावों में धमाका किए जाने की सूचना न तो स्थानीय पुलिस को और न ही ग्रेहाउन्ड दल को पता चली। इसके बाद ग्रेहाउन्ड दल कृष्णा नदी पर पिडाकलपेंटा फेरी प्वाइंट की ओर इस प्रत्याशा से गया कि नावों सहित माओवादी वहां पहुंचेंगे। जब वे पिडाकलपेंटा फेरी प्वाइंट की ओर जा रहे थे तभी श्री बी आदित्यनारायण, आर एस आई, दल के नेता ने एक छोटी सी पहाड़ी पर एक छोटी सी झोंपड़ी को देखा। झोंपड़ी के दरवाजे को पत्थरों से ढककर बंद किया गया था। चूंकि दरवाजा लगाने का यह कोई परंपरागत तरीका नहीं था इसलिए श्री बी आदित्यनारायण ने श्री गुंटा केमदास को झोंपड़ी की तलाशी लेने का निदेश दिया। श्री गुंटा केमदास को वहां प्लास्टिक शीट का एक बंडल मिला। उस बंडल में ४ हैयर सैक, ४ माओवादी जैतूनी हरी वर्दियां और पार्टी-साहित्य तथा एक डायरी मिली। इस संदेह के आधार पर कि यह सामान उन्हीं ४ माओवादियों का है जिन्होंने नावों का अपहरण किया है, श्री बी आदित्यनारायण ने तुरंत एक योजना बनाई। श्री बी आदित्यनारायण ने दल को तीन उप-दलों में विभाजित किया। श्री बी आदित्यनारायण आर एस आई ने केवल ४ सदस्यों के साथ आक्रामक दल का नेतृत्व किया। १० और ११ सदस्यों वाले अन्य दोनों दलों को सुरक्षा प्रदाता दल बनाया गया, और उन्होंने जंगल के नजदीक अपनी स्थिति तैयार की। मुख्य आक्रामक दल को बहुत छोटा रखा जाना था क्योंकि टेंट के सामने वाला क्षेत्र बकरियों के चरागाह के कारण अवरोध रहित था और वहां पुलिस दल के संरक्षण के लिए कोई आश्रय स्थल नहीं था। मुख्य आक्रामक दल ने शाखाओं से बनी छोटी सी काष्ठ बाड़ के पीछे अपनी स्थिति तैयार की। जब पुलिस दल अपनी स्थिति संभाल रहा था तभी श्री आदित्यनारायण, आर एस आई ने अपने सिरों पर बंडल लादे, उन्हीं की ओर आते हुए ४ माओवादियों को देखा। अन्य दलों को तुरंत सचेत कर दिया गया। उस समय तक सूरज डूब चुका था और पहले ही घना अंधेरा हो चुका था। उन लोगों के पास आने पर ही श्री बी आदित्यनारायण, आर एस आई को यह पता चला कि उन्होंने अपने एक कंधे पर घातक हथियार लटकाए हुए हैं। उन्होंने पुकार कर उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। माओवादियों ने बंडलों को उतारकर नीचे रखा दिया और एस एल आर और ३०३ राईफलों से गोलीबारी करने लगे। श्री बी आदित्यनारायण, आर एस आई, जो मुख्य आक्रामक दल में थे, और माओवादी ग्रुप के बिल्कुल नजदीक थे, अपने दल के सदस्यों के साथ माओवादियों की ओर आगे बढ़े और जवाबी गोलीबारी की तथा अन्यो के पीछे छिपे २ आतंकवादियों को मार गिराया। ५० गज पीछे वाले २ माओवादी अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए भागने लगे। सुरक्षा प्रदाता दल के सदस्य भागते हुए दोनों उग्रवादियों को घेरने के लिए दोनों ओर से आगे बढ़े। सुरक्षा प्रदाता दल ने एक महिला सदस्य को मार गिराया। लेकिन कुर्मिया अपने और पुलिस के बीच कुछ दूरी बनाए रख सका। कुर्मिया द्वारा एस एल आर से की जा रही गोलीबारी के कारण पुलिस आगे नहीं बढ़ पा रही थी। श्री गुंटा केमदास अपने जीवन की परवाह न करते हुए गोलियों की बौछार में ही तेजी से आगे बढ़े और कुर्मिया को मार गिराया।

परस्पर चली इस गोलीबारी से एक डी सी एम और ३ दलम संदस्य मार गिराए गए। ग्रेनेडों, वाकी-टाकी सैटों सहित एक एस एल आर और तीन .३०३ हथियार बरामद किए गए। इस मुठभेड़ में आमतौर पर सी पी आई-एम एल माओवादी गुप को और विशेष रूप में नल्लामाला वन प्रभाग को बुरी तरह से झकझोर कर रख दिया। यह एक ऐसी सर्वोत्तम मुठभेड़ थी जो सघन नल्लामाला के कठोर पर्वतीय क्षेत्र में घटित हुई थी। सनसनी खेज अपराध करने वाले उग्रवादियों को पुलिस द्वारा तत्काल निष्क्रिय कर दिए जाने की कार्रवाई से पुलिस को सम्मान मिला और भविष्य में ऐसे किसी अपराध को करने के प्रति माओवादियों के मन में डर की भावना भर गई।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री बिल्लू आदिनारायण, असिस्टेंट असाल्ट कमांडर/रिजर्व सब इन्स्पेक्टर और गुंटा केमदास, हैड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ३० अप्रैल, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ५८-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

#### अधिकारी का नाम और रैंक

श्री बंदापल्ली श्रीनिवासुलु  
रिजर्व सब-इन्स्पेक्टर

#### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

अप्रैल, २००१ में, माओवादियों ने आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा के सीमावर्ती क्षेत्र में अपनी गतिविधियों का विस्तार करने के लिए आन्ध्र उड़ीसा सीमा विशेष आंचलिक समिति (ए ओ बी एस जेड सी) का गठन किया। इस समिति के अन्तर्गत आन्ध्र प्रदेश के चार जिलों पूर्वी गोदावरी, विशाखापत्तनम और श्रीकाकुलम और उड़ीसा के पांच जिलों - गाजापट्टी, गंजम, रायगढ़, कोरापुट और मलिकागिरी रखे गए। सी पी आई, एम एल, पी डब्ल्यू ने ए ओ बी एस जेड सी का गठन क्रांतिकारी आंदोलन के लिए अनुकूल भू-भाग और प्रेरक वातावरण होने के कारण उत्तरी तेलंगाना और दण्डकारण्य के बीच आवाजाही के लिए संपर्क बनाने के लिए किया है।

दिनांक २.२.२००६ को ए ओ बी एस जेड सी में पूर्वी गोदावरी जिले की दोकराई पुलिस स्टेशन की सीमा क्षेत्र के गर्थीड्यू रिजर्व जंगल में माओवादी गुरिल्लाओं की हलचल के बारे में सूचना प्राप्त हुई। यह पूर्वी घाटों का एक हिस्सा है जिसमें १००० मी. और इससे अधिक ऊंची चोटियां हैं। इस क्षेत्र विशेष में पहाड़ियां आपस में इतनी सटी हुई हैं कि वहां वाहन योग्य सड़कें नहीं बनाई जा सकतीं। वहां केवल पैदल ही जाया जा सकता है और रास्ते भी कुछ ही ज्ञात हैं। ज्ञात रास्तों से जाना बहुत ही जोखिमपूर्ण है क्योंकि उन मार्गों में माओवादियों ने बारूदी सुरंग बिछा रखी है। इन मार्गों पर बारूदी सुरंगों और दोहरी सुरंगों के अनेक विस्फोट किए जा चुके हैं। इन क्षेत्रों में पुलिस दलों पर बहुत बार अनेक बारूदी और दोहरी सुरंगों के विस्फोट किए गए हैं। परिणामस्वरूप पुलिस दलों को पूरी तरह से गावों के पार से होकर जाने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

सूचना मिलने पर श्री बी श्रीनिवासुलु के नेतृत्व में १७ कार्मिकों की ग्रेहाउन्ड की एक आक्रमक यूनिट ३.६.२००६ की रात्रि को गर्थीड्यू रिजर्व वन की ओर गई। उन्होंने कोर क्षेत्र तक पहुंचने के लिए पहाड़ियों के ऊपर-नीचे के १५ कि.मी. के मार्ग की ग्रामों के पार से यात्रा की। उन्होंने ४ और ५ तारीख को वन क्षेत्र में छानबीन की जो व्यर्थ ही रही। ५ तारीख की रात को उन्होंने माओवादियों के जनजातीय थंडा (हेमलेट) के दो गढ़ों अर्थात् चिंजेन्कोटा और तांजेन्कोटा के बीच एक छोटी पहाड़ी पर विश्राम किया। ६ तारीख को प्रातः ०५२० बजे, जब पौ फट रही थी और यूनिट छानबीन शुरू कर रही थी श्री बी. श्रीनिवासुलु ने देखा कि शस्त्रयुक्त तीन व्यक्ति चिंजेन्कोटा से तांजेन्कोटा की ओर उत्तर से दक्षिण की ओर पीछे की तरफ से आ रहे हैं। वहां मार्ग के दोनों ओर दो पहाड़ियां हैं और पुलिस दल मार्ग के पश्चिम की ओर था। वहां पर दोनों पहाड़ियों के दक्षिणी तरफ पश्चिम से पूर्व की ओर एक नाला बह रहा है। सशस्त्र माओवादियों को देखते ही श्री बी श्रीनिवासुलु ने अपने दल को तीन दलों में विभाजित कर दिया। एक दल को पहाड़ी पर ही कुछ दूरी से यह देखने के लिए छोड़ दिया गया कि तीनों माओवादियों का दल केवल स्काउट दल है जबकि बाकी माओवादी पीछे से आ रहे हैं। एक दल को माओवादियों के नाले से होकर भागने की स्थिति में नाले पर नालाबंदी करने के लिए दक्षिण-पूर्व दिशा में भेजा गया। श्री बी श्रीनिवासुलु ने ५ सदस्यों वाले आक्रमक दल का नेतृत्व किया जिसमें से दो को पुनः नाले को घेरने के लिए पश्चिम की ओर रवाना किया गया। इसी बीच माओवादी वन क्षेत्र से बाहर आ गए और भारी घास वाली १०० गज की पट्टी को पार करके वे नाले के पास पहुंचे। यद्यपि सुरक्षा कवर न होने और खुले मैदानी क्षेत्र में आने के लिए बाध्य श्री बी श्रीनिवासुलु अन्य २ साथियों सहित ट्रेकिंग करके माओवादियों की ओर बढ़ते रहे। जब वे नाले के पास पहुंचने ही वाले थे तभी माओवादियों ने देखा कि पुलिस दल उनकी तरफ ट्रेकिंग करके आ रहा है तभी उन्होंने उन पर गोली चला दी। श्री बी श्रीनिवासुलु, जो आगे थे और जिनके पास शत्रु की गोलीबारी से बचने के लिए किसी भी प्रकार का कोई सुरक्षा कवर नहीं था, उनको जवाबी गोलीबारी करनी पड़ी। श्री बी श्रीनिवासुलु द्वारा सहज रूप से और लक्ष्य साध कर की गई गोलीबारी और उनके साथियों द्वारा दिए गए पूरे सहयोग से तीनों माओवादी बेतहाशा होकर नाले में गिर गए। इसी बीच पहाड़ी की तरफ से मार्ग अवरुद्ध कर रहे दल ने भी यह सूचना दी कि उस क्षेत्र में माओवादियों की किसी हलचल का कोई संकेत मौजूद नहीं है। श्री बी श्रीनिवासुलु के नेतृत्व में पुलिस दल द्वारा किए गए साहसिक आक्रमण के कारण ही तीन दुर्दांत भूमिगत माओवादियों को निष्क्रिय किया जा सका जिनमें से एक एस. चंदू उर्फ रमेश, एरिया कमेटी सदस्य, वरिष्ठ माओवादी कार्यकर्ता था जो पुलिस दलों पर आक्रमण किए जाने सहित अनेकों अपराधों के लिए उत्तरदायी था। अन्यो की पहचान गर्थीड्यू दलम के

सदस्यों के रूप में की गई। मृतक माओवादियों के कब्जे से तीन ग्रेनेडों सहित ४० गोलियों सहित एक एस एल आर, ३५ गोलियों सहित एक .३०३ और २१ गोलियों सहित एक कार्बाइन बरामद की गई।

इस मुठभेड़ में, श्री बंदापल्ली श्रीनिवासुलु, रिजर्व सब-इन्स्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ६ जून, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ५९-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

#### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. ए वी रंगनाथ  
अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक
२. आर राम बाबू  
रिजर्व सब-इन्स्पेक्टर
३. ए. वेंकटेश्वरालु  
आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल

#### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

सी पी आई-माओवादी "बंदूक की नौक पर सत्ता" के सिद्धान्त में विश्वास करते हैं और उनका नेटवर्क देश के १३ राज्यों में व्याप्त है। देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा बना यह वामपंथी उग्रवादी गुप अपने गुरिल्ला युद्ध और सनसनीखेज और घिनौने आक्रमणों को अंजाम देने वालों के रूप में जाना जाता है। नालामल्ला के येरागोंडापालेम और पुल्लालचेरू वन क्षेत्रों को माओवादी भाषा में गुरिल्ला बेस-II (जी बी-२) कहा जाता है। वर्ष २००५ तक इस क्षेत्र को अपराजेय माना जाता था। लगभग सभी महत्वपूर्ण माओवादी कार्रवाईयों को (जैसे कि पूर्व मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडु पर अलिपुरी कार्रवाई, विधायकों/पुलिस अधिकारियों की हत्या, पुलिस थानों पर अचानक हड़ताल आदि) जी बी-II क्षेत्र में सी पी आई (माओवादी) की आन्ध्र प्रदेश राज्य समिति के शीर्ष नेताओं द्वारा अंजाम दिया गया था। ८.१२.२००५ को श्री ए.वी. रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (आप्रेशन) को सूचना प्राप्त हुई कि सी पी आई माओवादियों के लगभग

३० सदस्य भरकापुर क्षेत्र के पुल्लालचेरेवू पुलिस स्टेशन की सीमा में एक पूर्णाधिवेशन आयोजित कर रहे हैं और पुलिस स्टेशनों एवं अन्य लक्ष्यों पर सनसनीखेज आक्रमण करने का षडयंत्र रच रहे हैं। पूर्णाधिवेशन स्थल नल्लामाला के घने पेल्लालचेरेवु वन में था। सर्व/श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर राम बाबू, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर, ए. वेंकटेश्वरालु, आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल प्रकासम जिले के नक्सल-रोधी विशेष दल के १९ अन्य पुलिस कार्मिकों के साथ ८.१२.२००५ को २३३० बजे आप्रेशन के लिए गए और श्री ए वी रंगनाथ ने दल का नेतृत्व किया। उन्हें ९.१२.२००५ को ०२३० बजे पुलाचेरुवु पुलिस स्टेशन, यारागुंडापलेम सर्किल मानचित्र सं. ५६पी/१२ के अन्तर्गत मेरीवेमुला "टी" जंकशन पर पहुँचाया गया। वे मैरीवेमुला के पश्चिम में "सिमराजुकुवा" को पार करके यूरेकोंडा पहाड़ी पर पहुँचे। उन्होंने ९.१२.२००५ को १२०० बजे तक आसपास के छिपने के सभी संभव स्थानों की जांच की। दोपहर के भोजन के बाद समस्त दल ने "अक्कापेलम पहाड़ियों" की तरफ जा कर क्षेत्र की छानबीन और जांच करना प्रारंभ किया। यह जांच न केवल उग्रवादियों की खोज करने के लिए की गई बल्कि उन बारुदी सुरंगों की खोजने के लिए भी की गई जो उन्होंने पुलिस कर्मियों को मारने के लिए बिछा रखी हो। लगभग १७३० बजे दल ने हाई प्रीक्वेसी सेट पर सम्पर्क किया और दल अक्कापेलम पहाड़ी पर चढ़ने लगा। क्षेत्र की गहन जांच की गई। समस्त दल ने इस स्थान पर घात लगाई क्योंकि यह स्थान अक्कापेलम जाने के मार्ग पर हो रही हलचल को देखने के लिए अनुकूल था। २०३० बजे पुलिस दल ने यूरेकोंडा की दिशा में कुत्तों को भौंकने के आवाज सुनी। कुत्ते २३०० बजे तक भौंकते रहे। सर्व/श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर राम बाबू, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर, ए. वेंकटेश्वरालु, आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल ने पूरे दल को सचेत किया और पुलिस कर्मियों को सतर्क रहने और कुत्तों के भौंकने की दिशा में किसी भी संदिग्ध हलचल पर निगाह रखने का निदेश दिया। अर्ध रात्रि को लगभग ००३० बजे श्री एन वी रामनैया, ए आर पी सी ने यूरेकोंडा पहाड़ी पर टार्च जलती हुई देखी और तत्काल उसकी सूचना श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक को दी। सर्व/श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर राम बाबू, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर, ए. वेंकटेश्वरालु, आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल ने इसकी संपुष्टि की और यूरेकोंडा पहाड़ी पर विशेषकर जहाँ टार्च चलाई गई थीं उस स्थान की खोजबीन करने का निर्णय लिया। सर्व/श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर राम बाबू, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर, ए. वेंकटेश्वरालु, आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल ने दल को पुनर्गठित किया (४ अन्य पी सी को अतिरिक्त रूप से शामिल करके), उत्प्रेरित किया और अक्कापेलम कोंडा से नीचे उतर कर नाला/रिवुलेट को पार किया और दक्षिण दिशा से (अर्थात् जलती टार्चों की हलचल वाले स्थान के विपरीत स्थान से) यूरेकोंडा पहाड़ी पर चढ़े। यह यूरेकोंडा पहाड़ी ३४४ मीटर ऊँची है। पुनर्गठित होते समय उन्होंने प्लास्टिक शीटों, कुछ फुस्फुसाने आदि की आवाजें सुनी। पुनर्गठित दल ने यह माना कि वे माओवादी थे। पुनर्गठित दल वापस आया और समस्त दल को विस्तृत रूप से सचेत किया। एक दल को आक्रामक दल और दो अन्य दलों को नाकेबंदी दल में विभाजित किया गया। आक्रामक दल का नेतृत्व सर्व/श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर राम बाबू, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर, ए. वेंकटेश्वरालु, आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल किया और सै.मौ. शकीर, पी सी और पी.तिरुमल राजू, पी सी नामक अन्य दो कार्मिकों ने उनके साथ मिलकर ०३०० बजे दबिश देने की कार्रवाई प्रारंभ की। आक्रामक दल ०४०० बजे तक यूरेकोंडा की फुटहिल्स तक पहुँच गया। पहाड़ी पर चढ़ना शुरू किया और पौ फटने के समय (प्रातः सलगभग ५.३० बजे) जब वे लक्ष्य क्षेत्र में पहुँचने ही वाले थे तभी माओवादियों ने पुलिस दल की हलचलों



को देख लिया और तत्काल बारूदी सुरंग में विस्फोट करने के अलावा पुलिस दल पर गोलीबारी प्रारंभ कर दी। सर्व/श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर राम बाबू, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर, ए. वेंकटेश्वरालु, आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल अपने दल के साथ रेंगते हुए और रणनीतिक तरकीब अपनाते हुए उग्रवादियों की ओर बढ़े। भारी गोलीबारी के बावजूद श्री सर्व/श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर राम बाबू, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर, ए. वेंकटेश्वरालु, आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल रेंगते हुए और आगे गए और माओवादियों के शिविर में घुस गए। उग्रवादियों द्वारा उनकी ओर दो हथगोले फेंके गए जिनमें एक हथगोला अधिकारियों के समक्ष फटा। सर्व/श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर राम बाबू, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर, ए. वेंकटेश्वरालु, आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल आश्चर्यजनक ढंग से उस धमाके से बच गए। रेंग रहे दोनों अधिकारी उठ खड़े हुए और उन्होंने बिना कोई सुरक्षा लिए अपनी ए के ४७ राईफल से भारी स्वचालित गोलीबारी की। सर्व/श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर राम बाबू, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर, ए. वेंकटेश्वरालु, आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल द्वारा की गई भारी स्वचालित गोलीबारी से दुस्साहिक कार्रवाई दल का एक सदस्य और वैकल्पिक गुंटूर की डिविजनल कमेटी सदस्य (डी सी एम) लातून संकारा कोटेश्वर राव उर्फ सुनील और एक अन्य दुर्दांत नक्सली डी सी एम इंजुमरी मरियम्मा उर्फ श्रुति उर्फ विजया मारे गए। मृतक दोनों माओवादी गुंटूर और प्रकासम जिलों में पुलिस अधिकारियों/राजनीतिज्ञों पर घातक हमले करने वालों के रूप में जाने जाते थे। वास्तव में एक मृतक अर्थात् सुनील वायरलेस प्रौद्योगिकी का इस्तोमल करके बारूदी/दिशागत सुरंग विस्फोट करने में माहिर था और दूसरी मृतक अर्थात् श्रुति ने मिलिट्री प्लाटून के साथ मिलकर पुल्लाचेरु मंडल के वेंकटरेड्डी पल्ली और आर उम्मेदिवरम ग्रामों में २४.११.२००५ को दो हत्याएं की थीं आई पी सी की धारा १४९, जो आई ए अधिनियम की धारा २५, २७ और ए पी पी एस अधिनियम की धारा ८ के साथ पठित धारा १४८, ४३५, ३२६, ३०७, ३०२ के अन्तर्गत पुल्लाल चेरु पुलिस स्टेशन के अपराध सं. ४१/२००५ की विषय वस्तु है जिसमें श्री बोगीरेड्डी वेंकटेश्वर की हत्या की गई थी और आई पी सी की धारा १४९, आई ए अधिनियम की धारा २५, २७ और ए पी पी एस अधिनियम की धारा ८ के साथ पठित धारा १४८, ४३५, ३०२ के अन्तर्गत पुल्लालचेरु पुलिस स्टेशन के अपराध सं. ४२/२००५ की विषय वस्तु है जिसमें श्री कुंदुरु बीरारेड्डी की हत्या की गई थी। इसी स्कवैड ने येरागोंडापतोमह में मचेरला राजमार्ग पर २.१२.२००५ को दो बसों में आग लगा दी थी और बस यात्रियों को आतंकित किया था। यह मामला पुल्लाल चेरु पुलिस स्टेशन के अपराध सं. ४४/०५ की विषय वस्तु है। गोलीबारी बंद होने के बाद मुठभेड़ स्थल से जो बरामदगी की गई वे हैं :- (क) एस एल आर राईफल-२, (ख) राकेट और उनके प्रक्षेपक-५ (ग) बारूदी सुरंग-३ (घ) दिशागत सुरंग-२ (ङ) हथगोले-३ (च) किट बैग-५ (छ) एस एल आर स्पीयर मैगजीन-४ (ज) ७.६२ गोलीबारूद-६० (झ) इलैक्ट्रॉनिक मल्टी मीटर-१ (ञ) वायरलेस स्केनर सैट-२ (ट) इलैक्ट्रिकल डेटोनेटर-२० (ठ) उग्रवादी साहित्य-२०। सर्व/श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर राम बाबू, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर, ए. वेंकटेश्वरालु, आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल ने उच्च स्तर की दिलेरी, दृढ़ता और सूझबूझ प्रदर्शित की। सर्व/श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर राम बाबू, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर, ए. वेंकटेश्वरालु, आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल की इस निर्भीक और वीरतापूर्ण कार्रवाई ने माओवादियों की इस उक्ति को झुठला दिया कि नाल्लामल्ला गुरिल्ला जोन अभेद्य है और नालामाला के उबड़-खाबड़ भू-भाग में माओवादी अजेय है। परस्पर गोलीबारी ने एक बड़े संकट को टाल

दिया क्योंकि माओवादी गुंटूर जिले में पुलिस स्टेशन पर हमला करने का षडयंत्र रच रहे थे। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि यह सारा आप्रेशन जिला विशेष दल द्वारा किया गया था और इसमें सफलता का श्रेय सर्व/श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर राम बाबू, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर, ए. वेंकटेश्वरालु, आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल की वीरतापूर्ण कार्रवाई और शीघ्र सोच को जाता है। नल्लामाला में नक्सल-रोधी आप्रेशन के इतिहास में यह परस्पर गोलीबारी का केवल ऐसा एक ही मामला है जिसमें केवल जिला विशेष दल द्वारा कए गए आप्रेशन में प्रभागीय समिति के दो माओवादी मारे गए। परस्पर गोलीबारी होने की पहाड़ी ३४४ मीटर ऊँची है और उसका ढलान ६० डिग्री का है। पहाड़ी पर सघन घास उगी हुई है जिनमें छोटी-छोटी छिपि हुई चट्टानें हैं जो पहाड़ी की छानबीन के कार्य को सामान्य परिस्थितियों में भी बहुत खतरनाक बना देती है क्योंकि वहां से कोई भी आसानी से फिसल सकता है। तथापि सर्व/श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर राम बाबू, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर, ए. वेंकटेश्वरालु, आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल जोखिम उठाकर पहाड़ी पर चढ़े और जब उनकी वहां उपस्थिति का राज खुल गया और वे दिशागत बारूदी सुरंगों की जद में आ गए तब उनका शौर्य जाग उठा और उन्होंने शत्रु पर हमला बोल दिया और अन्ततः उनके महत्वपूर्ण नेताओं को मार गिराया जबकि अन्य मैदान छोड़ कर भाग गए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री ए वी रंगनाथ, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर राम बाबू, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर और ए. वेंकटेश्वरालु, आर्मड रिजर्व पुलिस कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक १० दिसम्बर, २००५ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ६०-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, आंध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

#### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. गोप्ती नरेन्द्र,  
सब इंस्पेक्टर
२. एम राजेश,  
जूनियर कमांडो

#### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

सिरपुर मंडल के मेट्रोपल्ली वन क्षेत्रों में माओवादियों की हलचल के बारे में विश्वस्त सूचना मिलने पर २ ए ए सी (आर एस आई), एक कैडेट आर एस आई और ९ अन्य कार्मिक तथा साथ में एम. राजेश

कांस्टेबल सहित एक ग्रेहाउन्ड टीम को नामित - एक सिविल एस आई श्री जी नरेन्द्र (वर्तमान में इंस्पेक्टर) और एक गाइड पी सी के साथ क्षेत्र की छानबीन करने के लिए भेजा गया। इस १७ सदस्यीय टीम को १८.११.२००५ को रात को ले जाया गया और अदीलाबाद की सिरपुर ग्रामीण पुलिस स्टेशन की सीमा के मेनमगुडम (V) की बाह्य सीमा में छोड़ा गया। वे बेस कैम्प पर रह कर जांच करते रहे और उन्हें पता चला कि स्थानीय पुलिस की एक विशेष पार्टी की २१.११.२००५ को परस्पर गोलीबारी हुई है। तदनुसार उन्होंने अपने कार्यक्रम को संशोधित करके सभी कैम्प स्थलों की जांच करना प्रारंभ कर दिया। एक जूनियर कमांडो (पी सी) ने २०.११.२००५ को एक पुराने कैम्प स्थल और चिकित्सा और बिजली के सामान के एक ढेर का पता लगाया। इससे उत्साहित होकर उन्होंने २१ नवम्बर २००५ की सुबह तक नालों और पहाड़ियों की जांच करना जारी रखा। चूंकि दिया गया कार्य पूरा हो चुका था इसलिए यूनिट को अपने वापिस ले जाने वाले स्थान पर वापस लौटने के लिए कहा गया। वे अभी भी सतर्क थे और लौटते समय मार्ग के सभी स्थानों की जांच करते चल रहे थे। चलते-चलते एम. राजेश, कांस्टेबल, जो गाईड थे, ने सिविल ड्रैस में तीन सशस्त्र व्यक्तियों को देखा। उसने तत्काल ए ए सी (आर एस आई) दल के नेता को सतर्क कर दिया जिन्होंने तुरंत नामिति - १ सहित दल के अन्य सदस्यों को सतर्क कर दिया। समस्त टीम को पार्टियों में विभक्त किया गया। दल के नेता ए ए सी (आर एस आई) एस आई जी नरेन्द्र और एम राजेश, कांस्टेबल पार्टी-१ में शामिल थे। वे माओवादियों की ओर आगे बढ़े और उन्हें आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी। माओवादियों ने उन पर गोली चला दी जिसका पहली पार्टी ने जवाब दिया जिसमें एक माओवादी गिर पड़ा और दो अन्य भाग गए। पार्टी-१ ने उनका पीछा करना शुरू किया। गिरने वाले घायल माओवादी ने जब पुलिस पार्टी पर अपनी .३०३ राईफल से गोली चलाना जारी रखा हुआ था तभी टीम-१ की सुरक्षा दे रही टीम-२ ने गोली चलाई और उसे मार गिराया। इस बीच भागते माओवादियों का पीछा कर रही, टीम-१ पर भागते हुए माओवादियों में से एक ने भारी मात्रा में गोलियां चलाना शुरू कर दिया, बाद में जिसकी पहचान जिला कमेटी सचिव (डी सी एस) सूर्यम के रूप में हुई। वह अपनी ए के ४७ से भारी गोलीबारी कर रहा था। पार्टी -१ के सदस्यों सहित जी नरेन्द्र, एस आई और एम राजेश, कांस्टेबल बिना किसी सुरक्षा कवर के मैदान में डट गए और उसको निष्क्रिय कर दिया। सभी तीनों पार्टियों ने तीसरे माओवादी का पीछा करना जारी रखा। सबसे आगे चल रहे एम राजेश गिरे पड़े एक पेड़ के तने से टकरा गए जो सघन घास में पड़े होने के कारण दिखाई नहीं दिया था। वह गिरकर घायल हो गए। इसी बीच वे भागने वाले माओवादी के थक कर रुक जाने पर उसे पकड़ने में सफल हो सके। यूनिट की वापसी यात्रा में हुई परस्पर गोलीबारी में जी नरेन्द्र, एस आई और एम राजेश, कांस्टेबल ने करीमनगर, पश्चिमी प्रभाग के जिला कमेटी सदस्य और महाराष्ट्र के गढ़ चिरौली के अहीरी दलम के केन्द्रीय आयोजक का पीछा करने और उसे मार गिराने में अदम्य साहस और कर्तव्य परायणता का परिचय दिया जिसमें ए के ४७ एक .३०३ राईफल और एक ९ एम एम पिस्तौल और साथ ही ३१,७०० रुपए, नकद गोलीबारुद और सैल फोन आदि की बरामदगी हुई। एक दिन पहले बचकर भागते माओवादियों के साथ हुई परस्पर गोलीबारी से क्षेत्र में माओवादियों की गतिविधियों के समाप्त होने की घंटी बज गई। विशेष रूप से जिला कमेटी सचिव के मारे जाने से लोगों और पुलिस के विश्वास को बल मिला और उनके मन को शांति मिली और उस क्षेत्र में माओवादियों की गतिविधियों को पटाक्षेप हो गया।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री गोप्ती नरेन्द्र, सब इंस्पेक्टर और एम. राजेश, जूनियर कमांडों ने अदम्य

वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २१ नवंबर, नवम्बर, २००५ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा,  
संयुक्त सचिव

सं. ६१-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, आंध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. पी वी त्रिनाथ  
असिस्टेंट एसाल्ट कमांडर/रिजर्व सब इंस्पेक्टर
२. डी सुरेन्द्र बाबू  
सीनियर कमांडो
३. टी. वी. सत्यानारायण  
सब इंस्पेक्टर

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक २५.४.२००६ को पुलिस अधीक्षक, कडापा को पुट्टंगी मडुगु क्षेत्र के आसपास माओवादियों की हलचल होने के बारे में सूचना मिली। ऐसा विश्वास था कि पुट्टंगी मडुगु के पास जल बिन्दु के आस पास एक प्रशिक्षण केन्द्र चल रहा था। पुलिस अधीक्षक कडापा ने २५.४.२००६ को बेस कैम्प में ग्रेहाउंड यूनिट के कार्मिकों को समस्त जानकारी से अवगत कराया। ग्रेहाउंड यूनिट कार्मिकों में भूभाग की जानकारी रखने वाले श्री टी.वी. सत्यानारायण, एस आई को स्थानीय अधिकारी के रूप में शामिल किया गया। सर्वश्री पी.वी.त्रिनाथ, असिस्टेंट एसाल्ट कमांडर/ रिजर्व सब इंस्पेक्टर, डी सुरेन्द्र बाबू, सीनियर कमांडो, टी वी सत्यानारायण, सब इंस्पेक्टर सहित यूनिट कार्मिकों को बेस कैम्प से ले जाकर २३-३० बजे से विकादिपल्ली गांव की बाह्य सीमा (मानचित्र ५७एन/४) में पहुंचाया गया। पुलिस टीम ने अगले दो दिनों तक वन क्षेत्र की पूरी तरह से छानबीन की किंतु उन्हें उग्रवादियों का कोई सुराग नहीं मिला। यह भूभाग अत्यंत दुर्गम था जिसमें ऊंची पहाड़ियां और मोटे काटेदार झाड़ियां थी। पेड़ों के नीचे उगी झाड़ियों और पत्थरों ने जंगल में चलना दुष्कर बना दिया था। छानबीन के तीसरे दिन अर्थात् २८.४.२००६ को जब यूनिट पुलुस गुंटालु के पास इवाली कानावागु (एक नाला) पहुंची तो उन्होंने कुछ आवाजें सुनी। उन्हें संदेह हुआ कि शायद उग्रवादी उस क्षेत्र में डेरा डाले हुए हैं। उत्तर से दक्षिण की ओर जा रही पुलिस पार्टी ने यूनिट को दो भागों में विभक्त करके संदेह वाले क्षेत्र की पूरी तरह से जांच करने का निर्णय लिया। एक टीम का नेतृत्व श्री पी वी त्रिनाथ ने किया

और डी सुरेन्द्र बाबू, श्री पी वी त्रिनाथ की टीम में थे। टी वी सत्यनाराण ग्रेहाउंड के अन्य ए ए सी (आर एस आई) के साथ एक अन्य टीम में थे। यह टीम नाले में उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ी जबकि श्री पी वी त्रिनाथ के नेतृत्व वाली टीम और श्री डी सुरेन्द्र बाबू संदेह वाले क्षेत्र की छानबीन करने के लिए पूर्व की ओर मुड़ गए। पूर्व में पर्वतीय क्षेत्र में जांच करके सर्वश्री पी वी त्रिनाथ और डी सुरेन्द्र बाबू दक्षिण की ओर मुड़े और ऐसे क्षेत्र में पहुंच गए जहां चारों ओर अन्य भू-भाग से भिन्न, हरियाली ही हरियाली थी। वहीं श्री पी वी त्रिनाथ ने अपनी टीम को दो पार्टियों में विभक्त किया। नामिति-२, एस सी २८३९ के नेतृत्व वाली पार्टी आगे बढ़ी और दक्षिण की ओर से क्षेत्र को कवर किया जबकि श्री पी वी त्रिनाथ के नेतृत्व वाली पार्टी ने दक्षिण पूर्व दिशा से क्षेत्र को कवर किया। इसी बीच, श्री टी वी. सत्यनारायण के नेतृत्व वाली टीम ने जिलेटिन की छड़ों पर लपेटे जाने वाले कागज और बचे हुए पके चावल नाले में देखे। उनकी पार्टी ने वी एच एफ पर अन्य पार्टियों को सतर्क कर दिया। इसी समय घनी झाड़ियों वाले क्षेत्र में प्रवेश कर रही श्री पी वी त्रिनाथ के नेतृत्व वाली पार्टी ने झाड़ियों वाले क्षेत्र में कुछ आवाजें सुनी। जूनियर कमांडो में से एक ने, जो स्काउट के रूप में में थोड़े आगे चल रहा था, माओवादी कैम्प के लिए संतरी की ड्यूटी करते एक उग्रवादी को देखा। जब तक वह पुलिस पार्टी के सदस्यों को सतर्क करता उससे पहले ही संतरी की ड्यूटी करने वाले माओवादी ने स्काउट को देख लिया और गोली चला दी। श्री पी वी त्रिनाथ ने उग्रवादियों के स्थान के बारे में अन्य पुलिस कर्मियों को सतर्क किया और भागने के सभी मार्ग कवर करने का उन्हें निदेश दिया। उन्होंने उग्रवादियों को भी आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी किन्तु वे लगातार गोली चलाते रहे। श्री पी वी त्रिनाथ के नेतृत्व वाली टीम ने दक्षिण पूर्व दिशा से आक्रमण किया जबकि नामिति-२ और अन्य कांस्टेबल अनिल कुमार अपनी जान की परवाह न करते हुए और उग्रवादियों की गोलियों का बहादुरी से सामना करते हुए दक्षिण से दक्षिण पश्चिम की ओर आगे बढ़े। सर्वश्री पी वी त्रिनाथ और डी सुरेन्द्र बाबू लगभग ३० फुट की दूरी से गोलीबारी कर रहे उग्रवादियों के आमने-सामने आ गए। स्वयं की रक्षा के लिए उनके पास कोई कवर नहीं था। यह भांप कर कि वे पुलिस पार्टी से घिर गए हैं उग्रवादियों ने एस एल आर और अन्य राईफलों से लगातार गोलीबारी शुरू कर दी। फिर भी श्री पी वी त्रिनाथ और डी सुरेन्द्र बाबू अपनी टीम के सदस्यों की सहायता से आगे बढ़कर प्रहार करते रहे जिसके फलस्वरूप शत्रु पक्ष में भ्रम की सी स्थिति बन गई। उनके साहसिक प्रहार के परिणाम स्वरूप डी सी एम, कडपा सहित चार दुर्दांत उग्रवादी मारे गए। यह भांपकर कि वे पूर्व दक्षिण और पश्चिम की ओर से घिर गए हैं, उग्रवादियों ने नाले में उत्तर की ओर दौड़कर भागने का प्रयास किया। तथापि उन्हें श्री टी वी सत्यनारायण और अन्य ग्रेहाउंडों ए ए सी/ आर एस आई के नेतृत्व वाली पुलिस पार्टी से सामना करना पड़ा। श्री टी वी सत्यनारायण, एस आई और अन्य सदस्यों ने वहीं स्थिति संभाली और पुलिस के घेरे को तोड़ने के प्रयास में पुलिस पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए बचकर भागने का प्रयास कर रहे माओवादियों का रास्ता बंद करने का प्रयास किया। श्री टी वी सत्यनारायण एस आई और अन्यो के पास नाले में लगभग कोई सुरक्षा कवर नहीं था। फिर भी उन्होंने उग्रवादियों के हमले को विफल कर दिया। इस साहसिक आक्रमण में ३ उग्रवादी मौके पर ही मारे गए और शेष ने पश्चिम से बचकर भागने का प्रयास किया। पश्चिम का क्षेत्र श्री डी सुरेन्द्र बाबू ने अपने साथियों के साथ पहले ही कवर किया हुआ था। हालांकि वे खुले मैदान में थे और माओवादी पत्थरों से बनाए गए अपने मोर्चे के पीछे से हमला कर रहे थे फिर भी श्री डी सुरेन्द्र बाबू और उनकी टीम ने अपने जीवन की सुरक्षा के बारे में बिल्कुल भी चिंता किए बिना उग्रवादियों का बहादुरी से सामना किया। दो उग्रवादियों ने अपनी राईफलों से गोलियां चलाते हुए बच कर भागने का एक अंतिम प्रयास किया।

श्री डी सुरेन्द्र बाबू और उनकी टीम ने उनकी गोलियों का बहादुरी से सामना किया और उन्हें मार गिराया। इस प्रकार इस परस्पर गोलीबारी में कुल मिलाकर ९ दुर्दान्त उग्रवादी मारे गए। २ एस एल आर, एक .३०३ राईफल, एक ८ एम एम राईफल, एक स्टेनगन सहित कुल १० शस्त्रास्त्र बरामद किए गए। रायल सीमा प्रभाग क्षेत्र में माओवादियों के लिए यह एक बहुत बड़ा सदमा था क्योंकि अपने शिविर और अपनी राष्ट्र विरोधी गतिविधियां चलाने के लिए कोई सुरक्षित स्थान ढूंढने तक वे इसी क्षेत्र का इस्तेमाल करते रहते। नल्लामाला वन प्रभाग से खदेड़े जाने के बाद रायलसीमा प्रभाग में पहुंचे इन माओवादियों के लिए यह आप्रेशन किसी सदमें से कम नहीं था। यह लक्ष्य नामितियों सर्वश्री पी.वी.त्रिनाथ, असिस्टेंट एसाल्ट कमांडर/रिजर्व सब इंस्पेक्टर, डी सुरेन्द्र बाबू, सीनियर कमांडो, टी वी सत्यनारायण, सब इंस्पेक्टर के साहस, दृढ़ता, नेतृत्व और दृढ़ प्रतिज्ञता से हासिल किया गया था जिसे उन्होंने अपने जीवन को गंभीर खतरे के बावजूद अंजाम दिया।

इस मुठभेड़ में, सर्वश्री पी.वी.त्रिनाथ, असिस्टेंट एसाल्ट कमांडर/ रिजर्व सब इंस्पेक्टर, डी सुरेन्द्र बाबू, सीनियर कमांडो और टी वी सत्यनारायण, सब इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २८ अप्रैल, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ६२-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, आंध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. किल्लो अपाला स्वामी  
हैड कांस्टेबल
२. चौधे सुब्बा राव,  
हैड कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक २१.७.२००६ को श्री कालीदास वी आर लैला, पुलिस अधीक्षक, एस आई बी को अपने स्रोत से प्रकाशम जिले की येरागोंडापलेम पुलिस स्टेशन की सीमा में वन क्षेत्र के पास सी पी आई, एम एल के

माओवादियों की हलचल होने की सूचना मिली। उन्होंने जिला पुलिस और ग्रेहाउंड के साथ एक बैठक की और वन क्षेत्र के आंतरिक प्रतिकूल क्षेत्र में आप्रेशन चलाने की योजना बनाई। ६ ग्रेहाउंड यूनिटों को क्षेत्र की छानबीन करने के लिए आक्रामक यूनिट के रूप में तैनात किया गया और ५ जिला टीमों को नाकेबंदी टीमों के रूप में बचकर भागने वाले मार्गों को कवर करने के लिए तैनात किया गया। सभी छानबीन और नाकेबंदी पार्टियों को २१.७.२००६ की रात तैनात कर दिया गया। श्री कालीदास वी आर लैला, पुलिस अधीक्षक, विशेष आसूचना ब्रांच और ग्रेहाउंड श्री के अपाला स्वामी, जे सी २९१०, श्री चौधे सुब्बाराव, जे सी ५९७८ और श्री शैकशवाली, जे सी ५७९२ छानबीन पार्टियों में से एक पार्टी के सदस्य थे। ग्रेहाउंड टीमों ने उनको छोड़े जाने वाले स्थान से कोर क्षेत्र तक पहुंचने के लिए १८ किमी के रास्ते का सफर कौवे की उड़ान की तरह आड़े तिरछे रूप से चल कर, बहुत ही प्रतिकूल परिस्थितियों में और दुर्दम भू-भाग में, जहां पानी के स्थान कुछेक ही थे, गहरा नाला पार करके और सीधी खड़ी चट्टानों से होकर पूरा किया। प्रत्येक को सुपरिभाषित क्षेत्र सौंपा गया था और नामितियों के साथ टीम संदेह वाले क्षेत्रों के अति दक्षिण भाग की छानबीन कर रही थी। २३.०७.२००६ को १० बजे नामितियों के साथ पहाड़ी के शिखर पर पहुंचते ही ग्रेहाउंड ने जैतूनी रंग की की हरी ड्रेस में सशस्त्र माओवादियों के एक ग्रुप को देखा। उसी समय माओवादियों ने भी पुलिस पार्टी को देखा और ए के ४७, स्टेनगन और .३०३ राईफल जैसे स्वचालित हथियार से गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस पार्टी के पास कोई सुरक्षा कवर नहीं था क्योंकि उन्हें माओवादी कैप का पता अचानक ही चला था। पार्टी का नेतृत्व कर रहे और माओवादियों के अत्यंत नजदीक तक पहुंच गए, श्री कालीदास वी आर लैला, पुलिस अधीक्षक और श्री शैकशवाली, एच सी ने सबसे पहले गोलियों का सामना किया। उन्होंने निर्भीकता से माओवादी गोलीबारी का जवाब दिया। उनकी गोली लगने से एक संतरी महिला माओवादी गिर पड़ी। शेष पुलिस पार्टी को सतर्क कर दिया गया और माओवादियों के बचकर भागने के मार्गों को कवर करने के लिए तुरंत ड्रिल कार्रवाई की गई। प्रारंभिक प्रहार में श्री कालीदास वी आर लैला और श्री शैकशवाली, एच सी ने माओवादियों की सांस उखाड़ दी और वे दम दबाकर भागने लगे जहां कुछ दक्षिण की ओर भागे वहीं अन्य पहाड़ी की तराई में, पूर्व में नाले की तरफ भागे। दक्षिण की ओर भागने वालों का पीछा ४ कमांडों की एक टीम ने किया। ४ और टीम सदस्यों ने दक्षिण की तरफ भाग रहे माओवादियों का मार्ग अवरुद्ध करने का प्रयास किया। वे दक्षिण की ओर भाग रहे एक माओवादी को मार सके और दो माओवादियों को उन्होंने तब मार गिराया जब वे दिशा बदल कर पूर्व में नाले की ओर भाग रहे थे। इसी बीच शेष पुलिस पार्टी ने नाले में छलांग लगाकर बाकी बचे माओवादियों को अवरुद्ध करने का प्रयास किया। केवल श्री के अपाला स्वामी, जे सी और श्री चौधे सुब्बाराव, एच सी ही सफलतापूर्वक छलांग लगाकर उस नाले को पार कर सके जो पश्चिम से पूर्व की ओर बह रहा था और इसके बाद में पूर्व में भागने के मार्ग को अवरुद्ध करने के लिए पहाड़ी के चारों ओर भागे। अन्य उनके साथ कदम से कदम नहीं मिला सके और वे पहाड़ी के शिखर से माओवादियों को कवर करने के लिए लौट पड़े। श्री के अपाला स्वामी, जे सी और श्री चौधे सुब्बाराव, जे सी नाले में पहाड़ी के चारों ओर दौड़े और उस स्थान पर पहुंच गए जहां नाला उत्तर से दक्षिण की ओर से पहाड़ी के पूर्व की ओर बह रहा था। उस समय तक अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे माओवादी खड़ी ढलान से नीचे उतर आए और पहाड़ी की तराई में नाले पर पहुंच गए। तथापि, श्री के अपाला स्वामी, जे सी और श्री चौधे सुब्बाराव, जे सी ने उनके बाहर निकलने का रास्ता बंद कर दिया। अपनी सुरक्षा स्कवैड से घिरे राज्य समिति सचिव (एस सी एस) बचकर भागने का प्रयास कर रहा था। चूंकि उनकी वापसी का मार्ग प्रभावी रूप से अवरुद्ध कर दिया गया था इसलिए उनमें घबराहट फैल गई। इस संपूर्ण भिड़ंत में नाले में नहीं पहुंच सकी

पुलिस पार्टी ने भागते माओवादियों के पदचिन्हों को खोजते हुए पहाड़ी से नीचे उतरना प्रारंभ किया। एस सी एस और उसकी टीम को श्री के अपाला स्वामी, जे सी और श्री चौधे सुब्बाराव, जेसी की तीन पुलिस पार्टियों ने एक तरफ से, श्री शेकशेवाली के साथ ८ सदस्यों वाली एक पुलिस पार्टी ने एक ओर से, शेष पुलिस टीम ने नाले की तरफ भाग रहे माओवादियों की दिशा से पहाड़ी के शिखर की ओर से उन्हें घेर लिया। श्री शेकशेवाली और उनके साथियों वाली पुलिस पार्टी पर गोलीबारी करते हुए दक्षिण से नाले में भागने का प्रयास कर रहे दो और आतंकी पुलिस की गोली लगने से गिर गए। राज्य समिति सचिव, माधव और उसकी सुरक्षा स्कवैड के सदस्य वहां से बच कर भागने की फिराक में ए के -४७ और अन्य राईफलों से गोलीबारी करते हुए अभी भी नाले की ओर बढ़ रहे थे। वे श्री के अपाला स्वामी, जे सी और श्री चौधे सुब्बाराव जे सी के आमने-सामने हो गए जबकि उक्त अधिकारियों के पास किसी भी तरह का कोई सुरक्षा कवर नहीं था। श्री के अपाला स्वामी, जे सी, एस सी एस की एके-४७ से की जा रही गोलीबारी जैसी प्रतिकूल स्थिति के बावजूद आगे बढ़े और अपनी जान की परवाह न करते हुए उन्होंने गोलीबारी की। श्री के अपाला स्वामी, जे सी २९१० की उत्साहवर्धक और साहसिक प्रतिक्रिया से राज्य समिति सदस्य गिर पड़ा। इसी बीच श्री चौधे सुब्बाराव ने उन अन्य माओवादियों का बच कर निकलने का मार्ग अवरुद्ध कर दिया जो बचकर भाग निकलने के अंतिम प्रयास में निराशा से भरकर कुछ ही दूरी पर स्थित उस नाले तक पहुंचने के लिए लगातार गोलीबारी कर रहे थे जो पुलिस घेरे से बच कर भाग निकलने का प्रत्याशित स्थान था। कोई आड़ न होने के बावजूद भी चौधे सुब्बाराव, जे सी मैदान में खड़े हो गए और जवाबी गोलीबारी करके उन ८ माओवादियों को मार गिराया जो उनसे मुश्किल से २० फुट की दूरी पर थे। इस आप्रेशन में राज्य समिति सदस्य, २ एरिया समिति सदस्य, १ मिलिट्री प्लाटून सदस्य और ४ दलम सदस्यों सहित २ माओवादी मारे गए जिनके पास से ए के ४७, पांच .३०३ राईफलें, दो ९ एम एम पिस्तौल, एक डी बी बी एल, पांच ग्रेनेड, एक एस एल आर मैगजीन, अनेक वी एच एफ सैट और स्केनर तथा अन्य मदों के साथ २,३४,००० रुपये की बरामदगी की गई। राज्य समिति सदस्य आंध्र प्रदेश राज्य समिति क्षेत्र में निरर्थक हिंसा फैलाने का जिम्मेदार था। इस घटना ने माओवादियों को हिला कर रख दिया जिससे वे उबर नहीं सके। वे लम्बे अरसे तक जवाबी कार्रवाई के लिए भी पर्याप्त शक्ति नहीं जुटा पाए। सूचना एकत्रित करने वाले श्री कालीदास वी आर लैला ने परस्पर आप्रेशन में पुलिस पार्टी का मार्गदर्शन करके सम्पूर्ण आप्रेशन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्री के अपाला स्वामी, जे सी और श्री चौधे सुब्बाराव, जे सी ने नाले में छलांग लगाकर और शत्रु की गोलीबारी से बचाव न होने के बावजूद माओवादियों के बाहर निकलने के रास्ते अवरुद्ध करके की गई अपनी साहसिक पहल के द्वारा विशिष्ट भूमिका निभाई। बाहर निकलने का मार्ग अवरुद्ध करने के लिए जिस साहस का उन्होंने परिचय दिया और पहाड़ी के चारों ओर भागने में जिस गति, दृढ़ निश्चय, दृढ़ इच्छाशक्ति एवं कर्तव्य परायणता का उन्होंने परिचय दिया वह अन्य स्पर्धियों के लिए एक शानदार उदाहरण है। श्री शेकशेवाली ने सर्वप्रथम संतरी माओवादी को मारा, साहसिक आक्रमण करके उन पर गोली चलाई, अंधाधुंध गोलीबारी करने वाले माओवादियों का पीछा करते हुए आक्रमण जारी रखा और उन्हें मारने में टीम के अन्य सदस्यों के साथ सक्रिय रूप से भाग लिया। श्री कालीदास वी आर लैला, पुलिस अधीक्षक, श्री के अपाला स्वामी, जे सी श्री चौधे सुब्बाराव, जे सी तथा श्री शेकशेवाली, जे सी द्वारा प्रदर्शित बहादुरी, दृढ़ प्रतिज्ञता, प्रयोजन की समझ और उत्कृष्ट कौशल से आंध्र प्रदेश पुलिस को यश मिला जबकि माओवादियों की मनःस्थिति को एक जोरदार धक्का लगा।



इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री किल्लो अपाला स्वामी, हैड कांस्टेबल और चौधे सुब्बा राव, हैड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २३ जुलाई, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ६३-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

- सर्व/श्री  
१. ए.वी. रंगा  
रिजर्व सब-इंस्पेक्टर  
२. एम. सुरेन्द्र रेड्डी,  
कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक २६.१२.२००६ को डा. टी. प्रभाकर राव, पुलिस अधीक्षक, सर्व/श्री ए.वी. रंगा, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर और एम. सुरेन्द्र रेड्डी, कांस्टेबल को विशिष्ट सूचना मिली कि आन्ध्र-उड़ीसा सीमावर्ती विशेष आंचलिक समिति (ए ओ बी एस जेड सी) के उच्च पदस्थ माओवादी, सिलेरु और जी.के. वीधि पुलिस स्टेशन की सीमा पर सप्पेरला और पानसपल्ली गांवों के बीच जमरलोवा घने वन के निकट सप्पेरला कोठुरु पहाड़ियों में एक बैठक कर रहे हैं। डा.टी.प्रभाकर राव, पुलिस अधीक्षक, सर्व/श्री ए.वी.रंगा, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर और एम. सुरेन्द्र रेड्डी, कांस्टेबल, जो सिलेरु के एक शिविर में ठहरे हुए थे, ने डी आई जी, एस आई बी के अनुदेशों के अनुसार पुलिस अधीक्षक, विशाखापत्तनम के साथ सूचना का आदान-प्रदान किया और माओवादियों के संदिग्ध शिविर स्थल का घेराव करने की योजना बनाई। दिनांक २६.१२.२००६ की सायं को संदिग्ध क्षेत्र का घेराव करने के लिए चार जिलों के विशेष दल बनाए गए। पहले दल को लंकपकालू, पानसपल्ली, डेगलपालेम आदि गांवों के आस-पास के क्षेत्र का घेराव करने का काम सौंपा गया। सर्व/श्री ए.वी.रंगा, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर और एम.सुरेन्द्र रेड्डी, कांस्टेबल तथा एक जिले के विशेष दल के प्रभारी येर्नगुला कृष्ण किशोर, आर एस आई के साथ दूसरा दल डा.टी.प्रभाकर राव, पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में सप्पेरला कोठुरु कोंडा पहाड़ियों की ओर बढ़ा क्योंकि ग्रेहाउंड के आने तक की प्रतीक्षा करने के लिए पर्याप्त समय नहीं था। तीसरे दल ने सप्पेरला, अकलरु, अम्मावरी, धरकोंडा आदि को कवर किया और चौथे दल ने लंकलपल्ली, थुम्मलममिडी, बगडकोंडा गांवों को कवर किया।

दिनांक २७.१२.२००६ को १९२० बजे तक पहले दल पर, जो पानसपल्ली गांव के निकट वाले वन का घेराव कर रहा था, माओवादियों के एक गस्ती दल ने भारी गोलीबारी कर दी। गोलीबारी की सूचना मिलने पर डा.टी.प्रभाकर राव ने अपने नेतृत्व वाले विशेष दल को सतर्क कर दिया और जंपरलोवा के निकट शिविर लगाए उच्च पदस्थ माओवादियों के बच कर भागने से रोकने के वास्ते अतिरिक्त सावधानियां बरती। डा.टी.प्रभाकर राव ने पूरे दल को तीन ग्रुपों में विभाजित किया। डा.टी.प्रभाकर राव ने मुख्य एसॉल्ट ग्रुप का नेतृत्व किया, सर्व/श्री ए.वी.रंगा, रिजर्व सब इंस्पेक्टर और एम. सुरेन्द्र रेड्डी, कांस्टेबल ने दूसरे एसॉल्ट ग्रुप का नेतृत्व किया और आर एस आई कृष्ण किशोर को शिविर स्थल से माओवादियों के बच कर निकलने के संभावित मार्ग पर कट ऑफ दल का प्रभारी बनाया गया। डा.टी.प्रभाकर राव ने एसॉल्ट दलों को आगे बढ़ने का संकेत दिया ताकि शिविर खाली कर भागने के लिए माओवादियों को रास्ता न दिया जाए। एसॉल्ट दल, रेंगते हुए शिविर स्थल की ओर बढ़ रहे थे लेकिन संतरी को आगे बढ़ रहे पुलिस दल की भनक मिल गई और उसने जोर से "पुलिस" चिल्ला कर शिविर में रह रहे उग्रवादियों को सतर्क कर दिया और साथ ही पुलिस दल पर तेजी से गोलीबारी कर दी। शिविर में रह रहे लगभग १५ उग्रवादी सुरक्षा की दृष्टि से बेहतर स्थिति में थे इसलिए उन्होंने स्वचालित हथियारों से सभी दिशाओं में तत्काल अंधाधुंध गोलीबारी कर दी तथा साथ ही ग्रेनेड फेंके। डा.टी.प्रभाकर राव, पुलिस अधीक्षक ने उग्रवादियों को गोलीबारी रोकने और पुलिस के सामने समर्पण करने की चेतावनी दी तथा एसॉल्ट दलों को आदेश दिया कि वे उपलब्ध कवर लेकर उग्रवादियों के शिविर की ओर बढ़ें। चूंकि उग्रवादी ए के-४७, एस एल आर और अन्य स्वचालित हथियारों से लगातार भारी गोलीबारी करते रहे ताकि पुलिस कार्मिकों को मारा जा सके, इसलिए डा.टी.प्रभाकर राव, पुलिस अधीक्षक ने दल को आदेश दिया कि वे अपनी रक्षा में उग्रवादियों की गोलीबारी का जबाब दें तथा कट ऑफ दल को भी सतर्क कर दिया कि वे उग्रवादियों के बच कर भागने के रास्ते भी सील कर दें। डा.टी.प्रभाकर राव, पुलिस अधीक्षक, सर्व/श्री ए.वी.रंगा, रिजर्व उप-निरीक्षक और एम.सुरेन्द्र रेड्डी, कांस्टेबल ने गोलीबारी करते हुए अपने जीवन की परवाह किए बगैर उग्रवादियों के शिविर स्थल के निकट पहुंचे। कुछ उग्रवादियों ने बड़े पेड़ों और चट्टानों का कवर लिया तथा क्लेमोर सुरंगों में विस्फोट करके वे भागने में सफल हो गए तथा दूसरे उग्रवादियों ने शिविर स्थल से पुलिस पर लगातार गोलीबारी करके उन्हें व्यस्त रखा। डा.टी.प्रभाकर राव, पुलिस अधीक्षक, सर्व/श्री ए.वी.रंगा, रिजर्व उप-निरीक्षक और एम.सुरेन्द्र रेड्डी, कांस्टेबल ने उग्रवादियों का बहादुरी से मुकाबला किया और नियंत्रित गोलीबारी से उन्होंने उग्रवादियों की गोलीबारी को निष्क्रिय किया। उग्रवादियों ने २१.३५ बजे तक गोलीबारी जारी रखी। उग्रवादियों की ओर से गोलीबारी बंद होने पर पुलिस दल ने उस स्थान की तलाशी ली और शिविर स्थल पर एक पुरुष और एक महिला उग्रवादी का शव बरामद किया। मृत उग्रवादियों की पहचान बड़कपुर चन्द्रमौलि के रूप में, जो सेंट्रल कमेटी का सदस्य था तथा सेंट्रल मिलिट्री कमीशन (सी एम सी) का भी सदस्य था और करुणा उर्फ कविता उर्फ विजया के रूप में हुई जो ए ओ बी एस जेड सी की पूर्वी डिविजन की जिला समिति की सदस्य थी। मुठभेड़ स्थल से निम्नलिखित बरामदगियां की गईं:- एस एल आर (१), ३८ रिवाल्वर (१), एस बी बी एल (२), तपंचा (१), १२ बोर राउंद (६), ३८ राउंद (६), क्लेमोर सुरंगे (४), ग्रेनेड (२) इलैक्ट्रिक तार का बंडल (१) मेडिकल किट (१) बरामद की।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री ए.वी.रंगा, रिजर्व सब-इंस्पेक्टर और एम.सुरेन्द्र रेड्डी, कांस्टेबल ने अदम्य

वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २७ दिसम्बर, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ६४-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. श्री कमल कुमार गुप्ता,  
सब डिविजनल पुलिस आफिसर
२. रुहिन्द्र नाथ चंगमइ  
सब-इंस्पेक्टर
३. नबा कुमार बरुआ,  
सब-इंस्पेक्टर
४. धीरज चौधरी,  
कांस्टेबल
५. सोडा टिस्सो,  
कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक ०४.०३.२००७ की सुबह इस गुप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए कि ए ए एन एल ए के ८/९ उग्रवादियों का एक गुप्त, सरुपत्थर पुलिस स्टेशन के अंतर्गत बेतनीपत्थर गांव में आश्रय ले रहा है, श्री राणा भुयान, ए पी एस, पुलिस अधीक्षक, गोलाघाट ने श्री कमल कुमार गुप्ता, ए पी एस, एस डी पी ओ, सरुपत्थर को आवश्यक सूचना देकर निदेश दिया कि वे क्षेत्र में तलाशी अभियान चलायें। उसी दिन लगभग ०९४० बजे, एस डी पी ओ, सरुपत्थर ने सब इंस्पेक्टर रुहिन्द्र नाथ चंगमइ, ओ/सी सरुपत्थर पी.एस., सब-इंस्पेक्टर नबा कुमार बरुआ (ओ/सी बोरपत्थर पी.एस.) और ९वीं ए पी बटालियन/तीसरी ए पी बटालियन के कार्मिकों के साथ अभियान चलाने के लिए प्रातः लगभग १०.३० बजे बेतनीपत्थर गांव की ओर कूच किया। जब वे उस गांव के कोका ओरंग के मकान की ओर बढ़ रहे थे तो संदिग्ध ए ए एन एल ए उग्रवादियों ने घात लगाई और निकट के मकान से पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलीबारी कर दी। पुलिस दल ने अपने बचाव में मोर्चा संभाला और उग्रवादियों पर पलट कर गोलीबारी कर दी। श्री कमल कुमार गुप्ता, एस

डी पी ओ, सरुपत्थर ने स[ ]इंस्पेक्टर रुहिन्द्र नाथ चंगमइ (ओ/सी सरुपत्थर), सब-इंस्पेक्टर नबा कुमार बरुआ, ओ/सी बड़पत्थर पी एस, सी/२२० धीरज चौधरी, ९वीं ए पी बटालियन और सी/२६७ सोडा टिस्सो, तीसरी ए पी बी एन के साथ भारी गोलीबारी के बीच उग्रवादियों की ओर बढ़ना शुरु किया। इन्होंने अपने जीवन को जोखिम में डालकर उग्रवादियों के साथ नजदीकी लड़ाई लड़ी। जब दोनों ओर से गोलीबारी हो रही थी तो उग्रवादियों ने पुलिस दल पर रुक-रुक कर गोलीबारी करते हुए निकटवर्ती जंगल की पूर्व दिशा की ओर पीछे हटना शुरु कर दिया। एस डीपी ओ, सरुपत्थर के नेतृत्व में पांच सदस्यीय दल ने अपने जीवन को जोखिम में डालते हुए वीरता दिखाई और उनका पीछा करना आरंभ किया। एस डी पी ओ के नेतृत्व वाले पुलिस दल तथा भाग रहे उग्रवादियों के बीच भयंकर मुठभेड़ हुई जो लगभग २५/३० मिनट तक चली। जब गोलीबारी बंद हुई, पी.ओ. की तलाशी ली गई तो गोलियों से छलनी दो अज्ञात उग्रवादियों के शव बरामद हुए। जिन दो उग्रवादियों ने निकटवर्ती तालाब में संबुल के नीचे अपने-आप को छिपाया हुआ था उन्हें भी गिफ्तार कर लिया गया। पांच अन्य उग्रवादियों को पकड़ने के लिए पी.ओ. के निकटवर्ती क्षेत्रों की व्यापक तलाशी ली गई लेकिन वे भागने में सफल हो गए। पकड़े गए उग्रवादियों ने बाद में ए ए एन एल ए के मृत उग्रवादियों की पहचान (१) जार्ज एक्का, कार्बी-एंगलोंग का ग्रुप लीडर और (२) जोसफ मुंडा, कार्बी एंगलोंग के रूप में की। पकड़े गए दो उग्रवादी (१) जोसफ कुजुर, पुत्र मुंगरा कुजुर, मधपुर, पी.एस. बारपेटा और (२) जेम्स करकेटा, पुत्र ले. जोसफ करकेटा, चकिहोला नं. २ पी एस बोकाजन कार्बी-एंगलोंग थे। पी.ओ. की तलाशी के दौरान मृत उग्रवादियों के शव, मैग्जीन के साथ १(एक) एम-२१ राइफल, मैग्जीन के साथ १(एक) एम-१६ राइफल, जीवित चीनी ग्रेनेड के ३(तीन) नग, राकेट लांचर के चार (४) नग, जीवित गोली-बारुद के २२ (बाइस) नग, नौ (९) जोड़ी सेना की फटींग ड्रेस, ३(तीन) जोड़ी शिकारी जूते और तीन (नग) झोले बरामद हुए और जब्त किए गए जिनमें बड़ी मात्रा में ए ए एन एल ए संगठन के आपत्तिजनक दस्तावेज/दवाइयां/मोबाइल चार्जर आदि थे। इस संबंध में सरुपत्थर पी एस ने शस्त्र अधिनियम की धारा २५(१) (क)/२७ के तहत पठित आई पी सी की धारा १२० (ख)/३५३/३०७ और ई एस अधिनियम के तहत मामला सं. २०/०७ दर्ज किया। इस मुठभेड़ में श्री कमल कुमार गुप्ता, ए पी एस ने ए के-४७ राइफल से ४६ (छयालीस) राउंद, सब-इंस्पेक्टर रुहिन्द्र नाथ चंगमइ ने अपनी ९ एम एम पिस्तौल से १०(दस) राउंद, सब-इंस्पेक्टर नबा कुमार बरुआ ने ए के-४७ राइफल से ८२ (बयासी) राउंद, कांस्टेबल धीरज चौधरी ने ए के-४७ राइफल से ३०(तीस) राउंद और कांस्टेबल सोडा टिस्सो ने अपनी एस एल आर से २६ (छब्बीस) राउंद गोलीबारी की।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री कमल कुमार गुप्ता, सब डिविजनल पुलिस आफीसर, रुहिन्द्र नाथ चंगमइ, सब-इंस्पेक्टर, नबा कुमार बरुआ, सब-इंस्पेक्टर, धीरज चौधरी, कांस्टेबल और सोडा टिस्सो, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ४ मार्च, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ६५-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. अशीम स्वरगियारी,  
अपर पुलिस अधीक्षक
२. बीर बिक्रम गोगोइ,  
अपर पुलिस अधीक्षक
३. बृज मोहन बरुआ,  
उप पुलिस अधीक्षक

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक ०३.११.२००६ को लगभग ०५०० बजे इस आशय की गुप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए कि भारी मात्रा में हथियारों से लैस उल्फा के ८/१० उग्रवादियों ने मोरन पुलिस स्टेशन के तहत हुंगुंगिया गांव के धान के खेतों में अस्थायी शिविर बनाया हुआ है ताकि वे पुलिस बलों पर हमला कर सकें और जनता से जबरन धन ऐंठ सकें, श्री अशीम स्वरगियारी, ए पी एस, अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय), डिब्रूगढ़ ने श्री बीर बिक्रम गोगोइ, ए पी एस, अपर पुलिस अधीक्षक (बी), डिब्रूगढ़, श्री बृज मोहन बरुआ, ए पी एस, उप पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय), डिब्रूगढ़ द्वितीय कमान अधिकारी, १६५ बटालियन सी आर पी एफ और असम पुलिस और सी आर पी एफ के अन्य कार्मिकों के साथ हुंगुंगिया गांव में तीन तरफा घेराव और तलाशी अभियान शुरू किया ताकि उल्फा उग्रवादियों को पकड़ा जा सके। जब यह अभियान चल रहा था तो अस्थायी शिविर में ठहरे हुए उल्फा उग्रवादियों ने स्वचालित हथियारों से पुलिस और सी आर पी एफ दल पर अचानक और भारी गोलीबारी कर दी। पुलिस और सी आर पी एफ के कार्मिकों ने जबाबी गोलीबारी की जिससे वहां पर भयंकर मुठभेड़ शुरू हो गई। शिविर के निकट मिट्टी के टीले में बसे एक अस्थायी बंकर से उल्फा के उग्रवादियों ने पश्चिमी फ्लैंक से यूनिवर्सल मशीन गन से पुलिस दल पर भारी गोलबारी कर दी। चूंकि इस फ्लैंक में पुलिस दल को कोई कवर नहीं मिला और धान के खेत में हाल में की गई कटाई वाले भाग में उन्हें कोई संरक्षण नहीं मिला था इसलिए उग्रवादियों ने अपनी मशीन गन से उन्हें पूरी तरह से घेर लिया था और अपनी बढ़ती अचूक निशानेबाजी से वे तेजी से उनकी ओर बढ़ रहे थे जिससे उन कई पुलिस कार्मिकों का जीवन खतरे में पड़ गया जो अपनी ओर आती मशीन गन की गोलीबारी को असहाय हो कर देख रहे थे। ऐसी स्थिति में अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह किए बगैर श्री अशीम स्वरगियारी, ए पी एस, अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय), डिब्रूगढ़, श्री बीर बिक्रम गोगोइ, ए पी एस, अपर पुलिस अधीक्षक (बी), डिब्रूगढ़ और श्री बृज मोहन बरुआ, ए पी एस, उप पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय), डिब्रूगढ़ ने उनकी सहायता की और अपनी ए के-४७ सेवा एसॉल्ट राइफल पर बेनेट लगाया तथा जांघ की ऊंचाई से इससे लगातार गोलीबारी कर दी और पूरी तरह से दौड़ते हुए मशीन गन बंकर की ओर गए। यू एम जी से लैस उल्फा

उग्रवादियों में अपनी ओर तेजी से बढ़ते तीन अधिकारियों का सामना करने की हिम्मत नहीं थी इसलिए वे अपना मोर्चा छोड़ कर भाग खड़े हुए। इससे मशीन गन शांत हो गई और एक निश्चित जन संहार से कई पुलिस कार्मिकों की जानें बच गई। श्री अशीम स्वरगियारी, ए पी एस, अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) और उनके साथ गए पुलिस और सी आर पी एफ के कार्मिकों ने अभियान को आगे बढ़ाया जिससे उत्फा के तीन दुर्दांत उग्रवादी मारे गए जिनमें (१) एस एस सार्जेंट मेजर चरण माझी (२) एस एस कार्पोरल जितुल फुंकन और (३) एक अज्ञात उग्रवादी शामिल था तथा इसके परिणामस्वरूप बड़ी मात्रा में हथियार, गोलीबारुद और विस्फोटक सामग्री बरामद हुई।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अशीम स्वरगियारी, अपर पुलिस अधीक्षक, बीर बिक्रम गोगोइ, अपर पुलिस अधीक्षक और बृज मोहन बरुआ, उप पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ३ नवम्बर, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ६६-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### **अधिकारी का नाम और रैंक**

श्री जयंत कलिता, सब-इंस्पेक्टर

### **उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:**

के एल एन एल एफ (कार्बी लोगरी एन.सी. हिल्स लिब्रेशन फ्रंट - एक भूमिगत उग्रवादी संगठन) के उग्रवादियों के टोगलोक क्षेत्र में और इसके आस-पास आश्रय लेने और आने-जाने की संभावना के बारे में गुप्त सूचना के आधार पर दिनांक ८ अगस्त, २००६ को श्री मोंटू ठकुरिया, ए पी एस, उप-अधीक्षक, कमांडो बटालियन की कमान में सिविल ड्रेस में पूर्वाह्न ९ बजे से एक तलाशी अभियान चलाया गया जिसमें कार्बी आंगलोग जिले के पुलिस स्टेशन होवराघाट के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र के सब-इंस्पेक्टर जयंत कलित और अन्य कमांडो कार्मिक शामिल थे। पुलिस दल, उग्रवादियों के रूप में सिविल ड्रेस में पैदल घूम रहे थे क्योंकि यदि वे पुलिस की ड्रेस में होते तो उग्रवादियों के मुखबिर का ध्यान इनकी तरफ जाता और वह उग्रवादियों को उनके छिपने वाली जगह में ही उन्हें सतर्क कर देता जिससे सुरक्षा एजेंसियों का यह अभियान निष्फल हो जाता। मेटीखोल गांव की तलाशी लेने के बाद पुलिस दल ने हरि चन्द्र इंग्लिश विलेज में प्रवेश किया और गांव की गलियों की दोनों तरफ स्थित मकानों की तलाशी शुरू की। तलाशी के दौरान लगभग

०९५० बजे जब सब-इंस्पेक्टर जयंत कलित ने सी/१९९ अली मोहम्मद तालुकदार और उप पुलिस अधीक्षक मौंटू ठकुरिया तथा सी/३४९ नुमल राय के साथ श्री कनिया बे नामक व्यक्ति के मकान के गेट में प्रवेश किया तो अचानक ही आंगन में बैठे के एन एल एफ के तीन उग्रवादियों ने उन्हें रोक लिया और सब-इंस्पेक्टर जयंत कलित पर आधुनिक हथियारों से गोलीबारी कर दी तथा मकान के पीछे निकटवर्ती धान के खेत की ओर भागना शुरू कर दिया। इस पर तुरंत ही पक्षकार ने अत्यधिक साहस का परिचय देते हुए उनका पीछा किया और उन पर गोलीबारी कर दी। साथी कार्मिक उन पर गोलीबारी नहीं कर सका क्योंकि पक्षकार आंगन के संकरे प्रवेश द्वार में उनके सामने था। पक्षकार इस तथ्य से अनभिज्ञ था कि चौथा उग्रवादी एक छप्पर में उसकी बाईं ओर छिपा हुआ है और उसने अपनी ९ एम एम पिस्तौल से सब-इंस्पेक्टर जयंत कलित पर ४-५ राउंड गोलीबारी की है और पक्षकार पर मुश्किल से ७-८ मीटर की दूरी से चौथे उग्रवादी ने सीधी गोलीबारी कर दी। इस तथ्य के बावजूद कि उस पर सीधी गोलीबारी की जा रही है, पक्षकार ने अदम्य साहस, अत्यंत सूझ-बूझ का परिचय दिया तथा तुरंत कार्रवाई की और बाईं तरफ मुड़ा और अपनी ए के-४७ राइफल से उग्रवादी पर गोलियों की बौछार कर दी जिससे वह उग्रवादी घटनास्थल पर ही मारा गया। तथापि, इसमें थोड़ा सा समय लग जाने के कारण तीन अन्य उग्रवादी पीछे के धान के खेतों की ओर भागने में सफल हो गए, यद्यपि मुठभेड़ स्थल पर एकत्र हुए बाकी कर्मचारियों ने उनका पीछा किया था। घटना स्थल से मैग्जीन में तीन राउंड जीवित गोली-बारुद के साथ एक ९ एम एम की पिस्तौल बरामद हुई और वहां पर ३ खाली केस और दागी न गई २ गोली-बारुद भी बरामद हुई और इन्हें जब्त किया गया। बाद में मृतक की पहचान संजय तेरंग, पुत्र श्री डेन तेरंग, ग्राम - रोगंकुट सोबैक्रो गांव, लोरिंगथेपी, पी एस-होवराघाट, के एल एन एल एफ संगठन का उच्च रैंक का सार्जेंट मेजर, के रूप में हुई। इसका संदर्भ उप-पुलिस अधीक्षक मौंटू ठकुरिया द्वारा प्रस्तुत प्राथमिकी के आधार पर दर्ज होवराघाट पी एस मामला सं. ८९/०६ से है।

इस मुठभेड़ में श्री जयंत कलिता, सब-इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ८ अगस्त, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ६७-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### **अधिकारी का नाम और रैंक**

श्री शबीर अहमद, इंस्पेक्टर

### **उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:**

गोअनचई जंगल, ऐशमुकम में आतंकवादियों की मौजूदगी के संबंध में एस एस पी अनंतनाग से प्राप्त विशिष्ट सूचना के आधार पर दिनांक ०४.१०.२००६ को पुलिस स्टेशन, ऐशमुकम, एस ओ जी मुख्यालय श्रीगुफवाड़ा/अनंतनाग के कार्मिकों द्वारा एक अभियान चलाया गया। तलाशी अभियान के दौरान आतंकवादियों ने पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलीबारी कर दी। पुलिस दल ने जबाबी गोलीबारी की। रुक-रुक कर जबाबी गोलीबारी करके आतंकवादियों को व्यस्त रखते हुए इंस्पेक्टर शबीर अहमद, पुलिस स्टेशन ऐशमुकम के कुछ पुलिस कार्मिकों के साथ विपरीत दिशा में रेंगते हुए उक्त स्थल के निकट पहुंचे। जब आतंकवादियों को यह पता चला कि पुलिस कार्मिक विपरीत दिशा से आ रहे हैं तो उन्होंने इन पर गोलीबारी कर दी। इंस्पेक्टर शबीर अहमद ने सूझ-बूझ और बहादुरी का परिचय देते हुए जबाबी गोलीबारी कर दी जिसके परिणामस्वरूप अबू मज उर्फ मुजामिल, निवासी पाकिस्तान (एल ई टी का आपरेशनल कमांडर) और अबू कासिम, निवासी पाकिस्तान (एल ई टी का जिला कमांडर) नामक "क" और "ख" श्रेणी के दो विदेशी दुर्दांत आतंकवादी मारे गए और हथियार तथा गोली-बारूद बरामद किए गए। चूंकि ये दुर्दांत आतंकवादी काफी समय से सक्रिय थे और ये सिविलियनों को मारने/आई ई डी विस्फोट करने/ग्रेनेड फेंकने/जबरन धन ऐंठने/अत्याचार करने/भर्ती करने/योजना आदि बनाने जैसी कई वारदातों में संलिप्त थे इसलिए इन दुर्दांत आतंकवादियों के मारे जाने से एल ई टी गुट को भारी धक्का लगा। पुलिस स्टेशन ऐशमुकम में अधिनियम की धारा ७/१२५क के तहत प्राथमिकी संख्या ६५/२००६ दर्ज की गई है। इस अभियान में इंस्पेक्टर शबीर अहमद सं. ४०४०/एन जी ओ, कांस्टेबल गुलाम अहमद सं. १४८२/क, कांस्टेबल शौकत अहमद सं. १८८३/क और कांस्टेबल जाकिर हुसैन सं. ३८८/आई आर तीसरी बटालियन घायल हो गए।

इस मुठभेड़ में श्री शबीर अहमद, इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक के प्रथम बार नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ४ अक्टूबर, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव



सं. ६८-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. निसार अहमद  
असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर
२. दीवान चन्द  
हैड कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

थाना जैनापुरा के रिशिपुरा गाँव में एच यू एम गुट के कुछ आतंकवादियों की मौजूदगी के संबंध में पुलवामा पुलिस द्वारा सृजित एक विशेष सूचना के आधार पर उक्त गाँव में २२.०४.२००७ को एक अभियान चलाया गया। पुलिस कैम्प लिटर के एक एन जी ओ ए एस आई निसार अहमद के नेतृत्व में एक पुलिस पार्टी उक्त गाँव को गई और उस घर की घेराबंदी कर ली जहाँ आतंकवादी छुपे हुए थे। आतंकवादियों ने पुलिस पार्टी की भनक लगते ही घर के सभी सदस्यों को बंधक बना लिया, उन्होंने उन्हें घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं दी तथा पुलिस पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी करने के साथ-साथ हथगोले भी फेंके। पुलिस ने भी इस गोलीबारी का इस तरह जवाब दिया कि उस परिवार के सदस्यों को कोई चोट नहीं पहुँची और पुलिस पार्टी ने परिवार के सभी सदस्यों को सुरक्षित बचा लिया। इसी बीच, ए एस आई निसार अहमद ने घर के चारों ओर घेराबंदी और तेज कर दी। समुचित कवर लेते हुए ए एस आई निसार अहमद, एन जी ओ और हैड कांस्टेबल दीवान चंद, अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना, उस घर की ओर पेट के बल खिसकते हुए आगे बढ़े। आतंकवादियों की भनक लगते ही पुलिस पार्टी उस घर के और नजदीक आ गई और एच यू एम गुट के दो दुर्दान्त आतंकवादियों को मार गिराया जिनकी बाद में निम्नलिखित के रूप में पहचान हुई:-

- (क) रईस अहमद तेली पुत्र अली मोहम्मद निवासी कडिगाम
- (ख) रियाज अहमद गैनी पुत्र गुलाम मोहम्मद निवासी साफनागरी

मृत आतंकवादी सविलियनों/सुरक्षा बलों के कार्मिकों की हत्याएँ करने और हथियार छीनने में संलिप्त थे। मुठभेड़ स्थल पर निम्नलिखित शस्त्र/गोला बारुद भी बरामद किए गए :-

- |                    |   |                  |
|--------------------|---|------------------|
| (क) ए.के. ४७ राइफल | : | ०२ संख्या        |
| (ख) ए.के. मैग      | : | ०४ नग            |
| (ग) ए.के. ए एम एन  | : | १३६ आर डी एस आदि |

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री निसार अहमद, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर, दीवान चन्द, हैड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २२ अप्रैल, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिवे

सं. ६९-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. जसबीर सिंह

सब इंस्पेक्टर

२. चैन सिंह

सब इंस्पेक्टर

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

पुलिस चौकी पौनी से लगभग १५ कि.मी. दूर, पुलिस चौकी पौनी के ढोलकिचन क्षेत्र (झण्डी जियारात के निकट) में कट्टर आतंकवादियों के संबंध में विश्वसनीय सूचना प्राप्त होने पर, एस आई जसबीर सिंह, आई/सी पी पी पौनी और चैन सिंह आई/सी आप्स ग्रुप पौनी सेना (५४ आर आर) के समन्वय से दिनांक २४.०१.२००६ को लगभग १६०० बजे एक अभियान की योजना बनाई गई और उसे शुरू किया गया। आतंकवादियों के संदिग्ध रास्ते पर दो घात लगाई गई। एक घात पार्टी एस आई जसबीर सिंह आई/सी पी पी पौनी के नेतृत्व में एस आई चैन सिंह आई/सी आप्स, ग्रुप पौनी के साथ मिलकर की गई तथा दूसरी घात पार्टी की अगुआई सेना द्वारा की गई। पहली घात पार्टी का नेतृत्व कर रहे एस आई जसबीर सिंह और एस आई चैन सिंह ने लगभग १९३० बजे कुछ संदिग्ध हलचल देखी। तब एस आई जसबीर सिंह ने उनसे कहा कि वे रुकें और अपनी पहचान सिद्ध करें। परन्तु ऐसा करने के बजाय उन्होंने अभियान दल को मार गिराने के इरादे से उस पर ताबड़तोड़ गोलियां चलानी शुरू कर दीं। एस आई जसबीर सिंह और एस आई चैन सिंह ने अन्य सहयोगियों के साथ तुरन्त कार्रवाई की और गोलियों का मुँहतोड़ जवाब दिया। आतंकवादियों और घात पार्टी के बीच भयंकर गोलीबारी हुई। उस दिशा की पहचान कर जहाँ से आतंकवादी गोलियां चला रहे थे, एस आई जसबीर सिंह ने अपनी घात पार्टी को दो गुटों में बांट दिया पहले गुट का नेतृत्व उन्होंने स्वयं किया और द्वितीय गुट का नेतृत्व एस आई चैन सिंह को सौंपा और पहले गुट को अपनी नाकाबंदी स्थिर रखने को कहा तथा द्वितीय गुट को लगातार गोलियां चलाते रहने का निदेश दिया। आतंकवादियों ने, जो अभी भी अंधाधुंध गोलियां चला रहे थे, अभियान दल पर ग्रेनेड फेंका। एस आई जसबीर सिंह, एस आई

चैन सिंह और गुप के अन्य सदस्य बाल-बाल बचे। तब एस आई जसबीर सिंह अपने जीवन की परवाह किए बिना एस आई चैन सिंह के सघन समन्वय से, अत्यधिक वीरतापूर्वक आतंकवादियों के बहुत निकट पहुँच गए और एक दुर्दान्त विदेशी आतंकवादी को मार गिराया जिसकी बाद में अब्दुल गफ्फार कोडे अबू हामाजा निवासी डेरा-गाजीखान, बलूचिस्तान, पाकिस्तान, एल ई टी के एक जिला कमाण्डर के रूप में शिनाख्त हुई। इसी बीच अन्य घायल आतंकवादी, जो सेना की दूसरी घात पार्टी की ओर झपटा, का पीछा किया गया और उसे वहीं मार गिराया गया जिसकी बाद में शब्बीर अहमद पुत्र गुलाम हुसैन निवासी करीग, तहसील कोटरांका, जिला राजौरी के रूप में शिनाख्त हुई। दोनों घात पार्टियां सुबह तक मुठभेड़ स्थल पर रहीं और पहली किरण के साथ ही उस पूरे क्षेत्र की तलाशी ली गई। मुठभेड़ स्थल से निम्नलिखित सामान जब्त किया गया:-

● राइफल्स ए के-सीरीज	:	०२ नग
● ए के सीरीज के मैग	:	०८ नग
● ए के सीरीज का गोलाबारूद	:	१४० नग
● ग्रेनेड	:	०५ नग
● सेट लाइट फोन	:	०१ नग
● वायरलेस सैट	:	०१ नग
● मोबाइल फोन	:	०१ नग

इस संबंध में दिनांक २५.०१.२००६ को अधिनियम की धारा ३०७/१२०-ख/१२१-क/आर पी सी, ७/२७क के अन्तर्गत, प्राथमिकी सं. १६/२००६ के तहत थाना रियासी में एक मामला दर्ज किया गया। दोनों ही मृत आतंकवादी कई जघन्य अपराधों में संलिप्त थे और राजौरी तथा रियासी पुलिस को उनकी तलाश थी।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री जसबीर सिंह, सब इंस्पेक्टर, चैन सिंह, सब इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २४ जनवरी, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ७०-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, जम्मू और पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. रणदीप कुमार  
पुलिस उपाधीक्षक
२. भूषण सिंह मनहास  
सब इन्स्पेक्टर

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

कटुर आतंकवादी मोहम्मद रफीक उर्फ वसीम उर्फ बिल्लू गुज्जर एच एम गुट के जिला कमाण्डर गूल, रमबान की गाँव मंगलोगी संगलदान में मौजूदगी के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर श्री रणदीप कुमार, पुलिस उपाधीक्षक (आप्स) गूल ने एस टी एफ तथा एन सी ए के सैन्य बल के साथ मिलकर ४ सितम्बर, २००६ को २००० बजे गाँव मंगलोगी (संगलदान) में अभियान शुरू किया और २३०० बजे तक उस क्षेत्र की नाकाबंदी कर दी। एक आतंकवादी, जो उस घर में छिपा था, जब उसे नाकाबंदी की खबर मिली तो उसने घर से बाहर आके नजदीक के मक्के के खेत में पोजीशन ले ली। जब श्री रणदीप कुमार, पुलिस उपाधीक्षक (आप्स) गूल के नेतृत्व वाले दल ने मक्के के खेत के निकट पहुंचने का प्रयास किया तभी उसने अंधाधुंध गोलीबारी की और ग्रेनेड फेंका। हालांकि पार्टी ने गोलीबारी का मुँहतोड़ जवाब दिया परन्तु रात के समय में मक्के के खेत में छुपे आतंकवादी की सही लोकेशन पता करने का कार्य अत्यधिक दुष्कर था। इसलिए मक्के के खेत में प्रवेश करना बहुत मुश्किल कार्य था क्योंकि आतंकवादी अंदर से गोलियाँ चला रहा था। पुलिस उपाधीक्षक रणदीप कुमार ने एस आई भूषण सिंह मनहास के साथ मिलकर एक रणनीति तैयार की और सैन्य बलों से कहा कि वे आतंकवादी को एक ओर से उलझाए रखें। साहस एवं अभियान कौशल का प्रदर्शन करते हुए दोनों अधिकारी दूसरी ओर से मक्के के खेत में घुस गए और आतंकवादी को मार गिराया। निम्नलिखित सामान जब्त हुआ:-

(i)	ए के ४७ राइफल	:	०१ नग
(ii)	ए के मैग	:	०३ नग
(iii)	ए के अम्यू	:	६० राउण्ड
(iv)	सैटलाइट फोन	:	०१ नग.
(v)	डायरियां	:	०२ नग
(vi)	लेटर पैड एच एम	:	०५ पेज

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री रणदीप कुमार, पुलिस उपाधीक्षक, भूषण सिंह मनहास, सब इन्स्पेक्टर, ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ४ सितम्बर, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ७१-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

श्री मतिन अंसारी, कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

१८.०५.२००५ की शाम को ओ/सी निमियाघाट थाना के एस आई प्रमोद पाण्डेय को उच्चतर फार्मेशनो से सूचना मिली कि प्रतिबंधित सशस्त्र वामपंथी एम सी सी आई आउटफिट की निमियाघाट थाना के अंतर्गत चन्दनकुरबा गाँव के निकट के आसपास के जंगलों में १८/१९-०५-२००५ की रात को एक बैठक होने की उम्मीद है। शीघ्र ही स्टेशन डायरी में दिनांक १८.०५.२००५ को प्रविष्टि संख्या ३७० दर्ज करने के उपरान्त उन्होंने इस मामले पर अपर पुलिस अधीक्षक गिरिडीह श्री अरुण कुमार सिंह के साथ चर्चा की। अरुण कुमार सिंह अपर पुलिस अधीक्षक, गिरिडीह ने ओ/सी के साथ शुरुआती योजना पर चर्चा करने के उपरान्त रात को स्वयं निमियाघाट आए और उग्रवादियों का सफाया करने के लिए स्वयं एक सुनियोजित योजना बनाई। उन्होंने पुलिस कार्मिकों के दो ग्रुप बनाए और गाँव को क्रमशः उत्तरी एवं दक्षिणी ओर से घेरने का निश्चय किया। पहली पुलिस पार्टी अर्थात् टीम नम्बर १ का नेतृत्व अरुण कुमार सिंह, पुलिस अधीक्षक, गिरिडीह कर रहे थे और उनके साथ थे निमियाघाट पुलिस थाना के एस आई सुनील कुमार चौधरी और डुमरी पुलिस थाना के एस आई आर के द्विवेदी तथा कांस्टेबल १३७, संजय कुमार, हवलदार रामदेव पिन्गुआ, सी /१०२७ श्रवण कुमार, सी /१०१२ अरुण प्रजापति, सी /१०२२ राम सरन साव, सी/११२ उमेश कुमार पासवान, सी/३७९ मतिन अंसारी, श्री एच के बगासी, ए.सी. सी आर पी एफ एवं कुछ अन्य सी आर पी एफ कार्मिक। इस टीम को गाँव नगलो, पारगो, तिलैया होकर लगभग ११ किमी का रास्ता पैदल तय करके चंदन कुरबा जाना था। यह हमलावार टीम थी। द्वितीय पुलिस पार्टी अर्थात् टीम नम्बर-२ में एस आई नन्हा तोप्नो ओ/सी पिरटांड थाना, निमियाघाट पुलिस थाने के एस आई श्रीकांत सिंह, जे ए पी-१ के इंस्पेक्टर प्रेम गुरंग तथा जे ए पी -१ की दो प्लाटून एस टी एफ शामिल थे। किसी मुठभेड़ की स्थिति में इस टीम को उग्रवादियों के वापस जाने के संभावित मार्ग माकन गाँव के निकट के जंगल में घात लगानी थी। यह रक्षक टीम थी। दोनों टीमों ने अपने गंतव्य की ओर ०३.०० बजे प्रस्थान शुरु किया। लगभग दो घंटे तक पैदल चलने और ग्रामों एवं जंगल से होकर जाने वाली सड़क पर लगभग ०८ किमी की दूरी तय करने के पश्चात

अपर एस पी के नेतृत्व वाली इस टीम ने परगो -तिलैया स्कूल के निकट लगभग ०१ किमी की दूरी पर १२-१३ आदमी देखे। उनमें से ३-४ आदमी जैतूनी हरी वर्दी पहने थे और वे सभी तुलनात्मक रूप से संकुल जंगल क्षेत्र में ग्रामीण रास्ते से जा रहे थे। तुरंत दूरबीन का प्रयोग किया गया और यह निश्चित किया गया कि वे एम सी सी आई गुट के सदस्य हैं। जैतूनी हरी वर्दी में ३-४ लोग स्पष्ट पहचाने जा सकते थे और उन सभी के पास लम्बे आग्नेयास्त्र थे। अपर एस पी के सुयोग्य कमांड ने पुलिस पार्टी को उग्रवादियों की लम्बी धड़पकड़ करने को प्रेरित किया। वह लम्बी धड़पकड़ करने के लिए एडीशनल एस पी ने तुरंत पुलिस पार्टी के तीन गुप बनाने का निश्चय किया। एक गुप का नेतृत्व स्वयं एडीशनल एस पी तथा एस आई प्रमोद पाण्डेय कर रहे थे और उनके साथ थे हवलदार रामदेव पिन्गुआ, कांस्टेबल संजय कुमार, श्रवण कुमार, अर्जुन प्रजापति, राम चरन साव, उमेश कुमार पासवान और मतिन अंसारी। अन्य गुप का नेतृत्व श्री एच के बगासी, सहायक कमांडेंट सी आर पी एफ कर रहे थे और उनके साथ थे सी आर पी एफ कार्मिक। तीसरे छोटे से गुप का नेतृत्व कर रहे थे एस आई सुनील कुमार चौधरी और एस आई आर के द्विवेदी, उनके साथ कुछ अन्य कांस्टेबल थे। इन तीनों गुपों ने तुरंत उग्रवादियों का विभिन्न दिशाओं से पीछा किया। शीघ्र ही पीछा किए जाने के पश्चात उग्रवादियों ने भी स्थिति को भांप लिया और उन्होंने पुलिस पार्टी पर गोलीबारी करनी शुरू कर दी। अब दुविधा की कोई बात ही नहीं थी। एडीशनल एस पी ने भी गोली चलाने तथा उनका पीछा करते रहने का आदेश दिया। पीछा कर रही सभी तीनों पुलिस पार्टियां आर आई सेट पर एक दूसरे के संपर्क में थीं। उग्रवादी अपनी सुरक्षा के लिए झाड़ीदार जंगल तथा चट्टानों का फायदा उठा रहे थे। एडीशनल एस पी के नेतृत्व वाली पुलिस पार्टी पहाड़ी की ओर आगे बढ़ी तथा एक उग्रवादी को जैतूनी हरी वर्दी में एक पहाड़ी की छोटी सी चट्टान के पीछे से फायरिंग करते देखा। उस उग्रवादी को ऊँचाई और झाड़ीदार जंगल का फायदा मिल रहा था और निसंदेह बेहतर सुरक्षित स्थिति में था जबकि पुलिस पार्टी खुले मैदान में पर्याप्त सुरक्षा कवर के बिना थी। एडीशनल एस पी ने वास्तविक नेतृत्व तथा असाधारण साहस का प्रदर्शन किया तथा अपने जीवन की परवाह किए बिना एस आई प्रमोद पाण्डेय तथा सी/३७९ मतिन अंसारी के साथ आगे बढ़ते गए और उस पहाड़ी के पीछे से कुछ दूरी पर घेराबंदी कर ली। जैसे ही वह उस पहाड़ी के नजदीक पहुंचे उग्रवादी ने उन पर भारी गोलीबारी की। उन्होंने उस पहाड़ी का जिम्मा स्वयं लेते हुए अपनी पार्टी को प्रेरित किया। उस उग्रवादी ने इसकी भनक पाकर गोली चलाने की अपनी दिशा बदल दी और एक गोली एडीशनल एस पी के पास से होकर कर गुजर गई। एडीशनल एस पी ने, अपने केवल एक अधिकारी और एक कांस्टेबल के साथ, अपनी जान पर खेलकर गोलीबारी जारी रखी। कुछ क्षण पश्चात सी/३७९ मतिन अंसारी ने सम्पुष्टि की कि उनकी एक गोली उस उग्रवादी के लग गई है। गोलीबारी जो रुक रुक कर चल रही थी ०६.१५ बजे रुक गई। उस स्थल पर जाकर टीम ने जैतूनी हरी वर्दी में एक शव देखा जिसके शरीर से खून बह गया था। उस शव के आसपास एक रेगुलर .३०३ राइफल नम्बर ६३७६७M जिसकी बट संख्या सी आर पी -२३२६ थी और उसकी मैगजीन में ६ राउंड्स थे, एक पाउच में चार्जर सहित ४४ राउंड्स और .३०३ के ७ खाली राउंड्स बिखरे पड़े थे। खाकी कलर का एक हैबरसैक जिसमें कई चीजें थीं और ३५००/- रुपए नकद थे, जिनका उल्लेख जब्ती सूची में किया गया, भी पाया गया। एस आई प्रमोद पाण्डेय ने अपनी सर्विस पिस्तौल से ०५ राउंड गोलियां चलाई और कांस्टेबल मतिन अंसारी ने अपनी राइफल से ०४ राउंड्स गोलियां चलाई। उसी समय, सी आर पी एफ के सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में दूसरी टीम, जो उग्रवादी का पीछा करते-करते उस स्थान से लगभग १.५ किमी दूर पहुंच गई थी, ने आर.टी.सेट पर

बताया कि उनकी भी एक गोली किसी उग्रवादी के पैर में लगी है परन्तु वह बच निकला है। घटना स्थल पर जाकर देखा तो वहाँ से लगभग १०० मीटर की दूरी तक ताजे खून के धब्बे पाये गए और यह एक तंग घाटी तक फैले थे। खून के यह धब्बे सिद्ध करने के लिए अपर्याप्त थे कि कुछ उग्रवादी घायल हुए हैं। उस पुलिस पार्टी के साहसिक कारनामों से उग्रवादियों का हौसला पस्त हो गया। वे पहाड़ी की दूसरी ओर को भागने लगे। वे अपने साथी का मृत शरीर, उनके हथियारों, नकदी, कई थैलों और असंख्य अन्य मदों को छोड़ने को मजबूर हो गए। पूरे मुठभेड़ क्षेत्र की छानबीन करने के पश्चात वहाँ से एक रैग्यूलर .३०३ राइफल संख्या ६३७६७ एम, ५० राउंड जिन्दा .३०३ कार्टीरिज, १००८०/- रुपये नकदी के अलावा कई नक्सली आडियो एवं वीडियो कैसेटें, भारी मात्रा में नक्सली साहित्य, चार हैवरसैक्स, मेडिकल किटें, ओलिव ग्रीन और खाकी यूनीफार्में तथा कई अन्य मदें बरामद हुईं, जिनका वर्णन एफ आई आर के एक भाग के रूप में जब्ती सूची में किया गया है। यह मुठभेड़ लगभग ४५ मिनट तक चली तथा पुलिस की ओर से कुल मिलाकर ४६ राउंड तथा उग्रवादियों की ओर से लगभग २५-३० राउंड गोलियां चलाई गईं। यह एडीशनल एस पी और उनके साथ उनकी छोटी सी पुलिस पार्टी द्वारा प्रदर्शित असाधारण बहादुरी, नेतृत्व क्षमता, अदम्य साहस और दृढ़ निश्चय के कारण संभव हो पाया। वह अपने जीवन की परवाह किए बिना, लगातार आगे बढ़ते रहे और बल का न्यूनतम प्रयोग करके सफलता हासिल की। निमिया घाट पुलिस थाना में भारतीय दंड संहिता की धारा १४९/३५३/३०७, शस्त्र अधिनियम की धारा २५(१-ख), क/२६/२७/३५, सी एल ए अधिनियम की धारा १७/१८, यू ए पी अधिनियम की धारा १३ के अंतर्गत दिनांक १९.०५.२००५ को एक प्राथमिकी संख्या ३४/२००५ दर्ज की गई। उसी दिन, एस पी गिरिडीह द्वारा की गई उत्तरवर्ती जांच एवं पर्यवेक्षण से निष्कर्ष की पुष्टि हुई। पहाड़ी पर मुठभेड़ स्थल के आसपास कई स्थानों पर खून के धब्बे पाए गए। प्रारंभिक जांच पड़ताल से इस घटना में संलिप्त कम से कम १२-१३ उग्रवादियों के नामों का खुलासा हुआ है। मारे गए उग्रवादी की पहचान अभी नहीं हो पाई है। परन्तु उसकी दाईं भुजा पर बने टैटू से ऐसा प्रतीत होता है कि उसका नाम इसराद खांटू है।

इस मुठभेड़ में, श्री मतिन अंसारी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक १९ मई, २००५ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ७२-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक /वीरता के लिए पुलिस पदक की प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. आदर्श कटियार  
उप महा निरीक्षक (पी एम जी)
२. साजिद फरीद शापू  
पुलिस अधीक्षक (पी एम जी की प्रथम बार)
३. राम किशन सिंह गुर्जर  
उप निरीक्षक (पी एम जी)

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

१६.४.२००७ शाम को एक आसूचना प्राप्त हुई कि रामबाबू गड़रिया अपने गिरोह के अन्य सदस्यों के साथ अपने रिस्तेदारों से मिलने कनेर जंगल आएगा और ऐसी संभावना है कि वह पास के डंगरा गाँव में तबाही मचाएगा। यह महत्वपूर्ण खबर मिलने पर श्री आदर्श कटियार, डी आई जी, ग्वालियर और एस पी शिवपुरी श्री साजिद फरीद शापू रात को लगभग १२०० बजे शिवपुरी पहुंचे जहाँ उन्होंने अभियान की जटिलताओं पर चर्चा की। पूरे बल को पांच पार्टियों में बांटा गया। पार्टी नम्बर १ का नेतृत्व एस आई आर के एस गुर्जर के साथ मिलकर आई जी ग्वालियर कर रहे थे, जबकि पार्टी नम्बर २ और ३ का नेतृत्व क्रमशः डी आई जी और एस पी कर रहे थे। पार्टी नम्बर १, २ और ३ मुख्य हमलावर पार्टियां थीं। एस ओ भोन्डी श्री ओ. पी. तंतवार पार्टी नं. ४ का नेतृत्व कर रहे थे और पार्टी नम्बर ५ जिसका नेतृत्व कांस्टेबल प्रदीप कर रहे थे, को कट आफ पार्टियों के रूप में कार्य करने का निदेश दिया गया था। सभी पाँचों पार्टियों वाहनों से गांगुली गाँव गई। गांगुली में डी आई जी और एस पी शिवपुरी ने सभी पार्टियों को ब्रीफ किया प्रातः ०५०० बजे तक सभी पार्टियाँ अपने-अपने एम्बुश प्वाइंट पर पहुंच गई। लगभग ०८३० बजे पार्टी नम्बर १ ने देखा कि तीन डकैत कनेर खो की ओर आ रहे हैं। पार्टी नं. १ ने उन डकैतों से आत्मसमर्पण करने को कहा परन्तु उन्होंने पुलिस को देखते ही पुलिस पार्टी पर गोलियों की बौछार कर दी। अगर पार्टी नं. १ के पास समुचित कवर नहीं होता तो उसके काफी लोग हताहत होते। यह पार्टी जादुई ढंग से बच गई। इसी मौके पर पार्टी नम्बर २ और ३ को आत्मरक्षार्थ गोली चलाने का अनुदेश दिया गया। डकैत खाई के बाईं ओर को बढ़ने लगे यहाँ श्री आदर्श कटियार के नेतृत्व वाली पार्टी नम्बर २ ने उन्हें ललकारा। तभी डकैतों ने डी आई जी आदर्श कटियार के नेतृत्व वाली पार्टी नं. २ पर ताबड़तोड़ गोलियां बरसानी शुरू कर थीं जिसमें एस आई आर डी मिश्रा बाल-बाल बचे परन्तु इस सब के बावजूद श्री कटियार ने अपने आदमियों को डकैतों पर गोलियां चलाने को प्रेरित किया। इसी बीच एस पी शिवपुरी के नेतृत्व वाली पार्टी नम्बर ३ ने डकैतों को दाहिनी ओर से घेरने का प्रयास किया परन्तु डकैतों ने बेहतर स्थिति में होने के कारण पुलिस के मूवमेंट को देख लिया और उन्होंने पार्टी नम्बर ३ पर गोलियों की बौछार कर दी। परन्तु एस पी शिवपुरी, श्री शापू और



उसकी टीम की त्वरित, दक्षतापूर्वक एवं सामयिक कार्रवाई से सभी की जान बच गई और उन्हें मौत के मुंह से बाहर निकाल लाए। पार्टी नम्बर ३ की जवाबी गोलीबारी की वजह से डकैत लोग कनेर पहाड़ी के घने जंगलों में घुस गए। यह देखकर आई जी ग्वालियर ने अपनी पार्टियों को पहाड़ी की ओर बढ़ने का अनुदेश दिया। यह पुलिस पार्टियों के लिए अत्यधिक खतरनाक और अलाभकर स्थिति थी क्योंकि वे पहाड़ी पर चढ़ रहे थे और डकैत पहाड़ी की चोटी पर थे। परन्तु तीनों पार्टियों के नेतृत्वकर्ताओं ने अनुकरणीय साहस दृढ़ निश्चय, सच्ची नेतृत्वक्षमता का प्रदर्शन किया और पहाड़ी की ओर बढ़ना प्रारंभ कर दिया। लगभग आधा घंटे की खोजबीन के पश्चात पुलिस पार्टी पर एकाएक गोलियां चलनी शुरू हो गई। तीनों पार्टी कमांडर और उनके आदमी जमीन पर लेट गए और जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी। परन्तु डकैत ऊंचाई पर होने के कारण सभी खाइयों में सुरक्षित थे और इस कारण पुलिस पार्टियों को आगे बढ़ना असंभव हो गया। परन्तु आगे बढ़े बिना डकैतों को वश में करना अथवा उन्हें निष्क्रिय करना संभव नहीं था। समग्र स्थिति से पुलिस कार्मिकों का मनोबल गिरने लगा था। अपने आदमियों का मनोबल एवं आत्मविश्वास घटते देख पार्टी कमांडरों ने सोचा कि यही वह समय है जब मौके का फायदा उठाया जाए और मौत को हराया जाए। सच्ची नेतृत्व क्षमता उन्हीं में होती है जो असंभव को संभव बना दे और हमारे पार्टी कमांडरों ने भी वैसा ही किया। श्री सिंह, श्री कटियार और श्री शैपू तीनों पार्टी कमांडरों ने एकदम निर्णय लिया और अतुलनीय साहस एवं दुर्लभ बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने आगे बढ़ना शुरू कर दिया और अपने आदमियों को भी आगे बढ़ने को प्रेरित किया। अपने नेतृत्व कर्ताओं को आसन्न मौत के मुंह में जाते देख उनमें (पुलिस कार्मिकों में) जोश फिर से उमड़ पड़ा और वे भी अपने नेतृत्वकर्ताओं के पीछे हो लिए। तीनों पार्टियां डकैतों पर लगातार गोलियां बरसाती आगे बढ़ी। सारा नजारा पुलिस के पक्ष में हो रहा था। इसी मौके पर पार्टी नम्बर १ के एस आई श्री आर के एस गुर्जर ने अपनी आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी करने का अप्रतिम साहस एवं निर्भयता का प्रदर्शन किया। इस मुहिम में एक डकैत को गोली लग गई और वह जमीन पर गिर पड़ा। अन्य दो डकैत घने जंगल की ओर बढ़ने लगे और पुलिस पार्टियों ने उनका पीछा किया। परन्तु उस भू भाग एवं क्षेत्र की भौगोलिक जानकारी ने भागते डकैतों का साथ दिया और वे घने जंगल में अदृश्य हो गए। गोलीबारी समाप्त होने के पश्चात छिपने के स्थान की तलाशी लेने पर वहाँ एक शव मिला जो टी शर्ट और जीन्स पैट पहने था। उसके पास से चैम्बर में .३१५ राउंड युक्त एक .३१५ बोर की माउजर राइफल बरामद हुई। उस मृत शरीर की कमर में दो बिल्डोरिया लिपटे हुए थे जिनमें .३१५ बोर के ३७ राउंड लगे थे। उस मृत शरीर से १४ फीट की दूरी पर .३१५ बोर की एक अन्य राइफल बरामद हुई। दिन प्रतिदिन के जरूरी सामान तथा खाली कारतूसों से भरा एक झोला भी बरामद हुआ। मारे गए डकैत की पहचान राम बाबू गड़रिया पुत्र कुंज लाल गड़रिया निवासी हर्षी, ग्वालियर के रूप में हुई जिस पर राज्य सरकार ने ५ लाख का इनाम घोषित कर रखा था।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री आदर्श कटियार, उप महानिरीक्षक, साजिद फरीद शापू, पुलिस अधीक्षक और राम किशन सिंह गुर्जर, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक १७ अप्रैल, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा

संयुक्त सचिव

सं. ७३-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### **अधिकारी का नाम और रैंक**

श्री बाबासाहेब दयानंद आधव  
सब इंस्पेक्टर

(मरणोपरांत)

### **उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:**

दिनांक १७.१०.२००६ को ०८.०० बजे और १८.१०.२००६ को ०८.११ बजे श्री बाबासाहेब दयानंद आधव, सब इंस्पेक्टर को थाणे और नवी मुंबई कंट्रोल रूम से यह टेलीफोन संदेश मिला कि घातक हथियारों से लेस डकैतों का एक गैंग राबेल पुलिस थाने की अधिकारिता के अरोली, सेक्टर-८ में स्थित पंजाब एंड महाराष्ट्र को-आपरेटिव बैंक लि. के भवन के परिसर में घुस गया है। स्टेशन हाऊस आफीसर और पी एस आई स्व. बाबासाहेब दयानंद आधव बिना कोई समय गंवाएं और पूरी बुद्धिमानी से तत्काल पुलिस हैड कांस्टेबल/११५८ कर्डी के साथ ८.१६ बजे पुलिस वाहन में उक्त बैंक की ओर चल पड़े। जब वे उक्त बैंक के गेट के पास पहुँचे तब उन्हें प्रातः काल का समय होने के कारण बैंक गेट के बाहर कोई संदिग्ध गतिविधि दिखाई नहीं दी। जैसे ही पी एस आई स्व. बाबा साहेब दयानंद आधव और पुलिस हैड कांस्टेबल/११५८ कर्डी बैंक के अंदर घुसे तभी बैंक के मुख्य द्वार के पीछे उनकी सशस्त्र डकैतों से मुठभेड़ हो गई। पी एस आई स्व. बाबा साहेब दयानंद आधव ने पूरी बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल करते हुए अपनी सर्विस पिस्तौल से गोली चलाने का प्रयास किया किन्तु दुर्भाग्य से डकैतों ने उन पर अचानक घातक हमला कर दिया। एक डकैत ने अपनी रिवाल्वर से गोली चला दी जिससे पी एस आई आधव गंभीर रूप से घायल हो गए। बाद में डकैत बचकर भाग गए। पंजाब एंड महाराष्ट्र को-आपरेटिव बैंक, एरोली में डकैतों के साथ हुई मुठभेड़ में उक्त अधिकारी ने अपने कर्तव्य के प्रति सर्वोत्तम बलिदान दिया। पी एस आई स्व. बाबा साहेब दयानंद आधव ने बहादुरी, कर्तव्यनिष्ठा का अद्भुत उदाहरण पेश किया और तीक्ष्ण बुद्धिमानी का परिचय दिया जिसके कारण बैंक कर्मचारी सुरक्षित रहे और डकैत खाली हाथ भाग गए और बैंक से कुछ भी नहीं लूट सके।

इस मुठभेड़ में, एस आई स्व. बाबा साहेब दयानंद आधव ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक १८ अक्टूबर, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ७४-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक की चौथी बार सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- |    |  |                                      |
|----|--|--------------------------------------|
| १. | थोक्कम कृष्णातोम्बी सिंह<br>इंस्पेक्टर             | (वीरता के लिए पुलिस पदक की चौथी बार) |
| २. | चिंगथम आनंदकुमार सिंह<br>सब इंस्पेक्टर             | (पी एम जी)                           |
| ३. | निंगथौजम सानाजाओबा सिंह<br>असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर | (पी एम जी)                           |
| ४. | थौनाजम हरोजीत सिंह<br>कांस्टेबल                    | (पी एम जी)                           |

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक १२.२.०७ को रात्रि लगभग ११ बजे एस पी इम्फाल पश्चिम को यह आसूचना रिपोर्ट मिली कि लगभग १५/२० की संख्या में प्रीपैक संवर्ग इम्फाल-कांगचप रोड़ के ताओथोंग ग्राम के पास मौजूद हैं और उनका उद्देश्य इस मार्ग से जाने वाली चुनाव कर्मी पार्टी और सुरक्षा कार्मिकों पर घात लगाना था। उक्त सूचना मिलने पर एस पी इम्फाल पश्चिम ने श्री थोक्कम कृष्णातोम्बी सिंह, इंस्पेक्टर और ओ/सी कमांडो यूनिट, इम्फाल पश्चिम और चिंगथम आनंदकुमार सिंह के नेतृत्व में एक विशेष कमांडो टीम को क्षेत्र को सुरक्षित करने और उधर से गुजरने वाली चुनाव कर्मी पार्टी और सुरक्षा कार्मिकों को सुरक्षा भी प्रदान किए जाने के लिए तैनात किया। अतः श्री थोक्कम कृष्णातोम्बी सिंह, इंस्पेक्टर और उनकी पार्टी उक्त क्षेत्र के लिए जिला मुख्यालय, इम्फाल पश्चिम से १२.२.२००७ की रात्रि में रवाना हुई। अपने मिशन के रूप में श्री थोक्कम कृष्णातोम्बी सिंह, इंस्पेक्टर और चिंगथम आनंदकुमार सिंह ताओथोंग गांव तक जा पहुँचे। निश्चित क्षेत्र के पास पहुँच कर श्री थोक्कम कृष्णातोम्बी सिंह, इंस्पेक्टर ने अपने कार्मिकों को अत्यधिक सतर्क रहने के लिए सचेत किया। तदनुरूप, चिंगथम आनंदकुमार सिंह और कुछ कमांडो कार्मिकों ने एक सिनेमा हाल के पश्चिम की ओर स्थिति संभाल ली जबकि श्री थोक्कम कृष्णातोम्बी सिंह, इंस्पेक्टर की कमान में कुछ कमांडो कार्मिकों ने मुख्य सड़क पर तलाशी/खोजबीन का कार्य करना शुरू किया। इसी बीच नम्बर प्लेट रहित एक सफेद मारुति जिप्सी को पश्चिम की ओर से तेजी से आते देखा गया। नम्बर प्लेट रहित वाहन (मारुति जिप्सी) को देखकर चकित हुए श्री थोक्कम कृष्णातोम्बी सिंह, इंस्पेक्टर ने वाहन की संदिग्ध गतिविधि को ध्यान में रखते हुए तुरंत अपने कार्मिकों को सचेत किया और उन्होंने वाहन को रुकने और उसमें बैठे व्यक्तियों को हाथ ऊपर करके कार से बाहर आने का संकेत किया। यह सब करने की बजाए कार सवारों ने ऐसा करने से मना कर दिया और वे वाहन में ही बैठे रहे जिससे ऐसा संकेत मिला कि वे ऐसा कुछ करने के लिए तैयार हैं जिससे कि कमांडो की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो। श्री थोक्कम कृष्णातोम्बी सिंह, इंस्पेक्टर

और उसकी पार्टी कुछ करने या मरने की स्थिति में थी क्योंकि वे ना तो अपनी स्थिति संभालने और न ही गोली चलाने या आगे बढ़ने की स्थिति में नहीं थे। ऐसी जटिल अवस्था में श्री थोक्कम कृष्णातोम्बी सिंह, इंस्पेक्टर कार में आगे बैठे व्यक्ति पर टूट पड़े और उसे काबू में करने का प्रयास किया। कार में आगे बैठे व्यक्ति ने भरी हुई गन निकाल ली और उसका घोड़ा दबाने ही वाला था। जब इस कड़े मुकाबले में श्री थोक्कम कृष्णातोम्बी सिंह, इंस्पेक्टर ने उसका हाथ कस कर पकड़ लिया तभी श्री निंगथौजम सानाजाओबा सिंह, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर ने उनकी सहायता की और वाहन से युवक को गर्दन पकड़ कर बाहर घसीट लिया। श्री निंगथौजम सानाजाओबा सिंह, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर ने भी उसके हाथ से चीनी हैड ग्रेनेड उस समय झपट लिया जब वह उसे फेंकने ही वाला था। कार में आगे बैठे एक और युवक को भी उनके द्वारा काबू में कर लिया गया। इस प्रकार श्री थोक्कम कृष्णातोम्बी सिंह, इंस्पेक्टर और श्री निंगथौजम सानाजाओबा सिंह, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर उस युवक से भरी हुई गन और चीनी हैड ग्रेनेड छीनने में कामयाब हो गए। इसी बीच, चिंगथम आनंदकुमार सिंह, सब इंस्पेक्टर और वाहन की तरफ दौड़ कर आए थौनाजम हरोजीत सिंह, कांस्टेबल सं. १०१०३१ ने कार की पीछे की सीट पर बैठे उन युवकों को पकड़ लिया जो ए.के.-५६ राइफल और एक यू.एस. कार्बाइन से लैस हो कर कमांडो को मारने के प्रयास में थे। चिंगथम आनंदकुमार सिंह, सब इंस्पेक्टर और थौनाजम हरोजीत सिंह, कांस्टेबल जिप्सी में पीछे की सीट पर बैठे युवकों पर पलक झपकते ही टूट पड़े। जबकि ए.के. ४७ राइफल से लैस युवक से चिंगथम आनंदकुमार सिंह, सब इंस्पेक्टर कड़ी टक्कर ले रहे थे (वह युवक पिछली सीट पर बाईं ओर था) तभी थौनाजम हरोजीत सिंह, कांस्टेबल ने यू.एस. कार्बाइन से लैस युवक पर प्रतिक्रिया की और कुछ समय के लिए उसे कड़ी टक्कर में उलझाए रखा और अपनी बहादुरी से उस युवक को गोली नहीं चलाने दी। वह ए.के. ५० राइफल से लैस युवक को भी काबू में करने में सफल रहे और इस प्रकार उन्होंने अन्य कमांडो के जीवन की रक्षा की। थौनाजम हरोजीत सिंह, कांस्टेबल भी यू.एस. कार्बाइन से लैस युवक को काबू में करने में सफल रहे। यदि चिंगथम आनंदकुमार सिंह, सब इंस्पेक्टर और थौनाजम हरोजीत सिंह, कांस्टेबल साहसी और शीघ्र कार्रवाई न करते तो कमांडो हताहत हो सकते थे। इस प्रकार, आखिरी मानव मृत्यु आप्रेशन में अति अनुभवी उल्लिखित बहादुर कमांडरो ने ऐसी बहादुरी और शीघ्रतापूर्ण कार्रवाई की जिससे शस्त्रास्त्रयुक्त उग्रवादियों के पास उस समय कुछ भी नहीं रहा जब कमांडो ने उन्हें पूरी तरह से काबू में कर लिया। उन्हें काबू में करने के बाद कमांडो ने वाहन की और उग्रवादियों की "जामा-तलाशी" ली। जांच-पड़ताल करने पर निम्नलिखित शस्त्र और गोलीबारुद की बरामदगी हुई:-

- |      |      |  |
|------|------|--|
| i)   | एक   | लेथड़ गन   |
| ii)  | पांच | लेथड़ बम   |
| iii) | एक   | चीनी हैड ग्रेनेड                                       |
| iv)  | एक   | "८७७०६७" अंकित यू.एस. कार्बाइन और साथ में खाली मैग्जीन |
| v)   | एक   | ए.के. ५६ राइफल और १५-१५ कार्ट्रिज. युक्त दो मैग्जीन।   |
| vi)  | एक   | सफेद मारुति जिप्सी (नम्बर प्लेट रहित)                  |

उल्लिखित सभी शस्त्र और गोलीबारुद सर्विसेबल हैं।

उग्रवादियों की बाद में पहचान निम्नलिखित के रूप में हुई :-

- i) लैंगपोकलक्पम बिनय सिंह उर्फ लक्पा (३१) पुत्र एल. कोंगजेंग लैकाई, एस/एस द्वितीय लै. आफ प्रीपाक।
- ii) पौलुन जोऊ उर्फ रुबिन (१९) पुत्र पम्खांथान जोऊ, चूड़चन्द्रपुर न्यू जोऊबेंग, जोऊ डिफेंस वालिन्टियर (प्रीपाक का सम्बद्ध यू.जी. गुट) का दुर्दांत सदस्य।
- iii) जिंखां सियम जोऊ (२७ वर्ष) पुत्र खपखोटुआन जोऊ, सगुनु जोऊ वेंग, जैड डी वी का सक्रिय सदस्य।
- iv) लायश्रम तांबा सिंह (३३ वर्ष) पुत्र स्व. एल जोय सिंह, चैरन मारवा लैकाई, प्रीपाक का एक दुर्दांत सदस्य।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री थोक्कम कृष्णातोम्बी सिंह, इंस्पेक्टर, चिंगथम आनंदकुमार सिंह, सब इंस्पेक्टर, निंगथौजम सानाजाओबा सिंह, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर, थौनाजम हरोजीत सिंह, कांस्टेबल, ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक की चौथी बार नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक १२ फरवरी, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ७५-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

#### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. के पौखेंतांग  
जमादार
२. ओ प्रेमनंदा सिंह  
असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर
३. एस श्यामो सिंह  
राईफलमेन

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक ८.०२.२००७ को रात्रि लगभग ७.२० बजे, लामलाई बाजार में सशस्त्र उग्रवादियों की मौजूदगी के बारे में विश्वस्त सूचना मिलने पर, जिनका आशय सुरक्षा कार्मिकों पर घात लगाने और चुनावी प्रक्रिया में गड़बड़ी फैलाने के लिए उम्मीदवारों और उनके सुरक्षा कार्मिकों पर हमला करना था। सूचना में यह भी उल्लेख था कि वे चुनाव अभियान के दौरान बाहर निकलने और वोट डालने आदि के लिए गंभीर परिणाम भुगतने के लिए आम जनता को भी डरा-धमका रहे हैं। यह सूचना मिलने पर, एक विशेष आप्रेशन की योजना बनाई गई और इम्फाल पूर्वी जिले के कमांडों की सात टीमें तत्कालीन इन्स्पेक्टर एम मुबी सिंह, ओ/सी कमांडो, इम्फाल पूर्व की कमान में भेजी गई जिनके साथ जमादार पौखेतांग, एस आई रियाज खान, एस आई वाई ओकन मीती, एस आई पी अचौबा, ए एस आई ओ.प्रेमनंदा सिंह और ए.एस.आई. मो. इकबाल खान की टीमें थी। ये सभी सी डी ओ/इम्फाल यूनिट के थे। योजना के अनुरूप लामलाई बाजार से दो कि.मी. पहले स्वामबंग काबुई गांव पहुँचने पर टीम को तीन ग्रुपों में विभाजित कर दिया गया और तीन अलग-अलग दिशाओं से युक्तिपूर्वक लामलाई बाजार पहुँचा गया। इन्स्पेक्टर मुबी सिंह, एस आई रियाज खान और जमादार पौखेतांग इम्फाल-उखरुल रोड पर मुख्य सड़क से पहुँचे, एस आई, वाई ओकन मीती और ए एस आई प्रेमनंद सिंह धान के खेतों से होकर सड़क के पूर्वी ओर से पहुँचे, एस आई, पी.अचौबा मीती और ए एस आई मो.इकबाल खान धान के खेत के पश्चिमी हिस्से से पहुँचे, निरीक्षक के. धनंजय सिंह ओ सी/लामलाई पुलिस स्टेशन से पहुँचे और उन्होंने उत्तर की ओर की नाकाबंदी करने के लिए लामलाई बाजार के पूर्वोत्तर भाग को कवर किया। लामलाई बाजार पहुँचने पर इन्स्पेक्टर मुखी सिंह के नेतृत्व वाली पुलिस पार्टी पर लामलाई बाजार में इम्फाल उखरुल सड़क के पूर्वी ओर के मार्केट शेड और वहाँ स्थित कूड़ेदान की ओर से भारी गोलीबारी की गई। पुलिस पार्टी तत्काल नीचे की ओर झुक गई और वहीं जमीन पर तथा सड़क किनारे के मकानों/दुकानों के पीछे लेट गई। के. पौखेतांग, जमादार और एस श्यामो सिंह, राईफलमेन सं. ०७९९००६ ने अपनी-अपनी ए के ४७ से तुरंत मार्किट शेड की तरफ जवाबी गोलीबारी की। जवाबी कार्रवाई के बाद २/३ मिनट तक सन्नाटा छाया रहा। इसी बीच ओ.प्रेमनंदा सिंह, असिस्टेंट सब-इन्स्पेक्टर और उसकी पार्टी के प्रत्येक कार्मिक, जो पूर्वी ओर के धान के खेतों से क्षेत्र को कवर कर रहे थे, अपनी-अपनी ए के-४७ सहित मार्किट शेड के दक्षिण की ओर पहुँचे और वहाँ से उन्होंने २/३ सशस्त्र व्यक्तियों को पहाड़ी की ओर जाने वाली अन्तर-ग्राम सड़क पर पूर्वी दिशा वाली पुलिस पार्टी की ओर गोलीबारी करते हुए और भागते हुए देखा। उन्होंने तुरंत उन पर गोली चलाई और सशस्त्र व्यक्तियों के बचकर भागने के मार्ग की नाकेबंदी कर दी। दूसरी ओर के पौखेतांग, जमादार और एस श्यामो सिंह, राईफलमेन रेंगकर सीमेंट के कूड़ेदान की थोड़ी सी ओट में हो गए, अचानक दोनों ने देखा कि २/३ सशस्त्र उग्रवादी अपने शस्त्रों से उन्हें ही निशाना बना रहे हैं। वे तुरंत नीचे झुक गए और जमीन पर सीधे लेट गए। गोलियाँ उनसे २/३ इंच ऊपर होकर गुजर रही थी। राईफलमेन श्यामो की सुरक्षा गोलीबारी की आड़ में, अपने जीवन को जोखिम की परवाह न करते हुए, जमीन पर लेटे-लेटे ही के पौखेतांग, जमादार ने रंजोए हेयर माडलिंग शाप को कुछ दूरी तक पार किया और सड़क के उभरे हुए भाग पर पहुँच कर जवाबी गोलीबारी की। इससे एक उग्रवादी मौके पर ही मारा गया। पुनः वहाँ ५/६ मिनट के लिए सन्नाटा छा गया। उसके बाद पूर्वी पहाड़ी की ओर से भारी गोलीबारी की गई, पहाड़ी की ओर से गोलीबारी का लाभ उठाते हुए सशस्त्र उग्रवादी को मौके पर ही मार

गिराया। वहां पुनः ५/६ मिनट के लिए सन्याटा छा गया। तत्पश्चात् पूर्वी पहाड़ी की ओर से गोलीबारी की गई, पहाड़ी की ओर से की गई गोलीबारी का लाभ उठाते हुए सशस्त्र उग्रवादी मार्केट शेड से बचकर भाग निकला। ओ प्रेमनंदा सिंह, असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर और उनकी टीम ने उनका पीछा किया, उग्रवादी ने उन पर धूआधार गोलियां चलाई, उन्होंने भी जवाबी कार्रवाई की और पहाड़ी की ओर जाने वाली (आई वी आर) सड़क पर खून की बूंदों की कतार देखी। अचानक हुई मूसलाधार बारिश और बिजली गुल ने पुलिस पार्टी की गतिविधि और उनके खिलाफ आप्रेशन को बाधित कर दिया। यह मुठभेड़ १५-२० मिनट तक चली। मुठभेड़ समाप्त होने के बाद क्षेत्र की सघन तलाशी ली गई और वहां गोली लगने से एक उग्रवादी मृत पाया गया तथा एक मैगजीन में ६ सजीव चक्र गोलियों सहित एक ए के ५६ राईफल और ७ सजीव चक्र गोलियों सहित एक और मैगजीन पाउच में रखी हुई बरामद की गई। बाद में उसकी पहचान सांसाराम अमरजीत सिंह (२२) पुत्र एस मैनो, निवासी वांगू अवांग लैकई, के रूप में हुई, जो निर्धारित पीपल्स लिबरेशन आर्मी (संक्षेप में पी एल ए) का एक दुर्दांत सशस्त्र कैडर था। आगे की गई तलाशी में इम्फाल-उखरुल सड़क के पश्चिम में मार्केट शेड के सामने रंजोए हेयर माडलिंग शाप में गोलियों से छलनी एक अन्य व्यक्ति का शव मिला। उसकी पहचान, सिविलियन के रूप में, अशांगबम श्यामहैंड सिंह (२७) सुपुत्र ए.श्यामकिशोर, नि. लामलाई चालाऊ के रूप में हुई। उसकी मृत्यु सशस्त्र उग्रवादियों की गोलीबारी से हुई। यह मामला शस्त्र अधिनियम की धारा २५-(आई-सी) के साथ पठित आई पी सी की धारा १२१/१२१-क/३०७/३४ और २० यू.ए.(पी) संशो. अधि. २००४ के अन्तर्गत लामलाई पुलिस स्टेशन में प्राथमिकी सं. १३(२)०७ के रूप में दर्ज है।

मौके से निम्नलिखित शस्त्र और गोलीबारुद की बरामदगी की गई :-

- (i) ६ सजीव राउंड और ७ सजीव राउंड युक्त दो मैगजीनों सहित एक ए.के. ५६ राईफल।
- (ii) एक मैगजीन छिपाने का पाउच।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री के पौखेंतांग, जमादार, ओ प्रेमनंदा सिंह, असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर, एस श्यामो सिंह, राईफलमेन ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ८ फरवरी, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ७६-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. थोकचोम जयन्त  
सब इन्स्पेक्टर
२. खुन्दरकपाम बीराचन्द्र सिंह  
कांस्टेबल
३. मकू थाम्बा मारिंग  
कांस्टेबल
४. तोन्गब्राम श्याम सिंह  
कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक १४.०७.२००७ को एक विश्वसनीय एवं कार्रवाई योग्य आसूचना रिपोर्ट प्राप्त हुई कि घाटी आधारित भूमिगत गुटों के सदस्य कुछ सशस्त्र उग्रवादी (बिशनुपुर जिले के) बामडियार-खाबम गाँव में और उसके आस-पास पुलिस/सुरक्षा बलों पर घात लगाने जैसी राज्य की सुरक्षा के विघटनकारी गतिविधियाँ करने के इरादे से घूम रहे हैं। यह आसूचना इनपुट प्राप्त होने पर दिन के बहुत छोटे से समय में अर्थात् लगभग ०२०० बजे श्री एम.मुबी सिंह, पुलिस उपाधीक्षक, और इन्स्पेक्टर थ. कृष्णातोम्बी सिंह के नेतृत्व में इम्फाल पश्चिम जिले के पुलिस कमाण्डो और मेजर जावेद के नेतृत्व में २२ मराठा लाइट इन्फैंट्री की एक संयुक्त टीम ने उस क्षेत्र में उन आदमियों की तलाश में एक अभियान शुरू किया। यह संयुक्त टीम इम्फाल से रिड्डीम सड़क के किनारे-किनारे उस क्षेत्र की ओर आगे बढ़ी। बामडियार गाँव के नजदीक पहुँचने पर उपयुक्त ब्रीफिंग के पश्चात् संयुक्त टीम विभिन्न दिशाओं में फैल गई तथा उन्होंने गाँव के आस-पास लगभग एक कि.मी. की परिधि के अन्दर क्षेत्र की घेराबंदी कर दी। गाँव, वस्तुतः आस-पास धान के खेतों से घिरे होने के कारण, गाँव की लम्बी और सुभेद्य सीमा होने के कारण उग्रवादियों के लिए भागना आसान था। घेराबंदी किए जाने के पश्चात् लगभग ०४४० बजे तलाशी अभियान शुरू किया गया। सेना कार्मिकों ने संदिग्ध क्षेत्र के पूर्वी हिस्से पर बाहरी घेराबंदी की हुई थी जबकि मेजर जावेद के सहयोग से उप निरीक्षक थो.जयन्त सिंह की अगुवाई में कमान्डो टीम पूर्वी हिस्से में पल्लई (३/४ फुट चौड़ा रास्ता) से धान के खेत के बीच में आगे बढ़ी। श्री एम.मुबी सिंह तथा निरीक्षक थो.कृष्णातोम्बी सिंह की कमान के अन्तर्गत बाकी कमान्डो टीम गाँव की गलियों और संकरी गलियों में घूमकर गाँव के आसपास उग्रवादियों के भागने के सम्भावित रास्तों की रोकथाम करने का अथक प्रयास कर रही थीं। इस तरह, लगभग ०४४५ बजे जब उप-निरीक्षक थो.जयन्त सिंह के नेतृत्व में कमान्डो कार्मिक तथा मेजर जावेद के अन्तर्गत २२ मराठा लाइट इन्फैंट्री की एक कॉलम धान के खेत के बीच में घनी झाड़ियों की तरफ आगे बढ़ रही थी, तो लगभग १०० मीटर की परिधि से



अचानक भारी गोलीबारी हुई। तत्काल उप निरीक्षक थो.जयन्त सिंह जोकि आगे बढ़ने वाली टीम में सबसे आगे थे जिनके एकदम पीछे कांस्टेबल थो.हरोजित, कांस्टेबल खु.वीरचन्द सिंह तथा कांस्टेबल एम.थम्बा मारिंग तथा कांस्टेबल टी. श्याम तत्काल झुक गए तथा पहाड़ी के पीछे क्षणिक कवरेज के लिए गदले धान के खेत में सीधे लेट गए तथा उसी समय उन्होंने जवाबी कार्रवाई की। मेजर जावेद और उनकी टीम जोकि सी डी ओ टीम के एकदम पीछे थे, ने कवरेज गोलीबारी प्रदान की। इस तरह सैनिक कार्मिकों की कवरिंग गोलीबारी का लाभ उठाते हुए उप निरीक्षक थो.जयन्त सिंह और कमान्डो की उनकी टीम, उग्रवादियों की तरफ रेंग कर आगे बढ़े जोकि झाड़ियों से भारी गोलीबारी कर रहे थे। कीचड़दार धान के खेतों के कारण उग्रवादियों के साथ निकट की लड़ाई में कमान्डो विपरीत परिस्थिति में थे, जोकि झाड़ियों में अच्छी तरह छुपे हुए थे। परन्तु उसी समय कमान्डो के दृढ़ निश्चय पूर्ण कृत्यों का सामना न करने के कारण उग्रवादी हरकत में आए और सुरक्षित स्थान तक पहुंचने के अपने अन्तिम प्रयास में वे एक गहरे नाले की तरफ भागे। इस संकटकालीन घड़ी में उप निरीक्षक थो. जयन्त सिंह तथा उपर्युक्त चार कांस्टेबल उग्रवादियों से भिड़ गए। भारी मुठभेड़ के बीच कांस्टेबल थो. हरोजित सिंह, तथा कांस्टेबल खु. वीरचन्द्र सिंह ने बांस की झाड़ियों के पास एक उग्रवादी को व्यस्त रखा तथा एक उग्रवादी को मार गिराया। घटनास्थल से एक ए के-५६ राइफल सहित ए के के १२ राउन्ड वाली एक मेगजीन, ए के की एक खाली मेगजीन, तथा ए के गोलाबारूद के २८ राउन्ड वाली ए के-५६ राइफल की एक (१) मेगजीन बरामद किए गए। उप निरीक्षक थो. जयन्त सिंह, कांस्टेबल टी.श्याम और कांस्टेबल एम. थम्बा मारिंग ने नाले के पास अन्य दो उग्रवादियों को व्यस्त रखा तथा भीष्म मुठभेड़ के पश्चात बाकी दो उग्रवादियों को मार गिराया। ए के के ६ राउन्ड के साथ एक मेगजीन से लेस एक ए के-५६ राइफल, ए के की एक खाली मेगजीन, ए के गोलाबारूद के २४ राउन्ड के साथ ए के-५६ की एक मेगजीन, एक मेगजीन से लेस एक एम-१४ राइफल, दोनों उग्रवादियों से बरामद किए गए।

बाद में उनकी पहचान निम्न के रूप में की गई :-

- (१) इन्दुदम चाओबा उर्फ लुवनाग पुत्र आई.कुल्ला सिंह, मयांग इम्फाल कोंचक;
- (२) नाओरेम मुकेश उर्फ चिंगलेन उर्फ लेईकाईकनबा, पुत्र एन.केशो सिंह, काकचिंग वायरीखा;  
तथा
- (३) थंगजम जोतिश उर्फ याएमा, पुत्र थो.रोमेश चन्द्रा, अगरतला, त्रिपुरा।

ये सभी गैर कानूनी गुट "पीपल लिबरेशन आर्मी (एल पी ए) के लडाकू गुट से संबंध रखते हैं।"

पीड़ित और अन्य साक्ष्यों द्वारा बाद में इन मृतक उग्रवादियों की पहचान एफ आई आर सं. ९६(७) ०७ सी सी पी पी एस, आई पी सी की धारा ३७६/३४, शस्त्र अधिनियम की धारा २५ (१-सी), एस सी/एस टी पी ओ अधिनियम की धारा ३(१) (ख) तथा यू ए (पी) की धारा २० के तहत मुख्य अभियुक्त के रूप में की गई।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री थोकचोम जयन्त, सब-इंस्पेक्टर, खुन्दरकपाम बीराचन्द्र सिंह, कांस्टेबल, मकू थाम्बा मारिंग, कांस्टेबल तथा तोन्गब्राम श्याम सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक १४ जुलाई, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ७७-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- |    |   |                         |
|----|---|-------------------------|
| १. | मोइरंगथेम मुबी सिंह<br>पुलिस उपाधीक्षक    | (पी एम जी)              |
| २. | अहोंगसंग बाम टोम्बा सिंह<br>सब इंस्पेक्टर | (पी एम जी का प्रथम बार) |
| ३. | पेबाम जॉन सिंह<br>सब इंस्पेक्टर           | (पी एम जी का प्रथम बार) |
| ४. | मुईपुईनामेई जेम्स थांगल<br>सब इंस्पेक्टर  | (पी एम जी)              |
| ५. | ओईनाम केशोर सिंह,<br>कांस्टेबल            | (पी एम जी)              |
| ६. | सनासम किरन कुमार सिंह<br>कांस्टेबल        | (पी एम जी)              |

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

२२.९.०७ को लगभग ०८०६ बजे एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई कि सिलवर रंग की एक मारुति कार संख्या एम एन-१के/३०६९ का ३/४ अज्ञात सशस्त्र युवकों द्वारा लामशेंग क्षेत्र से अपहरण कर लिया गया है। उक्त सूचना की प्राप्ति पर तत्काल श्री एम.मुबी सिंह, पुलिस उपाधीक्षक, जी ओ-प्रभारी, कमान्डो यूनिट, इम्फाल पश्चिम जिला की समग्र कमान के अन्तर्गत सब इंस्पेक्टर ए.टोम्बा सिंह, उप निरीक्षक एम जेम्स थांगल तथा सब इंस्पेक्टर पी.जान सिंह की पार्टियों को शामिल करके इम्फाल पश्चिम जिला के कमान्डो लामशेंग क्षेत्र की तरफ दौड़े। पटसोई स्थित २२-मराठा लाइट इन्फेंटरी की सेना टुकड़ी को भी पहुंचने के लिए सूचित किया गया तथा लामबल, टेरा ऊरक, लामलौगेई और कोटरुक गांवों में संभावित भागने के रास्तों को रोकने की भी सूचना दी गई। सब इंस्पेक्टर पी.जॉन, के साथ सब इंस्पेक्टर ए.टोम्बा सिंह फायेंग गांव के रास्ते लामशेंग बाजार की तरफ रवाना हुए। लामशेंग पुल पर पहुंचने के लगभग ५ मिनट पश्चात अपहरण की गई मारुति कार इम्फाल की तरफ

से आ रही थी तथा उसे रुकने के लिए संकेत दिया गया। परन्तु कार में बैठे लोगों ने अचानक स्वचालित हथियारों से कमान्डो के ऊपर गोलीबारी करना शुरू कर दिया तथा वे लामशेंग फायेंग सड़क के जरिए पश्चिमी तरफ गाड़ी चलाने लगे। कमान्डो ने तुरन्त जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी तथा उन्होंने उग्रवादियों का तेजी से पीछा करना शुरू कर दिया। तथापि, लायेरेन काबी गांव के चौराहे पर पहुंचने पर उग्रवादियों ने मारुति कार को उत्तर की तरफ मौड़ दिया तथा वे लायेरेन काबी गांव के जरिए टेरा उरक गांव की तरफ बढ़ गए। उसी समय, सब इंस्पेक्टर राम.जेम्स थंगल के साथ श्री राम मुबी सिंह की कमान्डो टीम ने भी टेरा उरक की अन्य उप-गली के जरिए भागते हुए सशस्त्र युवकों का तेजी से पीछा किया। लगभग पूर्वाह्न ०९३० बजे लामलोंगेई गांव पहुंचने पर सशस्त्र उग्रवादियों ने धान के खेत के पास मारुति कार को छोड़ दिया तथा "लामलोंगेई मानिंग शामुतबी लाऊबक" नामक व्यापक कीचड़दार धान के खेत के जरिए विभिन्न दिशाओं में काउटरुक की तलहटी की तरफ भागना शुरू कर दिया। सशस्त्र उग्रवादियों ने अपने स्वचालित हथियारों से पीछा करने वाली कमान्डो टीमों पर अंधाधुंध गोलीबारी करना शुरू कर दिया। चूंकि धान का खेत कीचड़दार था तथा उसमें छोटी-छोटी धान उगी हुई थी तथा नालियां भरी हुई थीं, इसलिए यह उग्रवादियों के लिए लाभप्रद सिद्ध हुआ, इस तरह पुलिस कार्मिकों के लिए पीछा करना अधिक जोखिमपूर्ण हो गया। इसी बीच, सब इंस्पेक्टर पी.जॉन तथा सब इंस्पेक्टर ए.टोम्बा के नेतृत्व वाली कमान्डो टीम ने धान के खेत में उग्रवादियों का पीछा करते हुए धान के खेत की नहर के अन्दर लगभग ५०/६० मीटर दूर दो उग्रवादियों को देखा। अचानक उनमें से एक उग्रवादी ए के राइफल के साथ नहर से कूद कर बाहर आ गया तथा आगे बढ़ते कमान्डो पर गोलीबारी की। सब इंस्पेक्टर पी.जॉन ने भी सहजता से प्रतिक्रिया की तथा उनको घायल करने वाले उग्रवादी पर गोली चला दी। घायल होने के बावजूद उग्रवादी पुलिस कमान्डो पर लगातार गोलीबारी करता रहा, तथापि सी/सं. ०६०१०९९ केशोर सिंह की सतत् जवाबी कार्रवाई के परिणामस्वरूप उग्रवादी की तत्काल मृत्यु हो गई। उसी समय, सब. इंस्पेक्टर ए. टोम्बा सिंह तथा सी/सं. ०६०१००९ एस.किरन कुमार जिनको बांयी तरफ भेजा गया था, ने नहर के साथ भागने के निष्फल प्रयास में नहर की बांयी तरफ भागते हुए अन्य उग्रवादी को देखा और उसको चुनौती दी तथा चुनौती को अनसुनी करने के पश्चात् उसको मार गिराया। मुठभेड़ स्थल की तलाशी पर १५ जैव राउन्ड सहित एक ए के-५६ राइफल तथा स्थल से गोला बारुद के अन्य ७ खाली खोल बरामद किए गए। बाद में दोनों मृतकों की पहचान (i) कोन थुजम इन्द्र सिंह उर्फ महादेवा (२५), पुत्र के.इबोचा सिंह, लामवाम अवांग लेइकई तथा (ii) लोथटोनजम राजु सिंह (३०), पुत्र एल.लुखेई सिंह, वांगखेई टोकपाम लेइकई, प्रतिबंधित संगठन रेड आर्मी, प्रीपाक के खूंखार सदस्यों के रूप में की गई। दूसरी तरफ, श्री एम. मुबी सिंह ने सब इंस्पेक्टर एम.जेम्स थांगल तथा सी/सं. ०६०११९२ थो. रवी सिंह ने २ अन्य सशस्त्र युवकों का पीछा किया जोकि नहर के पश्चिमोत्तर में कोटरुक पहाड़ी की तलहटी की तरफ भाग रहे थे। चूंकि कमान्डो नजदीक पहुंच रहे थे, सशस्त्र उग्रवादियों ने भागना बंद कर दिया, नाले पर मोर्चा संभाला, तथा कमान्डो की तरफ गोलीबारी करना शुरू कर दिया। भीषण मुठभेड़ के लगभग १० मिनट पश्चात्, उग्रवादियों ने जवाबी कार्रवाई शुरू की तथा वे नहर के साथ-साथ भागने लगे। अपने कवर के रूप में नहर के ऊंचे भाग पर पहुंचने पर उग्रवादियों ने पीछा करने वाले कमान्डो की तरफ दुबारा गोलीबारी करना शुरू कर दिया। श्री एम.मुबी सिंह और सब इंस्पेक्टर एम.जेम्स थांगल रेंगते हुए आगे बढ़ने लगे जबकि कांस्टेबल थां रबीसिंह और कांस्टेबल अजीज खान ने कवरिंग गोलीबारी प्रदान की। इस संकटकालीन स्थिति में श्री एम.मुबी सिंह तथा उप निरीक्षक एम.जेम्स थांगल जोकि सी आई आपरेशन के क्षेत्र में काफी अनुभवी अधिकारी थे, ने दृढ़ साहस का प्रदर्शन किया तथा वे अपनी छाती के बल रेंगते हुए आगे बढ़े। जैसे ही उन्होंने एक सशस्त्र उग्रवादी को उन पर गोली चलाने के लिए अपना हथियार उठाते हुए देखा, दोनों अधिकारियों ने अपने ए के हमलावर राइफलों

से एक साथ गोलीबारी की तथा उनमें से एक सशस्त्र उग्रवादी घटनास्थल पर ही मारा गया। अन्य सशस्त्र युवक घने धान के पौधों का लाभ उठाते हुए कोटरक पहाड़ियों की तरफ भागने में सफल रहा। मुठभेड़ स्थल की तलाशी पर १३ जैव राउण्डों से लैस एक एके-५६ राइफल, एक मेगजीन तथा एके गोलाबारुद के ८ खाली खोल मृत शरीर के पास से बरामद किए गए। बाद में मृतक की पहचान गुरुमायुम निलाचन्द्र शर्मा उर्फ नोंगओंग (२८) पुत्र जी. गोपाल शर्मा उरीपोक हुई द्रोम लेइकई एस/एस कप्तान, प्रीपाक, गैर कानूनी आतंकवादी संगठन के रूप में की गई। बाद में यह पाया गया कि मृतक कई संगीन अपराधों में संलिप्त है तथा उसे निम्नलिखित मामलों में कई बार गिरफ्तार किया गया है। (१) प्रथम सूचना रिपोर्ट सं. २५२(४)९६, (२) प्रथम सूचना रिपोर्ट सं. ६२० (११)९६ आई पी एस, (३) प्रथम सूचना रिपोर्ट सं. ३१०(१०)०२ आई पी एस तथा (४) प्रथम सूचना रिपोर्ट सं. ११४(०४)०७ आई पी एस। तत्पश्चात संयुक्त टीम ने सिलवर रंग की लापता मारुति कार पंजीकरण सं. एम एन १ के/३०६९, पंजीकरण प्रमाणपत्र तथा मारुति कार के अन्दर एके गोलाबारुद के ३ खाली खोलों को लामलोंगेई गांव से बरामद किया।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री मोहरंगथेम मुबी सिंह, पुलिस उपाधीक्षक, अहोंगसंगबाम टोम्बा सिंह, सब इंस्पेक्टर, पेबाम जॉन सिंह, सब इंस्पेक्टर, मुईपुईनामेई जेम्स थंगल, सब इंस्पेक्टर, ओईनाम केशोर सिंह, कांस्टेबल तथा सनासम किरन कुमार सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २२ सितम्बर, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ७८-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. शौगराकपम चंद्र कुमार सिंह  
सब इंस्पेक्टर
२. ओनम मेघाचंद्र सिंह  
कांस्टेबल
३. यूनो थेको  
कांस्टेबल

#### ४. निगंथौजम सनातन सिंह कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

३.१०.२००७ को लगभग सायं ८ बजे एक विश्वसनीय सूचना मिली कि कुछ हथियार बंद विद्रोही/आतंकवादी किसी अच्छे मौके पर एन एच-१५० अर्थात् टीडीम रोड से गुजरने वाले पुलिस/सुरक्षा बलों पर घात लगाने के उद्देश्य से बामदीयार गांव में और उस के आस पास घूम रहे हैं। इस सूचना के मिलते ही तुरंत इंस्पेक्टर कृष्णाटोम्बी सिंह, ओ सी कमांडो यूनिट इम्फाल, पश्चिमी जिले की देख रेख में एस आई श्री चंद्र कुमार की कमांडो पार्टी, मेजर जावेद के अधीन २२ मराठा एल आई की एक टुकड़ी के साथ शाम ८.३० बजे के लगभग मानव मृग्या अभियान चलाने के लिए उक्त स्थान की ओर गए। एनएच -१५० के पास पहुंच कर और बामदीयार लमखाई रोड क्रोसिंग पहुंचने पर संयुक्त दल ने अंतर गांव रोड के साथ बामदीयार गांव की ओर कूच किया तथा साथ में सबसे आगे वाले वाहन में एस आई श्री चंद्रकुमार सिंह की कमांडो पार्टी उसके पीछे निरीक्षक चि. कृष्णाटोम्बी सिंह की पार्टी और सबसे पीछे सेना के जवान थे। आगे वाले वाहन में सवार एस आई श्री चंद्र कुमार और पार्टी जब आई वी रोड के साथ बामदीयार गांव की ओर बढ़ रही थी तभी बामदीयार लमखाई से लगभग ६०० मीटर की दूरी पर आतंकवादियों के एक गुप्त ने परिष्कृत हथियारों से आई वी रोड की दोनों दिशाओं से कमांडो पर गोलीबारी शुरू कर दी। रात होने के कारण, अंधेरा अधिक हो गया और इसके कारण रोड पर कमांडो की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो गया था। तुरंत, एस आई चंद्र कुमार सिंह और उसके कार्मिक अपने वाहन से कूद गए और उसी समय उन्होंने आतंकवादियों की गोलियों की बौछारों पर जवाबी कार्रवाई की तथा कमांडो ने अपने आपको रोड के दोनों तरफ दो भागों में बांट लिया। अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए, एस आई चंद्र कुमार, कांस्टेबल ओ मेघाचंद्र सिंह रोड के दायीं तरफ हो गए और कांस्टेबल यूनो थेको, कांस्टेबल एन सनातन सिंह बायीं तरफ हो गए तथा आतंकवादियों द्वारा की जा रही निरंतर गोलीबारी के बावजूद उनका पीछा किया और रेंगते हुए आगे बढ़े तथा उनकी आमने-सामने की मुठभेड़ हो गई। इंस्पेक्टर थि. कृष्णाटोम्बी सिंह उसके कार्मिक और सैन्य कार्मिकों ने कवर प्रदान किया। कमांडो के जबरदस्त अभियान का विरोध करने में अक्षम पाकर उग्रवादियों ने भागना शुरू कर दिया। चूंकि उग्रवादी बचकर भाग रहे थे और वे पूरी तरह से धान के पौधों से आच्छादित धान के खेत में नाला के किनारे दौड़ रहे थे इसलिए, कमांडो को भागते हुए उग्रवादियों का पीछा करने में बहुत दिक्कत आई। इस प्रकार, एस आई श्री चंद्र कुमार सिंह इन विद्रोह विरोधी अभियानों में पूर्णतया अनुभवी होने और उनके रणनीतिक अभियान एवं दृष्टिकोण की वजह से उनके कार्मिक कट्टर मुठभेड़ करने में सफल हुए और उन्होंने बामदीयार गांव की ओर भागते हुए उग्रवादियों का पीछा करना जारी रखा। अन्ततोगत्वा, एस आई चंद्र कुमार सिंह, कांस्टेबल मेघाचंद्र सिंह एक उग्रवादी को मारने में सफल रहे जिसकी बाद में थांगम गांधी उर्फ टोम्बा सिंह, २६ वर्ष पुत्र (स्व.) थि. इबोम्बा सिंह निवासी खुरई कोंगपाल थाना पोरमपट के रूप में शिनाख्त हुई जो गैर-कानूनी कंगलईपाक कम्युनिस्ट पार्टी (के सी पी) भूमिगत गुट का कट्टर सदस्य था। यह व्यक्ति १९९७ में प्रशिक्षित प्रीपाक कार्यकर्ता था, इसे १९९७ में गिरफ्तार किया गया था। उसे वर्ष २००० में यू एन एल एफ सैन्यबल संख्या १२०४ के अंतर्गत शामिल किया गया था और

फिर वह के सी पी में शामिल हो गया था। वह कई जघन्य अपराधों के मामलों से संबंधित कई विद्रोह विरोधी मामलों में संलिप्त था। उससे २१ जिन्दा राउंडों युक्त एक ऐ के ५६ राईफल और दो मैगजीन बरामद हुई। दूसरी ओर कांस्टेबल यूनो थेको और कांस्टेबल ९००९८ एन सनातन सिंह गांव के अंदर की सड़क के बायीं ओर दौड़ते हुए उग्रवादी के साथ अदम्य साहस और बहादुरी के साथ लड़े। चूंकि यह जगह कीचड़ युक्त और असमतल थी इसलिए उनको उग्रवादी के साथ लड़ने में और वे भी अंधेरे में काफी दिक्कत आ रही थी। अंत में उन्होंने एक उग्रवादी को मार गिराया। जिसकी बाद में शिनाख्त लांगेजाम्प थोइचा सिंह उर्फ इंगबा २४ वर्ष एल पुत्र बुद्धी सिंह निवासी समरोह मारवा थाना बंगोई, के सी पी के एक कट्टर कार्यकर्ता के रूप में हुई। वह वर्ष २००३ में यू एन एल एफ में शामिल हुआ था। यह व्यक्ति राज्य में विद्रोह से संबंधित कई जघन्य आरोपों में संलिप्त था और उसकी यू एन एल एफ तथा के सी पी के रूप में दो बार गिरफ्तारी हुई थी। वह इम्फाल क्षेत्र के व्यापारियों से के सी पी के लिए भारी मात्रा में जबरन धन वसूली के लिए जिम्मेदार था। उसके कब्जे से जिन्दा राउंडों से लैस एक ९ एम एम पिस्तौल (एक मैगजीन में) बरामद हुई। यह भूमिगत सदस्य लगभग पांच, छः व्यक्तियों की मुठभेड़ के लिए जिम्मेदार था। शेष बचे अंधेरे का फायदा उठाकर बामदीयार गांव की ओर भाग गये।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री शोगराकपम चंद्र कुमार सिंह, सब इंस्पेक्टर सिंह, ओइनम मेघाचंद्रा सिंह, कांस्टेबल, यूनो थेको, कांस्टेबल और नींगथोजाम सनातन सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ३ अक्टूबर, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ७९-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/पुलिस पदक की ५वीं बार सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- |                          |                                      |
|--------------------------|--------------------------------------|
| १. अजय कुमार             | (पी एम जी)                           |
| पुलिस उपायुक्त           |                                      |
| २. मोहन चन्द शर्मा       | (वीरता के लिए पुलिस पदक की ५वीं बार) |
| इंस्पेक्टर               |                                      |
| ३. रविन्द्र कुमार त्यागी | (पी एम जी)                           |
| सब इंस्पेक्टर            |                                      |

४. दलीप कुमार  
सब इंस्पेक्टर

(पी एम जी)

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक ८.५.२००६ को विशेष सैल/एन डी आर, दिल्ली को यह विशिष्ट सूचना मिली कि गुजरात सीमा के माध्यम से आजम चीमा उर्फ बाबा (लश्करे तोएबा का भारतीय आप्रेशनल चीफ) द्वारा भेजे गए विस्फोटकों के जखीरों को हाल ही में प्राप्त करने वाले फिरोज उर्फ अब्दुल्ला और मोहम्मद अली नामक लश्करे तोयबा के पाक-प्रशिक्षित दो उग्रवादी गोल्डन टेम्पल एक्सप्रेस से दिल्ली आएंगे और हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर उतरेंगे। इस सूचना के आधार पर विशेष सैल की एक टीम ने निजामुद्दीन स्टेशन पर एक जाल बिछाया और शाम लगभग ७ बजे फिरोज अब्दुल लतीफ घासवाला उर्फ अब्दुल्ला और मोहम्मद अली छीपा उर्फ अब्दुल्ला को ४ कि.ग्रा. आर डी एक्स, ४ डिटोनेटर और नकद ५०,००० रु. सहित पकड़ लिया। पूछताछ के दौरान गिरफ्तार किए गए उग्रवादियों ने यह प्रकट किया कि उन्हें अपने हासिल किए गए जखीरे को भारत में "लश्करे तोएबा के आप्रेशनल कमांडर" और अपने पाक राष्ट्रिक साथी अर्थात् मोहम्मद इकबाल उर्फ अबु हमजा, निवासी बहावलपुर, पाकिस्तान को सौंपना था। उन्होंने यह भी प्रकट किया कि मो. इकबाल उर्फ अबु हमजा २०००-२००३ से जम्मू और कश्मीर में सक्रिय रहा है और सशस्त्र बलों के साथ दर्जनों आतंकवादी आप्रेशनों में संलिप्त रहा है। जिसके कारण जम्मू और कश्मीर में सशस्त्र बलों के अनेक कार्मिक हताहत हुए हैं। उन्हें अबु हमजा से रात्रि लगभग ९ बजे जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम, दिल्ली के मुख्य द्वार पर मिलना था। जहां पर वह श्वेत सेंट्रो कार नम्बर ४४५७ में आया। तत्काल, तत्कालीन डी सी पी/विशेष सैल के नेतृत्व में एक सशक्त टीम तैयार की गई जिसमें ए सी पी/संजीव यादव, इंस्पेक्टर मोहन चंद शर्मा, एस आई रविन्द्र कुमार त्यागी, एस आई दलीप कुमार, इंस्पेक्टर बद्रीश दत्त, इंस्पेक्टर संजय दत्त, एस आई राहुल कुमार, एस आई भूप सिंह, एस आई, विनय त्यागी, एस आई कैलाश बिष्ट, एस आई पवन कुमार, एस आई रमेश लांबा, एस आई अशोक शर्मा, एस आई धर्मेन्द्र, ए एस आई सतीश कुमार, ए एस आई विक्रम, ए एस आई संजीव लोचन, एच सी सतेन्द्र, एच सी राजबीर सिंह, एच सी बिजेन्द्र, एच सी कृष्ण राम, एच सी रुस्तम, कांस्टेबल राजेन्द्र, कांस्टेबल बलवंत, कांस्टेबल गुरमीत, कांस्टेबल इकबाल कांस्टेबल निसार और कांस्टेबल राजीव को शामिल करके उन्हें उचित हथियारों/गालीबारुद से लैस किया गया। टीम के सदस्यों को छोटी टीमों में विभाजित कर दिया गया और उन्हें जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम के मुख्य द्वार की ओर जाने वाले संदिग्ध मार्ग पर तैनात कर दिया गया। क्षेत्र की भी युक्तिपूर्वक घेराबंदी इस प्रकार से की गई जिससे कि कोई सिविलियन हताहत न हो। तत्कालीन डी सी पी श्री अजय कुमार, इंस्पेक्टर मोहन चन्द शर्मा, एस आई रविन्द्र कुमार त्यागी और एस आई दलीप कुमार वाली अग्रपाटी ने स्टेडियम के मुख्य द्वार पर गोल चक्कर के पास अपनी स्थिति संभाल ली। रात्रि को लगभग ९.१५ बजे एच आर-२९-एल-४४५७ नम्बर प्लेट लगी एक श्वेत सेंट्रो कार सी जी ओ कम्पलैक्स, लोधी रोड की

और से वहां आई और स्टेडियम के मुख्य द्वार के समीप गोल चक्कर के पास वह रुक गई और कार से एक व्यक्ति उतरा और कार के पास की पटरी पर खड़ा हो गया। गिरफ्तार अपराधी फिरोज अब्दुल लतीफ घासवाला उर्फ अब्दुल्ला ने उसकी अपने साथी मो. इकबाल उर्फ अबू हमजा के रूप में उसकी पहचान की। तुरंत ही तत्कालीन डी सी पी श्री अजय कुमार, इसंस्पेक्टर मोहन चन्द शर्मा, एस आई रविन्द्र कुमार त्यागी और एस आई दलीप कुमार वाली अग्रपाटी ने अन्य स्टाफ को सतर्क किया और दुस्साहसी मो. इकबाल उर्फ अबू हमजा को पुलिस पार्टी के समक्ष आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी। सुरेन्द्र की आवाज सुनकर अबू हमजा ने तुरंत ही अपना अग्नेयास्त्र निकाल लिया और चारों ओर नजर घुमाकर गोल चक्कर की ओर पुलिस पार्टी की हलचल देखकर वह अग्र पार्टी पर गोल चक्कर की ओर अंधाधुंध गोली चलाता हुआ पंप हाऊस की ओर भागा और स्टेडियम की लोहे की बाड़ के पास सूखे नाले (ड्रेन) में अपनी स्थिति संभाल ली। छापामार पार्टी ने पुनः उस विदेशी आतंकवादी से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा लेकिन उसने छापामार पार्टी की चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया और छापामार पार्टी को हताहत करके तथा अंधेरे का लाभ उठाकर भाग निकलने के लिए अपने स्वचालित हथियार से उक्त पार्टी पर गोलियां चलाता रहा।

दुस्साहसी मो. इकबाल उर्फ अबू हमजा पुलिस पार्टी की ओर लगातार गोली चलाता रहा। तत्कालीन डी सी पी श्री अजय कुमार, इसंस्पेक्टर मोहन चन्द शर्मा, एस आई रविन्द्र कुमार त्यागी और एस आई दलीप कुमार वाली अग्रपाटी ने भी अपने टीम के सदस्यों पर खतरे को टालने के लिए अपने स्वचालित हथियारों से जवाबी गोलीबारी की। टीम के अन्य सदस्यों ने भी अग्रपार्टी को पीछे से सुरक्षा गोलीबारी प्रदान की। दोनों ओर से यह गोलीबारी २० मिनट तक चली और बचकर भाग निकलने की फिराक में वह विदेशी आतंकवादी गोली लगने से घायल हो गया। जब उग्रवादी की ओर से गोलीबारी बंद हो गई तब अग्रपार्टी उस पाक उग्रवादी की ओर बढ़ी और उसे वहां घायल अवस्था में पड़ा पाया। घायल उग्रवादी को तुरंत एम्स अस्पताल ले जाया गया जहां उसे मृतक लाया गया घोषित किया गया। मृतक उग्रवादी ने अपनी स्वचालित पिस्तौल से पुलिस पार्टी पर २० चक्र गोलियां चलाई थीं। इस दुर्घात उग्रवादी को काबू करने में विशेष सैल की टीम ने भी ४४ चक्र गोलियां चलाई थी, जांच-पड़ताल करने के दौरान मृतक के कब्जे से और दिल्ली और आस-पास के शहरों में आतंकवादी गतिविधियां चलाने के लिए राजेश के छद्म नाम से बल्लभगढ़, हरियाणा की जगदीश कालोनी में रह रहे उसके किराए के कमरे से २ एके-५६ एसाल्ट राईफल, ए.के. राइफलों की ६ मैगजीन, एके राइफल के सजीव १७९ चक्र, १० सजीव हैंड ग्रेनेड, ४ कि.ग्रा. आर डी एक्स विस्फोटक, ५ कि.ग्रा. पी ई टी एन विस्फोटक (प्लास्टिक विस्फोटक), ४ इलेक्ट्रॉनिक डेटोनेटर, १- .३० कैलीबर की स्टार पिस्तौल साथ में दो अतिरिक्त मैगजीन, एक थोर्प सेटलाइट फोन, १० हैंड-ग्रेनेडों का एक बंडल, ३ कि.ग्रा. यूरिया का रसायन, ६ बातेलों में भरा ३ लिटर नाईट्रिक एसिड, १ लि. ग्लेसरीन, पाकिस्तान से संचालन कर रहे लश्करे-तोएबा के सदस्यों के नाम-पते और लश्करे तोएबा गुट के अन्य भारतीयों से संबंधित आतंकवादी गतिविधियों के लिए उनके भारत में लक्ष्य के उल्लेख वाली डायरियां आदि, मानीटर युक्त एक कम्प्यूटर, सी पी यू और इंटरनेट; नकद ५०,००० रु., जाली ड्राईविंग लाइसेंस और एक सेन्ट्रो कार की बरामदगी की गई। जांच पड़ताल के दौरान यह पता चला कि मृतक उग्रवादी मो. इकबाल उर्फ अबू हमजा, निवासी मोहल्ला अब्बा सियान, मुल्तान रोड, बहावलपुर, पाकिस्तान को भारत में भारत से सम्बद्ध लश्करे तोएबा के चीफ



आप्रेसनल कमांडर अर्थात् आजम चीमा उर्फ बाबा, नि. बहावलपुर, पाकिस्तान द्वारा भारत में आप्रेसनल कमांडर के रूप में भेजा गया था। मृतक उग्रवादी लश्करे तोएबा गुट का एक सुस्साहसिक सदस्य था। जानकारी के अनुसार मृतक उग्रवादी मो. इकबाल उर्फ अबु हमजा वर्ष २००० से २००३ तक जम्मू कश्मीर के पुंछ और राजौरी सेक्टर में लश्करे तोएबा का जिला कमांडर भी था जहां वह सेना, बी एस एफ, सी आर पी एफ पर दर्जनों आतंकवादी हमले करने के लिए जिम्मेदार था, जिनके कारण वहां बलों के अनेक कार्मिक हताहत हुए थे।

मृतक उग्रवादी मो. इकबाल उर्फ अबु हुसैन जगदीश कालोनी, बल्लभगढ़, हरियाणा में एक किराए के मकान सं. ४४१/९ को लम्बे अर्से से अपना आधार बनाए हुए था और वह उसमें राजेश कुमार के दत्त नाम से रह रहा था। उसने जाली ड्राईविंग लाईसेंस हासिल कर लिया था, जाली नाम और पहचान से एक सेंट्रो कार और अन्य सामान खरीदा था। उसने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र तथा गुजरात और महाराष्ट्र में श्रृंखलाबद्ध विस्फोटों के लिए काफी बड़ी मात्रा में शस्त्र, अस्त्र और गोलीबारद तथा विस्फोटक हासिल किए हुए थे। किसी भी आतंकवादी गुट से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में बरामद की गई यह विस्फोटकों की अब तक की सबसे अधिक मात्रा थी। उसने गिरफ्तार किए गए पाक प्रशिक्षित उग्रवादियों अर्थात् फिरोज अब्दुल लतीफ घासवाला उर्फ अब्दुल्ला, नि. मुम्बई (महाराष्ट्र) और मो. अली छिप्पा उर्फ अब्दुल्ला, नि. अहमदाबाद (गुजरात) की सहायता से भारत में एक बड़ा नेटवर्क स्थापित कर लिया था। बाद में अहमदाबाद में विस्फोटक सामग्री के एक बड़े जखीरे के साथ ऊमर और तासों नामक लश्करे तोएबा के दो और उग्रवादियों को गिरफ्तार किया गया।

इस संबंध में पुलिस स्टेशन लोधी कालोनी, नई दिल्ली में कानून की उपयुक्त धाराओं के अन्तर्गत एक मामला दर्ज किया गया।

### अधिकारियों की व्यक्तिगत भूमिका

#### श्री अजय कुमार-तत्कालीन डी सी पी/विशेष सैल

इस आप्रेसन में तत्कालीन डी सी पी श्री अजय कुमार ने पुलिस पार्टी का नेतृत्व किया और अपनी तैनाती गोल चक्कर से सटे संवेदनशील स्थान पर की। उन्होंने उग्रवादी को पुलिस पार्टी के समक्ष आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी। उग्रवादी ने आत्मसमर्पण करने की चेतावनी पर कोई प्रतिक्रिया नहीं की और गोल चक्कर के पास श्री अजय कुमार की हलचल भांप कर श्री अजय कुमार की ओर गोलियां चलाते हुए उसने वहां से तत्काल भागने की कोशिश। उसकी एक गोली साहसी डी सी पी के बिल्कुल नजदीक से गुजर गई। श्री अजय कुमार ने तत्काल छापामार पार्टी को सुरक्षित स्थिति संभालने का आदेश दिया तथा उग्रवादी के साथ जवाबी गोलीबारी की। दुस्साहसी उग्रवादी ने बच कर भागने हताहत करने के लिए गोली

चलाना जारी रखा। छापामार पार्टी भी उग्रवादी की गोलियों का जवाब देती रही। श्री अजय कुमार ने अपनी सर्विस रिवाल्वर से चार चक्र गोलियां चलाई जिससे वह दहशतगर्द गोली से घायल हो गया। घायल उग्रवादी छापामार पार्टी के सदस्यों पर लतागार गोलीबारी करता रहा। श्री अजय कुमार और छापामार पार्टी के अन्य सदस्यों ने पुनः आतंकवादी पर गोली चलाई और २० मिनट तक चली परस्पर गोलीबारी के बाद उग्रवादी की ओर से गोलीबारी बंद हो गई। श्री अजय कुमार अपने जीवन की परवाह न करते हुए आगे ही डटे रहे और पूरे आप्रेशन पर कड़ी नजर रखे रहे। श्री अजय कुमार ने तीव्र बुद्धिमत्ता, वीरता की भावना और दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया और अपने जीवन और व्यक्तिगत सुरक्षा को अत्यन्त खतरा होते हुए भी वे निर्भीकता से जबाबी गोलीबारी करने में सफल रहे। निःसंदेह यह एक बहादुरी भरा कार्य और अत्यन्त कठिन एवं विषम परिस्थितियों में नेतृत्व का अद्वितीय उदाहरण है। इस प्रकार की स्थिति का सामना कुछ ही अधिकारी कर पाते हैं और श्री अजय कुमार ने यह सिद्ध कर दिया कि वे ऐसे ही अधिकारियों में से एक हैं। श्री अजय कुमार के इस वीरता भरे कार्य को मान्य माने जाने की आवश्यकता है।

### **श्री मोहन चंद शर्मा, इंस्पेक्टर**

इंस्पेक्टर मोहन चंद शर्मा की तैनाती गोल चक्कर के पास संवेदनशील स्थान पर थी। तत्कालीन डी सी पी अजय कुमार और ए सी पी संजीव कुमार यादव के साथ श्री शर्मा ने उग्रवादी को आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी थी। जब उग्रवादी ने पुलिस पार्टी पर गोल चक्कर की तरफ अंधाधुंध गोलीबारी करना शुरू की तब उसकी एक गोली इंस्पेक्टर मोहन चंद्र शर्मा के पास से होकर गुजर गई। उन्होंने अपनी स्थिति गोल चक्कर के पास संभाली और बहादुरी से लश्करे तोएबा के उग्रवादी का सामना किया जो बार-बार अपनी स्थिति बदल रहा था और पुलिस पार्टी पर गोलीबारी जारी रख रहा था। इंस्पेक्टर मोहन चंद शर्मा ने आत्मरक्षा में और पुलिस टीम के सदस्यों के जीवन की सुरक्षा के लिए अपनी सर्विस पिस्तौल से ५ चक्र गोलियां चलाई।

इस मुठभेड़ में यदि इंस्पेक्टर मोहन चंद्र शर्मा ने बुद्धिमत्ता का परिचय नहीं दिया होता तो वह घोंसले में कबूतर की तरह मृत्तक उग्रवादी की गोली का निशाना बन जाते। यह उनका एक अनुकरणीय साहस था और अपने जीवन की परवाह न करने की उनकी मनोवृत्ति ने उन्हें वास्तव में विजेता बना दिया। वह अपने जीवन की परवाह न करते हुए अग्र मोर्चे पर डटे रहे और सम्पूर्ण आप्रेशन पर कड़ी निगाह रखे रहे। मुठभेड़ में इंस्पेक्टर मोहन चंद शर्मा तीक्ष्ण बुद्धिमत्ता, वीरता की भावना और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया। यह एक बहादुरी भरा कार्य और अत्यन्त कठिन एवं विषम परिस्थितियों में नेतृत्व का अद्वितीय उदाहरण है। इस प्रकार की स्थिति का सामना कुछ ही अधिकारी कर पाते हैं और श्री मोहन चंद शर्मा, इंस्पेक्टर ने यह सिद्ध कर दिया कि वे ऐसे ही अधिकारियों में से एक हैं। इंस्पेक्टर मोहन चंद शर्मा के इस वीरता भरे कार्य को मान्य माने जाने की आवश्यकता है।

### श्री रविन्द्र कुमार त्यागी, सब-इंस्पेक्टर

एस आई रविन्द्र कुमार त्यागी, साथ में तत्कालीन डी सी पी/अजय कुमार, ए सी पी संजीव कुमार यादव, इंस्पेक्टर मोहन चन्द शर्मा और एस आई दलीप कुमार अग्रिम पार्टी में थे जिन्होंने स्टेडियम गेट के गोल चक्कर के पास स्थिति संभाली हुई थी। जब उग्रवादियों ने छापामार पार्टी की चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया और छापामार पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी कर दी, तब एक गोली दुस्साहसी एस आई के नजदीक से होकर निकल गई। जब उग्रवादी छापामार पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे तब एस आई रविन्द्र कुमार त्यागी ने सड़क पर लेट कर अपनी स्थिति संभाली, पटरी की ऊँचाई के पीछे स्वयं को छिपाया और उग्रवादी पर नजदीक से गोली चलाई जिससे वह उग्रवादी गोली से घायल हो गया। एस आई रविन्द्र कुमार त्यागी ने अपनी सर्विस रिवाल्वर से चार चक्र गोली चलाई जिससे उग्रवादी घायल हो गया। एस आई रविन्द्र कुमार त्यागी ने अपनी सर्विस रिवाल्वर से चार चक्र गोली चलाई जिससे उग्रवादी घायल हो गया। एस आई रविन्द्र कुमार त्यागी ने अपनी टीम के सदस्यों की सुरक्षा के लिए उसके जीवन को खतरे में डाल दिया और लश्करे-तोएबा के विदेशी दुर्दांत आतंकवादी के साथ मुठभेड़ के दौरान उच्च स्तर का शौर्य प्रदर्शित किया।

### श्री दलीप कुमार, सब-इंस्पेक्टर

जिस समय उग्रवादी ने पुलिस पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी की और पुलिस पार्टी पर गोलीबारी करने और बचकर भागने के लिए सूखे नाले में छलांग लगाई उस समय एस आई दलीप कुमार ने तुरंत गोल चक्कर के सन्निकट पार्क में अपनी स्थिति संभाल ली और उग्रवादी के बच कर भागने के मार्ग को अवरुद्ध करने के लिए जवाबी गोलीबारी की। उग्रवादी ने एस आई दलीप कुमार की ओर गोली चलाई किन्तु यह दुस्साहसी एस आई बाल-बाल बच गए। एस आई दलीप कुमार ने इस लश्करे-तोएबा के उग्रवादी का डटकर सामना किया और अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना, अपने जीवन को आसन्न खतरे की उपेक्षा करते हुए आत्मरक्षा में अपनी सर्विस पिस्तौल से लगातार चार-चक्र गोलियां चलाई जिससे आतंकवादी घायल हो गया। एस आई दलीप कुमार ने अपनी टीम के सदस्यों की सुरक्षा के लिए अपने जीवन को खतरे में डाला और आतंकवादी के सामने उच्च स्तर की व्यक्तिगत बहादुरी और शौर्य का प्रदर्शन किया।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री अजय कुमार, पुलिस उपायुक्त, मोहन चन्द्र शर्मा, इंस्पेक्टर, रविन्द्र कुमार त्यागी, सब इंस्पेक्टर और दलीप कुमार, सब इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक/पुलिस पदक की ५वीं बार नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ८ मई, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ८०-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, उड़ीसा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. तूफान बैग  
सब इंस्पेक्टर
२. बांका निधि नायक  
डिप्टी सूबेदार
३. अम्बिका प्रसाद पात्रा  
कांस्टेबल
४. आदित्य रंजन दाश  
कांस्टेबल
५. धर्मेन्द्र सामल  
कांस्टेबल
६. अजय कुमार राव  
कांस्टेबल
७. मन मोहन मुंडा  
हवलदार

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक ३.७.२००६ की प्रातः पुलिस अधीक्षक, देवगढ़ को एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई कि सी पी टी (माओवादी) के ११ सशस्त्र काडरों का एक गुप २.७.२००६ की रात को रानीगोला गांव में गया था और और उन्होंने बंदूक की नोक पर एक सभा आयोजित की और वे झारपुर की तरफ चले गए। इस सूचना की पुष्टि के लिए एक विस्तृत युक्तियुक्त योजना तैयार की गई और पुलिस पार्टियों को जंगल में भेजा गया। उपलब्ध अधिकारियों और बल को तीन आक्रामक टीमों में विभाजित किया गया। सब इंस्पेक्टर तूफान बैग एक आक्रामक टीम का नेतृत्व कर रहे थे और डिप्टी सूबेदार बांका निधि नायक दूसरी आक्रामक टीम का, एवं कांस्टेबल अंबिका प्रसाद पात्रा, कांस्टेबल आदित्य रंजन दाश, कांस्टेबल धर्मेन्द्र सामल, कांस्टेबल अजय कुमार राव और हवलदार मन मोहन मुंडा टीमों के अग्रभाग में थे। वे मूसलाधार वर्षा में घने जंगल और पहाड़ों से होते हुए लगभग ४ किमी. चले। गांव रानीगोला के नजदीक झाड़ीदार जंगल क्षेत्र में पहुंचने के पश्चात उन्होंने एक बहुत प्रतिकूल भूभाग में सभी दिशाओं में क्षेत्र की छानबीन शुरू कर दी। श्री तूफान बैग सब इंस्पेक्टर ने आसुरखोल के नजदीक जंगल में माओवादियों के एक गुप को जैतूनी-हरत वर्दी में राइफलें ले जाते देखा। श्री तूफान बैग, सब इंस्पेक्टर और बांका निधि -नायक, डिप्टी सूबेदार, जो दो आक्रामक टीमों का नेतृत्व कर रहे थे ने माओवादियों को निष्क्रिय करने के लिए शीघ्रता से एक युक्तियुक्त योजना बनाई। श्री

तूफान बैग ने बायीं तरफ से टीम का नेतृत्व किया और सर्व श्री अंबिका प्रसाद पात्रा, कांस्टेबल, आदित्य रंजन दाश, कांस्टेबल, धर्मेन्द्र सामल, कांस्टेबल, अजय कुमार राव, कांस्टेबल और मनमोहन मुंडा, हवलदार टीम का दायीं तरफ से श्री बांका निधि नायक, डिप्टी सूबेदार ने नेतृत्व किया। श्री तूफान बैग उप निरीक्षक ने स्पष्ट और तेज आवाज में माओवादी ग्रुप को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। लेकिन माओवादी ग्रुप ने स्वचालित हथियारों जैसे कि एस एल आर कार्बाइन्स, एके - 47 और 303 राइफलों से गोलीबारी शुरू कर दी। आक्रामक टीम, अंबिका प्रसाद पात्रा, कांस्टेबल, आदित्य रंजन दाश, कांस्टेबल और मनमोहन मुंडा, हवलदार जिसका नेतृत्व श्री बांका निधि नायक कर रहे थे, उपलब्ध कवर के साथ माओवादियों द्वारा उन पर की जा रही गोलियों की बौछारों की जरा सी भी परवाह न करते हुए बहादुरी से आगे बढ़े और आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी की। श्री तूफान बैग जो अन्य टीम का नेतृत्व कर रहे थे, व्यक्तिपूर्वक सामने से आगे बढ़े और जवाबी गोलीबारी की तथा अपनी जान को गंभीर खतरे में होने की परवाह न करते हुए बायीं तरफ से माओवादी ग्रुप को बच कर भागने से रोका। यह परस्पर भीषण गोलीबारी लगभग 30 मिनट तक चली, जिसके परिणामस्वरूप चार दुर्दान्त माओवादी मारे गए और उनमें से एक जोनल कमेटी का सेक्रेटरी था। इस ऑपरेशन में दो पुलिस कार्मिक मामूली रूप से जख्मी हुए। गोलीबारी रुकने के पश्चात पुलिस पार्टी ने क्षेत्र की तलाशी ली और वहां माओवादियों के चार शव पाए गए जिनमें से एक तूफान उर्फ सुशांत मेहर, जोनल कमेटी का सेक्रेटरी था। वे माओवादी हिंसा के कई मामलों में संलिप्त थे और फरार थे। परस्पर हुई गोलीबारी के स्थल से मैगजीन से भरी दो एस एल आर गन, मैगजीन से भरी तीन 303 राइफलें और कुल जीवित 9.62 एम एम एस एल आर गोलाबारूद के 60 राउंड के साथ-साथ जिंदा राउंड युक्त एक 12 बोर की एस बी बी एल गन, कुल जीवित 303 गोलाबारूद के 60 राउंड, 12 बोर गोलाबारूद के 9 राउंड, एक डेटोनेटर, नौ किट बैग, उनके संगठन, काडर और भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डालने वाले महत्वपूर्ण दस्तावेज /माओवादी साहित्य /किताबें इत्यादि। 2505 रुपए नकद और काफी मात्रा में उनकी व्यक्तिगत वस्तुएं बरामद की। यह भारतीय दंड संहिता की धारा 147/148/121-क/122/122-क/124/303/149 शस्त्र अधिनियम की धारा 25/26 विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा 4 एवं 5 के अंतर्गत देवगढ़ पुलिस स्टेशन में मामला संख्या 223 के रूप में दर्ज है। यह एक सी पी आई (माओवादी) के एस डी एस जोनल कमेटी के सशस्त्र काडरों के साथ सर्वाधिक सफलतम मुठभेड़ में से एक थी जिसमें काफी मात्रा में शस्त्र और गोलाबारूद की बरामदगी के साथ वे काफी संख्या में मारे गए। इस मुठभेड़ की उत्तरवर्ती आसूचना जानकारी ने स्पष्ट रूप से संकेत दिया था कि देवगढ़ और संबलपुर जिले के उप डिवीजन कुचिंदा से लगे क्षेत्रों में ऑपरेट कर रहे पी एल जी ए के एस.डी.एस. जोनल कमेटी के एरिया कमेटी का अधिकांश रूप से सफाया हो गया। इस सफल ऑपरेशन से सामान्य रूप से उड़ीसा में और विशेष रूप से मध्य उड़ीसा में सी पी आई (माओवादी) गतिविधियों को गहरा झटका लगा और जनता के विश्वास की बहाली कायम हुई। दृढ़ निश्चय, बहादुरी, साहस, उद्देश्य का बोध और कर्तव्य के प्रति निष्ठा का परिचय देते हुए एक आक्रामक टीम का नेतृत्व कर रहे सब इंस्पेक्टर तूफान बैग, दूसरी आक्रामक टीम का नेतृत्व कर रहे डिप्टी सूबेदार बांका निधि नायक, कांस्टेबल अंबिका प्रसाद पात्रा, कांस्टेबल आदित्य रंजन दाश, कांस्टेबल धर्मेन्द्र सामल, कांस्टेबल, अजय राव और हवलदार मनमोहन मुंडा ने अपनी जान की परवाह न करते हुए इस नक्सलवाद-विरोधी अभियान का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया और बल के हौसले को बढ़ाया तथा उड़ीसा पुलिस का सम्मान दिलाया।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री तूफान बैग, सब इंस्पेक्टर, बांका निधि नायक, डिप्टी सूबेदार, अम्बिका प्रसाद पात्रा, कांस्टेबल, आदित्य रंजन दाश, कांस्टेबल, धर्मेन्द्र सामल, कांस्टेबल, आदित्य रंजन दाश, कांस्टेबल और मन मोहन मुंडा, हवलदार ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ३ जुलाई, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ८१-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. प्रदीप कुमार सिंह, हैड कांस्टेबल
२. रिजवान, कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक २१.७.२००७ को १८.३० बजे आई एस ११२ शिवकुमार उर्फ दादू के खुंखार गैंग के एक उप-गैंग अर्थात् छोटा पटेल गैंग की उपस्थिति की सूचना पुलिस पार्टी को एक मुखबिर से मिली। इस पर वे २०.३० बजे कुशमुही गांव के नजदीक पहुंचे और एक समुचित स्थान पर घात लगा कर डकैती का इंतजार करने लगे। कुछ समय बाद जंगल की ओर से १२-१४ व्यक्ति आते हुए दिखाई दिए। उनके वहां पहुंचने पर जब उन्हें चुनौती दी गई तो डाकुओं ने पुलिस पार्टी को जान से मारने के आशय से उन पर धूआंधार गोलीबारी कर दी। अन्य कोई विकल्प न होने पर एस टी एफ टीम ने भी आत्मरक्षा में नियंत्रित तरीके से जवाबी गोलीबारी की। हैड कांस्टेबल प्रदीप और कांस्टेबल रिजवान ने पुलिस पार्टी पर गोलीबारी कर रहे गैंग पर प्रभावी गोलीबारी करने के लिए अपने सुरक्षा कवर से बाहर आकर असाधारण साहस और कर्तव्यनिष्ठा प्रदर्शित की जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अपार सफलता मिली। क्षेत्र की सावधानीपूर्वक की गई छानबीन से ४ शव वहां पर मिले। वे थे - १. छोटा पटेल जिसके सिर पर डी जी पी ने २०,००० रु. का इनाम रखा हुआ था। २. फूल चन्द्र उर्फ धांगु ३. सरमन और ४. कोडुआ। घटनास्थल से एक फैक्टरी निर्मित दैसी राईफल .३१५ बोर, एक फैक्टरी निर्मित डी बी बी एल गन १२ बोर, एक दैसी .३१५ बोर राईफल, एक दैसी पिस्तौल .३१५ बोर, ६२ सजीव कारतूस और .३१५ बोर के १७ खोल, १२ बोर के ०८ सजीव

कारतूस, २२ खोल और दैनंदिन इस्तेमाल इस्तेमाल के बड़ी मात्रा में सामान की बरामदगी हुई।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री प्रदीप कुमार सिंह, हैड कांस्टेबल, और रिजवान, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २१ जुलाई, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ८२-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक की पहली बार/पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- |    |   |                     |
|----|---|---------------------|
| १. | अमिताभ यश, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक             | (पी एम जी का १ बार) |
| २. | अनंत देव, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक            | (पी एम जी का १ बार) |
| ३. | ऋषिकेश यादव, इंस्पेक्टर                     | (पी एम जी)          |
| ४. | अनिल कुमार सिंह, इंस्पेक्टर                 | (पी एम जी का १ बार) |
| ५. | अभय प्रताप माल, सब इंस्पेक्टर               | (पी एम जी)          |
| ६. | मनोज कुमार चतुर्वेदी, हैड अप्रेटर (मेकेनिक) | (पी एम जी)          |

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

मि. अमिताभ यश, एस एस पी, एस टी एफ और उनकी टीम जिसमें अतिरिक्त एस पी अनंत देव, इंस्पेक्टर ए पी अनिल सिंह, इंस्पेक्टर सी पी ऋषिकेश यादव, एस आई अभय प्रताप माल, एच ओ (मेकेनिकल) मनोज चतुर्वेदी तथा १६ अन्य पुलिस कर्मी माणिकपुर के वन अतिथि गृह में डेरा डाले हुए थे। उनको कुख्यात आई एस-११२ शिव कुमार उर्फ ददुआ को न्याय के लिए पकड़ कर लाने का आदेश दिया गया था। इस गैंग ने तीन दशकों से भी अधिक समय से आतंक मचा रखा था और जनतांत्रिक संस्थानों पर विध्वंसक कार्रवाई कर रहा था और विकास प्रक्रिया में बाधा पहुंचा रहा था। २२.७.२००७ को प्रातः ५.३० बजे एक मुखबिर द्वारा गैंग की उपस्थिति की सूचना उक्त टीम को दी गई। यह टीम घनी झाड़ियों वाले जंगल में उबड़-खाबड़ भू-भाग से हो कर मौके की ओर चली और मुखबिर की सहायता से तथा एच ओ (मेकेनिक) मनोज चतुर्वेदी द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे जी पी एस खोजी यंत्र की सहायता से उन्होंने गैंग से सम्पर्क करने की व्यवस्था की। उन्हें भारी स्वचालित और अर्ध-स्वचालित गोलीबारी का सामना करना पड़ा। गैंग को आत्मसमर्पण करने की सलाह दिए जाने पर बदले में उन्होंने केवल अपशब्द कहे और गोलीबारी तेज कर दी।

वह गैंग युक्तिपूर्ण लाभ की स्थिति में ऊँचे मैदान में मौजूद था और एस टी एफ टीम पर गोलियों की भारी प्रभावी गोलीबारी कर रहा था। अपने जीवन को गंभीर खतरे में डाल कर मि. अमिताभ यश, एस एस पी, एस टी एफ ने रेंगकर गैंग के नजदीक पहुंच कर हथगोला फेंकने का निर्णय लिया। एस आई अभय माल को सुरक्षा कवर प्रदान करने का निर्देश दिया गया। अमिताभ यश, अनंत देव, अनिल सिंह और ऋषिकेश यादव रेंगते हुए ३० गज तक गैंग की ओर गए जो भीषण गोलीबारी कर रहा था और हथगोले फेंक रहा था। इससे गैंग के जीवित बचे सदस्यों का धैर्य टूट गया और वे उबड़-खाबड़ मैदान और झाड़ियों की आड़ में भाग खड़े हुए।

क्षेत्र की सावधानीपूर्वक की गई खोजबीन में ६ शव मिले। वे थे - १. शिव कुमार उर्फ ददुआ (जिस पर उत्तर प्रदेश सरकार ने ५०,००० रु. का और मध्य प्रदेश सरकार ने २५,००० रु. का इनाम रखा हुआ था), २. अंगद उर्फ सुग्रीव (उत्तर प्रदेश सरकार का ५०,००० रु. का और मध्य प्रदेश सरकार का १०,००० रु. का इनामी) ३. सुख चैन (उत्तर प्रदेश सरकार का ५००० और मध्य प्रदेश का १५,००० का इनामी) साथ ही ४. बाबा उर्फ बाबूलाल, ५. बबली कोल सुपुत्री सुखराम और ६. राम दुलारे पुत्र सत्य नारायण। बरामदगी में शामिल हैं :- ३७५ मेगनम राईफल, एक ३००६ सेमी आटोमेटिक राईफल और ४४९ विभिन्न बोरों के कारतूस और बड़ी मात्रा में खोल, मोबाइल फोन, सिम कार्ड और दैनंदिन इस्तेमाल की वस्तुएं।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री अमिताभ यश, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, अनंत देव, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, ऋषिकेश यादव, इंस्पेक्टर, अनिल कुमार सिंह, इंस्पेक्टर, अभय प्रताप माल, सब इंस्पेक्टर और मनोज कुमार चतुर्वेदी, हैड ऑपरेटर (मेकेनिक) ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक की पहली बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २२ जुलाई, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव



सं. ८३-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, असम राईफलस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारी का नाम और रैंक

श्री पी.विशिहो

(मरणोपरांत)

राईफलमैन

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

जी/५००२२१३ एफ राईफलमैन, जनरल ड्यूटी, स्व. पी. विशिहो, कैप्टन सुखजीत सिंह के आधीन एक आप्रेशनल कालम का हिस्सा थे जिसमें एक जे सी और १२ अन्य कर्मी शामिल थे जिन्हें बटालियन के बाह्य क्षेत्र में ९ मई २००७ की रात्रि को कम्पनी आपरेटिंग बेस, भंडाई से जामिंगलॉग के घने वन और सुदूर क्षेत्र में ४८ घंटों में पता लगाने और नष्ट करने का दायित्व सौंपा गया था। कंपनी की विशेष आप्रेशनल टीम के निर्भीक युवा सदस्य जी/५००२२१३ एफ, राईफलमैन, जनरल ड्यूटी स्व. पी. विशिहो ने स्वयं ही कालम का अग्र-स्काउट बनने का प्रस्ताव किया। इस शख्स ने अपने व्यक्तिगत जीवन की रक्षा की बिल्कुल भी परवाह किए बिना जामिंगलॉग ग्राम की ओर जाते हुए कालम का अच्छी तरह से पथ-प्रदर्शन किया। वहां पहुंच कर वह कालम १० मई, २००७ की रात्रि को युक्तिपूर्वक तैनात हो गया। लगभग १९२० बजे संतरी राईफलमैन जनरल ड्यूटी चित्रसेन देबबर्मा ने अपनी ओर आते चार सशस्त्र आतंकवादियों की संदिग्ध गतिविधि को देखा। वह तत्काल कैप्टन सुखजीत सिंह को सतर्क करने उनकी ओर दौड़ा। अधिकारी के साथ में खड़े जी/५००२२१३ एफ राईफलमैन, जनरल ड्यूटी स्व. पी. विशिहो तुरंत आतंकवादियों को उलझाने और उनका सफाया करने के लिए दुस्साहस और फौलादी भुजाओं को प्रदर्शित करते हुए बाहर निकला जिसके पीछे कैप्टन सुखजीत भी बाहर निकल आए। तथापि उस बहादुर सिपाही को आतंकवादियों द्वारा चलाई गई गोली लग गई। आतंकवादियों को बाद में कालम में बंदी बना लिया गया। वह बहादुर सिपाही अस्पताल ले जाते समय तीन घंटे तक जीवन-मृत्यु से संघर्ष करने के बाद अपने घावों के कारण शहीद हो गया।

इस मुठभेड़ में, जी/५००२२१३ एफ राईफलमैन, जनरल ड्यूटी स्व. पी. विशिहो ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक १० मई, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ८४-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, असम राईफल्स के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### **अधिकारी का नाम और रैंक**

श्री हरेन्द्र सिंह नेगी, हवलदार

### **उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:**

दिनांक ६ फरवरी, २००७ को हवलदार, जनरल ड्यूटी, हरेन्द्र सिंह नेगी को सचिंग गांव में घेरा डालने और खोज अभियान चलाने के लिए एक खोजी पार्टी का नेतृत्व करने हेतु ३९ असम राईफल्स में एडज्यूटेंट मेजर नेत्र बहादुर रोकाहा द्वारा तैनात किया गया था। दिनांक ७.२.२००७ को लगभग ०५१५ बजे हवलदार हरेन्द्र सिंह नेगी और उनकी पार्टी ने गांव में खोज अभियान शुरू किया। घर-घर तलाशी लिए जाने के दौरान लगभग ०६३० बजे मेजर नेत्र बहादुर रोकाहा के नेतृत्व वाली एक अन्य पार्टी मणिपुर पीपल आर्मी और एन एस सी एन (के) उग्रवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी की जद में आए गए। हवलदार हरेन्द्र सिंह नेगी तत्काल हरकत में आ गए और ग्रामीणों की भीड़ से होकर मौके की ओर दौड़े। हवलदार हरेन्द्र सिंह नेगी ने उच्च स्तर की युक्ति वाला और कुशल कर्मी का स्वरूप दर्शाते हुए यू जी ग्रुप पर प्रभावी जवाबी कार्रवाई की, उनकी गोलीबारी को विफल किया और किसी भी ग्रामीण को घायल नहीं होने दिया। अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए यू जी ग्रुप द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी से न डरते हुए उन पर गोलीबारी करते रहे। हवलदार हरेन्द्र सिंह नेगी द्वारा उपलब्ध कराई गई प्रभावी गोलीबारी की सहायता से अन्य पार्टी उग्रवादियों के नजदीक तक पहुँच गई और चल रही गोलीबारी में एन एस सी एन (के) संवर्ग का एक दुर्दांत उग्रवादी मारा गया। सम्पूर्ण क्षेत्र की खोजबीन किए जाने पर निम्नलिखित बरामदगी की गई :-

१.	विस्फोटक	०४ कि.ग्रा.
२.	रेडियो सैट आईकाम एच एफ	०१
३.	ए के - ४७ के खाली डिब्बे	०२
४.	तालायुक्त हथकड़ी	०१ सेट
५.	मैग्जीन पोच	०१
६.	बैक पोच	०१

इस मुठभेड़ में, श्री हरेन्द्र सिंह नेगी, हवलदार ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(१) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ७ फरवरी, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा

संयुक्त सचिव

सं. ८५-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, असम राईफल्स के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारी का नाम और रैंक

श्री रमेश कुमार  
राईफल मैन

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

सं.जी/११५३४२ ए राईफल मैन/जी डी रमेश कुमार ने बेसिक प्रशिक्षण के बाद २१ अक्टूबर, २००३ को बटालियन में पदभार संभाला था। वह सभी गतिविधियों में हमेशा आगे रहे हैं और अनेक आप्रेशनों में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया। बड़े परिश्रम से हासिल की गई आसूचना के आधार पर ११ मार्च, २००७ को मेजर आशीष कुमार दबे, पूर्व-खोवई द्वारा स्थानीय पुलिस के साथ एक संयुक्त आप्रेशन चलाया गया। राईफल मैन रमेश कुमार मेजर दबे का बड्डी था। लक्ष्य क्षेत्र की छानबीन का कार्य प्रारंभ करते समय कालम पर ऊँचे मैदान से आतंकवादियों द्वारा गोलीबारी की गई। राईफल मैन रमेश ने अपनी जान की परवाह किए बिना पूरी गति से प्रतिक्रिया की गोली चलाते हुए रेंग कर आगे बढ़े। चूंकि एक आतंकवादी हथगोला फेंकने का प्रयास कर रहा था तभी वह मेजर आशीष कुमार दबे के साथ आगे बढ़े और आतंकवादियों पर प्रभावी गोलीबारी की। राईफलमैन रमेश कुमार ने धीरे से अपनी स्थिति परिवर्तित की और पूरी गति से गोलीबारी करके आतंकवादी का सफाया कर दिया। दूसरे आतंकवादी को अधिकारी ने मार गिराया। मृतक आतंकवादियों में से एक की पहचान सर्जेंट कचिलाल देबबर्मा के रूप में हुई और तीन सजीव कारतूसों सहित एक ९ एम एम की स्वचालित पिस्तौल और चाईनी ग्रेनेड की बरामदगी की गई।

इस मुठभेड़ में, श्री रमेश कुमार ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ११ मार्च, २००७ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ८६-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. बिप्लव घोष  
कांस्टेबल
२. मनीष कुमार चौधरी  
कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक १४ नवम्बर, २००६ को लगभग १९०० बजे जम्मू और कश्मीर राज्य के डोडा जिले में तैनात सीमा सुरक्षा बल की ०४ बटालियन के आतंकवाद-रोधी बेस, संबेर, को यह आसूचना खबर मिली कि नाका संबेर के निवासी इजराइल गुज्जर, सुपुत्र श्री नूरुद्दीन गुजर के घर में आतंकवादी मौजूद हैं। आतंकवाद-रोधी बेस, संबेर में डेरा डाले श्री राजेन्द्र पांडे, कमांडेंट ने तत्काल श्री आर पी एस राठी, असिस्टेंट कमांडेंट की कमान के अन्तर्गत ०१ एस ओ और अन्य रैंकों के १८ अन्य कार्मिकों के साथ एक विशेष घात पार्टी तैनात की। लगभग १९३० बजे गोलीबारुद और शस्त्रयुक्त घात पार्टी लक्ष्य क्षेत्र/घर की ओर आगे बढ़ी। अंधेरा, भू-भाग की टेढ़ी-मेढ़ी फिसलन और खड़ी ऊँचाई वाली पहाड़ी होने के कारण लक्ष्य की ओर बढ़ना पार्टी के लिए बहुत कठिन हो रहा था। औचकता और कठिन भू-भाग के साथ अनुकूलता बनाए रखने के लिए टुकड़ी को दो भागों में विभाजित किया गया। एक पार्टी का नेतृत्व आर एस पी राठी, असिस्टेंट कमां. ने और दूसरी का एस आई संतोष कुमार ने किया। लक्ष्य क्षेत्र में पहुंचने पर उन्होंने बचकर भागने के सभी मार्ग अवरुद्ध करके संदिग्ध घर के चारों ओर मोर्चाबंदी कर ली। लगभग २१ बजे जब बिप्लव घोष और कांस्टेबल मनीष कुमार चौधरी रेंगते हुए संदिग्ध घर की ओर बढ़ रहे थे तभी उन्होंने घर में कुछ व्यक्तियों की संदिग्ध हलचल देखी। तत्काल कम्पनी कमांडर को सूचित किया गया और उन्होंने संदिग्ध व्यक्ति को चुनौती दी जिसने तत्काल उन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। चूंकि अंधेरा घना हो चला था इसलिए कांस्टेबल अनिल कुमार सी ने बिना कोई समय गवांए ५१ एम एम मोर्टा. से क्षेत्र को चकाचौंध कर दिया। इसी बीच संदिग्ध व्यक्ति घर से बाहर कूदा और उसने गोल पत्थरों/झाड़ियों के पीछे मोर्चा संभाल लिया। कांस्टेबल बिप्लव घोष और कांस्टेबल मनीष कुमार चौधरी ने गोल बड़े पत्थर के पीछे उग्रवादी की ठीक स्थिति देखी। अंधेरा, गोल पत्थरों और झाड़ियों की आड़ के कारण उग्रवादी को सीधे ही उलझाना अत्यन्त कठिन था इस पर उच्च स्तर का साहस और पेशेवरता का प्रदर्शन करते हुए कांस्टेबल बिप्लव घोष रेंगकर उग्रवादी के बहुत नजदीक पहुंच गए जबकि कांस्टेबल मनीष कुमार चौधरी ने लगातार गोलीबारी करते हुए उग्रवादी को उलझाए रखा। उग्रवादी इन कांस्टेबलों की ओर लगातार गोलीबारी करते रहे किन्तु अपने जीवन को खतरे में डाल कर और अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह किए बिना दोनों ही कांस्टेबल रेंगकर वहां पहुंच गए जहां

उग्रवादी मोर्चा संभाले हुए थे और उच्च स्तर की पेशेवरता और साहस का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने उग्रवादी की ओर गोली चलाई और नजदीक की लड़ाई में उसे मार गिराया। इसके पश्चात् पूरी रात पूरे क्षेत्र की घेराबंदी बनाकर रखी गई। पौ-फटने पर खोजबीन करने के दौरान मौके से एक उग्रवादी का शव बरामद हुआ बाद में जिसकी पहचान बसारत पीर उर्फ सैफुल्ला (आयु लगभग २१ वर्ष) पुत्र असहादुल्ला पीर, निवासी संबेर, तहसील, पुलिस स्टेशन रामबन, जिला डोडा, हिजबुल मुजाहिदीन कमांडर के रूप में हुई। उसे पास से निम्नलिखित सामान की बरामदगी की गई :-

i)	५.५६ एम एम इंसास सं. १६५१५३०५ आर एफ आई-२००२	०१
	(जिसे बाद में बदलकर बट हटा कर छोटे आकार का कर लिया गया था)।	
ii)	५.५६ एम एम इंसास मैगजीन	०२
iii)	५.५६ एम एम इंसास गोलीबारुद (सजीव)	६४
iv)	५.५६ एम एम इंसास (ई एफ सी)	१२
v)	चाईनी ग्रेनेड	०१
vi)	सैट वाई ए ई एस यू सं. ५जी ९४३६६४	०१
vii)	भारतीय मुद्रा	४०२०००.
viii)	गोली बारुद पौच	०१

इस मुठभेड़ में, सर्व/ श्री बिप्लब घोष, कांस्टेबल और मनीष कुमार चौधरी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक १४ नवम्बर, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ८७-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- दिनेश प्रताप उपाध्याय  
सैकिण्ड-इन-कमांड
- उदय नाथ साहू  
कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक २०.०७.२००५ को श्री दिनेश प्रताप उपाध्याय, सैकिण्ड-इन-कमांड, ७०वीं बटालियन, सी आर पी एफ और इसी बटालियन के सं. ९४१२६१०२९ सी टी/जी डी, उदय नाथ साहू पर जिला मल्कानगिरि (उड़ीसा), कालीमेला पुलिस स्टेशन के गोल्फकोंडा और टेकगुडा ग्राम के बीच के क्षेत्र और भू-भाग का सर्वेक्षण करने के लिए जाते समय कांगुड़ा ग्राम (जंगल के मध्य भाग में स्थित) के समीप नक्सलवादियों द्वारा गोलीबारी की गई। श्री दिनेश प्रताप उपाध्याय, सैकिण्ड-इन-कमांड और सी टी/जी डी उदय नाथ साहू ने तुरंत ही मोर्चाबंदी कर ली। नक्सलवादियों की संख्या १०-१२ थी किन्तु केवल दो ही नक्सलवादियों को साफ तौर पर देखा जा सकता था और अन्य नक्सलवादियों ने चट्टानों और घनी वनस्पति के पीछे आड़ ली हुई थी। श्री दिनेश प्रताप उपाध्याय, सैकिण्ड-इन-कमांड युक्तिपूर्वक नक्सलवादियों की ओर बढ़े और सी टी/जी डी, उदय नाथ साहू ने उनका अनुसरण किया। नक्सलवादियों के नजदीक पहुँचने पर श्री दिनेश प्रताप उपाध्याय, सैकिण्ड-इन-कमांड ने सबसे पास वाले नक्सलवादी पर तेजी से चार गोलियाँ दागीं। श्री दिनेश प्रताप उपाध्याय, सैकिण्ड-इन-कमांड द्वारा मारी गई तीन गोलियों से एक नक्सलवादी घायल हो कर गिर पड़ा और तुरंत ही मौके पर ही उसकी मौत हो गई। इसके अलावा श्री दिनेश प्रताप उपाध्याय, सैकिण्ड-इन-कमांड और सी टी/जी डी, उदय नाथ ने अन्य नक्सलवादियों का पीछा किया और उन पर क्रमशः तीन और दो चक्र गोली चलाई। तथापि, नक्सलवादी जंगल और पर्वतीय भू-भाग का लाभ उठाकर बच कर भागने में सफल हो गया। इस मुठभेड़ में सी टी/जी डी उदय नाथ ने भी अपनी जान को जोखिम में डालकर उपयुक्त प्रतिक्रिया की और हमला कर रहे नक्सलवादियों के विरुद्ध आक्रमण-रोधी कार्रवाई के दौरान उन्होंने अपेक्षित सहायता प्रदान की और उन्हें पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। उक्त सी आर पी एफ पार्टी पर मारे गए नक्सलवादी द्वारा इस्तेमाल की गई सात गोलियों भरी "यू एस प्रोपर्टी" अंकित एक .३०३ मार्क IV, बोल्ट एक्शन राईफल (बाडी सं. ९१ सी ३९३०-बी) मुठभेड़ वाले स्थान से जब्त की गई। मारा गया नक्सलवादी काली मेला दलम की लोकल गुरिल्ला स्कवैड (एल जी एस) का दुर्दांत सदस्य था और उसकी पहचान पडिया माधी उर्फ बदुरा के रूप में हुई। उसका नक्सली नाम रमेश था। मारे गए नक्सलवादी के शव को नक्सलवादी ले गए और उन्होंने उसे शहीद घोषित करते हुए उसका अंतिम संस्कार किया।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री दिनेश प्रताप उपाध्याय, सैकिण्ड-इन-कमांड और कांस्टेबल उदयनाथ साहू, ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक २० जुलाई, २००५ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ८८-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

श्री अरविंद कुमार  
सब इंस्पेक्टर

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

एक विशिष्ट सूचना मिलने पर, जिला-कुलगांव, डी.एस.पोरा पुलिस स्टेशन के अन्तर्गत दद्रान गांव की पीर पंजाल पर्वत श्रृंखला में कुलगांव के एस ओ जी तत्वों के साथ सी आर पी एफ की ५वीं बटालियन में ए.सी. श्री संतोष कुमार के सम्पूर्ण पर्यवेक्षण के अधीन इंस्पेक्टर जी पी सिंह और सब-इंस्पेक्टर अरविंद कुमार की कमान में दक्षिण कश्मीर घाटी में कुलगांव से लगभग ३५ कि.मी. दूर सी आर पी एफ की ५वीं बटालियन की दो प्लाटूनों द्वारा ९.०९.२००६ को २२१५ बजे से १०.०९.२००६ को १५१५ बजे तक एक संयुक्त घेराबंदी और खोजबीन अभियान चलाया गया। घेराबंदी करने के पश्चात् दो खोजी पार्टियां बनाई गई जिसमें से एक पार्टी सी आर पी एफ की ५वीं बटालियन के सं. ९४१४२१५२५ सब इंस्पेक्टर अरविंद कुमार की कमान के अन्तर्गत खोज कार्य के लिए बनाई गई थी। खोज अभियान के दौरान सब इंस्पेक्टर अरविंद कुमार द्वारा यह देखा गया कि एक आतंकवादी गुल मोहम्मद गोर्सी, सुपुत्र अबू करीम, निवासी दद्रान गांव के एक घर में छिपा हुआ है। एस आई/जी डी अरविंद कुमार के नेतृत्व वाली खोजी पार्टी तुरंत युक्तिपूर्वक लक्षित घर के पास पहुँची किन्तु छिपे हुए आतंकवादी द्वारा देख लिए जाने पर वहां पहुँच रही सी आर पी एफ पार्टी को निशाना बना कर उन पर अंधाधुंध गोलीबारी की गई। यह उग्र गोलीबारी लगभग एक घंटे तक जारी रही। अपने जीवन को स्पष्ट और प्रत्यक्ष खतरे के बावजूद एस आई/जी डी अरविंद कुमार सांस रोकर लक्ष्य की ओर बढ़े और गोलीबारी का प्रभावी जवाब दिया जिसके परिणामस्वरूप हिजबुल मुजाहिदीन आतंकवादी गुट का मुबाशिर अहमद डार, निवासी खांडीपुरा, कुलगांव उर्फ सैफुल्ला मारा गया।

इस मुठभेड़ में, श्री अरविंद कुमार, सब इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक १० सितम्बर, २००६ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ८९-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारी का नाम और रैंक

श्री लव कुमार

असिस्टेंट कमांडेंट

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक ७.६.०४ को एस पी बड़गांव से यह विशिष्ट सूचना मिलने पर कि जिला बड़गांव, पुलिस स्टेशन बीरवाह के अन्तर्गत गोंदीपुरा गांव के निवासी अब्दुल रशीद मीर के घर में दो दुर्दांत आतंकवादियों ने शरण ली हुई है, सी आर पी एफ की डी/१२८वीं बटालियन में असिस्टेंट कमांडेंट श्री लव कुमार अपनी एक प्लाटून के साथ पुलिस स्टेशन बीरवाह पहुँचे और वहां पुलिस उपाधीक्षक आप्रेशन श्री आर के धर के साथ एक आप्रेशन की योजना बनाई। एक रणनीति बनाई गई और तदनु रूप श्री आर के धर के प्रभार में एस ओ जी बड़गांव की एक टूप, असिस्टेंट कमांडेंट श्री लव कुमार की कमान में डी/१२८वीं बटालियन की एक प्लाटून और श्री जतिन कुमार, असिस्टेंट कमांडेंट की कमान में डी/१९ की एक प्लाटून को ०००० बजे गोंदीपुरा गांव में तैनात किया गया और कठिन प्रतिकूल भू-भाग/क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए उन्हें यह निदेश दिया गया कि इस बात की पूरी सावधानी बरती जाए कि कोई भी सिविलियन हताहत न हो किन्तु साथ ही विदेशी उग्रवादियों को मारने के लिए प्रभावी कार्रवाई की जाए। असिस्टेंट कमांडेंट श्री लव कुमार को उनकी क्यू आर टी टीम के साथ घर के पिछवाड़े चौकसी/घेराबंदी करने का कार्य सौंपा गया जबकि श्री आर के धर, उपाधीक्षक ने घर के अग्रभाग में तलाशी लेने की जिम्मेदारी ली। जब टूप स्थिर अवस्था में थे तब घर से बचकर भाग निकलने के लिए उग्रवादियों ने भारी गोलीबारी शुरू कर दी किन्तु असिस्टेंट कमांडेंट श्री लव कुमार के नेतृत्व वाले घेराबंदी टूप ने शांति बनाए रखी और चूंकि उस घर में सिविलियनों की जान को खतरा हो सकता था इसलिए उन्होंने ऐसे कठिन समय में प्रभावी जवाबी गोलीबारी की। दोनों अग्रभागों और पिछवाड़े की ओर से भारी दवाब बनाए जाने के कारण, दोनों दुर्दांत उग्रवादियों ने घर के पिछवाड़े से बचकर भाग जाने का दुस्साहसिक प्रयास किया और अंधेरे का लाभ उठाकर वे घर के बाहर कूदने में सफल हो गए किन्तु घनघोर अंधेरा होने के बावजूद श्री लव कुमार, असिस्टेंट कमांडेंट के नेतृत्व वाली क्यू आर टी टीम द्वारा उन्हें गोंदीपुरा की मुख्य सड़क के पास प्रभावी कार्रवाई में मार डाला गया। असिस्टेंट कमांडेंट श्री लव कुमार ने भागते हुए उग्रवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के बीच अदम्य साहस और दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया और अपनी टीम का स्वयं नेतृत्व किया और दो दुर्दांत उग्रवादियों को मार गिराया जिनकी बाद में पहचान अल बदर के डिप्टी चीफ और जिला कमांडर (दोनों पाकिस्तानी) अली हुसैन उर्फ डाक्टर और अल-बदर बड़गांव के जिला कमांडर शाह नवाज उर्फ अबु हमजा के रूप में हुई जिसने अपनी जान की परवाह न करते हुए और अपने जीवन को पूरा खतरा होते हुए भी क्षेत्र में आतंक का राज्य चला रखा था। उक्त दुर्दांत उग्रवादियों के कब्जे से ०२ ए के-४७ राईफल, ०६ ए के-४७ मैगजीन, २२ ए के-४७ गोली, ०१ यू बी जी एल ०१ वा./सैट केनवुड डेमेज्ड और ०१ वा./सैट आईकोन डेमेज्ड की बरामदगी की गई।



इस मुठभेड़ में, श्री श्री लव कुमार असिस्टेंट कमांडेंट, ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक ८ जून, २००४ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

सं. ९०-प्रेज/२००८-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :-

### अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

१. ए के सिंह  
सैकिण्ड-इन-कमांड
२. सुरेन्द्र कुमार  
डिप्टी कमांडेंट
३. एच एस चौहान  
कांस्टेबल

### उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक १५.०१.२००५ को दो फिदायीन पासपोर्ट आफिस भवन, श्रीनगर में घुसने में सफल हो गए। संयोगवश ५०वीं बटालियन में २-आई/सी श्री ए के सिंह उस भवन से सटे इंडोर स्टेडियम में सुरक्षा प्रबंधों की समीक्षा कर रहे थे। अचानक उन्होंने बड़ी संख्या में बच्चों को निकलते देखा। तीव्र आप्रेशनल कुशलता प्रदर्शित करते हुए उन्होंने उग्रवादियों की मौजूदगी का आभास किया और अपने कार्मिकों को पासपोर्ट कार्यालय भवन को घेर लेने का आदेश दिया। जिस समय घेरा डाला जा रहा था उसी समय उग्रवादियों ने भारी गोलीबारी शुरू कर दी जिसका उचित रूप से जवाब दिया गया। जल्दी ही अंधेरा हो गया और यह निर्णय लिया गया कि प्रातः पौ-फटते ही तूफानी आप्रेशन चलाया जाए। रात भर रुक-रुक कर गोलीबारी करते हुए उग्रवादियों को उलझाए रखा गया। दिनांक १६.१.२००५ को लगभग ०६३० बजे उग्रवादियों ने भारी गोलीबारी शुरू कर दी और भवन में आग लगा दी। वहां से उठ रहे धूँए का फायदा उठाते हुए एक उग्रवादी साथ में सटे डी वाई एस एस के भवन में घुसने में कामयाब हो गया। अपने जीवन को खतरा होने के बावजूद श्री ए के सिंह, सी आर पी एफ की एक पार्टी और जे के पी के साथ पासपोर्ट भवन में घुस गए और गोलियों के युद्ध के बाद एक उग्रवादी को मार दिया। डी वाई एस एस भवन के प्रथम तल पर शरण

लिए हुए दूसरे उग्रवादी को मारने का आप्रेशन प्रारंभ किया गया। एक बार फिर श्री ए के सिंह ने नेतृत्व किया और १२३वीं बटालियन के क्यू आर टी की सहायता से तूफानी आप्रेशन चलाया। भारी गोलीबारी के चलते भू-तल पर कब्जा किया गया और उसके बाद सुरक्षा गोलीबारी करके खिड़की के सामने नीचे की तरह एक बी पी बंकर लगाया गया और कमरे के अंदर हथगोले फेंके गए। बंकर के ऊपर एक सीढ़ी लगाई गई और सी टी/जी डी एच एस चौहान ने कमरे में प्रवेश किया उनके बाद श्री सुरेन्द्र कुमार, डी सी कमरे में गए। बाहर से बंद दरवाजे को विशेष उपकरणों से तोड़ा गया और सम्पूर्ण साहस और वीरता का प्रदर्शन करते हुए और अपने जीवन की बिना कोई परवाह किए श्री सुरेन्द्र कुमार और सी टी/जी डी एच एस चौहान ने निर्णायक आक्रमण किया जिसमें उग्रवादी कूद कर बाहर आने को मजबूर हो गया। अंत में वह मारा गया। सम्पूर्ण आप्रेशन के दौरान श्री ए के सिंह ने टूप्पों की कमान संभालने में और किसी क्षति के बगैर दोनों फिदायियों को मारने में अनुकरणीय साहस, असाधारण बहादुरी, वीरता, कर्तव्य निष्ठा और विशिष्ट नेतृत्व का प्रदर्शन किया। १२३वीं बटालियन के श्री सुरेन्द्र कुमार और सी टी/जी डी एच एस चौहान ने डी वाई एस एस भवन के प्रथम तल पर तूफानी रूप से पहुँचने और दूसरे फिदायीन को मारने में असाधारण साहस, वीरता और बहादुरी का प्रदर्शन किया।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री ए के सिंह, सैकिण्ड-इन-कमांड, सुरेन्द्र कुमार, डिप्टी कमांडेंट, एच एस चौहान, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम ४(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम ५ के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक १५ जनवरी, २००५ से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा  
संयुक्त सचिव

लोक सभा सचिवालय

नई दिल्ली-110001, दिनांक 26 जून 2008

सं. 4/1/ईडब्ल्यूसी/2007--राज्य सभा के निम्नलिखित सदस्यों को 28 मई, 2008 से महिलाओं को शक्तियां प्रदान करने संबंधी समिति (2007-08) का सदस्य मनोनीत किया है :--

- (एक) डॉ. प्रभा ठाकुर
- (दो) डॉ. सी. पी. ठाकुर
- (तीन) श्री बनवारी लाल कंछल
- (चार) श्रीमती कानीमोझी
- (पांच) श्री गांधी आजाद

सी. एस. जून, निदेशक

**गृह मंत्रालय  
(राजभाषा विभाग)**

नई दिल्ली, दिनांक 2 जुलाई 2008

**संकल्प**

सं. I/20012/7/2005-रा.भा. (नीति-1)--

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 4(1) के अंतर्गत संसदीय राजभाषा समिति गठित की गई थी। समिति द्वारा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3), राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5, हिंदी में पत्राचार, प्रकाशन, कोड-मैनुअल एवं प्रशिक्षण इत्यादि से संबंधित राष्ट्रपति के आदेशों के अनुपालन की स्थिति का मंत्रालयवार/क्षेत्रवार मूल्यांकन, केन्द्र सरकार के कार्यालयों में पुस्तकों की खरीद, कम्प्यूटरीकरण और हिंदी, भर्ती नियमों में हिंदी ज्ञान की अनिवार्यता, शिक्षण और प्रशिक्षण संस्थानों में हिंदी माध्यम की उपलब्धता, हिंदी विज्ञापनों पर व्यय तथा सावजनिक उपक्रमों के वाणिज्यिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग आदि से संबंधित प्रतिवेदन का आठवां खण्ड राष्ट्रपति जी को दिनांक 16.08.2005 को प्रस्तुत किया गया। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 4(3) के अंतर्गत इसे लोकसभा के पटल पर दिनांक 15.05.2007 तथा राज्य सभा के पटल पर दिनांक 16.05.2007 को रखा गया था। इसकी प्रतियां भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों तथा राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की सरकारों एवं विभिन्न मंत्रालयों/विभागों से प्राप्त मतों पर विचार करने के बाद समिति द्वारा की गई अधिकांश सिफारिशों को मूल रूप से या कुछ संशोधनों के साथ स्वीकार करने का निर्णय लिया गया है। तदनुसार अधोहस्ताक्षरी को राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 4(4) के अंतर्गत समिति के प्रतिवेदन की सिफारिशों पर राष्ट्रपति के निम्नलिखित आदेश सूचित करने का निदेश हुआ है:

क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
1.	भाग-1 अध्याय-2 में समिति द्वारा की गई टिप्पणियों के कार्यान्वयन के लिए सरकार द्वारा ठोस कदम उठाये जायें, यथा :- (क) सभी केन्द्रीय कार्यालय निर्धारित लक्ष्य के अनुसार देवनागरी के यांत्रिक उपकरण खरीदें तथा उन्हें प्रयोग में लायें।	यह सिफारिश स्वीकार की जाती है।
	(ख) प्रशिक्षण संस्थानों के मुख्य अधिकारियों की वार्षिक गोपनीय रिपोर्टों में उल्लेख किया जा सकता है कि उन्होंने वहां हिंदी के प्रयोग के लिए क्या विशेष कार्रवाई की।	यह सिफारिश स्वीकार की जाती है। सिफारिश हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए केवल सकारात्मक (positively) रूप से लागू की जाए। इस प्रकार के उल्लेख से किसी अन्य अधिकारी का कोई अहित न हो।

क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
	<p>(ग) उच्च न्यायालयों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग किया जाए। आरंभ में "क" क्षेत्र में सभी निर्णय हिंदी में हो दिए जाए तथा धीरे-धीरे अन्य क्षेत्रों में इन्हें लागू किया जाए।</p> <p>(घ) हिंदी सलाहकार समिति की वर्ष में कम से कम तीन बैठकें आयोजित की जाएं।</p> <p>(च) संसदीय राजभाषा समिति द्वारा पिछले खंडों में की गई सिफारिशों पर पारित किये गये राष्ट्रपति के आदेशों का कार्यान्वयन सभी केन्द्रीय कार्यालयों के लिए बाध्यकारी हो।</p>	<p>सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि राजभाषा विभाग विधायी विभाग तथा 18वें भारतीय विधि आयोग का परामर्श लेकर इस संबंध में उचित निर्णय लें।</p> <p>यह सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि सभी मंत्रालय/विभाग हिंदी सलाहकार समिति की वर्ष में कम से कम दो बैठकें तो अवश्य आयोजित करें। इससे अधिक बैठकों के आयोजन के लिए भी सभी प्रयास करें।</p> <p>सिफारिश स्वीकार की जाती है। सभी केन्द्रीय मंत्रालय/विभाग संसदीय राजभाषा समिति द्वारा विभिन्न खंडों में की गई सिफारिशों पर पारित किये गये राष्ट्रपति के आदेशों का पूर्ण कार्यान्वयन करें।</p>
2.	<p>गृह मंत्रालय, कोयला एवं खान मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, रसायन और उर्वरक मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय, विद्युत मंत्रालय तथा इस्पात मंत्रालय के आकलन से पता चलता है कि 25% से अधिक अधिकारी/कर्मचारी हिन्दी में अप्रशिक्षित हैं, इन मंत्रालयों को चाहिए कि वह स्थिति को गंभीरता से लेते हुए कंप्यूटर प्रणाली अथवा पत्राचार से प्रशिक्षण का कार्य वर्ष भर में पूरा करवायें। राजभाषा विभाग अपनी हिन्दी शिक्षण योजना के तहत इन विभागों के लिए विशेष योजना बनाकर इस कार्य में सहयोग दे।</p>	<p>संबंधित मंत्रालय केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों या विभिन्न भारतीय भाषाओं के माध्यम से स्वयं हिंदी सीखने के लिए राजभाषा विभाग की वेबसाइट (<a href="http://www.rajbhasha.gov.in">www.rajbhasha.gov.in</a>) पर उपलब्ध कराये गये आनलाइन 'लीला' साफ्टवेयर के माध्यम से शेष बचे अप्रशिक्षित कार्मिकों को अति शीघ्र हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि में प्रशिक्षण दिलवायें।</p>
3	<p>सचिव (राजभाषा), मंत्रालयों/विभागों आदि में राजभाषा नियम, 1976 के नियम-5 के उल्लंघन की स्थिति को संबंधित 18 मंत्रालय/ विभागों के सचिवों के साथ उठायें।</p>	<p>सिफारिश स्वीकार की जाती है।</p>

क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
4(क)	स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, पोत परिवहन, सड़क परिवहन तथा राजमार्ग मंत्रालय और कृषि मंत्रालय में बड़ी संख्या में अंग्रेजी के कोड/मैनुअलों को देखते हुए इन मंत्रालयों में विशेष कार्य बल गठित किया जाना चाहिए, जिनमें केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग तथा विभागीय हिन्दी अनुवादकों और तकनीकी क्षेत्रों से जुड़े विशेषज्ञों को भी शामिल किया जाए ताकि इन कोड/मैनुअलों का अनुवाद एक साल के भीतर पूरा हो जाए।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
4(ख)	परमाणु ऊर्जा विभाग, रसायन और उर्वरक मंत्रालय, विद्युत मंत्रालय, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, योजना मंत्रालय, गृह मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय तथा नागर विमानन मंत्रालय के के आधार पर इन कोड/मैनुअलों का अनुवाद गैर-सरकारी एजेंसियों से करवाये और इस कार्य को 6 से 9 महीने के भीतर पूरा करवाये।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि किए गए अनुवाद की प्रमाणिकता सुनिश्चित करने के लिए राजभाषा विभाग के अधीनस्थ कार्यालय, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो से वैटिंग का कार्य करवाया जाए।
4(ग)	शहरी विकास एवं गरीबी उपशमन मंत्रालय, कोयला एवं खान मंत्रालय, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, रेल मंत्रालय, जल संसाधन मंत्रालय, युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, वित्त मंत्रालय तथा श्रम मंत्रालय एक कार्य-योजना बनाकर छः महीने के भीतर सभी कोड/मैनुअलों को द्विभाषी कर लें।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि किए गए अनुवाद की प्रमाणिकता बनाए रखने के लिए राजभाषा विभाग के अधीनस्थ कार्यालय, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो से वैटिंग का कार्य करवाया जाए।
4(घ)	विधि और न्याय मंत्रालय, विदेश मंत्रालय, कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, महासागर विकास विभाग, भारी उद्योग एवं लोक उद्यम मंत्रालय, जनजातीय कार्य मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय तथा वस्त्र मंत्रालय अंग्रेजी में उपलब्ध कोड/मैनुअलों को स्वयं तीन महीने में अनुवाद कराने की व्यवस्था कराये।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि किए गए अनुवाद की प्रमाणिकता बनाए रखने के लिए राजभाषा विभाग के अधीनस्थ कार्यालय, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो से वैटिंग का कार्य करवाया जाए।

क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
5.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, जल संसाधन मंत्रालय, उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में अंग्रेजी प्रकाशन हिन्दी के प्रकाशनों से बहुत ज्यादा हैं। ऐसी स्थिति में इन मंत्रालयों के सचिव अपने अधीनस्थ संस्थानों में इस विषय पर व्यक्तिगत तौर पर ध्यान दें ताकि स्थिति में सुधार हो सके।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
6.	सेवा पंजिकाओं/सेवा अभिलेखों में हिन्दी/द्विभाषी खंड स्टाम्प की सहायता से रूटीन प्रविष्टियों की जाएं। इन खंड की मोहरों को देश के सभी केन्द्रीय कार्यालयों में प्रयोग हेतु मानकीकृत किया जाए। फलतः रूसमस्त/यथासंभव प्रविष्टियाँ करने संबंधी प्रावधान को हटाया जा सकता है।	सिफारिश स्वीकार की जाती है। कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग इस संबंध में आवश्यक कार्रवाई करे।
7.	“ग” क्षेत्र में स्थित कार्यालयों के लिए भी रजिस्ट्रों में प्रविष्टियों का न्यूनतम प्रतिशत निर्धारित किया जाए और रजिस्ट्रों में हिन्दी में यथासंभव प्रविष्टियाँ जैसा प्रावधान समाप्त कर दिया जाए।	सिफारिश आंशिक संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि “ग” क्षेत्र में स्थित सरकारी कार्यालय इस दिशा में अपने यथासंभव प्रयास जारी रखे।
8.	नवसृजित राज्यों - छत्तीसगढ़, उत्तरांचल और झारखंड “क” क्षेत्र में ही रखा जाए। इस संबंध में राजभाषा विभाग राजभाषा नियम, 1976 में यथावश्यक संशोधन करने की कार्रवाई करे।	सिफारिश पर वांछित कार्रवाई कर ली गई है।
9.	कार्यालय में राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए मॉनीटरिंग की व्यवस्था सुदृढ़ की जानी चाहिए तथा वरिष्ठ अधिकारी के स्तर पर जांच बिन्दु बनाए जाने चाहिए।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
10.	जिन मंत्रालयों के अधीनस्थ कार्यालयों में (कुल 12 मंत्रालय/विभाग) में राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन 90% से भी कम है उन कार्यालय प्रमुखों के साथ मंत्रालय/विभाग के सचिव व्यक्तिगत रूप से मामला उठाएं।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।

क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
11.	कार्यालयों में जब कभी भी हिन्दी कार्यशाला आयोजित की जाए, राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) की अनिवार्यता पर हर कार्यशाला में कुछ समय आबंटित किया जाए। इसके अलावा सामान्य आदेश के संबंध में अधिकतम चर्चा की जाए जिससे इस मद में आने वाले सभी कागजातों की जानकारी प्रदान की जा सके।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
12.	समिति ने चौथे खंड में सिफारिश की थी कि "क" क्षेत्र में केवल संसद के समक्ष रखे जाने वाले कागजातों को छोड़कर सभी कागजात केवल हिन्दी में जारी किए जाएं। "क" क्षेत्र में अद्यतन स्थिति को देखते हुए समिति पुनः यह सिफारिश करती है कि उपरोक्त कागजातों के अतिरिक्त राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी कागजातों के संबंध में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कर दी जाए। जिन राज्यों में अभी तक हिन्दी को राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है गृह मंत्रालय द्वारा पहल करके उनसे चर्चा की जाए कि वह अपने राज्य की राजभाषा के साथ-साथ हिन्दी को भी राजभाषा का दर्जा प्रदान करें।	वर्तमान में इस सिफारिश के संबंध में राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(5) में किए गए प्रावधानों के अनुसार अनुपालन ही जारी रहे।
13.	राजभाषा विभाग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से हिन्दी/भाषा/आशुलिपि/टाइपिंग प्रशिक्षण का सघन अभियान चलाकर प्रशिक्षण सुविधाओं को प्रत्येक कार्यालय तक पहुँचाए।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि भारत सरकार के सभी कार्मिकों को राजभाषा विभाग के अधीनस्थ कार्यालय, केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा प्रशिक्षण देने हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ अपना यथासंभव सहयोग दें।
14.	"ग" क्षेत्र में दक्षिण भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिन्दी प्रशिक्षण के लिए कम्प्यूटर प्रणाली पर आधारित "ऑन-लाइन" हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम का व्यापक प्रचार प्रसार किया जाए।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
15.	तिरुवनंतपुरम, कासरगोड, कोल्लम, अलपूजा, त्रिचपल्ली, मदुरै, ऊटी, पुरी, कटक, गंगटोक, सिलीगुड़ी, मैसूर, बैंगलूर, कोजिक्कोड, शिमला, सूरत तथा मंगलौर में हिन्दी शिक्षण योजना के तहत हिन्दी आशुलिपि एवं हिन्दी टंकण के प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।

क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
16.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों के आयोजन में व्यय होने वाली राशि की सीमा रुपये 3000/- से बढ़ाकर रुपये 10,000/- कर देनी चाहिए अथवा सदस्य कार्यालयों द्वारा लिए जाने वाले योगदान को संहिता-बद्ध (कोडिफाई) किया जाए ताकि सदस्य कार्यालयों को इस राशि की मंत्रालयों/मुख्यालयों से स्वीकृति अर्पित प्राप्त करने में कोई कठिनाई न हो।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में ज्ञान वाले व्यय की सीमा समय-समय पर समीक्षा करके आवश्यकतानुसार संशोधित की जाए।
17.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के प्रभावी संचालन हेतु नराकास सचिवालय को स्थाई तौर पर अतिरिक्त मानव संसाधन एवं अन्य आधुनिक सुविधाओं से युक्त बनाया जाना चाहिए।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि वर्तमान व्यवस्था के अंतर्गत ही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां अपने सदस्य-कार्यालयों के सहयोग से उनके पास उपलब्ध आंतरिक संसाधनों से ही समितियों के प्रभावी संचालन हेतु आवश्यक सुविधाएं जुटाएं।
18.	प्रत्येक क्षेत्र में राजभाषा गतिविधियों को बढ़ाने के उद्देश्य से हर वर्ष नराकास अध्यक्षों का एक सम्मेलन आयोजित किया जाना चाहिए तथा राजभाषा नीति व लक्ष्यों के निर्धारण के मामले में इनकी भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि इस प्रकार की बैठकें वार्षिक आधार पर क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित की जाएं।
19.	हिंदीतर भाषी क्षेत्रों विशेषकर तमिलनाडु, केरल एवं कर्नाटक जैसे राज्यों में हिन्दी सभाचार-पत्रों/पत्रिकाओं के प्रकाशन तथा इनसे जुड़े हिन्दी पत्रकारों के प्रोत्साहन हेतु विशेष योजनाएं चलाई जाएं।	सिफारिश स्वीकार नहीं की जाती है।
20.	नराकास की बैठकों में राजभाषा विभाग, नई दिल्ली के वरिष्ठ अधिकारी का प्रतिनिधित्व अनिवार्य किया जाए।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि नराकास की बैठकों में राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों का प्रतिनिधित्व यथासंभव सुनिश्चित किया जाए।
21.	क्षेत्र 'ग' में स्थित प्रत्येक केंद्रीय कार्यालय में कम से कम एक हिन्दी स्टाफ की तैनाती अनिवार्य की जाए।	इस सिफारिश के संबंध में राजभाषा विभाग द्वारा न्यूनतम स्टाफ की तैनाती संबंधी दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्रवाई की जाए।



क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
22.	अध्यक्ष, नराकास, मंडी, अध्यक्ष, नराकास (बैंक), इंदौर, अध्यक्ष, नराकास, शिमला, अध्यक्ष, नराकास (कार्यालय), चंडीगढ़, अध्यक्ष, नराकास (उपक्रम), मुंबई, अध्यक्ष, नराकास (बैंक), बड़ोदा, अध्यक्ष, नराकास (कार्यालय), त्रिवेन्द्रम, अध्यक्ष, नराकास (कार्यालय), कोचिन, अध्यक्ष, नराकास, नवदुरै, अध्यक्ष, नराकास, कोयम्बतूर, अध्यक्ष, नराकास (बैंक), बेंगलूर (अध्याय 8 के पैरा 8.33-8.45 में) द्वारा दिए गए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्षों से प्राप्त सुझावों पर राजभाषा विभाग उचित कार्यवाही करे।	सिफारिशों पर राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम तथा इस संबंध में समय-समय पर जारी आदेशों के परिप्रेक्ष्य में यथासंभव अनुपालन किया जाए।
23.	मंत्रालयों/विभागों तथा उनके अधीनस्थ कार्यालयों में हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों को उनका विनिर्दिष्ट कार्य करने के लिए व्यक्तिगत आदेश जारी करने के साथ-साथ उन्हें अपना समस्त कार्य हिन्दी में करने के लिए विशेष रूप से प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जाए।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
24.	भविष्य में कोई भी कोड/मैनुअल केवल अंग्रेजी में तैयार न किया जाए और इस समय अंग्रेजी में मौजूद समस्त कोड/मैनुअल एक वर्ष के भीतर द्विभाषी करा लिए जाएं।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
25.	"क" क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों आदि में 50%, "ख" क्षेत्र के कार्यालयों में 30% और "ग" क्षेत्र के कार्यालयों में 20% अनुभागों को पूरा काम हिन्दी में करने के लिए निर्दिष्ट किया जाए। सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि के बारे में जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, समिति अनुशंसा करती है कि ऐसे उपक्रमों/निगमों आदि में "क" क्षेत्र में कुल कार्य क्षेत्र का 50%, "ख" क्षेत्र में 30% और "ग" क्षेत्र में 20% कार्य हिन्दी में किया जाए।	केन्द्र सरकार के सभी कार्यालय/उपक्रम/निगम आदि इन लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में ठोस कदम उठावें।
26.	कार्यालयों में सरल, सुबोध एवं उपयोगी हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर विशेष ध्यान दिया जाए। अधिकारियों/कर्मचारियों को पठन-पाठन हेतु प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के लिए देश के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े सेनानियों, देशभक्तों तथा शहीदों की जीवनियां एवं आत्मकथाएं तथा रोचक एवं कालजयी (epic) उपन्यास आदि भी खरीदे जाएं।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।

क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
27.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सचिव उनके मंत्रालय के अन्तर्गत आने वाले नवोदय विद्यालय समिति, नई दिल्ली, केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मुख्यालय), नई दिल्ली, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली तथा केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, नई दिल्ली के साथ राजभाषा नियम, 1976 के नियम-5 के उल्लंघन के मामले को उठाएं और यह सुनिश्चित करें कि भविष्य में इस प्रकार का उल्लंघन न होने पाए। इसी प्रकार सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सचिव, केन्द्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के साथ; सचिव, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विकास एवं वित्त निगम, नई दिल्ली के साथ; सचिव, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध परिषद, नई दिल्ली और भारतीय चिकित्सा पद्धति, नई दिल्ली के साथ; और सचिव, कृषि मंत्रालय, भारतीय राज्य फार्म निगम, नई दिल्ली के साथ मामले को उठाएं और राजभाषा नियम, 1976 के नियम-5 का अनुपालन सुनिश्चित करें।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
28.	राजभाषा से संबंधित नियमों इत्यादि के कार्यान्वयन को उचित गंभीरता से लेने के उद्देश्य से केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक मंत्रिमंडल सचिव की अध्यक्षता में करवाई जाए और सभी विभागों के सचिव इस समिति के सदस्य हों।	सिफारिश विचाराधीन है।
29.	तकनीकी, वैज्ञानिक, शोध व अनुसंधान से जुड़े विभिन्न विषयों से संबंधित हिन्दी साहित्य को एक जगह उपलब्ध कराने के लिए सरकार शीघ्र ही वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिन्दी पुस्तक-बैंकों की स्थापना करे जो ऐसी पुस्तकों/साहित्य को प्रयोक्ताओं एवं उपभोक्ता संस्थानों को उपलब्ध कराएं अथवा उन्हें प्राप्ति स्रोतों की जानकारी दें।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि सभी मंत्रालय/विभाग अपने कार्य से संबंधित तकनीकी, वैज्ञानिक शोध, अनुसंधान से जुड़े विभिन्न विषयों पर पर्याप्त हिन्दी साहित्य की उपलब्धता सुनिश्चित करें एवं उनके प्राप्ति स्रोतों की जानकारी अपनी वेबसाइट के साथ-साथ अन्य संभव साधनों द्वारा प्रयोक्ताओं एवं उपभोक्ताओं को दें।

क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
30.	वैज्ञानिक, तकनीकी व शोध से संबंधित विषयों पर उपलब्ध समस्त साहित्य का वृहत् स्तर पर प्रचार किया जाए ताकि उपभोक्ता संस्थान अपनी कार्य प्रकृति के अनुसार हिन्दी में उपलब्ध साहित्य आसानी से प्राप्त कर सकें। इस प्रक्रिया को नियमित अन्तराल पर दोहराते रहना चाहिए।	सिफारिश स्वीकार की जाती है। सभी मंत्रालय/विभाग अपने कार्य क्षेत्र से संबंधित वैज्ञानिक, तकनीकी एवं शोध से संबंधित विषयों पर उपलब्ध साहित्य के प्रचार को अपनी प्रचार गतिविधियों का नियमित हिस्सा बनाएं।
31.	अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध शोध साहित्य अथवा वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य का स्तरीय हिन्दी अनुवाद सुलभ कराने के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के तहत एक गहन वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद ब्यूरो की स्थापना की जाए, जिसमें विभिन्न प्रकार के विज्ञान विषयों के स्नातकोत्तर एवं/अथवा विभिन्न इंजीनियरी डिग्री धारकों को, जिन्हें हिन्दी का पर्याप्त ज्ञान हो अथवा जो ऐसे विषयों का स्तरीय हिन्दी रूपान्तर देने में सक्षम हों, नियुक्त किया जाए। ऐसे विशेषज्ञ तकनीकी अनुवाद अधिकारियों को सहायक निदेशक (रा0भा0) के समकक्ष अथवा इससे उच्चतर वेतनमान दिया जाए।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय इस सिफारिश के अंतर्गत अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध शोध साहित्य अथवा वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य के स्तरीय हिन्दी अनुवाद सुलभ कराने के उद्देश्य को प्रस्तावित राष्ट्रीय अनुवाद मिशन के द्वारा पूरा करें !
32.	विज्ञान/तकनीकी/शोध से संबंधित विषयों पर हिन्दी में मौलिक रूप से लिखने वाले ऐसे लेखकों को समुचित रायल्टी का प्रावधान किया जाए, जिनकी पुस्तकों का संस्थानों में नियमित रूप से कार्यात्मक अथवा पाठ्यक्रम के रूप में उपयोग किया जाता हो।	प्रत्येक लेखक के लेखन-अधिकार कापी-राइट एक्ट के अंतर्गत सुरक्षित होते हैं। पुस्तकों पर लेखकों को मिलने वाली रायल्टी एक लेखक तथा प्रकाशक के बीच परस्पर समझौता है। इसमें केन्द्र सरकार की कोई भूमिका नहीं है। अतः सिफारिश मान्य नहीं।
33.	"क" एवं "ख" क्षेत्र में उच्च शिक्षा अर्थात् विश्वविद्यालयों में इंजीनियरी, कम्प्यूटर, शोध, तकनीकी विषयों आदि की शिक्षा हिन्दी माध्यम से भी दी जाए एवं पाठ्यक्रम व पाठ्य पुस्तकें भी हिन्दी में तैयार की जाएं।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
34.	वार्षिक कार्यक्रम 2004-05 में तथा उसके पश्चात् राजभाषा विभाग ने पुस्तकों की खरीद के संबंध में पूर्व निर्धारित लक्ष्य में संशोधन कर इसमें जर्नल्स एवं मानक संदर्भ पुस्तकों की खरीद पर व्यय को शामिल नहीं किया है। समिति इस संशोधन पर पुनर्विचार की आवश्यकता महसूस करती है, क्योंकि यदि यह छूट अनिश्चित समय के लिए लागू रही तो इसका हिन्दी के दूरगामी उद्देश्य पर विपरीत असर पड़ेगा।	वर्तमान में यथास्थिति बनाए रखी जाए।

क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
35.	हिंदी पुस्तकों की खरीद के मामले में गैर-तकनीकी/प्रशासनिक कार्यालयों के लक्ष्य से पीछे रहने संबंधी कारणों पर संबंधित मंत्रालयों/विभागों द्वारा ऐसे कार्यालयों पर सतत निगरानी रखी जानी चाहिए।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
36.	उप सचिव या उन उच्चाधिकारियों के लिए जिन्हें कम्प्यूटर उपलब्ध करवाया गया है, कम्प्यूटरों पर हिन्दी के उपयोग का कम से कम एक सप्ताह का क्रेश पाठ्यक्रम आयोजित किया जाये और "क", "ख" तथा "ग" क्षेत्रों के आधार पर उनके लिए देवनागरी में कम्प्यूटर पर कार्य का लक्ष्य भी निर्धारित किया जाये।	संस्तुति इस संशोधन के साथ स्वीकार है कि उप सचिव/उच्चाधिकारियों के लिए लघु अवधि के द्रुतगामी पाठ्यक्रम आयोजित किये जाएँ और वे कम्प्यूटर पर देवनागरी में अधिक से अधिक कार्य करें।
37.	किसी एक एजेंसी से मानकीकृत देवनागरी सॉफ्टवेयर बनवाया जाए जो केन्द्रीय सरकार के अधीन सभी मंत्रालयों एवं उनके संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों में हिन्दी के कार्यों में एकरूपता ला सके।	केन्द्र सरकार के सभी कार्यालय कम्प्यूटर पर देवनागरी प्रयोग के लिए केवल मानक एनकोडिंग (यानि यूनिकोड) फॉन्ट प्रयोग करें एवं विभिन्न एजेंसियों द्वारा उपलब्ध कराए गए वे सॉफ्टवेयर ही प्रयोग करें जो यूनिकोड एनकोडिंग मानक के अनुरूप प्रयोग में सक्षम हों ताकि सभी मंत्रालयों/विभागों एवं संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी के कार्यों में एकरूपता रहे।
38.	सरकारी क्षेत्र के बैंकों में आँकड़ा संसाधन (Data Processing) का काम द्विभाषी या हिन्दी में हो, इसके लिए तथा सभी बैंकों के सॉफ्टवेयर में एकरूपता हो इसके लिए भारतीय रिजर्व बैंक/वित्त मंत्रालय ठोस कदम उठाएँ।	संस्तुति स्वीकार की जाती है। वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग इस संबंध में कार्रवाई करें और हिंदी के लिए मानक एनकोडिंग (युनीकोड) के अनुरूप फॉन्ट/सॉफ्टवेयर ही प्रयोग करें।
39.	क्रेडिट कार्ड, ए.टी.एम. आदि सेवाओं को भी हिन्दी अथवा द्विभाषी करवाया जाये।	सिफारिश सरकारी क्षेत्रों के बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं द्वारा अनुपालन के लिए स्वीकार की जाती है।
40.	वित्त मंत्रालय सभी बीमा कंपनियों द्वारा जारी की जाने वाली बीमा पॉलिसियों को हिन्दी अथवा द्विभाषी बनवाए जाने हेतु शीघ्र कार्रवाई करे।	सिफारिश सरकारी क्षेत्र की बीमा कंपनियों द्वारा अनुपालन के लिए स्वीकार की जाती है। बैंकिंग प्रभाग, वित्त मंत्रालय इस संबंध में कार्रवाई करे।
41.	एम.टी.एन.एल. तथा बी.एस.एन.एल. द्वारा जनता को भेजे जाने वाले बिलों में प्रविष्टियाँ हिन्दी अथवा द्विभाषी में की जाएँ।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।

क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
42.	दूरदर्शन अपने हिन्दी चैनलों के कार्यक्रमों में शीर्षक (Caption) आदि हिन्दी में प्रसारित करे। इसके लिए उचित साफ्टवेयर की व्यवस्था की जाये।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
43.	रेल मंत्रालय तथा नागर विमानन मंत्रालय रेलवे स्लेटफार्मों तथा हवाई अड्डों पर सूचना प्रसारण हेतु लगाए गए डिजिटल बोर्डों में हिन्दी अथवा द्विभाषी सूचना के प्रसारण हेतु कार्यवाई करें।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
44.	जब भी कोई मंत्रालय/विभाग या उसका कोई कार्यालय या उपक्रम अपनी वेबसाइट तैयार करे तो वह अनिवार्य रूप से द्विभाषी तैयार किया जाए। जिस कार्यालय का वेबसाइट केवल अंग्रेजी में है उसे द्विभाषी बनाए जाने की कार्यवाई की जाए।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
45.	राजभाषा विभाग उपर्युक्त क्रम संख्या 34 से 43 तक सिफारिशों को पूरा करने के लिए विशेष निगरानी रखे और इनको पूरा करने में जिस किसी कार्यालय को कठिनाई आ रही है उन्हें सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सहयोग से दूर करने के लिए कार्यवाई करें।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
46.	केन्द्रीय सरकार की भर्ती हेतु आयोजित स्पर्धात्मक परीक्षाओं में कम से कम मैट्रिक अथवा समकक्ष स्तर का हिन्दी का एक अनिवार्य प्रश्न पत्र तैयार किया जाए, जिसमें उत्तीर्ण हुए बिना अभ्यर्थी को असफल माना जाए।	सिफारिश स्वीकार नहीं की गई है।
47.	केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा के तहत बड़े-बड़े मंत्रालयों/विभागों में निदेशक (राजभाषा) के पद यथावत बने रहें और संयुक्त सचिव (राजभाषा) के पद सृजित करने पर भी विचार किया जाए।	सिफारिश स्वीकार नहीं की जाती है।
48.	प्रत्येक मंत्रालय/विभाग अपने अधीनस्थ/संबद्ध/उपक्रमों/प्रतिष्ठानों/संगठनों में एक राजभाषा संवर्ग स्थापित कर अपने राजभाषा कैंडर से देश भर में स्थापित अपने सभी छोटे बड़े कार्यालयों में राजभाषा अधिकारी/कर्मचारी को तैनात कर सकते हैं। इससे उन्हें पदोन्नति के अवसर भी मिलेंगे।	यह सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की गई है कि जहां संभव हो वहां संवर्ग बनाया जाए तथा जहां संभव न हो वहां स्टाफ की पदोन्नति के लिए अन्य उचित व्यवस्था की जाए।

क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
49.	क्षेत्र "ग" में हिन्दी कार्मिक की नियुक्ति पर उसे विशेष भत्ते के रूप में प्रोत्साहन राशि दी जानी चाहिए और साथ ही ऐसी तैनाती एक सीमित अवधि के लिए होनी चाहिए जिससे कि क्षेत्र "क" के अभ्यर्थी बेझिझक क्षेत्र "ग" में तैनाती स्वीकार कर लें।	सिफारिश स्वीकार नहीं की गई है।
50.	अनुवाद कार्य और राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी सभी संवर्गों (चाहे वे मंत्रालय/विभाग में हों या अधीनस्थ कार्यालयों में) में पदनामों तथा वेतनमानों में एकरूपता लाने के लिए आवश्यक कार्रवाई की जाए।	सिफारिश सरकार के विचाराधीन है।
51.	सभी केन्द्रीय विद्यालयों/नवोदय विद्यालयों के साथ-साथ "क" और "ख" क्षेत्रों में स्थित राज्य सरकारों के नियंत्रण वाले सरकारी विद्यालयों में सभी विषयों की पढ़ाई दसवीं स्तर तक हिन्दी माध्यम से तत्काल शुरू की जानी चाहिए, क्षेत्रीय भाषा और अंग्रेजी को भी एक विषय के रूप में रखा जा सकता है। एक निर्धारित समय के उपरान्त स्थिति की समीक्षा करके इसका विस्तार "ग" क्षेत्र में भी किया जाए।	संस्तुति स्वीकार नहीं की गई।
52.	विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों, अनुसंधान तथा व्यावसायिक शिक्षण संस्थानों में प्राध्यापकों की भर्ती में मैट्रिक स्तर तक का हिन्दी ज्ञान अनिवार्य किया जाना चाहिए ताकि कार्यभार ग्रहण करने के बाद उन्हें अपना विषय हिन्दी में पढ़ाने में कोई कठिनाई न हो।	यह सिफारिश स्वीकार नहीं की गई है।
53.	सभी केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में अनिवार्य रूप से हिन्दी विभाग खोले जाएं और उनमें स्नातकोत्तर स्तर के हिन्दी पाठ्यक्रम उपलब्ध होने चाहिए।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
54.	सर्व शिक्षा अभियान जैसे राष्ट्रीय शिक्षा कार्यक्रमों में केवल हिन्दी माध्यम से पढ़ाई की व्यवस्था की जानी चाहिए।	यह सिफारिश स्वीकार नहीं की गई है।

क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
55.	विश्वविद्यालयों/तकनीकी/व्यावसायिक/अनुसंधान संस्थाओं आदि की प्रवेश परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम का विकल्प अनिवार्य किया जाए।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि विश्वविद्यालयों, तकनीकी, व्यावसायिक अनुसंधान संस्थाओं आदि की परीक्षाओं में उत्तर देने के लिए अन्य भाषाओं के साथ हिंदी को विकल्प रखने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय, विश्व विद्यालय अनुदान आयोग के परामर्श तथा राज्य सरकारों की सहमति से उचित कार्रवाई करे।
56.	रेडियो/टेलीविजन जैसे इलैक्ट्रॉनिक संचार माध्यमों के जरिए होने वाले शैक्षणिक प्रसारण केवल हिन्दी में सुनिश्चित किये जाएं क्योंकि इनकी पहुंच दूर-दराज के क्षेत्रों तक रहती है।	देश में भाषायी विविधता को देखते हुए संस्तुति इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि रेडियो/दूरदर्शन के जरिए भारत सरकार द्वारा प्रयोजित शैक्षणिक प्रसारणों में हिंदी माध्यम के प्रसारणों को समुचित/पर्याप्त समयावधि प्रदान की जाए।
57.	वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग जैसे संगठन उनके द्वारा हिन्दी/द्विभाषी प्रकाशित पुस्तकों की विषयवार सूचियां विद्यालयों, विश्व विद्यालयों तथा अनुसंधान और व्यावसायिक संस्थानों को उपलब्ध कराएं और संगोष्ठियों और कार्यशालाओं के माध्यम से उन्हें उन पुस्तकों की उपलब्धता की जानकारी दें।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
58.	केन्द्र सरकार, सार्वजनिक उपक्रमों, बैंकों और अन्य संस्थानों के विभागीय कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थानों में अत्यन्त तकनीकी विषयों को छोड़कर सभी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम हिन्दी माध्यम से पढ़ाये जाने की व्यवस्था की जाए।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि सभी सेवाकालीन प्रशिक्षणों को प्रमुखतः हिंदी भाषा के माध्यम से और गौणतः मिली-जुली भाषा के माध्यम से चलाया जाए।
59.	प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों की वार्षिक गोपनीय रिपोर्टों में उनके द्वारा अपने संस्थानों में हिन्दी के प्रयोग के लिए किए गए कार्यों का उल्लेख किया जाए।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
60.	सार्वजनिक क्षेत्र के नए पंजीकृत होने वाले सभी उपक्रमों/निगमों का नामकरण अनिवार्य रूप से हिन्दी में किया जाए। उपक्रमों/निगमों के अन्तर्राष्ट्रीय महत्व को देखते हुए यदि आवश्यक हो तो हिन्दी के साथ अंग्रेजी नाम भी पंजीकृत कराया जा सकता है।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।

क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
61.	उपक्रमों/निगमों में विद्यमान सभी स्वदेशी और विदेशी यंत्रों/संयंत्रों पर समस्त विवरण हिन्दी या द्विभाषी रूप में दर्ज किए जाएं।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
62.	भविष्य में सभी उपक्रमों/निगमों के प्रतीक चिह्न/लोगो या तो द्विभाषी अथवा चित्रात्मक बनवाए जाएं।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
63.	उपक्रमों/निगमों/कंपनियों के नए उत्पादों और ब्रांडों के नाम हिन्दी में ही रखे जाएं ताकि अन्तर्राष्ट्रीय जगत में उनकी अलग पहचान बनी रहे।	सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि भारत में प्रचलित हिंदीतर नाम या वे नाम जो कि उत्पाद/ब्रांड की बेहतर जानकारी/पहचान देते हैं, को छोड़कर अन्य सभी उत्पाद/ब्रांड नाम हिंदी में रखे जाएं।
64.	उपक्रमों/निगमों द्वारा निर्यात योग्य समस्त सामग्री पर आवश्यक विवरण हिन्दी या द्विभाषी रूप में ही अंकित किए जाएं।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
65.	उपक्रमों/निगमों के ब्रोशर, बिल-बाउचर जैसी मुद्रित सामग्री और प्रचार-प्रसार संबंधी समस्त सामग्री अनिवार्य रूप से हिन्दी अथवा द्विभाषी रूप में प्रकाशित की जाए।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
66.	सभी उपक्रमों/निगमों की वेबसाइटें शत-प्रतिशत द्विभाषी रूप में तैयार की जानी चाहिए तथा उन पर वे अपने कार्य-कलापों और उत्पादों के बारे में अंग्रेजी के साथ-साथ अनिवार्य रूप से हिन्दी में भी जानकारी उपलब्ध कराएं।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
67.	उपक्रमों/निगमों में अनुवाद व्यवस्था सुदृढ़ करने के लिए यथावश्यक हिन्दी पद सृजित किए जाएं और उपक्रमों/निगमों के मुख्यालय स्तर पर केंद्रीयकृत अनुवाद पैनल बनाए जाएं ताकि वे आवश्यकता पड़ने पर अपने कारपोरेट और सहयोगी कार्यालयों/कंपनियों को तत्काल अनुवाद उपलब्ध करा सकें।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
68.	उपक्रमों/निगमों के सभी कम्प्यूटरों पर हिन्दी सॉफ्टवेयर अनिवार्य रूप से डाले जाएं। यह सुविधा उनकी विदेश-स्थित शाखाओं में भी उपलब्ध कराई जाए।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।



क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
69.	अंग्रेजी के अखबार में भी हिन्दी के विज्ञापन दिए जा सकते हैं और हिन्दी के अखबार में अंग्रेजी के विज्ञापन दिए जा सकते हैं। अतः सभी कार्यालय विज्ञापनों को द्विभाषी रूप में दें।	सिफारिश स्वीकार नहीं की गई है।
70.	विज्ञापन की कुल राशि का न्यूनतम 50% हिन्दी पर खर्च किया जाए और 50% अंग्रेजी एवं प्रांतीय भाषाओं पर किया जाए।	सिफारिश इस संशोधन के साथ मान ली जाए कि सरकारी विज्ञापन की कुल राशि का एक निश्चित प्रतिशत केन्द्रीय मंत्रालय/विभाग अपनी आवश्यकतानुसार हिन्दी तथा अंग्रेजी में दिए जाने वाले विज्ञापनों के संबंध में निर्धारित करें।
71.	पद सृजन संबंधी प्रक्रिया सरल एवं सुविधाजनक बनाई जाए ताकि पद सृजन में अनावश्यक विलंब न हो। वित्त मंत्रालय और कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा हिन्दी पदों के सृजन पर किसी तरह की रोक न लगाई जाए। प्रत्येक छोटे-बड़े कार्यालय में, विशेष रूप से "ग" क्षेत्र में स्थित कार्यालयों में, कार्य की प्रकृति व आवश्यकता के आधार पर हिन्दी पदों के सृजन के लिए, वर्तमान मानकों में शिथिलता लाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएं।	सिफारिश स्वीकार की जाती है।
72.	हिन्दी से संबंधित नए सृजित एवं पहले से रिक्त पड़े सभी पद तत्काल प्राथमिकता के आधार पर भरे जाएं। यदि किसी कारणवश कोई हिन्दी पद तीन वर्ष अथवा उससे अधिक समय से न भरा गया हो तो भी उसे आगे भरने के लिए वित्त मंत्रालय और कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा कोई रोक न लगाई जाए।	राजभाषा विभाग इस संबंध में मंत्रिमंडल सचिवालय को सचिवों की समिति के अनुमोदन के लिए भेजे गए प्रस्ताव का परिणाम आने पर तदनुसार कार्रवाई करे।
73.	विदेश मंत्रालय सभी पासपोर्ट कार्यालयों में उपलब्ध कंप्यूटरों पर द्विभाषी रूप में काम करने की सुविधा उपलब्ध करवाए ताकि पासपोर्टों में प्रविष्टियां द्विभाषी हों और उन्हें द्विभाषी जारी किया जा सके।	सिफारिश स्वीकार की जाती है। विदेश मंत्रालय इस संबंध में एक कार्य योजना बनाकर सिफारिश के कार्यान्वयन के लिए आगामी कार्रवाई करे।

क्र.सं.	सिफारिश	राष्ट्रपति जी के आदेश
74.	वर्ष 2008 से केन्द्रीय सरकारी सेवा में आने से पहले ही "क", "ख", "ग" तथा "घ" सभी वर्गों में होने वाली सीधी भर्ती के दौरान ही हिन्दी संबंधी ज्ञान की न्यूनतम योग्यता निर्धारित की जाए ताकि बाद में प्रशिक्षण संबंधी तमाम परेशानियों एवं बाध्यताओं से बचा जा सके। हिन्दी संबंधी न्यूनतम योग्यता भी "क", "ख" तथा "ग" वर्ग के मामले में कम-से-कम दसवीं कक्षा अथवा उससे अधिक हो सकती है। वर्ग "घ" के लिए यह योग्यता मिडिल/आठवीं कक्षा तक शिथिल की जा सकती है।	सिफारिश स्वीकार नहीं की गई है।
75.	कर्मचारियों के हिन्दी का ज्ञान एवं उनके द्वारा किए गए हिन्दी कार्य का ब्यौरा क्रमशः सेवा पंजिका तथा गोपनीय रिपोर्ट में अंकित किया जाए। साथ ही, हिन्दी संवर्ग को छोड़कर अन्य सभी प्रकार के संवर्गों से संबंधित पदोन्नतियों के लिए गठित विभागीय पदोन्नति समितियाँ, पदोन्नति के विचारार्थ अधिकारी/कर्मचारी द्वारा किए गए हिन्दी कार्य का मूल्यांकन कर उसे बोनस अंक प्रदान करें।	सिफारिश स्वीकार नहीं की गई है।

### आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों, सभी राज्य सरकारों तथा संघ शासित क्षेत्रों, राष्ट्रपति सचिवालय, प्रधानमंत्री कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, उपराष्ट्रपति सचिवालय, योजना आयोग, भारत के नियंत्रक महालेखा परीक्षक के कार्यालय, लोकसभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, भारत के उच्चतम न्यायालय के महारजिस्ट्रार के कार्यालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारत के विधि आयोग तथा बार कॉउंसिल ऑफ इंडिया आदि को भेजी जाए।

इस संकल्प को आम जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में भी प्रकाशित करवाया जाए।

पी. जी. वत्सला जी. कुट्टी, संयुक्त सचिव

## वस्त्र मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 24 जून 2008

संकल्प

संख्या ई-11011/1/2005-हिंदी : वस्त्र मंत्रालय के दिनांक 4 अक्टूबर, 2005 और 20 अप्रैल, 2006 के समसंख्यक संकल्प के अधिक्रमण में वस्त्र मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति में श्री जगप्रसाद पृथ्वीपाल पाण्डे (क्र.सं. 13) तथा डा. महावीर सिंहजी डी. चौहान (क्र.सं. 16) के स्थान पर डा. राजेन्द्र भट्ट, 59, मेहुल पार्क, कॉलेज के पीछे, जामपुरा रोड़, पालनपुर, गुजरात को एतद्वारा इस मंत्रालय की ओर से गैर-सरकारी सदस्य के रूप में नामित किया जाता है।

आदेश

आदेश दिया जाता है इस अधिसूचना की एक-एक प्रति सभी राज्य सरकारों और संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों, प्रधान मंत्री कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, संसदीय कार्य मंत्रालय, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, योजना आयोग, राष्ट्रपति सचिवालय, भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, केन्द्रीय राजस्व के महालेखाकार तथा भारत सरकार के सभी मंत्रालयों तथा विभागों को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस अधिसूचना को आम जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

भूपेन्द्र सिंह, संयुक्त सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 25 जून 2008

सं. 1/5/2003-सीटी-2-

भारत सरकार ने अक्टूबर, 1958 में मूल रूप से गठित और तदनन्तर समय-समय पर पुनर्गठित कपास सलाहकार बोर्ड के पुनर्गठन का निर्णय लिया है। बोर्ड, जैसा कि अब पुनर्गठन किया गया है, में निम्नलिखित सदस्यगण होंगे-

केन्द्र सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाले

1 वस्त्र आयुक्त,  
भारत सरकार,  
वस्त्र मंत्रालय, मुंबई

अध्यक्ष

2. संयुक्त सचिव,  
कपास के प्रभारी,  
वस्त्र मंत्रालय, नई दिल्ली  
सदस्य
3. राष्ट्रीय सुदूर सेंसिंग एजेंसी से संबद्ध विज्ञान व सदस्य  
प्रौद्योगिकी विभाग के प्रतिनिधि,  
टेक्नोलॉजी भवन,  
न्यू मेहरौली रोड,  
नई दिल्ली-110 016
4. श्री एन.बी. सिंह  
कृषि आयुक्त व मिशन निदेशक,  
कपास प्रौद्योगिकी मिशन, कृषि मंत्रालय,  
कृषि भवन, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद रोड,  
नई दिल्ली-110 001  
सदस्य
5. डॉ. बी.एम. खडी,  
निदेशक, सीआईसीआर-नागपुर व सदस्य सचिव,  
स्थायी समिति, टीएमसी (एमएम-1)  
पो.बो. न.-2, शंकर नगर,  
पो. ओ.- नागपुर-440 010  
सदस्य
6. निदेशक,  
कपास विकास निदेशालय (एमएम-II),  
(कृषि एवं सहकारिता विभाग),  
कृषि मंत्रालय,  
14, रामजीभाई कमानी मार्ग, बलाई इस्टेट,  
पो.बो. नं. 1002, मुंबई-400038  
सदस्य

7. श्री एस.सी. ग्रोवर, सदस्य  
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक,  
सीसीआई-टीएमसी (एम एम 3 व 4),  
भारतीय कपास निगम,  
कपास भवन, प्लॉट नं. 3/ए,  
सेक्टर न. 10, सीबीडी बेलापुर,  
नवी मुंबई-400 614

## राज्य सरकार

8. आयुक्त/निदेशक, सदस्य  
(कृषि के प्रभारी),  
महाराष्ट्र सरकार,  
शिवाजी नगर  
पुणे-411 005
9. आयुक्त/निदेशक, सदस्य  
(कृषि के प्रभारी),  
गुजरात सरकार,  
कृषि भवन, पल्डी,  
अहमदाबाद-380006
10. आयुक्त/निदेशक, सदस्य  
(कृषि के प्रभारी),  
मध्य प्रदेश सरकार,  
विंध्याचल भवन,  
भोपाल-462 004
11. आयुक्त/निदेशक, सदस्य  
(कृषि के प्रभारी),  
आंध्र प्रदेश सरकार,  
लाल बहादुर स्टडियम के सामने,  
हैदराबाद-500001

- |     |  |       |
|-----|--|-------|
| 12. | आयुक्त/निदेशक,<br>(कृषि के प्रभारी),<br>कर्नाटक सरकार,<br>न.1 शेषाद्री रोड,<br>बेंगलूर-560001                            | सदस्य |
| 13. | आयुक्त/निदेशक,<br>(कृषि के प्रभारी),<br>तमिलनाडु सरकार,<br>चेपक, चेन्नै-600 005  | सदस्य |
| 14. | आयुक्त/निदेशक,<br>(कृषि के प्रभारी),<br>राजस्थान सरकार,<br>कृषि भवन, भगवानदास रोड,<br>जयपुर-302 005                      | सदस्य |
| 15. | आयुक्त/निदेशक,<br>(कृषि के प्रभारी),<br>पंजाब सरकार,<br>एस.सी.ओ 85-86, सेक्टर-35,<br>पिकादली सिनेमा के सामने,<br>चंडीगढ़ | सदस्य |
| 16. | आयुक्त/निदेशक,<br>(कृषि के प्रभारी),<br>हरियाणा सरकार,<br>कांडी विकास भवन,<br>सेक्टर-21, पंचकुला,<br>हरियाणा-134 109     | सदस्य |

17. आयुक्त/निदेशक, सदस्य  
(कृषि के प्रभारी),  
उड़ीसा सरकार,  
मुख्य विभागीय भवन,  
भुवनेश्वर-751 001
18. आयुक्त/निदेशक, सदस्य  
(कृषि के प्रभारी),  
उत्तर प्रदेश सरकार,  
कृषि भवन, लखनऊ-260 001

## कपास उपजकर्ता

19. डा. संतोष ठाकरे, सदस्य  
मंथन शारदा नगर,  
अमरावती-444605,  
महाराष्ट्र
20. श्री जी. जेवियर, प्रमुख - कृषि विभाग/ सदस्य  
श्री के.आर.सितापथी, मुख्य संचालन अधिकारी,  
(कान्स्ट्रक्ट फार्मिंग में अग्रणी संगठन)  
मै. सुपर स्पिनिंग मिल्स लि.,  
इग्ली टावर, पो.बो. 7113, ग्रीन पील्ड,  
737-डी, पुलियाकुलम रोड,  
कोयम्बटूर-641 045. तमिलनाडु
21. डा. संजीव पाटिल, एमएससी (एग्री), पीएचडी सदस्य  
(कपास ब्रीडर)  
कृषि अनुसंधान स्टेशन,  
महात्मा पूले कृषि विध्यापीठ,  
जलगांव-425001, महाराष्ट्र

22. श्री मणि चिन्नास्वामी, सदस्य  
 मैं. अपाची काटन कंपनी के प्रबंधन भागीदार,  
 45, मीणाकारी, जामिन उत्तूकूली,  
 पोल्लाची-642004-आर्गिनक कपास  
 तमिलनाडु  
 दूरभाष- 04259-324666/220995/329666  
 ई-मेल [appachi@vsnl.com](mailto:appachi@vsnl.com)

कपास बीज उत्पादक

23. श्री प्रभाकर राव, सदस्य  
 प्रबंध निदेशक,  
 मैं. नुजीवेदू सीड्स लि.  
 7-सी सूर्या टावर्स, 105, सरदार पटेल रोड  
 सिकंदराबाद-500 003
24. श्री आर.बी. बारवाले, सदस्य  
 प्रबंध निदेशक,  
 मैं. मैहको मोनसेन्टो ल.,  
 4थी मंजिल, रेशम भवन,  
 78, वीर नरीमन रोड,  
 मुंबई-400 020
25. श्री एम.रामासामी, प्रबंध निदेशक सदस्य  
 मैं. राशि सीड (प्रा.) लि.,  
 273, कमाराजनर रोड,  
 अतुर-636102  
 जिला - सलेम  
 दूरभाष 4282-241007, 242 007  
 फैक्स 4282-242558  
 वेबसाइट- [www.Rasiseeds.com](http://www.Rasiseeds.com)

26. बी.टी कपास बीज निर्माता मैक्यो के प्रतिनिधि



## वस्त्र उद्योग

27. अध्यक्ष, सदस्य  
फेडरेशन आफ इंडियन टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज  
(सीआईटीआई) 6 मंजिल, नरायण मंजिल,  
23, बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली-110001  
ई मेल [icmf@vsnl.com](mailto:icmf@vsnl.com)
28. अध्यक्ष, सदस्य  
ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ कोआपरेटिव स्पिनिंग  
मिल्स लि., स्पिनिंग मिल्स लि. कैनरा बिल्डिंग,  
2सरी मंजिल, डी एन रोड, मुंबई-400 001
29. श्री बी.के. पटोदिया, सदस्य  
उपाध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक,  
मै. जीटीएन टेक्सटाइल्स ल.  
228, नरीमन प्वाइंट,  
मुंबई- 400 021
- और  
संयुक्त अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय वस्त्र कपास समिति,  
मैन्यू. फेडरेशन,  
ज्यूरीच, स्विटजरलैंड
30. सचिव, सदस्य  
द साउदर्न इंडिया मिल्स एसोसिएशन,  
पो.बो. 3783,  
कोयम्बटूर-641018  
तमिलनाडु
31. अध्यक्ष, सदस्य  
कॉटन टेक्सटाइल एक्सपोर्ट प्रोमोशन काउंसिल,  
टेक्सप्रोसिल,  
5वां मंजिल, इंजीनियरिंग सेंटर,  
9 मैथ्यू रोड,  
मुंबई-400 004

## कपास व्यापार

- |     |  |       |
|-----|--|-------|
| 32. | अध्यक्ष,<br>नेफेड,<br>1, सिद्धार्थ इन्कलेव,<br>आश्रम चौक, रिंग रोड,<br>नई दिल्ली-110014  | सदस्य |
| 33. | प्रबंध निदेशक,<br>महाराष्ट्र स्टेट कोऑपरेटिव कॉटन ग्राउंस मार्केटिंग<br>फेडरेशन लि.,<br>खेतान भवन, जे. टाटा रोड,<br>चर्चगेट,<br>मुंबई-400020 | सदस्य |
| 34. | अध्यक्ष,<br>कॉटन एसोसिएशन आफ इंडिया,<br>2सरी मंजिल, कॉटन एक्सचेंज बिल्डिंग,<br>काटन ग्रीन, मुंबई-400033                                      | सदस्य |
| 35. | अध्यक्ष,<br>ऑल इंडिया कोऑपरेटिव कॉटन फेडरेशन लि.,<br>सिल्वर आर्क, ए ब्लॉक, टाउन हॉल के पीछे,<br>इलिसबृज, अहमदाबाद-380006                     | सदस्य |
| 36. | सचिव,<br>द साउथ इंडिया काटन एसोसिएशन (सीका),<br>पो बौ न.3310,<br>477, कमाराजार रोड,<br>उपलिपल्लयम पोस्ट,<br>कोयम्बटूर-641015                 | सदस्य |

37. अध्यक्ष, सदस्य  
फॉरवर्ड मार्केट कमीशन,  
एवरेस्ट, तीसरा तल, 100, मरीन ड्राइव,  
मुंबई-400 002

## जिनिंग एवं प्रेसिंग क्षेत्र

38. अध्यक्ष/सचिव, ऑल गुजरात कॉटन जिनिंग सदस्य  
एसोसिएशन,  
3, राजा शॉपिंग सेंटर,  
थोल रोड, काडी-382715  
जिला- मेहसाणा, नॉर्थ गुजरात

39. अध्यक्ष/प्रबंध निदेशक, सदस्य  
ऑल इंडिया सीड क्रसशे एसोसिएशन,  
(एआईसीएससीए), खेतान भवन, 6 मंजिल,  
198, जमशेद टाटा रोड,  
चर्चगेट,  
मुंबई-400020

40. श्री राकेश रथी, सदस्य  
अध्यक्ष,  
नादर्न इंडिया काटन एसोसिएशन लि.,  
नई बस्ती, गली नं. 6,  
भटिंडा-151001 (पंजाब)  
दूरभाष- 0164-2237945  
पैक्स नं.- 0164-22552688  
ई-मेल- [nica\\_bti@yahoo.co.in](mailto:nica_bti@yahoo.co.in)

41. अध्यक्ष, सदस्य  
तमिलनाडु काटन जिनिंग प्रसिंग ट्रेडर एवं ग्रोवर  
फेडरेशन, पोल्लाची-642004,  
जिला-कोयम्बटूर, तमिलनाडु

42. श्री गौतमभाई एस. साह, सदस्य  
उपाध्यक्ष, मै. अहमदाबाद कॉटन  
मर्चेन्ट एसोसिएशन,  
3सरी मंजिल, दाह्याभाई चैम्बर्स,  
मानेक चौक,  
अहमदाबाद-380001
43. श्री जी. पुन्नैह चौधरी, सदस्य  
अध्यक्ष,  
आंध्र प्रदेश स्टेट एसोसिएशन,  
लक्ष्मीपुरम- मैनरोड,  
गुंदूर -522 007 (आं.प्र.)  
दूरभाष- 0863-2351116, 2244271
44. श्री दिनकर आत्माराम सरसे, सदस्य  
कार्यकारी सदस्य,  
महाराष्ट्र काटन ब्रोकर्स एसोसिएशन,  
तात्याजी संकुल,  
रउत बाड़ी,  
अकोला- 444005 (महाराष्ट्र)  
दूरभाष- 0724-2400271, 72, 73  
मो.- 09422161900

#### कपास अनुसंधान एवं विकास

45. निदेशक, सदस्य  
केन्द्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान  
(सरकोट),  
अडेनवाला रोड, मद्रंगा,  
मुंबई

46. निदेशक, सदस्य  
अहमदाबाद वस्त्र उद्योग अनुसंधान संघ (अटिरा),  
पोस्ट ऑफिस- अम्बावाडी विस्तार,  
अहमदाबाद-380015द

47. श्री सुरेश कोटक, सदस्य  
अध्यक्ष,  
काटन एवं एलाइड प्रोडक्ट (कोटाप)  
पूर्वी इंडिया काटन अनुसंधान फाउंडेशन, मुंबई

और

सदस्य, आईसीएसी,  
निजी क्षेत्र सलाहकार पैनल, आईसीएसी,  
वाशिंगटन, यूएसए

48. प्रोफेसर डा. टी.वी. कारिवारादाराजु, सदस्य  
मुख्य सलाहकार, मै. साउदर्न इंडिया मिल्स  
एसोसिएशन-कपास विकास एवं अनुसंधान  
एसोसिएशन (एसआईएमए-सीडीआरए)  
41, शानमुखा मनराम,  
पो.बो. नं. 3871, रेस कोर्स,  
कोयम्बटूर-641018, तमिलनाडु

विद्युतकरघा क्षेत्र

49. अध्यक्ष, सदस्य  
विद्युतकरघा विकास व निर्यात संवर्द्धन परिषद,  
जीसी2 भूतल, गुनडेज,  
ऑनक्लेव, खेरनी रोड, साकिनाका,  
अंधेरी (ई), मुंबई  
मुंबई-400072

हथकरघा क्षेत्र

50. अध्यक्ष, सदस्य  
हथकरघा निर्यात संवर्धन परिषद (एचईपीसी),  
18 कैथेड्रल गार्डन रोड,  
पो.बो. नं. 461,  
चैन्ने-600034

अन्य नामित सदस्य

51. डा. पुरुषोत्तम भारती, सदस्य  
पाला हाउस, देवासवरम बॉर्ड,  
रजिडेंस एसोसिएशन आईए (डीबीआरए)  
नाथनकोड  
तिरुवनंतपुरम-695003-केरल राज्य
52. श्री चित्थाकुंटा श्रीनिवास रेड्डी, सदस्य  
एच नं. 2-5-89,  
सी.पी. थिम्मा रेड्डी स्ट्रीट,  
अल्लगड्डा, जिला- करनूल,  
आंध्र प्रदेश
53. श्री योगेश छाबरा,  
एच.पी-2, मौर्य इन्कलेव,  
पीतमपुरा,  
नई दिल्ली-110034
54. श्री हेमचन्द्र शंकरराव बोछारे, सदस्य  
कमलादिया राधाकृष्णा पोल,  
पैलेस रोड, बडौदा-390 001

सदस्य- सचिव

55. श्री बी.ए. पटेल, सदस्य-सचिव  
संयुक्त वस्त्र आयुक्त (कपास),  
वस्त्र आयुक्त का कार्यालय,  
मुंबई-400 020

2. बोर्ड सरकार को सामान्यतः कपास नियंत्रण आदेश, 1986 के अंतर्गत आने वाले मामलों सहित कपास के उत्पादन, खपत तथा विपणन से संबंधित मामलों पर सलाह देगा और साथ ही सूती वस्त्र मिल उद्योग, कपास उपजकर्ताओं, कपास व्यापार तथा सरकार के बीच संपर्क स्थापित करने के लिए एक मंच प्रदान करेगा ।
3. पुनर्गठित बोर्ड के सदस्य 24.06.2010 तक बोर्ड में कार्य करेंगे ।
4. गैर-सरकारी सदस्यों को बोर्ड की बैठक में भाग लेने के लिए वित्त मंत्रालय के अनुदेशों के अनुसार यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता दिया जाएगा ।
5. बोर्ड की बैठक में उपस्थिति केवल सदस्यों तक ही सीमित रहेगी ।

आदेश दिया जाता है कि इस अधिसूचना की एक-एक प्रति सभी संबंधित व्यक्तियों को भेजी जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

डॉ. जे. एन. सिंह, संयुक्त सचिव

संस्कृति मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 19 जून 2008

### संकल्प

सं. 32-1/2006-समन्वय-

श्री अभिजित सेनगुप्त, सचिव (संस्कृति) को दिनांक 27.12.2007 के संकल्प संख्या 32-1/2006-समन्वय के ज़रिए राष्ट्रीय संस्कृति नीति का मसौदा तैयार करने हेतु गठित समिति के सदस्य के रूप में सहयोजित किया गया है।

सभी शर्तें एवं निबंधन यथापूर्व रहेंगे।

राम चन्द्र मिश्र, संयुक्त सचिव

**PRESIDENT'S SECRETARIAT**

New Delhi, the 2nd July, 2008

No. 43—Pres/2008—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Andhra Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICER**

**Shri Manukonda Venkata Nageshwara Rao, (Posthumously)  
Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

There was information of movement of Maoists in the jungle surrounding pedda Ahobilam in Kurnool district which was received on 3<sup>rd</sup> August 2006. 5 Greyhounds units were pushed into service to comb the area, while 5 Dist. spl. Parties moved into the area as cut off parties. The Greyhounds unit to which Late Shri. M.V. Nageswararao belonged was dropped at "Jyothi Narsimaha Swamy Temple" under Kalasapadu P.S. limits at 2330 hrs on 3<sup>rd</sup> August 2006. The unit trekked the night of 3<sup>rd</sup> August and on the 4<sup>th</sup> August to reach the core area and combed part of it. They camped for the night at spot height 805. The unit proceeded in the early morning hours of 5<sup>th</sup> August 2006 to check the surrounding areas thoroughly. While climbing down the hillock they came face to face with Maoists in a Nala who opened fire on them. Immediately the unit divided itself into 3 parties and retaliated. Late Shri. M.V. Nageswararao was in the 1<sup>st</sup> Party. Shri M.V. Nageswararao and other senior JCs were trying to cover the right side of the contour so that the Maoists could not escape in that direction. The Maoists noticing police movement on the left side tried to escape from the right side. The 1<sup>st</sup> party of 11 members chased them undaunted by the fire from automatic rifles that the enemy opened on the police party on noticing them at close quarters. Shri M.V. Nageshwara Rao being nimble footed closed the distance between the Maoists and the police party and moved ahead of everyone firing from his SLR. He kept the enemy at bay firing with his SLR giving scope for the rest of the police party to catch up. He brought down one Maoists and injured two others. The deceased Maoists was later identified as Dist Committee Secretary Anantapur, Kranti @ Dam Sathi who was responsible for recruitment on a large scale and gory violence killing police man and innocent people branding them as police informers in Anantapur District. Having emptied his magazine he was reloading his weapon again when one of the two injured Maoists getting respite from his firing shot him down with a



fusillade of bullets from AK-47 at close quarters since the JC was not having any cover to protect him. This injured Maoist was found the next day badly injured in a bush nearby the next day and was shot down when he tried to resist the police party firing from the AK 47 with him. He was identified as Angi Gun man of Obulesh, State Committee Member. The other injured Maoist who escaped was Obulesh who died later in another exchange of fire in Nov, 2006. One AK-47, two .303 Rifles, One 8mm Rifle, One tapancha, ammunition, grenades, mines and other items like scanners were recovered in this operation. Shri M.V. Nageshwar Rao launched a dare devil assault on the Maoists who were armed with automatic and company made rifles and brought down a DCS, injured a State Committee Member and his gunman. Though the Maoists camp was nearby none could rush to the rescue of their colleagues in view of the bold assault launched by Late Shri. M.V. Nageswararao without giving time for them to recoup. However, he made the ultimate sacrifice while bringing down the Maoists and their morale while saving his own team mates. This is one of the rare displays of conspicuous bravery at grave risk to life in a very hostile and inhospitable jungle terrain in Nallamala which the Maoists have started considering as a safe heaven for them.

In this encounter Shri (Late) Manukonda Venkata Nageshwara Rao, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 5<sup>th</sup> August, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 44—Pres/2008- The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry/ Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Andhra Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- |    |   |               |
|----|---|---------------|
| 1. | <b>Tanga Ramakrishna,</b><br><b>Reserve Inspector</b> | <b>(PPMG)</b> |
| 2. | <b>Chappidi Ramudu,</b><br><b>Head Constable</b>      | <b>(PMG)</b>  |

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On reliable information that important cadres of Maoists were camping in Gopavaram extension Reserve Forest of Badvel, Kadapa district, 2 units of GHs were pressed into operation. They reached the dropping point at 0230 hrs on 10-11-06 and proceeded northwest towards the hillocks. The 1<sup>st</sup> Greyhounds unit was headed by Shri Tanga Ramakrishna, Reserve Inspector and Shri Ch. Ramudu, HC who were one of the team members. The two Greyhounds units moved in the night and checked some known shelter points without any result. They combed and searched throughout the night and by 0800hrs on 10-11-2006 reached one more shelter point where the 2 units split into 3 parties and searched the area. Later they regrouped on the highest contour in the area and expecting the Maoists party to be nearby left their kitbags with a small observation party of 5 members of the 2nd Greyhounds unit. The suspected area was to the south of the hill feature which was sloping steeply southwards. The area had two nalas on either side. On either side of the nalas there were steep rising slopes. The 1st Greyhounds unit split into 2 teams. The team lead by Shri Tanga Ramakrishna, Reserve Inspector who is assisted by Shri Ch. Ramudu, HC and 4 other was to go to the farthest and check the area to the southwest in the nala and to the south of the suspected area. The other team from the 1st Greyhounds unit led by AAC(RSI) Govind Rao was to check the north contour and proceed further. The 2nd Greyhounds unit left the observation team of 5 members on the top contour and the balance team lead by AAC (RSI) Raju proceeded down the nala on the east. After combing the area carefully for an hour a member from the team of AAC Govind Rao checking the highest contour on the North noticed a few Maoists packing up and leaving the area where they were halting. He immediately informed the same to his team leader who informed Shri Tanga Ramakrishna, Reserve Inspector who was covering the southwest and southern areas. All the 3 teams started converging on the Maoists halting place. Meanwhile the Maoists who packed up started

going uphill. They noticed the observation party on the top contour and started going south in a bid to avoid being noticed by the police. However, the team lead by Shri Tanga Ramakrishna, Reserve Inspector moved with stealth observing all tactical precaution and reached a position to cut off the retreat of the Maoists. The other two teams also moved down parallelly covering the flanks. When the Maoists who were 9 in number neared them the team of 6 led by Shri Tanga Ramakrishna, Reserve Inspector called out to the Maoists to surrender. The Maoists replied with a volley of fire from automatic rifles and other rifles. Shri Tanga Ramakrishna, Reserve Inspector and Shri Ch. Ramudu, HC moved ahead under cover of fire from their team and charged at the enemy. Unnerved by this daring assault which brought down 2 Maoists other took to heels to the east where they encountered fire from the team led by AAC Raju. Noticing large police presence on that side, the Maoists thought it safe to retreat through the south where the smaller police party led by Shri Tanga Ramakrishna, Reserve Inspector initially challenged them. Again Shri Tanga Ramakrishna, Reserve Inspector and Shri Ch. Ramudu, HC ably assisted by their team member prevented their escape. A fierce gun battle took place at very close quarters with the rival parties separated by not more than 20 feet of distance. This inspired and daring retaliation brought down six extremists. The remaining two extremists took position and continued firing with AK-47 and SLR at the police party in their bid to find an escape route and escape while causing maximum damage to the unyielding police party led by Shri Tanga Ramakrishna, Reserve Inspector. The police party of 6 members maintained their presence of mind and the pressure on the remaining Maoists. Ultimately the remaining 2 Maoists had to be brought down since they were continuing to fire on the police party without surrendering. In this exchange of fire all the nine members of the Maoists party including a State Committee Member, two dist. Committee Secretaries, One district Committee member, three dalam commanders and two dalam members perished leading to seizure of one AK-47, three SLRs, four .303 rifles, two carbines, two pistols, one SBBL gun, two Tapanchas (Country made revolvers) and two grenades from the scene. This exchange of fire and the subsequent surrender within 10 days thereafter led to total decimation of RSD i.e., Rayalaseema division of the Maoists. This is the first time that the entire region had been free from Maoists cadres. While both the Greyhounds units exhibited utmost professional skill in tactical movement in encircling the Maoists party without detection, the assault led by the team of six headed by Shri Tanga Ramakrishna, Reserve Inspector deserve mention. Among these also, the daring resolve exhibited by Shri Tanga Ramakrishna, Reserve Inspector in assessing the situation, planning the operation and leading

the attack unmindful of the imminent danger to his life and the able assistance given by Shri Ch. Ramudu, HC in the initial assault as also the sustained effort in maintaining the pressure at grave risk to his life, on the Maoists who were intent on inflicting causality in the police ranks and making good their escape, deserves recognition and merits reward.

In this encounter S/Shri Tanga Ramakrishna, Reserve Inspector and Chappidi Ramudu, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal/ Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10<sup>th</sup> November, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 45—Pres/2008- The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry/ Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

S/Shri

- |    |                                 |        |
|----|---------------------------------|--------|
| 1. | Shalley Singh,                  | (PPMG) |
|    | Deputy Superintendent of Police |        |
| 2. | Sunil Singh Jasrotia,           | (PMG)  |
|    | Inspector                       |        |

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

Information regarding presence of terrorist in village Safiyan, Billawar area, in district Kathua was received by Jammu Police on 27.2.2007. Immediately, an operation was planned and a police party headed by Dy. SP Shalley Singh, SOG Jammu deputed for search operation. Braving incessant rains and treacherous mountains track, the police party reached Safiyan and located the house, where terrorists were suspected to be hiding. Sensing the movement of Police party, the terrorists fled away from the house and while fleeing they lobbed a grenade towards Police party, which missed the target. The Police party chased the terrorists and Dy SP Shalley Singh was able to pounce upon the terrorist, who had lobbed the grenade and after a scuffle

managed to overpower him. On his interrogation, he was identified as Naseer Ahmed @ Bittu @ Raju r/o Sarna Bhaderwah. He disclosed that the other terrorist Abu Tallah, the Divisional Commander of Lashker Toiba, had fled towards Forest area. After knowing that the terrorist who fled away, is Abu Tallah, the most dreaded terrorist involved in number of massacres of minority community, Dy. SP Shalley Singh without wasting any time and any fear of dangerous terrain, dark night, dense forest and heavy rains, re-organized his party of eight men and started the search operation in the dense forest. After a continuous search for about three hours, Police Party came under heavy fire from the forest in Jhangera area. The terrorist also lobbed three hand grenades on the Police party in which one Constable Anil Kumar 373/JKAP 7<sup>th</sup> Bn. received splinters in his right arm and he fell down. Insp. Sunil Jasrotia, without caring for his life crawled under the volley of bullets and rescued Constable Anil Kumar to a safer place and then again joined Dy. SP Shalley Singh who too had received splinter injuries in left leg in the ensuing battle. The brave Officers without loosing nerves took to the ground and started crawling towards the target, encouraging the other Police personnel to move ahead with them to take on the terrorist from different directions. The terrorist was hiding at a dominating position. Insp. Sunil Jasrotia engaged the terrorist in the gun battle whereas Dy. SP Shalley Singh crawled through dense forest and moved to the target and carried out a final assault on the Lashkar Commander putting his life at risk. One AK-56 Rifle, two Magazines, 28 rounds, one cell Phone and other documents were recovered from the spot. The dead body was identified to be that of Ahu Tallah who was carrying a cash reward of Rs. 2.50 lakh on his head, as he was instrumental in carrying out many massacres of civilians in District Doda and Kathua. After tracking down for six hours, the dead body of slain terrorist, captured terrorist and the recoveries made from the spot were handed over to Police Station Billawar for the legal formalities. Case FIR No. 23/07 was registered at P/S Billawar. Shri Shalley Singh, Dy. SP and Inspector Sunil Jasrotia No. 5881/NGO have demonstrated exemplary courage and bravery of highest order in the face of imminent danger and led the operation from the front at the risk of their lives.

In this encounter S/Shri Shalley Singh, Deputy Superintendent of Police and Sunil Singh Jasrotia, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal/ Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28<sup>th</sup> February, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 46—Pres/2008- The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry/ Police Medal for Gallantry/ 1<sup>st</sup> Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- |    |  |                                    |
|----|--|------------------------------------|
| 1. | <b>Abdul Ghani Mir,</b>                | <b>(PMG)</b>                       |
|    | <b>Senior Superintendent of Police</b> |                                    |
| 2. | <b>Harmeet Singh,</b>                  | <b>(1<sup>st</sup> Bar to PMG)</b> |
|    | <b>Deputy Superintendent of Police</b> |                                    |
| 3. | <b>Farooq Ahmad,</b>                   | <b>(PPMG)</b>                      |
|    | <b>Sergeant Constable</b>              |                                    |
| 4. | <b>Mohammad Iqbal,</b>                 | <b>(PPMG)</b>                      |
|    | <b>Constable</b>                       |                                    |

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On a specific information regarding presence of terrorists in the house of Mohd. Yousuf Itoo S/o Wali Mohd Itoo at Shirpora Frisel, SOG Anantnag, 1<sup>st</sup> RR, 93 Bn CRPF, laid a cordon around the said house, during intervening night of 6/7-08-2006. The terrorist hiding in the house opened indiscriminate firing in which one jawan LNK Raj Kanwal Singh (no. 45691404) of 1<sup>st</sup> RR died on spot and another sustained serious injuries on right arm. The terrorists had taken three civilians namely Farooq Ahmad Ganie S/o Ab. Rehman; Manzoor Ahmad Tantray S/o Ali Mohd and Abid Hussain Mir S/o Ab. Aziz residents of Shirpora as hostages. It became very difficult to get these hostages out from the house. The terrorists started heavy firing and forces could not retaliate because it could have resulted in civilian casualties. The top priority was given to the safe evacuation of the civilians. Shri Abdul Ghani Mir, SSP Anantnag, and Shri Harmeet Singh, Dy.SP(Ops), Anantnag and Dy.SP (Ops), Kulgam in consultation with other forces devised a plan to evacuate the civilians. Shri Abdul Ghani Mir, SSP along with Shri Harmeet Singh, Dy.SP, Anantnag went very close to the building in Rukshak to persuade the terrorists to release the civilians. At the same time, they were able to encourage the civilians to come out of the building. The terrorist were asked to release the hostages but they did not. Shri Abdul Ghani Mir, SSP and Shri Harmeet Singh, Dy.SP alongwith two constables namely Shri Farooq Ahmad, Sg Ct and Shri Iqbal, Constable put themselves in great risk and went very close to the house from the back side. Two constables namely Shri Farooq Ahmad, Sg. Ct and Shri Iqbal, Constable were very close to the building without caring for their lives and finally

succeeded in evacuation of all the three civilians. The first civilian named as Farooq Ahmad Ganie S/o Ab. Rehman R/o Shirpora was rescued under heavy exchange of fire. Shri Abdul Ghani Mir, SSP and Shri Harmeet Singh, Dy.SP went very close to the building, crawled upto the building and rescued other two civilians amidst heavy firing. The Police party headed by SSP Anantnag restrained other forces from any firing, which could have put lives of three civilians in danger. After the civilians were rescued, Shri Farooq Ahmad, Sg. Ct and Shri Mohd Iqbal, Constable under guidance of officers made effective firing from the back side of the building which resulted in elimination of two terrorists who were identified as (i) Mudasir Ahmad Dar @ Setha @ Muna Dar S/o Wali Dar R/o Tekki Ribon and (ii) Feroze Ahmad Bhat @ Zubair S/o Gh. Hasan Bhat R/o Frisal.

The following recoveries were made at the site of the gallant action : - (i) AK -rifle -1 (ii) Insas Rifle - 1 (iii) A.K. Mag - 2 (iv) Insas Mag - 1 (v) Insas Amn - 11 rounds (vi) UBGL - 1 (vii) Pouch - 2.

In this encounter S/Shri Abdul Ghani Mir, Senior Superintendent of Police, Harmeet Singh, Deputy Superintendent of Police, Farooq Ahmad, Sergeant Constable and Mohammad Iqbal, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal/ Police Medal/ 1<sup>st</sup> Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 7<sup>th</sup> August, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 47—Pres/2008- The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry/ Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Border Security Force: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

S/Shri

- |    |                           |               |
|----|---------------------------|---------------|
| 1. | <b>Raghuraj Singh,</b>    | <b>(PMG)</b>  |
|    | <b>Inspector</b>          |               |
| 2. | <b>Mohd Aslam Chichi,</b> | <b>(PPMG)</b> |
|    | <b>Head Constable</b>     |               |
| 3. | <b>D.D.Boro,</b>          | <b>(PPMG)</b> |
|    | <b>Constable</b>          |               |
| 4. | <b>Surjeet Singh,</b>     | <b>(PMG)</b>  |
|    | <b>Constable</b>          |               |

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 21<sup>st</sup> July'06, based on specific information, an ambush was laid by DC(G) Rawalpura along with troops of 43 Bn BSF, Harwan (Srinagar) J&K. One team consisting of Inspr (G) Raghuraj Singh, Const D D Boro, Const Surjeet Singh and Const Mahesh Singh were placed inside the Horticulture garden covering the entrance gate and another team consisting of Sh Manoj Kumar DC(G) Rawalpura, Const Malkit Singh, HC Singara Singh and HC Mohd Aslam Chichi took position along the kachha track leading towards thick forest through the garden. Besides, two more stop parties were also placed on the ambush site for covering escape routes. First stop party consisting of Sh S L Sharma AC with 09 ORs were placed at a distance of 200 yards from ambush site towards Harwan village and second stop consisting of Inspr(G) Jitender Singh with 12 ORs were placed approximately 250 yards from the junction towards Dachigaon. At about 212245 hrs, two suspected militants entered into the garden and on seeing them, Inspr (G) Raghuraj Singh challenged the militants to stop. One militant immediately took out his pistol and fired towards Inspr (G) Raghuraj Singh, but he had a narrow escape. Simultaneously, in a quick reflex action, Const D D Boro and Const Surjeet Singh along with Inspr(G) with utter disregard to their safety over powered the militant. In the mean time, in order rescue his comrade from the clutches of brave BSF men, the second militant lobbed a grenade on the party due to which Const D D Boro and Const Surjeet Singh got splinter injuries on their thigh and hand respectively. The militant got released due to injury of the two constables and tried to escape by running, but, Const D D Boro by displaying exemplary courage, professionalism and without caring of his injury, chased the militant and over powered him. Seeing brave attempt of Const D D Boro, the second



militant lobbed another grenade on Const D D Boro and Const Surjeet Singh who were scuffling with the militant due to which Constable D D Boro again sustained multiple splinter injuries. Even after getting multiple splinter injuries, Const D D Boro by exhibiting high degree of professionalism and courage fired from his personal weapon with his injured hand and critically injured the militant. At the same time, Inspr(G) Raghuraj Singh and Constable Surjeet Singh without wasting time also fired on the militant and injured him seriously. At the same time, another ambush party under command of Sh Manoj Kumar DC(G) located the second militant who was lobbing the grenade and challenged him to surrender. But instead of surrender, he lobbed another grenade on them, due to which Head Constable Mohd Aslam Chichi got splinter injuries. On this, Const Malkit Singh stood up and fired upon the militant and injured him. But despite injury, militant again lobbed a grenade on the party. However, it missed the target and HC Mohd Aslam Chichi despite serious splinter injuries overpowered the militant and unarmed him. Immediately, Shri Manoj Kumar DC(G) and Ct Malkit Singh took the custody of militant. Both the injured militants were evacuated to SMHS Hospital, Srinagar by J&K Police of PS-Harwan and injured BSF personnel were taken to BSF Composite Hospital Srinagar for treatment. While evacuating the militants to the hospital by Police, one militant succumbed to his injuries enroute and the second militant was admitted in Bone and Joint Hospital, Barzulla. On search of the area following arms/amm were recovered:-

i)	Chinese Pistol	-	01 No.
ii)	Pistol Mag	-	01 No.
iii)	Pistol Amn	-	02 Rds
iv)	Live H/Grenade	-	02 Nos

Later on the slain militant was identified as Mohd Ashraf Dar @ Setha @ Arsalan S/O Ali Mohd Dar R/O Lithar, Distt- Pulwama and the injured and apprehended militant was identified as Gulam Hassan Dar @ Sajjad @ Furkan S/O Mohd Ismail Dar R/O Ishbar, Nishat, Srinagar.

In this encounter S/Shri Raghuraj Singh, Inspector, Mohd. Aslam Chichi, Head Constable, D.D. Boro, Constable and Surjeet Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal/ Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21<sup>st</sup> July, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 48—Pres/2008- The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Border Security Force: -

**NAME & RANK OF THE OFFICER**

**Shri Deen Bandhu Pal,  
Constable**

**(Posthumously)**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 6<sup>th</sup> June 2007, at about 0620 hrs, a patrol under Command of Inspector G B Sahoo along with 10 ORs of 'D' Coy, ex-194 Bn BSF left BOP Sikander for area domination. Constable Deen Bandhu Pal was the leading scout of the patrol. He was very alert and vigilant moving tactically being scout. At about 0635 hrs, while crossing the hill on the track leading to village Ratan Nagar, PS Gandachera, District-Dhalai, Tripura, approx 900 yards away from the BOP Sikander, Constable Deen Bandhu Pal, observed some unusual movement in the thick undergrowth of the forest close to the track and immediately alerted his patrol Commander by shouting. The patrol Commander immediately stopped the movement of patrol and all the members of the patrol party were ordered to take position. Constable Deen Bandhu Pal simultaneously cocked his rifle and challenged towards the spot where he had observed the suspected movement in the undergrowth. On finding the scout of the patrol party in their close vicinity and ready to fire on them, a group of militant's who had laid an elaborate ambush on the track, fired on Constable Deen Bandhu Pal indiscriminately from less than 5 mts, hitting him on both the shins. Without caring for his bullet injuries, Constable Deen Bandhu Pal instantaneously fired towards the suspected direction of the militants, which resulted into casualty to few militants. On being hit by the second volley of militant's fire, Const Deen Bandhu Pal fell down on the ground but continued to engage the militants by sustained firing. Due to sudden exchange of fire and being badly injured, he could not take any cover and was exposed to the militants fire. Another burst of militants fire pierced through his chest and he fell down on the ground and his INSAS rifle was released from his hand which rolled down the hill by about two meters. The leading elements of the patrol party, on being alerted by Const Deen Bandhu Pal, took defensive position and fired towards the general direction of the ambush site leading to a heavy exchange of fire between patrol party and militants. The patrol party had also got covering fire from the adjoining BSF BOPs. The militants finding them

engaged with effective fire of the patrol party and covering fire from the adjoining BSF posts, hastily withdrew from the site of ambush. Due to quick reflex action, presence of mind, and professional acumen Constable Deen Bandhu Pal could thwart the nefarious design of militants to cause maximum casualties to BSF patrol party. He being a scout of the patrol party acted very promptly and gallantly and stood as iron barrier to save his comrade from the burst of militant's fire and fought valiantly till last breath which forced the militants to decamp their ambush position. However, in the ensuing operation Constable Deen Bandhu Pal made the supreme sacrifice for the nation. The following arms/ammunition were recovered during the operation:-

(i)	China made Auto fall mag.-	01 No
(ii)	EFC 7.62mm	- 41 Nos
(iii)	7.62mm live rounds	- 22 Nos.
(iv)	EFC AK 47	- 29 Nos.
(v)	AK 47 live rounds	- 01 No
(vi)	Grenade Pin	- 01 No

In this encounter Shri (Late) Deen Bandhu Pal, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 6<sup>th</sup> June, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 49–Pres/2008- The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry/ Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Industrial Security Force: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- |    |                          |                              |
|----|--------------------------|------------------------------|
| 1. | <b>Kaptan Boipai,</b>    | <b>(PPMG) (Posthumously)</b> |
|    | <b>Sub Inspector</b>     |                              |
| 2. | <b>Hoshiyar Singh,</b>   | <b>(PPMG) (Posthumously)</b> |
|    | <b>Constable</b>         |                              |
| 3. | <b>Dalip Singh,</b>      | <b>(PMG)</b>                 |
|    | <b>Constable</b>         |                              |
| 4. | <b>Bhagwati Singh,</b>   | <b>(PMG)</b>                 |
|    | <b>Constable</b>         |                              |
| 5. | <b>R.B.Singh,</b>        | <b>(PMG)</b>                 |
|    | <b>Deputy Commandant</b> |                              |
| 6. | <b>Md. Irfan,</b>        | <b>(PMG)</b>                 |
|    | <b>Inspector</b>         |                              |

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On the night of 06.04.2007 at about 1945 hrs, upon a sudden barrage of automatic and semi automatic fire along with explosives caused by petrol bombs and hand grenades thrown from the back side of wall of Khasmahal camp, CISF Jawans immediately took up their positions. The two-armed jawans on sentry duty, namely Constable Hoshiyar Singh at the main gate Morcha and Constable Dalip Singh on the rear left corner Morcha, instantaneously opened fire. Constable Bhagwati Singh at once informed the main control room of CISF at DIG office, Kargali through wireless set. SI/Executive Kaptan Boipai, realizing that the small wicket gate in the main gate was open, ran to close it braving bullets and bombs. It was on his way to the main gate Morcha after closing the main gate that he was hit by grenade and petrol bomb and gravely injured. Constable Hoshiyar Singh held the enemy fire by his spirited attack firing from his SLR in all directions keeping the attackers at bay. An hour and half after the attack began, Constable Hoshiyar Singh was hit by bullet in his head and died. Meanwhile, the extremists blew up the rear sidewalls of Coy, Office, SOs room and kitchen and the front wall of the barrack. Constable Dalip Singh immediately ran & took up position at the main gate Morcha and resumed fire. It was almost 2215 hrs, when his ammunition was exhausted; he was hit by a petrol bomb and became unconscious. For almost three hours, these brave jawans held at bay a 400 strong group of left-

wing extremists with just four SLRs. ASI/Exe MM Ali and Constable Bhagawati Singh broke open the door of the makeshift kote and took out two SLRs and ammunition and occupied one more Morcha at left corner of the camp. Some jawans led by SI/Exe Kaptan Boipai and HC S P Bharti started loading rounds in magazines and passing them to the jawans who were firing from various Morchas. Some Jawans immediately switched off the lights in the barracks. The left wing extremists who had taken positions all around the camp, now closed in towards the back wall and were firing indiscriminately using automatic/semi automatic, 303 bolt action rifles along with heavy use of petrol bombs, hand grenades, cane bombs and acid bombs. Constable Bhagwati Singh and HC S P Bharti kept on firing till they exhausted all their bullets. The Left wing extremists using mega phones kept on making announcements asking the force personnel to surrender and hand over their weapons. Although they were clearly outnumbered, the above CISF Jawans refused to give in and kept up the defence.

After about 2 ½ hours of this battle, while constable Hoshiyar Singh had lost his life in fighting. Constable Bhagwati Singh and HC S P Bharti had exhausted their ammunitions, extremists made an announcement through mega phone that they had surrounded the camp and had laid land-mines all around and if the force in the camp did not surrender in three minutes they would blow up the camp and kill all those in the camp. Constable Dalip Singh who regained consciousness realizing that the extremists would now enter the camp, showed commendable presence of mind by coming down the Morcha and hiding his rifle in the toilet located below the Morcha. The extremists firing stopped at around 2230 hrs. Thereafter they entered the camp. They were not able to believe that a small force with just four SLR's could hold 400 strong attackers for almost three hours. In the process of enquiry about weapons they also thrashed and assaulted many jawans, two of whom Constable R N Giri and Constable Jagjit Singh were hit by petrol bomb and received burn injuries. Another constable R D Oran was injured by a bullet, which hit his thigh during the firing. Later, on apprehension that rescue teams were on their way the left wing extremists retreated taking away 04 SLRs, one Motorola walkie-talkie set, 19 SLR Magazines from the camp.

On getting information of the attack at about 1950 hrs, Dy. Commandant Shri R B Singh, being the senior most officer in the unit, immediately rushed to nearby "D" Coy Line where he instructed Inspector Md Irfan to carry all available armed man-power. With 04 SLRs, one carbine and one pistol under the command, Shri R B Singh, Dy. Commandant immediately rushed towards the Khasmahal camp. On the way he was informed of an ambush on the road

ahead of the petrol pump at Kurpania where the STF of State police, CRPF and CISF QRT had been held up. He changed the track and came to Jarandih Railway Level crossing where he left the vehicle and started proceeding on foot along the Railway line. Having run in criss cross manner, he reached the Khasmahal open cast. All through the track he moved tactically escaping the ambush laid by the Left wing extremists. On reaching the open cast, he came under sudden fire to which he retaliated immediately moving surreptitiously through the coal dump, following the principles of camouflage and concealment, and could reach with in 200 meters of the "E" Coy line. Leading from the front, Shri R B Singh, Dy. Commandant acted swiftly with precision in the pitch darkness facing bullets, displaying extraordinary courage and valour in performance of duty. Around 2245 hrs, he could establish contact with the Coy Line where he reached with his team at Khasmahal camp. In utter darkness when all roads and tracks leading to the camp were mined by the Left Wing extremists, he immediately took charge of the situation and guided the nearby supporting units and made arrangements for shifting the martyrs and the injured to the hospital. He also launched an immediate search in the nearby vicinity to check for any hidden extremists or booby traps, which they might have left while retreating in a haste sensing the arrival of reinforcement.

In this encounter S/Shri (Late) Kaptan Boipai, Sub Inspector, (Late) Hoshiyar Singh, Constable, Dalip Singh, Constable, Bhagwati Singh, Constable, R.B.Singh, Deputy Commandant and Md. Irfan, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal/ Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 6<sup>th</sup> April, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 50—Pres/2008- The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry/ Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

1. **Jagdish Patel,** (PPMG)  
**Constable**
2. **Ramashish Tiwari,** (PMG)  
**Sub Inspector**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 03/07/06, specific intelligence input about presence of militants in Wangund village area in Telbal, under Police Station Harwan, was received by Commandant 112 Bn. from IGP, Srinagar, who further briefed SI/GD Ramashish Tiwari of 112 Bn, CRPF to launch operation alongwith SOG, Civil Police and QRT of 112 Bn including his own platoon. Thereafter, immediately SI/GD Ramashish Tiwari of 112 Bn, CRPF briefed the troops, and launched joint cordon and search operation with SOG and Civil Police at Wangund village area in Telbal under Police Station Harwan. During search operation at the house of Gulam Mohd Bhatt S/o Ali Mohd Bhatt, search party consisting of SOG and SI/GD Ramashish Tiwari of 112 Bn, CRPF came to know that there were two militants hiding in the house. As SI Gulam Mustafa of SOG went to alert and strengthened the cordon, SI/GD Ramashish Tiwari of 112 Bn, CRPF and Constable Mustaq Ahmad of SOG jumped over the inner wall of the boundary and reached the lawn of the house. At the same time, two militants came out of the side window of the house, and ran towards the outer boundary of the house, and were firing on either side while running. SI/GD Ramashish Tiwari of 112 Bn, CRPF immediately opened fire, and managed to injure the second militant. The militant tried to climb the high boundary wall of about 6'6" by a wooden ladder, which had been kept there earlier, probably for quick get away. The first militant after jumping from the wall, fired a burst towards the cordon party and then turned right and began running towards dry nullah and thick forest, firing continuously. No 035220985 CT/GD Jagdish Patel of 112 Bn, CRPF was cordoning from that direction and he fired immediately on the militant who was firing continuously. In the ensuing cross fire, CT/GD Jagdish Patel of 112 Bn, CRPF was hit on right shoulder and left middle finger, but he kept on firing, without caring for his own life, and gunned down the militant. The second militant also jumped from the wall a little later, and the cordon party

consisting of HC/GD Rajpal Singh, CT/Bug Jai Bhagwan and CT/GD Arjun Singh shot down the second militant. During the entire operation, No. 035220985 CT/GD Jagdish Patel of 112 Bn, CRPF exhibited exemplary courage, extraordinary bravery, valour, utmost devotion to duty and neutralised one of the militants without causing any collateral damage. No.730310135 SI/GD Ramashish Tiwari of 112 Bn, CRPF had exhibited extraordinary courage and conspicuous leadership in commanding troops with valour and bravery by jumping the wall and entering the inner courtyard of the house, and injuring one of the militants by firing. The act on the part of SI/GD Ramashish Tiwari during the encounter is considered to be important as his actions during the encounter contributed to the elimination of the militants without causing any damage to our men. His valiant action during the encounter has definitely set an example for his juniors in the Force.

In this encounter S/Shri Jagdish Patel, Constable and Ramashish Tiwari, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal/ Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 3<sup>rd</sup> July, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 51—Pres/2008- The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry/ Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/SHRI**

- |    |  |        |
|----|--|--------|
| 1. | Ras Bihari Singh,<br>Second-in-Command | (PMG)  |
| 2. | Gopal Prasad Singh,<br>Inspector       | (PPMG) |
| 3. | Gurudev Hugger,<br>Constable           | (PMG)  |
| 4. | Sunil Kumar Singh,<br>Constable        | (PMG)  |



**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On getting specific information on 30/06/2006, a joint Cordon and search operation was launched in Village Mirhama under Police Station & District Kulgam, South Kashmir valley by a platoon of E Company of 5 Bn. CRPF with the troops of 161 & 162 Bns. CRPF, along with SOG Kulgam and 9 RR, to nab the terrorists hiding in a house in Village Mirhama, Kulgam. Since Mirhama is a big village, with 350 houses, a large number of troops, of various units/forces, were deployed for cordoning the village, and additionally smaller teams were formed to carry out house-to-house searches. The Search party led by Insp/GD Gopal Prasad Singh, with the active assistance of Ct/GD Gurudev Hugger and Ct/GD Sunil Kumar Singh of 5 Bn, CRPF, under the supervision of Shri Ras Bihari Singh, 2I/C of 161 Bn, CRPF tactfully rescued the inmates of the said house and its adjoining buildings, and effectively retaliated the heavy indiscriminate fire and hurling of grenades emanating from the militants from close range. The role of RR, SOG and CRPF was common/collective i.e. to lay cordon in their respective areas of responsibility, and to carry out searches of houses, by forming a few teams of each force. As the militants were hiding, identity of the target house was not known; and once the contact was established with the terrorists the above search party of CRPF exhibited gallant action. Incidentally, the above mentioned search party came under a volley of bullets from close quarter, and there was imminent threat to their lives. Despite conspicuous danger to their own lives, Shri Ras Bihari Singh, 2I/C, Insp/GD Gopal Prasad Singh, Ct/GD Gurudev Hugger and Ct/GD Sunil Kumar Singh engaged the terrorists in ferocious gun battle. The courage shown by these CRPF personnel by going very close to the building even when Inspector Gopal Prasad Singh sustained a bullet injury on his left leg is exemplary. They did not lose their nerve, kept the troops motivated and finally succeeded in eliminating all the three terrorists of LET among whom one Abu Quasib @ Gori was holding the rank of District Commander of LET ( Lashkar E Toiba ) and operating in District Kulgam.

The slain terrorists were later identified as: -

- i) Abu Quasib @ Gori, District Commander of LET, R/o Pakistan.
- ii) Muneer Ahmed Ganie, S/o Atta Mohd., R/o Marwah, Dachan.
- iii) Fayeze Ahmed Rather, S/o Gh. Mohd., R/o Harshiwah, Sopore.

In this encounter S/Shri Ras Bihari Singh, Second-in-Command, Gopal Prasad Singh, Inspector, Gurudev Hugger, Constable and Sunil Kumar Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules

governing the award of President's Police Medal/ Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30<sup>th</sup> June, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 52-Pres/2008- The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry/ Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- |    |                     |               |                       |
|----|---------------------|---------------|-----------------------|
| 1. | <b>Binod Rai,</b>   | <b>(PPMG)</b> | <b>(Posthumously)</b> |
|    | <b>Constable</b>    |               |                       |
| 2. | <b>Dhyan Singh,</b> | <b>(PMG)</b>  |                       |
|    | <b>Constable</b>    |               |                       |
| 3. | <b>Kuhal Roy,</b>   | <b>(PMG)</b>  |                       |
|    | <b>Constable</b>    |               |                       |

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 15/12/06 at about 1805 hours, Shri R.K.Mondal , A/C of C/171 Bn received a telephone call from Shri Rajesh Kumar Singh, Superintendent of Police , Bankura who informed him that a squad of CPI (Maoist) activists armed with deadly weapons intruded into the village Bagdubi under P.S. Barikul, District- Bankura (West-Bengal) and started searching some CPI(M) members at the village with ulterior motive of killing them. The Superintendent of Police, Bankura directed Shri R.K.Mondal, Asstt. Commandant, C/171 BN to launch an operation immediately . On that day i.e on 15/12/06, Shri Prasanta Kr Dey Dy.SP(Admn) of P.S. Barikul, SI Sk.Anamul Haque and ASI Sanjay Chattaraj of Bakura Police were present in C/171 Camp at Sarengsokra. Accordingly as per the orders of S.P., Bankura, one platoon of C/171 Bn left for village Bagdubi, duly equipped, on foot along with above Civil Police personnel. When the platoon reached near the Primary School of that particular village, the platoon observed that the Naxalites were addressing a meeting there. When the platoon started approaching and intercepting the meeting venue tactfully in a single line formation due to hostile land condition of the terrain area, they were suddenly came under a volley of fire from the Naxals from a distance of hardly 20-25 meters. The fire was immediately retaliated by our troops. No. 041710063 (Late) Ct/GD Binod Rai who was heading the column of the Force as scout had spotted two Naxals who were firing on the Police Force from the front and therefore, he immediately retaliated by opening fire on them. It was

his operational acumen and accuracy that he did not miss the target and succeeded in killing both of the Naxals on the spot. He fired four rounds from his Govt. arms and silenced the attackers with unmistakable accuracy thereby saved the lives of other police personnel and also the villagers present at the meeting. But in that process, he also received bullet injury on his head and sacrificed his lives for the cause of the nation. The indomitable courage and valorous act demonstrated by Late CT/Gd Binod Rai, during the encounter with Armed Naxalites was highly exceptional, encouraging and imitable for all times to come. No.041715003 Ct/GD Dhyan Singh and No.041715182 Ct/GD Kuhal Roy who were following No. 041710063 Ct/GD Binod Rai, saw him ( Ct/GD Binod Rai) falling down due to bullet injury. They immediately moved towards No. 041710063 Ct/GD Binod Rai for his rescue and also fired upon by the Naxals and both of them received bullet injury in their person. Even after sustaining serious gun shot wounds they displayed unprecedented courage and risking their own lives they took position and engaged the Naxalites with retaliatory fire effectively. Due to their valiant act, the Naxals who were firing heavily on CRPF party uprooted from the hidden place and forced to retreat. Thus, both the above personnel i.e. Ct(GD) Kuhal Roy and CT(GD) Dhyan Singh saved any further loss of human lives. The restraint, dedication to duty, accuracy and loyalty displayed by these two CRPF personnel were of the highest degree, which ensured a zero risk to innocent villagers who were present at the spot. The following arms/ammunition were recovered during the operation:-

- (i) One 303 bore Rifle bearing arsepal No. AP-7683 & Butt No. 105
- (ii) One 303 bore Rifle bearing arsenal No. RFI-1952 & Butt No. 444
- (iii) One old Nylon bag containing 100 mtrs. long electrical wire, 5 detonators, one flash gun, 3 old rags, 3 old black polythene, ground sheet, one old mat made of dead leaf and three Maoist leaflets.
- (iv) One old Olive green colour cloth container containing six 303 chargers holding 30 rounds 303 live bullets and another charger holding one round 303 live bullet.

In this encounter S/Shri (Late) Binod Rai, Constable, Dhyan Singh, Constable and Kuhal Roy, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal/ Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15<sup>th</sup> December, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 53–Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Andhra Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- 1. Vavilapa Narayana Rao,  
Reserve Inspector**
- 2. Pantrangam Kataiah,  
Head Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On reliable information on 31-03-2006 that some Maoists cadres were camping in the forest area on the borders of Khammam and Danthewada, the Greyhounds Assault Unit led by Shri V Narayana Rao were dropped on the Perur venkatapuram Road at about 0200 hrs. The Unit proceeded in the North-East direction into the hilly tough area. The unit moved in the night and the morning of 01-04-2006 for 12 KM as the crow flies in the hilly terrain to reach the core area. The unit combed part of the core area on 01-04-2006 and halted near Muknur village outskirts since there was no water source in the area except one nala that was available to the villagers. Shri V Narayana Rao ensured that his unit was not exposed to either villagers or enemy during the water drill and moved 1 KM back from the water point as a deceptive step and kept party hidden in the jungle on the night of 01-04-2006.

On 02-04-2006 at about 0500 hrs S/Shri V Narayana Rao and P. Kataiah and their team climbed the hillock which is  $\frac{1}{2}$  KM south of the village. The hillock has very steep gradient on its North facing the village and has easy slope as its east. Shri V Narayana Rao divided the Unit personnel into two parties and they moved from east to west. Shri P Kataiah noticed the presence of the enemy. He immediately signaled the enemy presence to the party coming behind him. Shri V Narayana Rao immediately split the two parties into three and sent one party back the way they came on to the track between the hillock and the village to act as the cut off party. He led the assault party while another party covered on the South / South east to cut off exit in that direction. Shri V Narayana Rao and P. Kataiah team managed to reach up to a distance of 35 meters from enemy. Meanwhile a dog which was with a villager who was in the camp with the Maoists started barking. The enemy got alerted noticed S/Shri V Narayana Rao and P Kataiah party and indiscriminately opened fire with their weapons. Shri V Narayana Rao and P Kataiah and all the members of the team with Shri P Kataiah in the lead taking a great risk in the face of bullets fired at

them though they were without any cover or protection. In the process, one lady dalam member died on the spot and others kept on firing at the police party while retreating. Shri V Narayana Rao and P Kataiah chased them with their party immediately. Meanwhile, 4 Maoists jumped into the valley like steep slope undaunted Shri V Narayana Rao and P Kataiah jumped into the valley though the enemy has already the advantage of taking position there. The Maoists who took cover in a cave like recess rained bullets on the Police party as soon as they jumped in to the steep valley. Shri V Narayana Rao and P Kataiah advanced forward in the bushes and rocks unmindful of grave risk to their life and opened fire on the Maoists bringing down 3 of them including the Cherla Guerilla squad Action Commander and Dy. Dalam Commander of the Dantewada Guerilla squad. Shri P Kataiah displayed conspicuous bravery in this dare devil assault.

The fourth Maoist, a lady Dalam member tried to escape towards the nearby village, Shri V Narayana Rao alerted the Cut-off party on the track to the village. They immediately tracked her and in the ensuing exchange of fire she also died. She was later identified a dalam member. Two .303 rifles, with 53 rounds, 2 SBBL guns, 18 rounds, 7 kit bags and other camping items such as food and medicine were recovered. The civilian and 2 Maoists escaped since dog with the civilian alerted them to Police presence. Had Shri V Narayana Rao and P Kataiah not displayed the rare courage in crawling closed to the Maoist camp in chasing the Maoist jumping into the steep valley behind them and had they not persisted in their pursuit of the Maoists braving their bullets and had not Shri V Narayana Rao alerted the cut off party to stop the firing Maoist, these 4 Maoist also would have escaped since they were also alerted by the dog.

Shri V Narayana Rao, Dy. Assault Commander (R.I) provided excellent leadership in assessing the situation, forming teams into various groups initially and again dividing the 2 teams into 3 teams including cut-off party by closing the escape routes for the enemy. Shri P Kataiah displayed casemate skill in identifying the Maoist camp and silently alerting the rest, in advancing close to the Maoist camp though there were no cover, and unmatched courage in chasing the Maoists alone with Shri V Narayana Rao in the steep valley jumping in to the same unmindful of their risk and bringing down 4 Maoists. Shri V Narayana Rao have exhibited good coordination, team spirit, unwavering determination, good leadership, and enviable courage in this exchange of fire. The incident resulted in death of (5) Extremist i.e (3) of the Khammam Dist (AP) and (2) of Dantewada District of Chattisgarh State. This action of Police has given severe jolt to CPI (Maoists) in this inhospitable and difficult border area.

In this encounter S/Shri Vavilapa Narayana Rao, Reserve Inspector and Pantrangam Kataiah, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 2<sup>nd</sup> April, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 54—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Andhra Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- 1. Kondapalli Appala Naidu,  
Reserve Sub Inspector**
- 2. Kunchapollu Sanjeev Kumar,  
Head Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

Nallamala forest of Mahaboobnagar, Kurnool, Nalgonda, Guntur & Praksam Districts of Andhra Pradesh is highly affected with activities of CPI Maoists who have been dominating the deep jungles of the above districts in order to create a Guerilla base. In the last 10 years they have indulged in ruthless killing of innocent civilians, Police Personnel and Political Leaders.

Superintendent of Police, Mahboobnagar district received information that Mahesh, DCM, Indira and other Maoists were moving in the surrounding area of Appaipalli, Medimankala, Sangidigundala tribal villages of Nallamala forest area with in Lingala Police Station limits, with a plan to kill police by luring them into an ambush or attack a police station. There was a possibility of their causing serious disturbance a few days before, the ZPTC/MPTC elections. Maoists group had an exchange of fire with a police party in the same forest area which indicated their plan to commit heinous offence. Immediately on receipt of information S2C A/Unit of Greyhounds led by Shri K Appala Naidu, SI and DAC Sri. N. Siva Prasad, AAC Sri. K. Siva Rama Krishna and Sri. M. Gajendra Kumar with a strength of 27, was briefed and dropped along with Shri K Sanjeev Kumar, Head Constable, in the treacherous thick forest of Nallamala on the night of 24-06-06. The commandos combed the area given to them for two and half days. The Party was tired due to difficult terrain, rain and as the forest is very thick, visibility was very poor and movement was difficult. However, determined to make the operation successful, Shri K Appala Naidu, SI along with others commandos. The party thoroughly checked all those places which were not included in the programme and at about 1100 hrs, halted

at a place nearby tribal village Medimankala. At about 1200 hrs the unit observed one person wearing civil dress walking on a track nearby. Immediately, two constables searched the person and found two improvised hand Grenades and Rs. 20,000/- cash in the pouch which was tied to his waist. After thorough interrogation the man divulged that he was a member of the Maoist group and he was coming from the halting place of the Maoist party which was 8 km away. Immediately the unit in charge DAC, Shri K Appala Naidu, SI along with other unit personnel rushed to the place as indicated by the captured Maoist without losing any time since CPI Maoists are known for shifting their camps frequently. As per the information provided by the captured Maoists the police team reached the area but couldn't locate the camp. Then the team was divided into three groups S/Shri K Appala Naidu, SI and K Sanjeev Kumar, Head Constable were in the main assault team, and the other two teams were sent as cut offs.

The main assault party lead by Shri K Appala Naidu and DAC N. Siva Prasad moved forward after receiving signal from the Right & Left Parties. Suddenly a lady sentry of the Maoists opened fire and shouted as she has observed the movement of the left flank. On getting alerted by sentry all other extremists opened fire on the assault team. The team leader and other members asked them to surrender. But the Maoists continued firing with an intention to kill the police party. As the extremists were well entrenched in their positions, S/Shri K Appala Naidu, SI and K Sanjeev Kumar, Head Constable moved into the open area and faced the bullets of extremists bravely in an effort to storm their camp. Seeing the assault by police team especially S/Shri K Appala Naidu, SI and K Sanjeev Kumar, Head Constable, extremists started retreating up the hill but continued firing. Then S/Shri K Appala Naidu, SI and K Sanjeev Kumar, Head Constable chased them up the hill and retaliated the enemy fire. S/Shri K Appala Naidu, SI and K Sanjeev Kumar, Head Constable along with other commandos fired rapidly and advanced towards the firing extremists. After half an hour, fire stopped from the Maoists. On conducting thorough search the police team found dead bodies of 8 Maoists and One SLR, two .303, two 8mm, and two 410 Musket, along with, ammunition grenade, cash & other articles. The (8) extremists who were killed are as follows:-

1. Katamoni Maddilaty @ Mahesh (C) Commander Nalamala Dalam
2. Chatrasala Sukkamma @ Indira Platoon Member
3. Padma @ Swaroopa (Deputy Commander of Nalamala Dalam)
4. Sivaudu Platoon Member
5. Gangamma Platoon Member
6. Lingamma @ Suguna Platoon Member
7. Dodla Saidamma @ madavi Platoon Member
8. Kotamma Platoon Member

In this encounter S/Shri Kondapalli Appala Naidu, Reserve Sub Inspector and Kunchapollu Sanjeev Kumar, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27<sup>th</sup> June, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 55—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Andhra Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICER**

**Shri T. Raja Sambaiah,  
Head Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 27-5-2006 the Superintendent of Police, Karimnagar received credible information that one person is going to meet CPI Maoist Group extremists of Karimnagar West Division at the outskirts of Rakulapalli village of Sarangapur Mandal and also about presence of CPI Maoist West Division committee members. Shri T. Raja Sambaiah, HC entrusted to verify the information and to check the hide outs of CPI Maoist Group extremists along with SIs of Vemulawada and Gollapalli PSs. Based on that information, an assault party consisting (9) members including Shri T. Raja Sambaiah, was dispatched on 27-5-2006 at about 1100 hours. The party was dropped at the outskirts of Rekulapalli and then Shri T. Raja Sambaiah divided into two parties one led by Shri T. Raja Sambaiah and the other party led by the SIs Vemlawada and Gollapalli PS. Shri T. Raja Sambaiah laid ambush near a school, which was situated at the outskirts of Rekulapalli village for about six hours without exposing to the villagers. At about 1900 hours, Shri T. Raja Sambaiah noticed a person who is having a bag on his shoulder and going to meet the extremists of CPI Maoist Group. Immediately Shri T. Raja Sambaiah tracked him for about 1 Km. The person reached the dalam of CPI Maoists. Unfortunately the dalam members noticed Shri T. Raja Sambaiah and immediately opened fire with automatic and semi-automatic weapons with an intention to kill Shri T. Raja Sambaiah. Immediately, Shri T. Raja Sambaiah after due warnings, took positions and retaliated the fire in self-defense since there was no alternative.



The firing lasted about 5 minutes. After the firing stopped, the Police party waited for some time and advanced and found two male dead bodies with one 9 MM Sten Gun and its ammunition and One Lap Top computer seized from the scene of offence.

Later the slain extremists were identified as 1. Katkuri Ramulu @ Praveen r/o Mudapally of Chendurthy (M), DCM Karimnagar West Division and Badugu Ashok s/o Narsaiah age 29 yrs. r/o Shivangulapally of Konaraopet (M). This is the subject matter Cr. No. 37/06 u/s 147, 307 R/W 149 IPC Sec 25 (1) (A) 27 IA Act, Sec 174 CRPC OF PS Sarangapur.

The slain extremist Katkuri Ramulu @ Praveen, DCM, is hard core extremist and was involved in many heinous offences, including brutal murders, attempt to murders, arson exchanges of fire cases and extortion etc., in West Division of Karimnagar district.

In this encounter Shri T. Raja Sambaiah, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27<sup>th</sup> May, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 56—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Andhra Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

S/Shri

1. Yanabothula Sanjeeva Rao,  
Reserve Sub Inspector
2. K. Rama Rao,  
Constable

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On the night of 26-03-2005, the Addl.S.P.(Oprs), Warangal collected precise information through his sources that the top cadres of CPI (ML) Prajapratighatana and Adivasi Liberation Tigers (ALT) along with other cadres

of their groups are camping on the hillocks situated in the outskirts of Kambalapalli village under the limits of Mahabubabad Rural PS and summoning the farmers contractors and business people and extorting money. The said area is situated at a distance of 18 KMs towards NE from Mahabubabad Rural PS. The area is spread in about 10 square kilometers covered with dense scrubs, boulders, rocks and hillocks. The entire area is bordering of Khammam district and is affected with the activities of CPI (ML) groups and most of the routes are risky. Acting on the information received, the Addl.SP (Oprs), Warangal planned an operation to neutralize the extremist camping in the forest. As per the plan, he deputed two units consisting of 41 police personnel under the leadership of S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable to conduct the operation. To keep the movement of forces a secret, he planned their movement in the night to reach the scene and to launch the operation with the first light. As planned by the Addl.S.P (Oprs) Warangal, all the police personnel landed in the forest area of Kambalapalli of 0200 hours on 27-03-2005. Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector led the combined units consisting of Unit-I & II of District Guards. S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable alongwith both the District Guard Units under the leadership of them reached the bottom of the hillock named Errammakuntagutta (.487 in SOI Map No.65C/2) at 0430 hours, where the S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable divided the unit into four parties and three of them were sent around the hillocks as cut-off parties and they proceeded with remaining party towards top of the hillock as assault group. After reaching the top of one of the hillocks at about 0630 hours when they did not notice the movements of extremists. S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable without losing hope, motivated their party, divided again the party into two teams and searched the area. While searching was on, Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, noticed two extremists (who were in jungle patch dress with weapons) proceedings towards another hillock with water cans. Immediately Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, alerted Shri Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable through the VHF set and concealed themselves from the extremists and followed them stealthily. Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector further heard some noise on the other hillock and found some persons clad in jungle patch dress with arms moving on the top of the hillock. He alerted and advised S/Shri Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable for proceedings towards the area. Shri Cirra Sathish Babu, Sub Inspector reached Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, team by taking all precautions to avoid the exposure and then

both the teams merged as one team and slowly followed the extremists who came to fetch water. At about 0900 hours, Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable reached the top of hillocks with great difficulty as it was steep, and saw the extremists camping. S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable quickly gauged the terrain around the extremist camp and decided to launch assault (4 personnel including S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable) from the front and to have to cut off (4+3 personnel) to give support fire and to prevent the escape of extremists. As the visibility was poor due to thick undergrowth, forest and uneven terrain, S/Shri Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable with their small assault party crawled up the cliff very close to the extremists who were holding meeting. When S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable and their party reached very close, one of the extremists noticed them and opened indiscriminate fire with an automatic weapon towards them. S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable and their team who were very close to the extremists reacted quickly and launched their assault with the support of remaining two PCs. The extremists fired indiscriminately using automatic weapons with a view to kill the S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable. S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable and their party, though in very small number, retaliated valiantly without sparing a thought for their lives. continued their fire and advanced towards extremist camp and shot the extremists who were firing with SF Rifle and 8 MM rifles. The gunshots of the enemy were fired from close distance. The fired rounds were whizzing past S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable. Meanwhile with the instructions of S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable, the cut-off parties gave cover fire and prevented the extremist from making an escape. S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable continued fire on the extremists, advanced towards the extremist risking their life in danger and shot two other important extremists who were giving stiff resistance to the police. Sensing danger from the assault of S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable, the remaining extremist fled away from the scene taking advantage of thick forest and boulders. Shri Yanabothula Sanjeeva

Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable with their team chased the extremist some distance. The operation came to an end at 1000 hours.

The brave act of S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reserve Sub Inspector, Cirra Sathish Babu, Sub Inspector and Komaram Rama Rao, Constable team inflicted heavy casualties on CPI (ML) Prajapratighatana and ALT groups with the death of:

- i) Dunnapothula Kumaraswamy @ Venu, S/o Komuraiah, 29 yrs, Waddera, r/o Chalvai (v), Govindaraopet (m), State Committee Member and DCS Khammam of CPI (ML) Prajapraigatana.
- ii) ALT extremist Kunja Kommalu @ Ramu @ Sathyam master @ Satyam @ Chand s/o Komuraiah, 40 yrs, Koya, r/o Mokallapalli (v), Kothaguda (m), Dandakaranya Secretary of Adivasi Liberation Tigers (ALT).
- iii) Thati Krishna s/o Venkaiah, 30 yrs, Koya r/o Thirumalagiri (v), Kothagudem (m), dalam member of Venu dalam of Prajapratighatana.
- iv) Kandratil Laxman @ Laxmaiah w/o Satyanarayana, 30 yrs, Kammara r/o Garla (v), KMM dist., dalam member of Venu dalam of Prajapratighatana.

In this encounter, one Springfield Rifle, three 8mm rifles, one SBBL and 12 kit bags containing party literature and clothes and net cash of Rs.1,70,000/- were seized from the scene, which is the subject matter of Cr.No.40/05 u/s/ 147, 148, 307 r/w 149 IPC, Sec.25 (1) (a), 27 Arms Act of PS Mahabubabad (R). These slain extremists committed several offences including extortions, assaults, arson and murders in Warangal and Khammam districts and created panic in the area among the public. Dunnapothula Dumaraswamy @ Venu and Kunja Kommalu @ Ramu was notorious in the area and terrorized the people with their clandestine activities. As a result of this encounter, the morale of both the Prajapratighatana and ALT fell to their lowest ebb.

In this encounter S/Shri Yanabothula Sanjeeva Rao, Reservie Sub Inspector and K. Rama Rao, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27<sup>th</sup> March, 2005.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 57—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Andhra Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- 1. Billu Adinarayana,  
Assistant Assault Commander/ Reserve Sub Inspector**
- 2. Gunta Kemdas,  
Head Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

This is a case of exchange of fire with the dreaded Maoists Guerillas of Nallamala forest in the state of A.P., in which four notorious ultras including very important leaders were killed leading to recovery of deadly firearms such as SLRs, and .303 Rifles.

Nalgonda, Mahaboobnagar, Prakasham, Guntur and Kurnool Districts of A.P., State are highly affected with activities CPI – Maoists. The Maoists have been dominating the forest area of these districts in order to create a Guerrilla base. They are also using the Krishna and Dindi rivers for transportation. In the last five years they have indulged in ruthless killing of many innocent civilians and police personnel. Bodu Sailu @ Kurmaiah, District Committee member is notorious for his mercilessness and inspired awe and terror in the countryside of Nalgonda and Mahaboobnager Districts. Even as the police pursued him relentlessly Kurmaiah escaped by firing at the police atleast 10 times and perpetrated heinous offences including murders in the region. During the recent peace talks with the Maoists by the Government of Andhra Pradesh, Maoists under the leadership of Kurmaiah extorted lakhs of rupees from the people in the name of party fund.

On 29-04-06 at 1100 hrs information was received that a group of Maoists consisting of 4 to 5 members moving in the area of Maddimadugu, Dindi and Krishna rivers junction with a plan to commit an offence. Immediately S-2B A/Unit of Greyhounds led by the Shri B. Adinarayana with a strength of 22 members, one (1) Cadet RSI, and two district police personnel was dispatched on the night of 29-04-06 to that area.

On 30-04-06 around 1200 hrs 4 Maoists under the leadership of Kurmaiah, DCM, hijacked 2 boats of AP Tourism Department at Nagarjuna Konda near Nagarjuna Sagar. These 2 boats were being used by AP Tourism

Department for transporting tourists from Nagarjuna Sagar to Nagarjuna Konda which is an island in river Krishna. The four Maoists threatened all the tourists with weapons to come out of the boats. The Maoists hijacked the 2 boats tied them with ropes and moved in south direction – towards Srisailem along with 9 crew members. The crew members pleaded with the Maoists not to harm them and also requested not to destroy the boats. Maoists beat the crew members and moved the two boats for 30 KM towards Srisailem. At about 1500 hrs the Maoists took the boats to the crew members, lit fire to one boat, arranged mines in another boat and blasted them. The extent of damage was approximately 1.5 crore rupees to A.P. Tourism department Government of Andhra Pradesh. The information about hijack of the 2 boats was given to the Greyhounds party at around 1700 hrs. However the news about blasting of boats did not reach either the local police or GHs party by that time. The GHs party then moved towards Pidakalapenta ferry point on River Krishna expecting the Maoists to come there with the boats. While they were moving towards Pidakalapenta Ferry point Shri B. Adinarayana RSI, the team leader saw a small hut on a small hill feature. The entrance to the hut was closed with stones piled on each other. Since this is not the conventional way of providing a door Shri B. Adinarayana directed Shri Gunta Kemdas to search the hut. Shri Gunta Kemdas found a plastic sheet bundle. In that bundle 4 haver sacks, 4 Maoists Olive Green Uniform, party literature and a diary were found. Suspecting that they belong to the 4 Maoists who hijacked the boats, Shri B. Adinarayana quickly prepared an action plan. Shri B. Adinarayana RSI divided the entire party into 3 sub-groups. Shri B. Adinarayana RSI lead the main Assault party with 4 members only. Two other groups of 10 and 11 were made as cover parties and took position in the adjoining forest. The main assault group had to be very small since area in front of the tent was cleared for a goat penn and there was no cover to protect the police party. The main assault group took position behind the small wooden fencing made with branches. Even while the police parties were taking position Shri B. Adinarayana RSI noticed 4 members coming towards them with bundles of luggage on their heads. The other parties were immediately alerted. It was already becoming dark as sun was sinking by that time. Shri B. Adinarayana RSI observed these people carrying deadly weapons to their shoulders as sling arms only when they came close by. He shouted to them to surrender. The Maoists dropped the bundles and started firing. with S.L.R and .303 Rifles. Shri B. Adinarayana RSI who was in main assault party and, was very close to the Maoist group retaliated the Maoists fire rushing forward with his team members and killed 2 Maoists who were ahead of the others. The 2 Maoists who were about 50 yards behind started running away while firing indiscriminately. The cover party members moved ahead from both sides converging on the escaping 2 extremists. One lady member was brought down

by the cover teams. But Kurmaiah could put some distance between him and police who could not surge ahead because of the fire from SLR of Kurmaiah. Shri Gunta Kemdas dashed forward unmindful of the grave risk to his life in face of flying bullets and brought down Kurmaiah.

In this exchange of fire one DCM and 3 Dalam Member were neutralized. One SLR and three .303 weapons were recovered along with grenades and walkie talkie sets. The encounter was a deadly blow to the CPI –ML Maoists Group in general and Nallamala forest division in particular. This is one of the best encounters that occurred in the dense Nallamala tough hilly region. The action by police in immediately neutralizing the extremists who committed a sensational offence brought laurels to police and struck a note of fear in the minds of Maoists from committing such offences there after.

In this encounter S/Shri Billu Adinarayana, Assistant Assault Commander/ Reserve Sub Inspector and Gunta Kemdas, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30<sup>th</sup> April, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 58–Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Andhra Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICER**

**Shri Bandapalli Srinivasulu,  
Reserve Sub Inspector**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

In April 2001, the Maoists formed the Andhra Orissa Border Special Zonal Committee (AOBSZC) to intensify the activities in Andhra Orissa Border area. Four district of AP viz East Godavari, Visakhapatnam and Srikakulam and five districts of Orissa namely Gajapathi, Ganjam, Rayagada, Koraput and Malkagiri come under ths committee. CPI ML PW formed AOBSZC to provide a link between North Telangana and Dandakarnya movement in view of the favorable terrain and conducive atmosphere for revolutionary movement.

On 02.02.2006 information about the movement of Maoists Guerrillas in Gurthedue reserve forest of Donkarai P.S Limits of East Godavari dist. In AOBSZC was received. This is a part of the Eastern Ghats, having peaks with height of 1000 mts and above. In this particular area, the hills are so close to each other with no motorable road could be laid there. Travel can only by foot and there are very few known tracks. It is exceedingly risky to adopt these known tracks since the Maoists are known to have planted landmines in a large number on these tracks. Many landmines and claymore mines were blasted landmines in a large number on these tracks. Many landmines and claymore mines were blasted against the police parties very frequently in these areas. Consequently police parties are forced to travel cross country totally.

On receipt of information, one assault unit of Greyhounds with a strength of 17 personnel led by Shri B.Sreenivasulu proceeded to Gurthedue reserve forest on the night of 03.06.2006. They travelled cross country for 15 Kms up and down the hillocks to reach the core area. They combed the forest on the 4<sup>th</sup> and 5<sup>th</sup> without any result. On the night of 5<sup>th</sup> they halted on a small hill feature in between 2 Maoist strong hold tribal thandas (hamlets) Chingenkota and Tangankota. On 6<sup>th</sup> morning by about 0520hrs. When day light was just breaking and the unit was starting out for combing Shri B.Sreenivasulu noticed three persons with arms coming on the back running from North to South from Chingenkota to Tangankota. There are two hillocks on either side of the track and the police party was on the west of the track. There is a nala running from west to east to the south of the two hillocks. Immediately on noticing the Maoists with arms Shri B.Sreenivasulu divided his team into three parties. One team was left on the hillocks to observe from a distance if the party of three Maoists is only a scout team while rest of the Maoists are coming from behind. One party was sent on the South East direction as a cut off party into the Nala in case the Maoists wanted to escape through the Nalas. Shri B.Sreenivasulu led the main assault team of 5 members of which 2 were again dispatched to cover the nala on the west. Meanwhile the Maoists came out of the forest area and having crossed the grassy belt of 100 yards reached the nala. Though they had no cover and had to come out into the open plain area Shri B.Sreenivasulu accompanied by 2 other colleagues continued tracking the Maoists. When they were about to get into the nala the Maoists noticed the police party tracking them and opened fire on them. Shri B.Sreenivasulu who was in the lead and had no cover of any rest whatsoever from the enemy fire had to open fire in retaliation. Spontaneous and well aimed fire from Shri B.Sreenivasulu well supported by his colleagues brought the three Maoists down who fell in the nala lifeless. Meanwhile the team which was covering the track from the hillock also reported that there was no sign of movement of any more Maoists in that area. The daring assault launched by the police team led by Shri B.Sreenivasulu led



to neutralization of three hard core underground armed Maoists one of whom was S. Chandu @ Ramesh, Area Committee Member, a senior Maoists functionary who was responsible for a number of offences including attacks on police parties. The other were identified as members of Gurthedu dalam. One SLR with 40 rounds one .303 with 35 rounds and one Carbine with 21 rounds were recovered along with three Grenades from the deceased Maoists.

In this encounter Shri Bandapalli Srinivasulu, Reserve Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 6<sup>th</sup> June, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 59–Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Andhra Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

S/Shri

1. **A.V.Ranganath,**  
**Additional Superintendent of Police**
2. **R. Ram Babu**  
**Reserve Sub Inspector**
3. **A. Venkateswarlu,**  
**Armed Reserve Police Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

The CPI Maoists believes in the doctrine of “Power through the Barrel of the Gun” and has a network spread over 13 States in the country. This Left Wing extremist group, threatening the internal security of our country is known for its guerilla Warfare and sensational, gruesome attacks. The Yerragondapalem and Pullalacheruvu forest tracks of the Nallamala are called the Guerilla Base – II (GB-2) in the Maoist Parlance. This area was considered to be impregnable till the year 2005. Almost all the important Maoist actions (like Alipiri action on the former Chief Minister Shri Chandrababu Naidu, killing of MLA’s/Police Officers, lightening strikes on Police Stations etc.) were conceived in the GB – II by the top leadership of the AP State Committee of CPI (Maoist). On 8.12.2005 Shri A.V. Ranganath, Addl.SP(Operations) had

received the information that about 30 members of CPI Maoists were conducting a plenary in Pullalacheruvu PS limits of Markapur Forest area and were conspiring to launch some sensational attacks on Police Stations and targets. The plenary site was in the thick Pullalacheruvu forest of Nallamala. Shri A.V. Ranganath, Addl.SP, Shri R. Ram Babu, RSI AND Shri A. Venkateswarlu, ARPC along with 19 other police personnel of the Anti Naxal Special Party of Prakasam District left for operation on 8.12.2005 at 2330 hrs and Shri A.V. Ranganath lead the party. They dropped at Marrivemula "T" Junction under Pullalacheruvu PS limits, Yarragundapalem Circle Map No. 56 P/12 at about 0230 hrs on 9.12.2005. They continued their movement till 0530 hrs. They reached the hillock Urakonda by crossing the "Symarajukuvva" West of Marrivemula. They checked all the possible hideouts in the nearby area till 1200 hrs on 9.12.2005. After lunch, the entire party again started for combing and searching the area by moving towards "Akkapalem hillocks". The checking was conducted not only to locate the extremists but also to locate for any landmines which they might have planted to kill the policemen. At about 1730 hrs the party contacted over High Frequency (HF) set and proceeded further and climbed the Akkapalem hillock. The area was thoroughly checked. The entire party laid ambush at this place as this is the vantage point for observing the movement along the track leading to Akkapalem. At 2030 hrs the Police party heard the dogs barking from the Urakonda direction. The dogs barking was continued till 2300 hrs. Shri A.V. Ranganath, Addl.SP, Shri R. Ram Babu, RSI and Shri A. Venkateswarlu, ARPC alerted the complete party and instructed the Policemen to be vigilant and observe for any suspicious movement from the direction of dogs barking. At about midnight 0030 hrs Shri N.V. Ramanaiah, ARPC observed the flashing of torch lights on the Urakonda hillock and informed the same to Shri A.V. Ranganath, Addl.SP. Immediately. Shri A.V. Ranganath, Addl.SP, Shri R. Ram Babu, RSI and Shri A. Venkateswarlu, ARPC confirmed and took the decision to search the Urakonda hillock, especially the area from where the torch light were flashed. Shri A.V. Ranganath, Addl.SP, Shri R. Ram Babu, RSI, and Shri A. Venkateswarlu, ARPC took a reconnaissance party (additionally comprising of 4 other PCs) motivated the party and climbed down the Akkapalem Konda, crossed the Nala/rivulet and climbed up Urakonda from the southern direction (i.e. in the direction opposite to the movement of torch lights.). This Urakonda Hillock has an altitude of 344 mtrs. During the reconnaissance, they heard the sounds of plastic sheets, some whispers etc. The reconnaissance party presumed that they were the Maoists. The reconnaissance party came back and briefed the entire party. The party was divided into one assault and two cut-off parties. The Assault party was lead by Shri A.V. Ranganath, Addl.SP, Shri R. Ram Babu, RSI and Shri A. Venkateswarlu, ARPC and two others namely Sd. Md Shakeer, PC & P. Tirumal Raju, PC began the raid at 0300 hrs. The assault party reached the

foothills of Urakonda by 0400 hrs, began to climb the hillock and was almost reaching the targeted area when with the break of first light (around 5.30 AM) the Maoists observed the movements of police party and immediately started firing on the Police besides exploding a land mine and a directional mine. Shri A.V. Ranganath, Addl.SP, Shri R. Ram Babu, RSI and Shri A. Venkateswarlu, ARPC alongwith their party took a detour and advanced towards the extremists by crawling and by adopting tactical movement. Notwithstanding the heavy firing, Shri A.V. Ranganath, Addl.SP, Shri R. Ram Babu, RSI and Shri A. Venkateswarlu, ARPC advanced further by crawling and entered into the Maoists camp. Two hand grenades were hurled towards them by an extremist out of that one blasted just in front of the officers. Shri A.V. Ranganath, Addl.SP, Shri R. Ram Babu, RSI and Shri A. Venkateswarlu, ARPC, miraculously escaped from the blasting. From the crawling position both the officers rose up and resorted to heavy automatic firing from their AK – 47 rifles without taking any cover. Due to the automatic burst fire of Shri A.V. Ranganath, Addl.SP, Shri R. Ram Babu, RSI and Shri A. Venkateswarlu, ARPC, a dreaded action team member and alternate Divisional Committee member ( DCM) of Guntur Latoon Sunkara Koteswara Rao @ Sunil and another dreaded naxal DCM Injumuri Marriamma @ Sruthi @ Vijaya were killed. Both the deceased Maoists were known for their deadly attacks on the police officers/Politicians in Guntur and Prakasham Districts. In fact the deceased 1 viz Sunil who is an expert in blasting land/directional mines using wireless technology and the other deceased Sruthi alongwith the Military Platoon committed two murders on 24.11.2005 at Venkata reddy palli and R. Ummadivaram villages of Pullalacheruvu Mandl which is subject matter of Cr. No. 41/2005 of Pullalacheruvu PS u/s 148, 435, 326, 307, 302 r/w 149 sec 25, 27 IA act and Sec 8 APPS act in which Sri Bogireddy Venkateswara reddy was killed and Cr. No. 42/2005 of Pullalacheruvu PS u/s 148, 435, 302 r/w 149 sec 25, 27 IA act and Sec 8 APPS act in which Sri Kunduru Veerareddy was killed. The same squad also burnt 2 buses on 2.12.2005 on the Yerragondapalem – Macherla highway and terrorized the bus passengers which is a subject matter of crime No. 44/05 of Pullalacheruvu PS. After the cessation of fire, the following recoveries were made from the encounter site : a) SLR Rifles – 2, b) Rocket and their Launchers – 5, c) Land Mines – 3, d) Directional Mines – 2, e) Hand Grenades – 3, f) Kit Bags – 5, g) SLR spear Magazines – 4, h) 7.62 Ammunition – 60, i) Electronic Multimeter – 1, j) Wireless Scanner sets – 2, k) Electrical Detonators – 20, l) Extremist Literature – 20. Shri A.V. Ranganath, Addl.SP, Shri R. Ram Babu, RSI and Shri A. Venkateswarlu, ARPC exhibited highest degree of Valor, determination and application of mind. This dauntless and gallant action of Shri A.V. Ranganath, Addl.SP, Shri R. Ram Babu, RSI and Shri A. Venkateswarlu, ARPC shattered the Maoist myth the Nallamala Guerilla Zone is impregnable and the Maoists are invincible

in the Nallamala's rugged terrain. This exchange of fire has averted a major catastrophe as the Maoists were conspiring to attack Police Station in Guntur District. More importantly this whole operation was carried out by the District Special Party and the success was due to gallant action and quick thinking by Shri A.V. Ranganath, Addl.SP, Shri R. Ram Babu, RSI and Shri A. Venkateswarlu, ARPC. In the annals of anti – naxal operation in Nallamala, this Exchange of fire is the only case wherein two Divisional Committee Maoists were killed in an operations exclusively done by District Special Party. The Hill on which the exchange of fire took place is of 344 meters height and with a slope of 60 degrees. The hill is also filled with lots of thick grass in which small boulders are hidden thus making the task of climbing the hill under normal circumstances itself very dangerous as one is prone to slip very easily. Shri A.V. Ranganath, Addl.SP, Shri R. Ram Babu, RSI and Shri A. Venkateswarlu, ARPC however took the risk and climbed up the hill and when their positions were exposed and subjected to directional mine blast, they gallantly stood up and took the enemy on, ultimately killing the important leaders while others fled.

In this encounter S/Shri A.V.Ranganath, Additional Superintendent of Police, R. Ram Babu, Reserve Sub Inspector and A. Venkateswarlu, Armed Reserve Police Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10<sup>th</sup> December, 2005.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

---

No. 60—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Andhra Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- 1. Gopati Narender,  
Sub Inspector**
- 2. M. Rajesh,  
Junior Commando**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On reliable information about movement of Maoists in the medipalli Forest areas in Sirpur Mandal one Greyhounds team consisting of 2 AACs (RSIs), one Cadet RSI and 9 other personnel including M. Rajesh, Constable was sent for combing the area along with the nominee – 1 Civil SI Sri G.Narender (presently Inspr.) and a guide PC. This team of 17 members left on the night of 18-11-2005 and got dropped on the outskirts of Mannemgudem (v) of Sirpur Rural PS limits of Adilabad District. They kept checking with the base camp and came to know that a special party of the local police had an exchange of fire on 21-11-2005. Accordingly they modified their programme and started checking all likely camping places. One of the Junior Commando (PC) detected an old camp site and a dump with medical and electrical items on 20-11-2005. With this inspiration they continued checking the nalas as well as hill tops upto 21<sup>st</sup> Nov. 2005 morning. Since the given task was completed the unit stated their return journey to the pick up point. Yet they were alert and continued to check all the likely places enroute. While on movement. M. Rajesh, Constable who was the guide noticed three persons in civil dress carrying weapons. He immediately alerted the AAC (RSI), leader of the team who in turn alerted the rest of the team members including nominee-1. The entire team was divided into the parties. The team leader AAC (RSI) SI Sri G.Narender and M. Rajesh, Constable were in the party-1 which advanced towards the Maoists and cautioned them to surrender. The Maoists opened fire which was effectively returned by the first party in which one of the Maoist fell down and two others ran away. Party-1 started chasing them. When the injured Maoist who fell down continued to fire at the Police party with his 303 rifle. team-2 which was covering for team-1 opened fire and brought him down. Meanwhile team-1 which was chasing the fleeing Maoists was fired upon heavily by one of the fleeing Maoists, later identified as District Committee Secretary (DCS) Suryam, with burst fire from his AK-47. G.Narender, SI and M. Rajesh, Constable along with party-1 members stood their ground even without cover and neutralized him. All the three parties continued their chase for the 3<sup>rd</sup>

Maoist. M.Rajesh, Constable who has ahead of others stumbled on a fallen tree trunk which was invisible in the knee deep grass and under growth, fell down and was injured. By the time the others could catch up the 3<sup>rd</sup> Maoist made good his escape. In this exchange of fire which took place while the unit was on return journey G.Narender, SI and M. Rajesh, Constable displayed rare courage and dedication to duty in chasing and bringing down the District Committee Secretary of the West Division, Karimnagar and Central Organiser of Ahiri Dalam, Gadchiroli of Maharashtra leading to recovery of AK 47, one .303 Rifle and one 9 mm Pistol in addition to cash of Rs.31,700/- and ammunition, cell phones etc. The exchange of fire coming on the heels one on the earlier day sounded the death knell for the Maoist activities in the area. The neutralization of the District Committee Secretary in particular boosted the confidence and morale of the public and the police and has drawn the curtains on the activities of Maoists in that area.

In this encounter S/Shri Gopati Narender, Sub Inspector and M. Rajesh, Junior Commando displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21<sup>st</sup> November, 2005.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 61–Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Andhra Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

1. **P.V.Trinath,**  
**Assistant Assault Commander/Reserve Sub Inspector**
2. **D. Surendra Babu,**  
**Senior Commando**
3. **T.V.Satyanarayana,**  
**Sub Inspector**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

The Supt. of Police, Kadapa received information on 25-04-2006 about the movement of Maoists around Puttangi Madugu area. It was believed that a training camp was going on in and around a water point near Puttangi Madugu. The Supdt. Of Police, Kadapa briefed the Greyhounds unit personnel at the base camp on 25-04-2006. Sri. T.V. Satyanarayana, SI also joined the Greyhounds unit personnel as the local officer with knowledge of the terrain. The unit personnel including S/Shri P.V.Trinath, D. Surendra Babu and T.V.Satyanarayana left the base and were dropped on the outskirts of Savikadipally village at 2330 hrs (Map 57 N/4). The police team combed the forest area thoroughly for the next two days but could not get any trace of extremists. The terrain was very trying with high hillocks and thick thorny bushes. Lot of undergrowth and stones made movement very difficult in the forest. On the 3<sup>rd</sup> day of combing i.e. on 28-04-2006, when the unit reached Evvalikanavagu (a nala) near Pulusuguntalu, they heard a sound and suspected that the extremists could be camping in the area. The Police party which was moving from North to South decided to check the suspected area thoroughly by dividing the unit into two teams, one of which was led by the nominee Shri P.V.Trinath. and . D. Surendra Babu was within the team of Shri P.V.Trinath. T.V.Satyanarayana was in the other team with another AAC (RSI) of Greyhounds. The team with Shri T.V.Satyanarayana moved in the nala from North to South while the team led by Shri P.V.Trinath. and . D. Surendra Babu branched off towards east to comb the suspected area. Having checked the hill feature on the east, S/Shri P.V.Trinath and . D. Surendra Babu moved south wards and came to an area which was thickly vegetated unlike the rest of the terrain all round. Here Shri P.V.Trinath split his team into two parties. The party led by nominee 2, SC-2839 moved ahead and covered the area on the south while the party led by Shri P.V.Trinath was covering from south east. Mean while, the team led by T.V.Satyanarayana found some wrappings of gelatin sticks and some remnants of cooked rice in the nala. His party alerted other parties through VHF. Simultaneously, the party led by Shri P.V.Trinath which was entering the thickly bush area heard a few sounds from the bushy area. One of the Junior Commandos (PC) who was moving slightly ahead as the scout sighted an extremist who was performing sentry duties for the Maoist camp. By the time he could alert other members of the Police party, the extremist who was performing sentry duty also noticed the scout and opened fire. Shri P.V.Trinath alerted other Police personnel about the location of extremists and directed them to cover all the escape routes. He also warned the extremists to surrender, but they continued firing. The team lead by Shri P.V.Trinath launched the assault from South East direction while nominee 2 and another constable Anil Kumar moved ahead from south and south west braving the bullets of

extremists without caring for their lives. S/Shri P.V.Trinath and D. Surendra Babu came face to face with extremists who were firing from a very close range of almost 30 feet. They had no cover to protect them. Realising that they were surrounded by Police party. The Maoists opened fire indiscriminately with SLRs and other rifles. Still S/Shri P.V.Trinath and D. Surendra Babu charged forward with the support of their team members causing confusion in enemy ranks. As a result of their courageous charge, 4 hard core extremists including the DCM Kadapa were killed. Sensing that they were being cornered from east, south and west the extremists tried to escape from the north running into the nala. However, they had to face the other police party led by Shri T.V.Satyanarayan and another Greyhounds AAC/RSI. Shri T.V. Satyanarayana, SI and other members held their ground and tried to cut off the escape route of Maoists, who tried to escape by firing indiscriminately at the police party in an effort to breach the police cordon. Shri T.V. Satyanarayana, SI and others had hardly any cover in the nala. Yet they repulsed the attack of the extremists. 3 extremists died on the spot in this daring assault and others tried to escape through the west. The area on the West was already covered by Shri D. Surendra Babu with his colleagues. Though they were in the open and the Maoists took cover behind the temporary morchas built by them with stones, Shri D. Surendra Babu and his team faced the extremists bravely without a second thought about the risk to their lives. The two Maoists were making one last ditch effort to escape by firing from their rifles. Shri D. Surendra Babu and his team braved their bullets and brought them down. Thus, a total of 9 hardcore extremists were killed in this Exchange of Fire. 10 fire arms including – 2 SLRs, one .303 Riffle, one 8mm rifle, one stengun were recovered. This was a major setback to Maoists in Rayalseema division area which they used till then as a safe haven for conducting camps and carrying out their anti national activities. This operation has dealt a death blow to the morale of the Moaists in Rayalaseema Division to which they were fleeing after being pushed out of the Nallamala forest Division. This could be achieved due to the courage, determination, leadership and commitment shown by Nominees S/Shri P.V.Trinath, AAC/RSI, D. Surendra Babu, Senior Commando and T.V.Satyanarayana, SI inspite of grave and imminent risk to their lives.

In this encounter S/Shri P.V.Trinath, Assistant Assault Commander/ Reserve Sub Inspector, D. Surendra Babu, Senior Commando and T.V.Satyanarayana, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules



governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28<sup>th</sup> April, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 62—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Andhra Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/SHRI**

1. **Killo Appala Swamy,  
Head Constable**
2. **Chodey Subba Rao,  
Head Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 21-7-2006 Shri Kalidas V.R. Lella, SP, SIB received information through his sources about the movement of a group of CPI ML Maoists in the forest area near Yerragondapalem P.S. limits of Prakasam District. He sat with the officers of District Police and Greyhounds and planned operation in that inhospitable interior forest area. 6 Greyhounds units were deployed as assault units for combing the area with 5 district teams covering the likely escape routes as cut off teams. All the combing parties and cut off parties were deployed on 21-7-2006 night. Shri. Kalidas V.R. Lella, Supdt of Police, Special Intelligence Branch, Shri K. Appala Swamy, JC 2910, Shri Ch. Subbarao, JC 5978 and Shri Shaikshavali, JC 5792 of Greyhounds were members of one of the combing parties. The Greyhounds teams traversed 18 Kms as the crow flies from the dropping point in very inhospitable and difficult terrain with very few water points, crossing deep nalas and steep hillocks to reach the core area. Each had a defined area and the team with the nominees was combing the Southern most part of the suspected area. On 23-07-06 at about 1000 hrs when the Greyhounds team with the nominees reached the top of a hillock they noticed a group of armed Maoists in olive green dress. Simultaneously, the Maoists also noticed the police party and started firing with automatic weapons like AK-47, Sten gun and .303 Rifles. The police party did not have any cover since they chanced upon the Maoists camp all of a sudden. Shri Kalidas V.R. Lella, SP and Shri Shaikshavali, HC who were leading the party and were very close to the Maoist group faced the bullets first. Undaunted they retaliated the Maoists fire. The sentry lady Maoist fell to their bullets. The rest of the Police party got alerted and performed immediate action drill to cover the escape routes of the Maoists.

The initial charge of Shri Kalidas. V.R. Lella and Shri Shaikshavali, HC unnerved the Maoists who took to heels. While some ran southwards, others ran towards the nala in the east at the foot of the hillock. One team of 4 commandos chased those who were running towards the south. 4 more team members also tried to cover the Maoists who were firing while fleeing towards the South. They could bring down one Maoists on the South and two more when they changed direction and ran towards the nala on the East. Meanwhile the remaining police party tried to cover the rest of the maoists by jumping into the nala. Only Shri K. Appala Swamy, JC and Shri Ch. Subbarao, HC could successfully jump and cross the nala which was running from west to east and then ran round the hillock to cover the escape route on the East. Others could not keep pace with them and they returned to cover the maoists from the top of the hill feature. Shri K. Appala Swamy, JC and Shri Ch. Subbarao, JC ran around the hillock in the nala and reached the spot where nala was running from north to south to the east of hillock. By this time the maoists who were firing indiscriminately descended the steep slope and reached the nala at the foot of the hillock. However, Shri K. Appala Swamy, JC and Shri Ch. Subbarao, JC cut off their exit. The State Committee Secretary (SCS) was trying to escape from that side with his protection squad surrounding him. Since their retreat was effectively cut off they got jittery. In this entire melee the police party which could not get into the nala started climbing down the hillock tracing the foot steps of the fleeing Maoists. The SCS and his team were boxed between the 3 police parties, Shri K. Appala Swamy, JC and Shri Ch. Subbarao, JC on one side, one Police party of 8 members with Shri Shaikshavali on one side and the remaining police team covering them from the top from the direction in which the Maoists escaped towards the nala. Two more Maoists who were trying to run into the nala from the south while firing at the police party consisting of Shri Shaikshavali and his colleagues fell to police bullets. The State Committee Secretary, Madhav and his protection squad members were still proceeding towards the nala firing from AK-47 and other rifles in their bid to escape and came face to face with Shri K. Appala Swamy, JC and Shri Ch. Subbarao, JC who had no cover what so ever. Shri K. Appala Swamy, JC stepped forward in spite of the odds against the burst fire from AK 47 of SCS and opened fire risking his life. The State Committee Secretary fell to the spirited and daring response from Shri K. Appala Swamy, JC-2910. Meanwhile Shri Ch. Subbarao blocked the escape route of the other Maoists who was desperately firing in a last ditch effort to reach the nala which was only a few feet away and which promised the escape route from the police cordon. Shri Ch. Subbarao, JC stood his ground though there was no shelter and returned the fire bringing down the 8<sup>th</sup> Maoist member who was hardly 20 feet away from him. In this operation eight Maoists including the State Committee Secretary, 2 Area committee members, 1 Military platoon member and 4 Dalam members died leading to recovery of one AK-47, five .303 rifles, two 9MM pistols, one

DBBL, five grenades, one SLR magazine, many VHF sets and scanners and other items including cash Rs: 2,34,000/-. The State Committee Secretary was responsible for unleashing meaningless violence in the AP State Committee area. This incident gave a stunning blow to the Maoist from which they could not recover. They could not muster enough strength even to plan retaliatory action for a long time. Shri Kalidas V.R. Lella who generated the information played a key role in the entire operation participating in the exchange of fire with alacrity and guiding the police party throughout the operation. Shri K. Appala Swamy, JC and Shri Ch. Subbarao, JC played a conspicuous role with their daring initiative to jump into the nala and cut off the exit for the Maoists even when there was no protection to them from the enemy fire. The courage that they displayed, the speed and determination with which they moved to run round the hillock in the nala to cut off the exit routes, the devotion to duty and the strong will to succeed is a shining example for others to emulate. Shri Shaikshavali brought down the first sentry Maoist, opened fire on them with his daring assault, continued the assault chasing the Maoists who were firing indiscriminately and actively participated with other team members in bringing them down. The bravery, determination, sense of purpose and consummate skill, displayed by Shri Kalidas V.R. Lella, SP, Shri K. Appala Swamy, JC, Shri Ch. Subbarao, JC and Shri Shaikshavali, JC brought laurels to the AP Police while dealing a death blow to the morale of the Maoists.

In this encounter S/Shri Killo Appala Swamy, Head Constable and Chodey Subba Rao, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23<sup>rd</sup> July, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 63—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Andhra Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/SHRI**

1. **A.V.Ranga,**  
**Reserve Sub Inspector**
2. **M. Surender Reddy,**  
**Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 26.12.2006 Dr T. Prabhakar Rao, SP S/Shri A. V Ranga, Reserve Sub-Inspector and M. Surender Reddy, Constable secured specific information that top Maoists of Andhra Orissa Border Special Zonal Committee (AOBSZC) were holding a meeting on the Sapparla Kothuru Hillocks amidst thick forest near Jamparlova in between Sapperla and Panasapally Villages on the border of Sileru and G.K.Veedhi Police station limits. Dr. T. Prabhakar Rao, SP, S/Shri A. V Ranga, Reserve Sub-Inspector and M. Surender Reddy, Constable who were camping in Sileru, on the instructions of DIG,SIB shared the inputs with the SP Vishakapatnam and organised combing of the suspected camping site of Maoists. On 26.12.2006 evening four District Special Parties were deployed to comb the suspected area. **First party** was assigned the task of combing the area surrounding the villages Lankapakalu, Panasapally, Degalapalem etc. **Second party** led by Dr T Prabhakar Rao, SP along with S/Shri A. V Ranga, Reserve Sub-Inspector and M. Surender Reddy, Constable and Yernagula Krishna Kishore RSI incharge of one District Special Party proceeded to the Sapparla Kothuru Konda Hillocks, as there was no sufficient time to wait for the arrival of Grey Hounds. **Third party** covered Sapparla, Akaluru, Ammavari Dharakonda etc. and the **Fourth party** covered Lankalapally, Thummalamamidi, Bagadkonda villages.

On 27.12.06, by 1920hrs, the first party which was combing in the forest near Panasapally village came under intense fire by a patrolling team of the Maoists. On receiving the information of firing, Dr T. Prabhakar Rao, alerted the special party led by him and took extra precautions to prevent escape of the top Maoists camping near Jamparlova. Dr T Prabhakar Rao divided the entire team into three groups. Dr T Prabhakar Rao led the main assault group, S/Shri A. V Ranga, Reserve Sub-Inspector and M. Surender Reddy, Constable led the second assault group and the RSI Krishna Kishore was kept incharge of the **cut off** party on the possible escape route of Maoists from the camping site. Dr T. Prabhakar Rao gave signal for advancement of the assault parties leaving no

scope for the Maoists to escape. As the assault parties approached the camp site of extremists by crawling, the sentry who smelled the advancing police party alerted the extremists in the camp by shouting “police” and simultaneously opened rapid fire on the police party. The extremists numbering about 15 who were on a dominant location immediately opened indiscriminate fire in all directions with automatic weapons and simultaneously hurled grenades. Dr T. Prabhakar Rao, SP warning the extremists to stop fire and surrender to police, ordered the assault parties to move forward towards extremist camp taking available cover. As the extremists continued heavy firing from AK-47, SLRs, and other auto weapons with intention to kill the police, Dr T. Prabhakar Rao, SP ordered the party to reply fire of extremists in self defence and also alerted the cut off party to seal the escape route. Dr T Prabhakar Rao, SP, S/Shri A. V Ranga, Reserve Sub-Inspector and M. Surender Reddy, Constable unmindful of grave risk to their lives advanced close to the camp site by opening fire. Some of the extremists taking cover of the big trees and boulders managed to escape by blasting claymore mines, while the other cadre engaged police by incessant fire from the camp place. Dr. T Prabhakar Rao, SP, S/Shri A. V Ranga, Reserve Sub-Inspector and M. Surender Reddy, Constable bravely faced the extremists and through a controlled fire neutralized the firing of extremists. The firing from extremists continued till 2135hrs. The police party after seizure of fire from extremists, searched the scene and found dead bodies of one male and one female extremist at the camp site. The deceased were identified as Wadkapur Chandramouli, Central Committee member also a member of the Central Military Commission (CMC) and Karuna @ Kavitha @ Vijaya, a District Committee Member of East Division of AOBSZC. The following recoveries were made from the site of the encounter:-

(i) SLR (1) (ii) .38 revolver (1) (iii) SBBL (2) (iv) Tapancha (1) (v) 12 bore rounds (6) (vi) .38 rounds (6) (vii) Claymore mines (4) (viii) Grenades (2) (ix) Electrical wire bundle (1) and (x) Medical kit (1).

In this encounter S/Shri A.V.Ranga, Reserve Sub Inspector and M. Surender Reddy, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27<sup>th</sup> December, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 64—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Assam Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- 1. Kamal Kumar Gupta,  
Sub Divisional Police Officer**
- 2. Ruhindra Nath Changmai,  
Sub Inspector**
- 3. Naba Kumar Borah,  
Sub Inspector**
- 4. Dhiraj Choudhury,  
Constable**
- 5. Soda Tisso,  
Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 04.03.2007 morning acting on a secret information that a group of 8/9 AANLA extremists were taking shelter in betanipathar village under Sarupathar P.S. Shri Rana Bhuyan, APS, Superintendent of Police, Golaghat directed Shri Kamal Kr. Gupta, APS, SDPO, Sarupathar to conduct search operation in the area with necessary briefing accordingly. On the same day at about 0940 hrs. SDPO, Sarupathar alongwith S.I. Ruhindra Nath Changmai, O/C Sarupathar P.S., S.I. Naba Kr. Borah ( O/C Borpathar P.S.) and accompanying 9<sup>th</sup> AP Bn/3<sup>rd</sup> AP Bn personnel proceeded to Betanipathar village to launch the operation at about 10.30 A.M. While they were approaching the house of Shri Koka Orang of that village, suspected AANLA militants laid an ambush and started firing indiscriminately on the police party from near the house. The Police party took position and retaliated by firing towards the militants for self defence. Shri Kamal Kr. Gupta, SDPO, Sarupathar alongwith S.I. Ruhindra Nath Changmai ( O/C Sarupathar PS) S.I. Naba Kr. Borah, O/C Barpathar PS, C/220 Dhiraj Choudhury, 9<sup>th</sup> AP Bn and C/ 267 Soda Tisso, 3<sup>rd</sup> APBN, Started advancing towards the militants in the face of heavy fire. They fought a close combat with the militants risking their lives. While the exchange of fire was continuing the militants started retreating towards the nearby jungle area on the eastern side by firing intermittently towards the police party. The five member team under the leadership of SDPO, Sarupathar braved their lives and started pursuing them. A fierce encounter took place between the SDPO led police team and the fleeing militants and it lasted for 25/30 minutes. When the firing

stopped, the P.O. was searched and 2 (two) bullet ridden dead bodies of unidentified militants were found. Another 2 militants who concealed themselves under hyacinth in a nearby pond were also apprehended. A massive search operation was carried out in areas adjoining the P.O. to nab the other 5 militants, but they managed to escape. Later on, the dead AANLA militants were identified by the apprehended cadre as (1) George Ekka, Group leader of Karbi-Anglong and (2) Joseph Munda of Karbi-Anglong. The two apprehended cadres were (1) Joseph Kujur, S/O Mungra Kujur of Madhapur, P.S Barpeta and (2) James Kerketa, S/O Lt. Joseph Kherketa of Chakihola No. 2. PS Bokajan Karbi-Anglong. During search of the P.O. and the dead bodies of slain militants 1 (one) M-21 Rifle with magazine, 1 (one) M-16 Rifle with magazine, 3 (three) no. of live Chinese grenade, 4 (four) nos of Rocket launcher, 22(twenty two) nos. of live ammunition, 9 (nine) pairs of Army fatigue dress, 3 (three) pairs of hunting shoe and 3 (three) numbers of Haversack containing huge quantity of incriminating documents of AANLA organization/Medicines/Mobile charger etc. were recovered and seized. In this connection, Sarupathar PS registered a case vide case No. 20/07 U/S 120(B)/353/307 IPC R/W Sec. 25(1)(A)/27 Arms Act and  $\frac{3}{4}$  ES Act. Shri Kamal Kr. Gupta, APS, fired 46 ( forty six) rds. from AK-47 Rifle, S.I. Ruhindra Nath Changmai fired 10 (ten) rds from his 9 mm pistol, S.I. Naba Kr. Borah fired 82 ( eighty two) rds from AK-47 Rifle, Constable Dhiraj Choudhury fired 30 ( Thirty) rds from AK-47 Rifle and Constable Soda Tisso fired 26(twenty six) rds from his SLR in the encounter.

In this encounter S/Shri Kamal Kumar Gupta, Sub Divisional Police Officer, Ruhindra Nath Changmai, Sub Inspector, Naba Kumar Borah, Sub Inspector, Dhiraj Choudhury, Constable and Soda Tisso, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 4<sup>th</sup> March, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 65—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Assam Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

1. **Ashim Swargiary,**  
**Additional Superintendent of Police**
2. **Bir Bikram Gogoi,**  
**Additional Superintendent of Police**
3. **Biraj Mohan Borooah,**  
**Deputy Superintendent of Police**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 03.11.2006 at around 0500 hrs. acting on a secret information indicating presence of 8/10 heavily armed ULFA militants in a makeshift camp in the paddy field of Hunghungia village under Moran P.S. Shri Ashim Swargiary, APS, Addl. S.P. (Hqrs), Dibrugarh alongwith the Shri Bir Bikram Gogoi, APS, Addl. S.P.(B) Dibrugarh, Shri Biraj Mohan Borooah, APS, Dy. S.P. (HQ), Dibrugarh, the 2I/C 165 Bn CRPF and other Assam Police and CRPF personnel launched a three pronged cordon and search operation in Hunghungia village for apprehension of the ULFA militants who had been camping there for launching attacks on security forces and extorting money from the public. While the operation was in progress, the police & CRPF party came under sudden and heavy automatic fire from the ULFA militants holed up in the makeshift camp. The Police & CRPF army returned the fire and a fierce encounter ensued. On the western flank the police party came under heavy fire from a Universal Machine Gun, which was fired by an ULFA militant from a makeshift bunker located on an earthen mound near the camp. As a result, the police party on this flank who had no cover or protection in the freshly harvested portion of the paddy field, was completely pinned down by the machine gun fire which was fast closing into them with increasing accuracy thereby jeopardizing the lives of several policemen who had to watch helplessly as the machine gun fire inched towards them. At this point, paying scant regard to their own personal safety, Shri Ashim Swargiary, APS, Addl. S.P. (Hqrs), Dibrugarh, Shri Bir Bikram Gogoi, APS, Addl. S.P.(B) Dibrugarh and Shri Biraj Mohan Borooah, APS, Dy. S.P. (HQ), Dibrugarh stood up, fixed the bayonet on their service AK-47 Assault Rifle and fired continuously with it from the hip position, and charged towards the machine gun bunker running all the while. Unable to bear the ferocity of the three officers who had charge, the ULFA militants with the UMG and comrades fled the position. Thereby the machine gun was silenced and the lives of several policemen were saved from



certain massacre, Shri Ashim Swargiary, APS, Addl. S.P. (HQrs) and his accompanying Police & CRPF personnel could go ahead further with the operation which culminated successfully with the killing of three hardcore ULFA militants including 1) SS SGT. Major Charan Majhi 2) SS Corporal Jitul Phukan and 3) one unidentified militant and the recovery of huge quantity of arms, ammunitions and explosives.

In this encounter S/Shri Ashim Swargiary, Additional Superintendent of Police, Bir Bikram Gogoi, Additional Superintendent of Police and Biraj Mohan Borooah, Deputy Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 3<sup>rd</sup> November, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 66–Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Assam Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICER**

**Shri Jayanta Kalita, Sub Inspector**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 8<sup>th</sup> August, 2006 based on a secret information about possible shelter and movement of KLNLF ( Karbi Longri N.C. Hills Liberation Front- An underground extremist organization) cadres in and around Tongklok area a search operation was conducted under the Command of Shri Montu Thakuria, APS, Dy. SP, Commando Bn. Accompanied by SI Jayanta Kalita and other Commando personnel in that area falling under Howraghat P.S. of Karbi Anglong Dist. from 9 AM in Civil dress. The Police team was moving on foot, in civil dress acting as insurgents since movement in uniform invites attention by informers of the insurgents who alert them at their hideout foiling the attempts of security agencies. After search of Metikhole village, the police team had entered the Hari Chandra English village and commenced search of house located on either side of the village by-lane. During search at about 0950 hrs., as SI Jayanta Kalita alongwith C/199 Ali Md, Talukdar followed by Dy. SP Shri

Montu Thakuria and C/349 Numal Roy entered the gate of the house of one Shri Kaniya Bey, when they suddenly confronted with 3 armed militants of KNLf sitting in courtyard, who fired with sophisticated arms at SI Jayanta Kalita and started to run away towards near by paddy behind the house. Immediately the recommendee, with his sheer courage chased them and fired at them, the personnel accompanying him unable to fire since recommendee was in front of them in the narrow entry lane to courtyard. The recommendee was unaware of the fact that the fourth extremist was hiding to the left of him in a shed and that extremist fired 4-5 rounds at SI Jayanta Kalita with his 9mm Pistol and the recommendee came under direct fire from this fourth extremists from a distance of merely 7-8 mtrs. Despite the fact that he was under direct line of fire, the recommendee exhibited raw courage and great presence of mind and reflex action and turned left and fired a burst at the extremist from his AK-47 Rifle, killing him on the spot. However in his minor loss of time, the other 3 militants managed to escape in the paddy field behind, although they were chased by the remaining staff who had gathered at the encounter site. From the spot, one 9 mm pistol with 3 Rds. live ammunitions in magazine, was recovered and 3 empty cases and 2 misfired ammns were also found and seized. The deceased was later identified as Sanjoy Terang, S/O Shri Den Terang, vill Rongkut Sobaikro Gaon, Loringthepi, PS- Howraghat, a senior ranking Sergeant Major of the KNLf organization. This refers to Howraghat PS case No. 89/06 registered on basis of FIR submitted by Dy. SP Montu Thakuria.

In this encounter Shri Jayanta Kalita, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 8<sup>th</sup> August, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 67—Pres/2008- The President is pleased to award the 1<sup>st</sup> Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Jammu & Kashmir Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICER**

**Shri Shabir Ahmad, Inspector**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On a specific information generated by SSP Anantnag regarding presence of terrorists in Goanchai Jungle, Aishmuqam, an operation was launched by the nafri of Police Station, Aishmuqam, SOG Hqr's Srigufwara/ Anantnag on 04/10/2006. During search operation terrorists opened indiscriminate fire upon the police party. The police party retaliated the fire. While the terrorists were kept engaged by retaliating firing occasionally, Inspector Shabir Ahmad alongwith a few police personnel of Police Station Aishmuqam crawled from opposite direction and reached near the spot. Terrorist noticing the police personnel coming from opposite direction fired upon them. Inspector Shabir Ahmed, showing presence of mind and acumen retaliated the fire which resulted in killing of two foreign dreaded terrorists of "A" and "B" category namely Abu Maz @ Muzamil R/o Pakistan (Operational Commander LeT) and Abu Qasim R/O Pakistan (District Commander LeT), besides recovery of arms and ammunition. The neutralization of these dreaded terrorists was a big blow to LeT outfit and the dreaded terrorists were active since long and were involved in number of killings/ IED blasts/ grenade throwings/ extortions/ atrocities on civilians/ recruitment/ motivator etc. Case FIR No.65/2006 U/s 7//25 A. Act has been registered in P/S Aishmuqam. In this operation Inspector Shabir Ahmed No. 4040/NGO, Constable Gh. Ahmed No.1482/A, Constable Showkat Ahmed No.1883/A and Constable Zakir Hussain No.388/IR 3<sup>rd</sup> received injuries.

In this encounter Shri Shabir Ahmad, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1<sup>st</sup> Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 4<sup>th</sup> October, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 68—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- 1. Nissar Ahmad,  
Assistant Sub Inspector**
- 2. Dewan Chand,  
Head Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On specific information generated by Police Pulwama regarding presence of some terrorist of HuM outfit in village Reshipora P/S Zainapora, an operation was carried out on 22.04.2007 in the said village. A police party led by ASI Nissar Ahmad, NGO of Police Camp Litter rushed to the said village and cordoned the house where terrorists were hiding. Terrorists on spotting the police party, kept the inmates of the house as hostages, did not allow them to move out from the house and hurled hand grenades followed by indiscriminate firing on police party. The police also retaliated the fire in a way that no harm was caused to the family members and all family members were rescued by the police party. Meanwhile, ASI Nissar Ahmad tightened the cordon around the house. While taking appropriate cover, ASI Nissar Ahmad, NGO and HC Dewan Chand crawled towards the target house, without caring for their personal safety. On spotting the terrorists there, the police party came closer to the house and eliminated two dreaded terrorists of HuM outfit who were later on identified as:-

- a) Rayees Ahmad Teli S/o Ali Mohd R/o Kadigam.
- b) Reyaz Ahmad Ganie S/o Gh Mohd R/o Safanagri

The slain terrorists were involved in civilian/security forces killings and weapons snatching. Following arms/ammunitions were also recovered from the place of encounter:-

- a) AK 47 Rifle - 02 No.
- b) AK Mag - 04 No.
- c) AK Amn. - 136 rds. etc.

In this encounter S/Shri Nissar Ahmad, Assistant Sub Inspector and Dewan Chand, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22<sup>nd</sup> April, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 69—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

S/Shri

1. Jasbir Singh,  
Sub Inspector
2. Chain Singh,  
Sub Inspector

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 24.01.2006, at about 1600 hrs, on receipt of reliable information regarding the presence of some dreaded terrorists in Dholkian area (near Jhandi Ziarat) of PP Pouni, about 15 KM away from Police Post Pouni, an operation was planned and launched by SI Jasbir Singh, I/C PP Pouni and SI Chain Singh I/C Ops. Group Pouni in coordination with Army (54 RR). Two ambushes were laid on the suspected route of the terrorists. One ambush party was headed by SI Jasbir Singh, I/C PP Pouni along with SI Chain Singh I/C Ops. Group Pouni and other ambush party was laid by the Army. At about 1930 hrs, some suspected movement was noticed by SI Jasbir Singh & SI Chain Singh, heading 1<sup>st</sup> ambush party. SI Jasbir Singh then challenged them to halt and prove their identity. But instead they started indiscriminate firing over the operational party with the intention to kill them. SI Jasbir Singh and SI Chain Singh along with others swung into action and retaliated the fire. A fierce gun battle took place between the terrorists and the ambush party. After identifying the direction from where the terrorists were firing, SI Jasbir Singh divided his ambush party into two groups first group headed by himself and second group headed by SI Chain Singh and further directed the first group to zero in the cordon and second group to give continuous covering fire. The terrorists who were still firing indiscriminately lobbed grenade over the operational party. SI Jasbir Singh, SI Chain Singh and other members of their groups had a narrow escape. Then SI Jasbir Singh in close coordination with SI Chain Singh bravely came close to the terrorists, without caring for their lives and shot dead one hardcore foreign

terrorist whose identity was later on established as Abdul Gaffar Code Abu Hamza R/O Deragajikhan, Balochistan, Pakistan a District Commander of LET. Meanwhile the other injured terrorist who jumped towards the other ambush party of Army, was chased and shot dead there, whose identity was later on established as Shabir Ahmed S/O Ghulam Hussain R/O Karrag Tehsil Kotranka Distt, Rajouri. Both the ambush parties remained at the site of encounter till morning and at first light thorough search of the area was carried out. The following recoveries were made from the site of encounter:-

- Rifle AK-Series : 02 nos.
- Mag of AK Series : 08 nos.
- Amn of AK Series : 140 nos.
- Grenades : 05 nos.
- Satellite phone : 01 no.
- Wireless Set : 01 no.
- Mobile phone : 01 no.

In this connection, a case FIR No.16/2006 dated 25./01.2006 U/S 307/120-B/121-A/RPC, 7/27 A. Act stands registered at P/S Reasi. Both of the slain dreaded terrorists were involved in number of heinous offences and were wanted by Rajouri and Reasi Police.

In this encounter S/Shri Jasbir Singh, Sub Inspector and Chain Singh, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24<sup>th</sup> January, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 70—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- 1. Randeep Kumar,  
Deputy Superintendent of Police**
- 2. Bushan Singh Manhas,  
Sub Inspector**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 4 September, 2006 at 2000 hours, on receipt of specific information about the presence of dreaded terrorist Mohd Rafiq @ Wasim @ Billu Gujjar District Commander Gool, Ramban of HM outfit at village Manglogi Sangaldan, Shri Randeep Kumar, Dy.SP (Ops) Gool alongwith troops of STF and NCA launched operation in village Manglogi (Sangaldan) and cordoned the area by 2300 hrs. The terrorist who was hiding in a house, when came to know about the cordon, came out of house and took position in nearby maize field. When the team headed by Shri Randeep Kumar, Dy.SP (Ops) Gool tried to move closer towards the maize fields, he opened indiscriminate firing and lobbed a grenade. Though the party retaliated fire yet it was very difficult to know exact location of terrorist hiding in maize fields especially during the night hours. Therefore entering the maize field was a difficult task as the terrorist was firing from inside. Dy.SP Randeep Kumar alongwith SI Bushan Singh Manhas, devised a strategy and asked the troops to keep the terrorist engaged from one side. Showing courage and operational expertise both the officers entered the maize field from other side and shot the terrorist dead. The following recoveries were made:-

- |                      |            |
|----------------------|------------|
| (i) AK 47 Rifles     | - 01 No.   |
| (ii) A K Mag         | - 03 Nos.  |
| (iii) A.K.Amn        | - 60 rds   |
| (iv) Satellite Phone | - 01 No.   |
| (v) Diaries          | - 02 Nos   |
| (vi) Letter Pad HM   | - 05 pages |

In this encounter S/Shri Randeep Kumar, Deputy Superintendent of Police and Bushan Singh Manhas, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 4<sup>th</sup> September, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 71-Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Jharkhand Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICER**

**Shri Matin Ansari, Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 18/05/2005 evening the O/C Nimiyaghat P.S. SI Parmod Pandey got the information from his higher formations that a meeting of banned armed leftist M.C.C.I. Outfits was expected in the night of 18/19-05-2005 in the adjoining forest near village Chandankurba under Nimiyaghat P.S. Soon, after making an entry No.370 dtd. 18/05/2005 in Station Diary, he discussed the matter with Sri Arun Kumar Singh, Addl. SP. Giridih. Arun Kumar Singh, Addl. SP Giridih, after discussing the initial plan with the O/C, came to Nimiyaghat in the night itself and chalked out a detailed plan meticulously to nab the extremists. He formed two groups of the police personnel and decided to surround the village from Northern and Southern sides respectively. The first police party i.e. Team No.-1 was led by Arun Kumar Singh, Addl SP Giridih, with SI Pramod Pandey, SI Sunil Kumar Chaudhri of Nimiyaghat P.S. and SI R.K.Dwivedi of Dumri P.S. alongwith constable, 137 Sanjay Kumar, Hav, Ramdeo Pingua, C/1027 Shravan Kumar, C/1012 Arjun Prajapati, C/1022 Ram Saran Sao. C/112 Umesh Kumar Paswan, C/379 Matin Ansari, Sri H.K.Bagassi, A.C., CRPF alongwith his CRPF personnel. This team was to go through village Naglo, Pargo, Tilaiya, to Chandnkurba, a distance of approximately 11 K.M.on foot. This was the attacking team. The second police party i.e. Team No.-2 was comprising of SI Nanha Topno, O/C Pirtand P.S., ASI Srikant Singh of Nimiyghat P.S., Inspector Prem Gurung of J.A.P.-1 alongwith two platoons of JAP-1, STF. In case of any encounter this team had to lay out an ambush in the forest near village Makan, the way of the possible retreat of the extremists. This was the defence team. Both teams started at about 0300 hrs for their destination. After travelling nearly two hours on foot and covering nearly 08 K.M. cross country and through forest roads the Team No.-1 led by the Addl.SP near Pargo-Tilaiya School, spotted some 12-13 persons from a distance of nearly 01 K.M. Among them 3-4 persons were seen



in olive green uniform and all were travelling cross country in the comparatively thin forest area. Soon the binoculars were used and it was ascertained that they were M.C.C.I. outfits. Obviously 3-4 persons could be identified in olive green uniform and all of them were carrying long firearms. The able command of the Addl.SP motivated the police party to lay a long size of the extremists. The Addl. SP immediately decided to form three groups of the police party to lay that long size. One group was led by the Addl.SP himself and SI Pramod Pandey, alongwith Havildar Ramdeo Pingua, Constable Sanjay Kumar, Shravan Kumar, Arjun Praja Pati, Ram Charan Sao, Umesh Kumar Paswan and Matin Ansari. Another group was led by Shri H.K.Bagassi, Asstt. Comdt, CRPF and his CRPF personnel. Third small group was led by SI Sunil Kumar Chaudhary and SI R.K.Dwivedi and few constables. All the three groups immediately followed the extremists from different directions. Soon, after being chased, the extremists also visualized the situation and began to open fire on the police party. Now there was no scope for confusion. The Addl.SP also ordered to open fire and continued chasing them. All the three chasing police parties were in contact with each other on R.T.set. The extremists were taking the advantage of the bushy forest and rocks to protect themselves. The police party, led by the Addl.SP moved in an extended line towards the hillock and could see an extremist in olive green uniform opening fire behind a rock from a small hillock. The extremist had the advantage of the height and the bushy forest and was undoubtedly in a better secure position whereas the police party was in the open field without sufficient cover. The Addl SP showed real leadership and extraordinary courage and without caring for his own life continued advancing with SI Pramod Pandey and C/379 Matin Ansari and laid a siize behind that hillock from some distance. He came under heavy fire from the extremist as soon as he reached near the hillock. He motivated his party by personally leading the charge on the hillock. That extremist, after sensing it, changed his direction of fire and soon a bullet passed beside the Addl. SP. The Addl SP with only one officer and one constable, without caring for their lives, continued firing. C/379 Matin Ansari, after a while, confirmed that he had seen his bullet hitting that extremist. The firing, which was going on at intervals, stopped at 0615 hrs. After visiting the spot the team saw a dead body in olive green, profusely bleeding there. A regular .303 rifle No.63767 M having butt No.C.R.P.-2326 with 6 rounds in the magazine and 44 rounds in a pouch with charger and 7 empty rounds of .303 were found scattered beside the dead body. A khakhi colour haversack, with so many items and Rs.3.500/- cash which has been described in the seizure list, was also found. SI Pramod Pandey fired 05 rounds from his service pistol and constable Matin Ansari fired 04 rounds from his rifle. By that time, the other team, led by the CRPF Asstt. Comdt, who, while chasing the extremists, had traveled nearly 1.5 KM away from that point, informed on R.T.Set that an extremist was also hit by his bullet somewhere in

the leg but he managed to escape. After visiting that place of occurrence, irregular fresh blood stains in nearly 100 Mts, long distance were found and it was extended upto a gorge. The blood stains were sufficient to prove that some of the extremists were injured. This courageous charge of the police party shattered the morale of the extremists. They began fleeing away towards the other side of the hillock. They were forced to leave the body of their dead comrade alongwith their weapons, cash, many bags and a number of other items. After taking stock of the whole encounter area, besides one regular .303 rifle No.63767 M, 50 rounds live .303 cartridges, Rs.10,080/- in cash, many video and audio naxal cassettes, naxal literature in huge quantity, four haversacks, medical kits, olive green and khakhi uniforms, several items were seized which have been described in the seizure list as a part of FIR. The encounter lasted for about 45 minutes and altogether 46 rounds from the police side and nearly 25-30 rounds from the extremists side were fired. This was possible because of the extraordinary valour, leadership, grit and determination of the Addl. SP and the very small party with him. He, without caring for his life, continued to advance and secured the success with the minimum use of force. An FIR No.34/2005 dt. 19/05/2005 u/s 149/353/307 IPC, 25 (1-b), a/26/27/35 Arms Act, 17/18 C.L.A. Act, 13 U.A.P. Act under Nimiyaghat P.S.has been registered. Subsequent investigation and supervision of the case by the SP, Giridih, on that very day, confirmed the conclusion. Blood stains were found at many places around the encounter side on the hillock. Names of at least 12-13 extremists, who were involved in the incident, have come into light in the primary investigation. The extremist killed has not been identified as yet, but on the basis of the tattoo on his right forearm, it appears that his name is "ESRAD KHANTU".

In this encounter Shri Matin Ansari, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19<sup>th</sup> May, 2005.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 72-Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/ 1<sup>st</sup> Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Madhya Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- |    |                                 |                                    |
|----|---------------------------------|------------------------------------|
| 1. | <b>Adarsh Katiyar,</b>          | <b>(PMG)</b>                       |
|    | <b>Deputy Inspector General</b> |                                    |
| 2. | <b>Sajid Farid Shapoo,</b>      | <b>(1<sup>st</sup> Bar to PMG)</b> |
|    | <b>Superintendent of Police</b> |                                    |
| 3. | <b>Ramkishan Singh Gurjar,</b>  | <b>(PMG)</b>                       |
|    | <b>Sub Inspector</b>            |                                    |

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

In the evening of 16.4.2007 an intelligence input was received that Rambabu Gadaria along with his gang members would come to Kaner Jungle to meet his relatives and was likely to commit a carnage in the adjoining Dangra village. On receipt of this important input Shri Adarsh Katiyar DIG Gwalior and SP Shivpuri Shri Sajid Farid Shapoo reached Shivpuri at around 1200am in the night where they discussed the intricacies of the operation. The entire force was divided into five parties. Party No. 1 was led by IG Gwalior with SI R.K.S. Gurjar, while party No. 2&3 were headed by DIG & SP respectively. Party No. 1,2,&3 were main assault parties SO Bhonti Shri O.P. Tantwar led party 4 & Party 5 led by const. Pradeep were directed to act as cut off parties. All the five parties then moved on vehicles to village Ganguly. At Ganguly, the DIG and SP Shivpuri briefed all the parties by 0500am all the parties reached their respective ambush points. At about 0830 hrs party No. 1 led spotted three dacoits moving towards Kaner Kho. The dacoits were asked by party No. 1 to surrender, but no sooner did they notice the police movement; the dacoits opened a barrage of fire on the police party. Had it not been for the proper cover, the party No. 1 would have suffered causality. This party had a miraculous escape. At this moment party No. 2&3 was instructed to fire in self-defense. The dacoits began moving towards the left side of the trench; here party No. 2 led by Shri Adarsh Katiyar intercepted them. The dacoits started firing incessantly at party No. 2 led by DIG Shri Adarsh Katiyar & SI R.D. Mishra had a hairline escape but in spite of all this Shri Katiyar exhorted his men to fire at the dacoits. In the meanwhile party No. 3 led by SP Shivpuri tried to surround the dacoits from the right side but the latter being on a vantage point saw the movements & opened a volley of fire on party No. 3. The quick, skillful

and timely movements made by SP Shivpuri, Shri Shapoo & his team saved their lives and brought them back from the jaws of death. The retaliatory fire by party No. 3 made the dacoits to move towards the dense jungle of Kaner hill. Seeing this IG Gwalior instructed his parties to move towards the hill. This was an extremely dangerous & disadvantageous position for the police parties because they were climbing the hill and dacoits were at a vantage position. But all the three party leaders showed exemplary grit, determination and true leadership qualities and started moving towards the hill. After about half an hour of searching, the police parties suddenly came under a barrage of fire. The three party commanders & their men threw themselves on the ground and started firing back. But the dacoits being on the higher ground were well entrenched and it became impossible for the police parties to move ahead. But without moving ahead it was not possible to contain or neutralize the dacoits. The whole situation started sending nervous signals amongst the police personals. Seeing their men plunging into a darkness of low morale and self confidence, the party commanders knew that it was time for them to rise to the occasion and defeat the death. True leaders are those who turn an impossible into a possible and this was exactly what the party commanders did. The three party commander i.e. Shri Singh, Shri Katiyar, Shri Shapoo took the momentous decision and showing unparalleled courage and rare bravery, they began moving ahead and retorted their men to advance. Seeing their leaders plunging into the face of near of imminent death, a new vigor got infused into them (Policemen), they rallied behind their leaders. All three parties continuously fired at the dacoits and moved ahead. The whole scenario was turning in favour of Police. The parties stealthy moved ahead and were engaging the dacoits. At this juncture Shri R.K.S. Gurjar, SI of Party No. 1 exhibited unparalleled courage and fearlessness in opening retaliatory fire in self defence. In the ensuing battle one dacoit got hit and he fell on the ground. The other two dacoits began withdrawing into the dense jungle and the police parties chased them. But the terrain and geographical knowledge of the area helped the fleeing dacoits and they disappeared into the dense jungle. After the firing stopped, on searching the hideout one dead body was found wearing a T-shirt and jeans pant. A .315 bore mouser rifle with a .315 round in chamber was recovered near the body. The dead body had two bildoria wrapped around his waist which had 37 rounds of .315 bore. Another .315 bore rifle was recovered at a distance of 14 feet from the dead body. A black bag that contained the belongings of daily use along with empty cartridges was also recovered. The slain dacoit was identified as Rambabu Gadaria s/o Kunj Lal Gadaria R/o Harsi, Gwalior, who was carrying a reward Rs. 5 lacs, declared by State Govt.

In this encounter S/Shri Adarsh Katiyar, Deputy Inspector General, Sajid Farid Shapoo, Superintendent of Police and Ramkishan Singh Gurjar, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/ 1<sup>st</sup> Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17<sup>th</sup> April, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 73-Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Maharashtra Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICER**

**Shri Babasaheb Dnyandeo Adhav,**  
**Sub Inspector**

**(Posthumously)**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 17/10/2006 at 0800 hrs on 18/10/2006 at around 0811 hrs Shri Babasaheb Dnyandeo Adhav, Sub-Inspector received a telephonic message from Thane and Navi Mumbai Control Room that the gang of dacoit, armed with deadly weapons have entered in the building premises of the Punjab and Maharashtra Co-operative Bank Ltd. Situated at Sector No.8, Airoli, in the jurisdiction of Rabale Police Station. Without wasting time and keeping presence of mind PSI Late Babasaheb Dnyandeo Adhav, who was Station House Officer, immediately rushed to the said bank alongwith Police Head Constable/1158 Karde in a Police vehicle at 0816 hrs. When they reached the gate of the said bank, they did not notice any suspicious activities out side the bankgate as it was early morning time. As soon as PSI late Babasaheb Dnyandeo Adhav and Head Constable Karde entered the bank, they had to grapple with the armed dacoits just behind the main door of the bank. Keeping presence of mind, PSI Late Babasaheb Dnyandeo Adhav tried to open fire through his service pistol, but unfortunately the dacoits suddenly and brutally attacked him. One of the dacoits shot at him by revolver due to which PSI Adhav got seriously injured. The dacoits later on made good their escape. The officer made supreme sacrifice on duty while grappling with dacoits at Punjab and Maharashtra Co-operative Bank, Airoli. Action taken by PSI Late

Babasaheb Dnyandeo Adhav is a rare example of bravery, devotion to duty and shows presence of mind due to which bank employees were saved and the dacoits ran away with empty hands and could not loot the bank.

In this encounter (Late) Shri Babasaheb Dnyandeo Adhav, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18<sup>th</sup> October, 2006.

BARUN MITRA

Joint Secy.

No. 74—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/4<sup>th</sup> Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Manipur Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- 1. Thokchom Krishnatombi Singh, (4<sup>th</sup> Bar to PMG)  
Inspector**
- 2. Chingtham Anandkumar Singh, (PMG)  
Sub Inspector**
- 3. Ningthoujam Sanajaoba Singh, (PMG)  
Assistant Sub Inspector**
- 4. Thounaojam Herojit Singh, (PMG)  
Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 12.02.07, SP Imphal West received intelligence reports at about 11p.m. that a well armed group of about 15/20 strength of PREPAK cadres were lurking around Taothong village along the Imphal-Kangchup road with the objective of laying ambush on the polling and security personnel proceeding along this route. On receipt of the above information SP/Imphal West detailed a special commando team led by Shri Th. Krishnatombi Singh, Inspector and O/C Commando Unit, Imphal West and SI Ch. Anandkumar to clear the area and also provide protection to the polling parties and security personnel proceeding there. Thus, Shri Th. Krishnatombi and his party left District Headquarter, Imphal West in the night of 12.2.2007 for the said area. In the course of the mission, Inspector Th. Krishnatombi Singh and SI Ch. Anandkumar proceeded

up to the area of Taothong village. On nearing the area, Inspector Krishnatombi alerted his personnel to be extra-vigilant. Accordingly, SI Ch. Anandkumar Singh and some of the commando personnel positioned themselves on the western side of one Cinema hall while a few selected commando personnel under the command of Inspector Krishnatombi Singh conducted frisking/search operation on the main road. In the meantime, one white Maruti Gypsy, that too numberless, was noticed coming along the road at high speed from the western side. Though taken by momentary surprise at the appearance of the numberless vehicle ( Maruty Gypsy), Inspector Th. Krishnatombi Singh, in view of the suspicious movement of the vehicle, immediately alerted his men and he signaled and shouted to stop the vehicle, ordering the occupants to alight from the vehicle by raising their hands up. Instead, the occupants refused to budge and remained still in the vehicle thereby indicating their readiness to do something that posed security threat to the commandos. Inspector Krishnatombi Singh and his party were in a do or die situation in which they could neither take position and fire nor move away. At this critical juncture, Inspector Krishnatombi Singh jumped onto the front seater, and tried to overpower him. The front seater, all of a sudden brandished a loaded lethod gun and was about to trigger it off. While Inspector Krishnatombi Singh caught hold of his hand in this tough fight, ASI Sanajaoba Singh supported and pulled down the youth from the vehicle holding his neck. ASI Sanajaoba Singh also removed one Chinese hand grenade from him before he tried to explode it. Another youth sitting in the front vehicle was also overpowered by him. Thus , Krishnatombi and Sanajaoba succeeded in removing the lethod gun and Chinese hand grenade from the youth. In the meantime, SI Anandkumar Singh and Constable No. 0101031 Th. Herojit who came rushing towards the vehicle caught sight of the occupants in the rear seat taking out sophisticated weapons- One AK-56 Rifle and One U.S. Carbine- in their abortive attempt to fire against and eliminate the commandos. Sub.Insp. Ch. Anandkumar and Const. Herojit Singh in a split of second pounced upon the youths sitting in the rear seat of Gypsy. While Sub-Insp. Ch. Anandkumar engaged himself in close fight with the youth holding AK-47 Rifle ( Who was in the left side of the rear seat), Constable Herojit reacted against the youth holding U.S. Carbine and engaged him in a tough fight for sometime and restrained the youth from firing out from the weapon by his gallant act. He also succeeded in overpowering the youth holding the AK-56 rifle and thus saved the lives of other Commandos. Constable Herojit also managed to overpower the youth holding U.S. Carbine. Had not SI Anand and Herojit acted swiftly with courage, the Commandos might have got casualties. Thus, ultimately, the brave commandos mentioned hereinabove who were well-experienced in such manhunt operation acted in such a brave and swift response that the well-armed militants could hardly carry out anything before they were overpowered by the commandos. After overpowering them, the commandos conducted physical frisking of the vehicle as well as their person. On

verification, the following arms and ammunition were recovered:-

- (i) 1 (one) - Lethod gun
- (ii) 5 (five) - Lethod bombs
- (iii) 1 (one) - Chinese hand grenade
- (iv) 1 (one) - US Carbine marked as “ 877067” with one empty mag.
- (v) 1 (one) - AK-56 Rifle and 2 ( two) magazines with 15 rds. each.
- (vi) 1 (one) - White Maruti Gypsy ( Numberless).

All the arms and ammn. mentioned above are serviceable.

The militants were later on identified as:-

- (i) Langpoklakpam Binoy Singh @ Lakpa (31) s/o L. Rajdhon of Kongjeng Leikai, s/s 2nd Lt. of PREPAK.
- (ii) Paulun Zou @ Ruben ( 19 years), s/o Pumkhanthang Zou of Churachandpur New Zou Veng, a hard core member of Zou Defence Volunteer ( an allied UG outfit of PREPAK).
- (iii) Ginkhansiam Zou ( 27 years) s/o Khupkhotuan Zou of Sugnu Zou Veng, an active meber of ZDV.
- (iv) Laishram Tomba Singh ( 33 years) s/o late L. Joy Singh of Chairen Makha Leikai, a hard core member of PREPAK.

In this encounter S/Shri Thokchom Krishnatombi Singh, Inspector, Chingtham Anandkumar Singh, Sub Inspector, Ningthoujam Sanajaoba Singh, Assistant Sub Inspector and Thounaojam Herojit Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/ 4<sup>th</sup> Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12<sup>th</sup> February, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.



No. 75—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Manipur Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/SHRI**

1. **K. Paukhenthang,**  
**Jemadar**
2. **O.Premananda Singh,**  
**Assistant Sub Inspector**
3. **S. Shyamo Singh,**  
**Rifleman**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 08.02.2007 at about 7.20 pm, a reliable information about the presence of well armed militants in Lamlai bazaar, with intention to ambush security personnel and also disturb the ongoing election process by way of attacking the candidates and their escort personnel was received. The information further states that they are threatening the general public with dire consequences. If they come out during election campaigning and voting etc. On receipt of the information, a special operation was planed and dispatched seven teams of commando unit of Imphal East district, under the command of the then Inspector M Mubi Singh, O/C Commando Imphal East unit along with the teams of Jemadar Paukhenthang, SI Riaz Khan, SI Y Oken Meetei, S.I. P Achouba Meetei, ASI O. Premandanda Singh and ASI Md. Iqbal Khan all of CDO/IMphal unit. On reaching Sawombung Kabui villge, two kilometers short of Lamlai bazaar as planned., the teams were separated into three groups and approached Lamlai bazaar tactically from three different side. Insp. Mubi Singh, SI Riaz Khan and Jem. Paukhenthang approached from the main road on the Imphal-Ukhrul road, SI Y Oken Meetei and ASI O.Premanand Singh approached from the eastern side of the road through the paddy field, S.I. P Achouba Meetei and ASI Md. Iqbal Khan approached from the western side of the paddy field, Inspector K. Dhananjoy Singh, O/C Lamlai PS was covering on the north eastern side of Lamlai bazaar to cut-off the escape route on the northern side. On reaching Lamlai bazaar, the police party led by Insp. Mubi Singh was heavily fired upon from the market shed and a dustbin located on the eastern side of Imphal Ukhrul road at Lamlai bazaar,. The police party immediately ducked and lay flat on the surface as well as behind the houses/shops located on the roadside. Jem. Paukhenthang and Rfm/No. 0799006 S. Shyamo Singh, with an AK rifles each retaliated immediately towards the market shed. After the swift retaliation there was a lull for about 2/3 minutes. Meanwhile, ASI Premananda and his party holding an AK rifle each,

who were covering from the eastern paddy field reached the southern side of the market shed saw 2/3 armed persons running at the same time firing towards the police party eastward on the inter village road (IVR), leading to the hill. He immediately fired towards them and the armed persons escape routes were cut off. On the other hand Jem. Paukhenthang and Rfm. Shyamo crawled ahead partly covered by a cemented dustbin, suddenly both of them saw 2/3 armed militants pointing and firing their arms towards them. They immediately ducked and lay flat on the surface. The bullets were flying just 2/3 inches away from them. Jem. Paukhenthang covered by Rfm. Shyamo, at the risk of losing his own life still lying on the ground, covered partly the Ranjoy Hair Modeling shop and the elevated portion of the road retaliated and one armed militants was killed at the spot. Again there was a lull for about 5/6 minutes. Then heavy firing came from the eastern hillside, taking advantage of the firing from the hill side, the armed militants escaped from the market shed. They were pursued by ASI Premananda and his team, the militants fired at them indiscriminately, they also retaliated and a trail of blood was seen on the I.V road leading to the hills. Sudden heavy downpour and power snapped deterred the movement of the police party and further operation against them. The encounter lasted for about 15 to 20 minutes. After the encounter was over, the area was thoroughly search and one militant was found dead with bullet injury and one AK-56 rifle loaded with 6 live rounds in one magazine and another magazine in the pouch with 7 live rounds was found beside the dead body. He was later on identified as one Sanasam Amarjit Singh (22) s/o. S.Meino of Wangoo Awang leikai, a hard core armed cadre of prescribed Peoples Liberation Army (in short PLA). During further search another person was found dead with bullet injury inside the Ranjoy, Hair Modeling shop, opposite to the market shed on the western side of Imphal-Ukhrul road. Lamlai Bazar. He was identified as a civilian namely, Ashangbam Shyamehand Singh (27) s/o A. Shyamkeshore of Lamlai Challou. He died due to the firing from the armed militants. It refers to case FIR No. 13 (2) 07 Lamlai police station u.s 121/121/-A/307/34 IPC and 20 UA (P) Ammndt. Act 2004, read with 25 (I-C) Arms Act.

The following arms and ammunitions were received from the spot:-

- (i) One AK-56 Rifle with magazines : loaded with 6 live rounds and 7 live round each
- (ii) A camouflage magazine pouch.

In this encounter S/Shri K. Paukhenthang, Jemadar, O. Premananda Singh, Assistant Sub Inspector and S. Shyamo Singh, Rifleman displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 8<sup>th</sup> February, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 76-Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Manipur Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

S/Shri

1. Thokchom Jayanta,  
Sub Inspector
2. Khundrakpam Birachandra Singh,  
Constable
3. Maku Thamba Maring,  
Constable
4. Tongbram Shyam Singh,  
Constable

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 14.07.2007 a credible and actionable intelligence report was received that some well-armed militants suspected to be members of a valley based U.G. outfit were loitering in and around Bamdiar-Khabam village (under Bishnupur District) with intention to carry out subversive activities prejudicial to the security of the state like ambush on police/security forces etc. On receipt of the said intelligence input, in the wee hours of the day. i.e. Around 0200 hrs, a combined team of Police commandos of Imphal West District led by Shri M Mubi Singh, Dy SP and Inspector Th. Krishnatombi Singh and 22 Maratha Light Infantry under Major Javed, rushed to the said area to launch a manhunt operation. The combined team proceeded from Imphal along Tiddim Road towards the said area. On reaching the periphery of bamdiar village, the combined team spread out in different directions after proper briefing and made cordon of the area within a radius of about one km. surrounding the village. The village, being virtually surrounded by paddy fields all around, had large and prous boundary having advantage for militants to escape. The search operation started around 0440 hrs. after the cordon was laid. The army personnel were manning the outer cordon on the eastern side of the suspected area while the commando team led by S.I. Th. Jayanta Singh backed by Major Javed proceeded towards the middle of the paddy field from the eastern side along a palli (ride of ¾ feet width). The rest of the commando teams under the command of Shri M. Mubi Singh and Inspector Th. Krishnatombi Singh were making hectic

efforts to check probable escape routes of militants all around the village by moving in the lanes and by-lanes of the village. Thus, at about 0445 hrs, when the commando personnel led by Sub-Inspector Th. Jayanta Singh and a column of 22 Maratha Light Infantry under Maj Javed were proceeding towards thick bush area in the centre of the paddy field, a sudden heavy firing came from the area from a range of about 100 meters. Immediately, SI Th. Jayanta Singh who was in the forefront of the advancing team closely followed by Constable Th. Herojit, Constable Kh. Birachandra Singh, and Constable M Thamba Maring and Constable T. Shyam ducked and lay flat on the muddy paddy field for a momentary coverage behind the ridge and at the same time retaliated. Major Javed and his team who were right behind the CDO team gave firing coverage. Thus taking advantage of covering fire from the Army personnel, Sub-Inspector Th. Jayanta Singh and his team of commando crawled towards the militants who were firing heavily from the bushy area. Because of the slushy paddy fields, the commandos were in adverse situation in their close fight with the militants who were well ensconced in their hide-out bush. But, ultimately, the militants unable to face the determined acts of the commandos retreated and ran towards a deep nullah (drain) in their last resort to find a safer place. At this critical juncture, Sub-Inspector Th. Jayanta Singh, and the four constables named above went all out against the militants. In the midst of the heavy encounter, Constable Th. Jerojit Singh, and Constable Kh. Birachandra Singh engaged one of the militants near the bamboo grove bush and shot dead one of the militants. One AK-56 Rifle loaded with one magazine containing 12 rounds of AK, one empty magazine of AK, and one (1) magazine of AK-56 rifle containing 28 rounds of AK ammunitions were recovered from the spot. Sub-Inspector Th. Jayanta Singh, Constable T. Shyam and Constable M. Thamba Maring engaged the other two militants along the nullah (drain) and after a fierce encounter shot dead the remaining two militants. One AK-56 Rifle, fitted with one magazine containing 6 rounds of Ak, one empty magazine of AK, one magazine of AK-56 with 24 rounds of AK ammunitions, one M-14 Rifle fitted with one magazine were recovered from the two militants..

They were later on identified as

- (1) Ingudam Chaoba @ Luwnag, s/o I. Kulla Singh of Mayang Imphal Konchak;
- (2) Naorem Mukesh @ Chinglen @ Leikaikanba, s/o N. Kesho Singh of Kakching Wairi kha; and
- (3) Thangjam Jotish @ Yaima, s/o Th. Romesh Chandra of Agartala, Tripura,

All of them belong to fighting group of the unlawful outfit "People Liberation Army (LPA)".

The deceased militants were also later on identified as the prime accused in case FIR No. 96 (7) 07 CCP PS u/s 376/34 IPC, 25 (1-C), A. Act, 3 (1) (b) SC/ST P.O. Act and 20 UA (P) Act by the victim and other witness.

In this encounter S/Shri Thokchom Jayanta, Sub Inspector, Khundrakpam Birachandra Singh, Constable, Maku Thamba Maring, Constable and Tongbram Shyam Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14<sup>th</sup> July, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 77—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/ 1<sup>st</sup> Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Manipur Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

S/Shri

- |    |  |                              |
|----|--|------------------------------|
| 1. | Moirangthem Mubi Singh,<br>Deputy Superintendent of Police | (PMG)                        |
| 2. | Ahongsangbam Tomba Singh,<br>Sub Inspector                 | (1 <sup>st</sup> Bar to PMG) |
| 3. | Pebam John Singh,<br>Sub Inspector                         | (1 <sup>st</sup> Bar to PMG) |
| 4. | Muipuinamei James Thangal,<br>Sub Inspector                | (PMG)                        |
| 5. | Oinam Keshor Singh,<br>Constable                           | (PMG)                        |
| 6. | Sanasam Kiran Kumar Singh,<br>Constable                    | (PMG)                        |

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 22.9.07 at about 08.06 A.M., a reliable information was received that one Maruti car bearing No. MN- 1K/3069, silver in colour, had been hijacked from Lamshang area by  $\frac{3}{4}$  unknown armed youths. Immediately, on receipt of the said information, Commandos of Imphal West District comprising parties of SI A. Tomba Singh, SI M. James Thangal and SI P. John Singh under the

overall command of Shri M. Mubi Singh, Dy. SP, GO-in-charge of Commando unit, Imphal West District rushed to Lamshang area. The Army post of 22-Maratha Light Infantry located at Patsoi was also informed to rush in as reinforcement and also to cut-off possible escape routes on Lambal, Tera Urak, Lamlongei and Koutruk villages. SI P. John, closely followed by SI A. Tomba Singh proceeded to Lamshang Bazar via Phayeng village. After about 5 minutes of reaching Lamshang Bridge, the hijacked Maruti car was coming from Imphal side and was signaled to stop. But the occupants suddenly fired upon the commandos from automatic weapons and sped away further towards the western side along Lamshang-Phayeng road. The commandos immediately retaliated and made a hot pursuit of the militants. However, on reaching the road crossing of Lairenkabi village, the militants veered the Maruti car towards the north and proceeded towards Tera Urak village via Lairenkabi village. At the same time, the commando team of Shri M. Mubi Singh along with SI M. James Thangal also made a hot chase on the fleeing armed youths through another by lane of Tera Urak. At about 09.30 A.M. the armed militants on reaching Lamlongei village, abandoned the Maruti car near a paddy field and ran towards Koutruk foothill splitting themselves in different directions through the vast muddy paddy field known as "Lamlongei Maning Shamutabi Loubuk". The armed militants resorted to indiscriminate firing on the pursuing commando teams from their automatic weapons. As the paddy field was muddy and full of grown-up paddy and running drains, it proved advantageous to the militants, thereby making the hot chase more risky to the police personnel. Meanwhile, the commando team led by SI P. John and SI A. Tomba closing-in on the heels of the militants amidst the paddy field sighted two militants inside the canal of the paddy field, at a distance of about 50/60 meters away. Suddenly, one of the militants with an AK rifle jumped out from the canal and fired at the advancing commandos. SI P. John also reacted swiftly and fired at the militant injuring him. In spite of his injury, the militant continued firing at the police commandos, however sustained retaliation from C/No. 0601099 Keshor Singh resulted in his instantaneous death. At the same time, SI A. Tomba Singh and C/No. 0601009 S. Kiran Kumar, who were diverted a little to the left side, saw another militant running on the left side towards a canal in an abortive attempt to escape along the canal was challenged and shot dead after defying the challenge. On search of the encounter site, one AK-56 rifle loaded with 15 live rounds and another 7 empty cases of ammunitions were recovered from the spot. The 2 deceased were later on identified as (i) Konthoujam Indra Singh @ Mahadeva (25), s/o K. Ibocha Singh of Lambam Awang Leikai and (ii) Loitonjam Raju Singh (30), s/o L. Lukhoi Singh of Wangkhei Tokpam Leikai, hardcore members of Red Army, PREPAK, a banned organization. On the other hand, Shri M. Mubi Singh along with SI M. James Thangal and C/No. 0601192 Th. Rabi Singh pursued the 2 other armed youths, who were running towards

Koutruk foothill on the north-west of the canal. As the commandos were getting close, the armed militants stop running, took position on a nullah, and started firing towards the commandos. After about 10 minutes of fierce encounter, the militants retreated and ran along the canal. On reaching an elevated portion of the canal as their cover, the militants started firing again towards the pursuing commandos. Shri M. Mubi Singh and SI M James Thangal moved ahead crawling while constables Th. Rabi Singh and constable Aziz Khan gave covering fire. At this critical moment, Shri M. Mubi Singh and SI M James Thangal, both well experienced officers in the field of CI Ops, exhibited their raw courage and moved ahead crawling on their chest. As soon as they saw one of the armed militants raising his weapon again to fire at them, the two officers simultaneously fired from their AK assault rifles and one of the armed militants was killed at the spot. The other armed youth managed to escape towards the Koutruk hillocks, taking advantage of the thick paddy plants. On search of the encounter site, one AK -56 rifle loaded with 13 live rounds, one magazine and 8 empty cases of AK ammunitions were recovered near the dead body. Later on, the deceased was identified as one Gurumayum Nilachandra Sharma @ Ngangong (28), s/o G. Gopal Sharma of Uripok Huidrom Leikai, s/s Captain of PREPAK, an outlawed terrorist organization. Further it was found that the deceased was involved in a series of heinous crime and arrested many time in following cases (1) FIR No. 252(4)96 , (2) FIR No. 620 (11)96 IPS, (3) FIR No. 310(10)02 IPS and (4) FIR No. 114(04)07 IPS. Thereafter the combined team recovered the abandoned Maruti car, silver in colour bearing Regd. No. MN. 1K/3069, Regd. Certificate and 3 empty cases of AK ammunitions inside the Maruti car from Lamlongei village.

In this encounter S/Shri Moirangthem Mubi Singh, Deputy Superintendent of Police, Ahongsangbam Tomba Singh, Sub Inspector, Pebam John Singh, Sub Inspector, Muipuinamei James Thangal, Sub Inspector, Oinam Keshor Singh, Constable and Sanasam Kiran Kumar Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/ 1<sup>st</sup> Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22<sup>nd</sup> September, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 78—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Manipur Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- 1. Shougrakpam Chandrakumar Singh,  
Sub Inspector**
- 2. Oinam Meghachandra Singh,  
Constable**
- 3. Yuno Thekho,  
Constable**
- 4. Ningthoujam Sanaton Singh,  
Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 3.10.2007 at about 8 pm a reliable information that some well-armed insurgents/terrorists were loitering in and around the village Bamdiar with intention to carry out ambush on police/security forces likely moving on NH-150 i.e. Tiddim Road at any opportune moment. Immediately, on receipt of this source information, the commando party of S.I. Sh. Chandrakumar Singh under the supervision of Inspector Th. Krishnatombi Singh, O.C. Commando Unit, Imphal West District accompanied by a column of 22 Maratha L.I under Maj. Javed rushed to the aforesaid area to launch a manhunt operation at about 8.30 pm. Proceeding along NH -150 and reaching road crossing known as Bamdiar Lamkhai, the combined team marched towards Bamdair village along the inter-village road with the commando party of SI Sh Chandrakumar Singh in the front vehicle, followed by the party of Inspector Th. Krishnatombi Singh and the troops of Army in the rear. While the front vehicle boarded by SI Sh. Chandrakumar and party was advancing towards the Bamdiar village along the I.V. road at a distance of about 600 metres from the Bamdiar Lamkhai, a group of militants fired upon the commandos from two sides of the I.V. road using sophisticated weapons. Being night, darkness prevailed, that posed security hazard to the commandos who were exposing themselves on the road. Immediately, SI Chandrakumar Singh and his men jumped out of their vehicle and at the same time retaliating the heavy shower of bullets from the militants, the commandos bifurcated themselves on both sides of the road. Unmindful of the personal safety, SI Chandrakumar, Constable O. Meghachandra Singh on the right side of the road and Constable Yuno Thekho, Constable N. Sanaton Singh on the left side, pursued and advanced forward with crawling against the militants with incessant firing, thereby ensuing a lively encounter. Inspector Th



Krishnatombi Singh with his men as well as the Army personnel gave covering fire. Unable to withstand the forceful drive of the commandos, the militants started retreating. Since the militants pervaded themselves and running in the vast paddy field fully covered with paddy plants and nullahs, the commandos faced a lot in pursuing the fleeing militants. Thus, with strategic movement and approach, SI Sh Chandrakumar Singh being a well-experienced hand in such counter-insurgency operation led his men in the fierce encounter and continued to chase the militants who were running towards Bamdiar village. Ultimately, SI Chandrakumar Singh Constable Meghachandra Singh succeeded in killing one of the militants who was later on identified as Thongam Gandhi @ Tomba Singh, 26 years, s/o ( Late) Th. Ibomcha Singh of Khurai Kongpal, PS Porompat, hard core activist of the proscribed underground outfit “ Kangleipak Communist Party” ( KCP). The individual was a trained PREPAK activist in 1997, arrested in 1997. He joined UNLF in 2000 under Army No. 1204 and then he joined KCP. He was involved in many insurgency related cases involving heinous crimes. One AK-56 Rifle loaded with 21 live rounds of ammn. and two magazines were recovered from him. On the other hand, Constable Yuno Thekho and Constable 911098 N. Sanaton Singh fought the militants running on the left side of the inter village road with unstinted courage and bravery. Since the location happened to be well-muddy and uneven surface, they were facing a lot of problems in fighting the militants, that too, under the cover of darkness. Ultimately, they could eliminate one of the militants who was later on identified as Longjam Thoicha Singh @ Ingba, 24 years, s/o L. Budhi Singh of Samurou Makha, PS Wangoi, a hard-core activist of KCP. Joined UNLF in the year 2003, the individual was involved in many heinous crimes in the State relating insurgency and he had been arrested twice as UNLF and KCP. He was responsible for large scale extortion from businessmen in Imphal area for KCP. One 9mm Pistol loaded with 3 live rounds of ammn. ( in a magazine ) were recovered from him. Presumably, the underground members involved in the encounter was estimated to be 5/6 persons. The remaining militants managed to escape towards Bamdiar village under the cover of darkness.

In this encounter S/Shri Shougrakpam Chandrakumar Singh, Sub Inspector, Oinam Meghachandra Singh, Constable, Yuno Thekho, Constable and Ningthoujam Sanaton Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 3<sup>rd</sup> October, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 79—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/ 5<sup>th</sup> Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Delhi Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- |    |                                      |                                    |
|----|--------------------------------------|------------------------------------|
| 1. | <b>Ajay Kumar,</b>                   | <b>(PMG)</b>                       |
|    | <b>Deputy Commissioner of Police</b> |                                    |
| 2. | <b>Mohan Chand Sharma,</b>           | <b>(5<sup>th</sup> Bar to PMG)</b> |
|    | <b>Inspector</b>                     |                                    |
| 3. | <b>Ravinder Kumar Tyagi,</b>         | <b>(PMG)</b>                       |
|    | <b>Sub Inspector</b>                 |                                    |
| 4. | <b>Dalip Kumar,</b>                  | <b>(PMG)</b>                       |
|    | <b>Sub Inspector</b>                 |                                    |

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 08/05/2006 a specific information was received at Special Cell/NDR, Delhi that two Pak trained LeT militants namely Firoz @ Abdullah and Mohd. Ali, who had recently acquired a consignment of explosives sent by Azam Cheema @ Baba (LeT operational chief of India) through Gujarat border, would be coming to Delhi in Golden Temple Express train and alight at Hazrat Nizamuddin Railway station. On the basis of this information, the team of Special Cell laid a trap at Nizamuddin Railway station and at about 7 pm apprehended Feroz Abdul Latif Ghaswala @ Abdullah and Mohammed Ali Chhipa @ Ubedullah alongwith 4 kgs of RDX, 4 detonators and cash Rs. 50,000/-. During interrogation, the arrested militants disclosed that they had to deliver the recovered consignment to their Pak national associate namely Mohd Iqbal @ Abu Hamza r/o Bahawalpur, Pakistan, an "Operational Commander of LeT" in India. They further disclosed that Mohd Iqbal @ Abu Hamza had been active in J&K from 2000-2003 and involved in dozens of terrorist operations with armed forces causing many casualties to armed forces in J&K. They had to meet Abu Hamza near main gate, Jawahar Lal Nehru stadium, Delhi at about 9 pm wherein he would come there in a white Santro car bearing No. 4457. Immediately, a strong team led by Mr Ajay Kumar, the then DCP/Special Cell, consisting of ACP/Sanjeev Yadav, Inspr Mohand Chand Sharma, SI Ravinder Kumar Tyagi, SI Dalip Kumar, Inspector Badrish Dutt, Inspector Sanjay Dutt, SI Rahul Kumar, SI Bhoop Singh, SI Vinay Tyagi, SI Kailash Bisht, SI Pawan Kumar, SI Ramesh Lamba, SI Ashok Sharma, SI Dharmender, ASI Satish

Kumar, ASI Vikram, ASI Sanjeev Lochan, HC Satender, HC Rajbir Singh, HC Vijender, HC Krishna Ram, HC Rustam, Ct. Rajender, Ct. Balwant, Ct. Gurmeet, Ct. Iqbal, Ct. Nisar and Ct. Rajeev, equipped with proper arms/ammunitions was formed. The team members were distributed in small teams and deployed on suspected routes arriving towards main gate of JLN stadium and escape routes to apprehend the militant. The area was also cordoned systematically to avert the civilians' casualty. The advanced party consisting of Shri Ajay Kumar/the then DCP, Inspr. Mohan Chand Sharma, SI Ravinder Kumar Tyagi and SI Dalip Kumar took their position at the place, round-about close to the main gate of stadium. At about 9.15 pm, a white Santro car having number plate HR-29L-4457 came from CGO complex, Lodhi road side and stopped near the round about closed to the main gate of stadium and a man came out from the car and stood on the pavement near the car. The arrested accused Feroz Abdul Latif Ghaswala @ Abdullah identified him as his associate Mohd Iqbal @ Abu Hamza. Immediately, the advance party consisting of Shri Ajay Kumar/DCP, Inspr. Mohan Chand Sharma, SI Ravinder Kumar Tyagi and SI Dalip Kumar alerted other staff and warned the desperado Mohd Iqbal @ Abu Hamza to surrender before the police party. On hearing the loud of surrender, Abu Hamza, immediately whipped out fire arm and look around and seeing the movement of police party towards round-about, ran towards the pump house side while firing indiscriminately towards round-about on advance party and took his position in dry drain near the iron fencing of the stadium. The raiding party again warned this foreign terrorist to surrender but he didn't pay any heed to the warning of raiding party and again opened fire with his automatic weapons upon raiding party to inflict casualty and escape in the cover of darkness.

The desperado Mohd Iqbal @ Abu Hamza continued firing targeting towards the police party. The advanced party led by Shri Ajay Kumar, the then DCP/Special Cell, Inspr. Mohan Chand Sharma, SI Ravinder Kumar Tyagi and SI Dalip Kumar also fired in retaliation from their automatic weapons to avert casualty of team members. The other team members also gave covering fire from back side to advance party. The firing from both sides continued for about 20 minutes and in the bid of escape, the foreign terrorist sustained bullet injuries. When the firing from militant side stopped, the advanced party approached towards the Pak militant and found him lying injured. The injured militant was immediately removed to AIIMS hospital wherein he was declared brought dead. The slain militant had fired over 20 rounds upon police party from his automatic pistol. The team of Special Cell also fired 44 rounds to overpower this dreaded militant. During investigation, 2-AK-56 Assault Rifles,

6-magazines of AK rifles, 179 live rounds of AK Rifle, 10 live handgrenedes, 4 Kgs of RDX explosive, 5 Kgs of PETN Explosive (plastic explosive), 4 Electronic Detonators, 1-Star pistol of .30 calibre with two spare magazines, One Thuraya Satellite phone, 1-Bundolier for 10 handgrenades, Chemicals as 3 Kgs of Urea, 3 litres of Nitric Acid filled in 6 bottles, 1 litre of Glycerin, Diaries containing the numbers of LeT Commanders operating from Pakistan and other Indian contacts of LeT outfit, their targets in India for terrorist activities etc., 1-Computer fitted with monitor, CPU and internet, cash Rs. 50,000/-, fake driving licence and 1-Santro car were seized from the personal possession/hideout of slain militants from rented room at Jagdish Colony, Ballabgarh, Haryana wherein he was living with fake name & identity of Rajesh Kumar to conduct terrorist activities in Delhi and satellite cities. During investigation it was revealed that the slain militant Mohd Iqbal @ Abu Hamza r/o Mohalla Abbasian, Multan Road, Bahawalpur Pakistan was sent in India by LeT Chief Operation Commander for India in Pakistan namely Azam Cheema @ Baba r/o Bahawalpur Pakistan in India as Operational Commander. The slain militant was a desperate member of LeT outfit. As per information, the slain militant Mohd Iqbal @ Abu Hamza was also District Commander of LeT in Poonch and Rajouri sectors of Jammu and Kashmir from the year 2000 to 2003, therein he was responsible for dozens of terrorist attacks upon army, BSF, CRPF causing casualty to armed forces.

The slain militant Mohd Iqbal @ Abu Hamza had made his base in Ballabgarh, Haryana in a rented house at 441/9, Jagdish Colony, Ballabgarh, Haryana since long and residing therein by fake name of Rajesh Kumar. He had procured fake Driving Licence, purchased a Santro car and other things with fake name & identity. He had procured huge haul of arms, ammunitions and explosives for serial explosion in National Capital Region as well as Gujarat and Maharastra. This is the maximum recovery of explosive etc. in NCR from any terrorist outfit. He had made a vast network in India with the help of arrested Pak trained militants namely Feroz Abdul Latif Ghaswala @ Abdullah r/o Mumbai (Maharastra) and Mohd Ali Chipa @ Ubedullah r/o Ahmedabad (Gujarat). Later, two more militants of this LeT outfit namely Umar and Tasso were arrested in Ahemdabad with huge haul of explosive materials.

A case under appropriate sections of laws was lodged in this regard at PS Lodhi Colony, New Delhi.

### **INDIVIDUAL ROLE OF OFFICERS**

#### **SHRI AJAY KUMAR-the then DCP/SPECIAL CELL**

In this operation, Shri Ajay Kumar, the then DCP led the police party and took his position at vulnerable point adjacent to round-about. He warned the

militant to surrender before police party. The militant did not respond to the warning of surrender and immediately moved around, noticed the movement of Shri Ajay Kumar near round-about and started firing towards Shri Ajay Kumar. One of the fired bullets passed close to daredevil DCP. Shri Ajay Kumar immediately ordered the raiding party to take safe position and alongwith advance party gave retaliatory fire. The desperado continued firing upon police party to escape and causing casualty. The raiding party also continued replying to the fire of desperado. Shri Ajay Kumar fired 4 rounds from his service pistol causing bullet injury to the desperado. The injured militant continued indiscriminate firing upon raiding party members. Shri Ajay Kumar and other raiding party members again fired upon this terrorist and after long exchange of fire of over 20 minutes, the firing from militant side stopped. Shri Ajay Kumar remained in the front without caring his life and closely monitored the entire operation as well. Shri Ajay Kumar has shown the acute presence of mind, sense of valour and firm determination that stood him in good stead and he was able to retaliate in the face of such grave danger to his life and personal safety. This is undoubtedly, a gallant act and a unique example of leadership under most difficult circumstances worth emulation. Very few officers can withstand such a grave situation and Shri Ajay Kumar has proved that he is one of them. This gallant act of Shri Ajay Kumar needs to be recognized.

#### SHRI MOHAN CHAND SHARMA, INSPECTOR

Inspector Mohan Chand Sharma had his position at vulnerable point near round-about. He alongwith the then DCP/Ajay Kumar and ACP/Sanjeev Kumar Yadav warned the militant to surrender. When the militants opened fire towards round-about indiscriminately on the police party, one of the fired bullet of militant passed close to Inspector Mohan Chand Sharma. He took his position along round-about and daringly confronted with LeT militant who kept on changing his position and continued firing upon police party. Inspector Mohan Chand Sharma fired 5 rounds from his service pistol in self-defence and to protect the lives of the members of the police team. In this encounter, if Inspector Mohan Chand Sharma not shown presence of mind, he would have fallen prey to the shots of slain militant like a pigeon in his hole. It was his exemplary courage and an attitude of no care for safety of his life that made him a real winner. He remained in the front without caring his life and closely monitored the entire operation as well. Inspector Mohan Chand Sharma has showed acute presence of mind, sense of valour and firm determination during encounter. He has showed a gallant act and a unique example of leadership under most difficult circumstances worth emulation. Very few officers can withstand in such grave situation but Inspector Mohan Chand Sharma has proved that he is one of them. This gallant act of Inspector Mohan Chand Sharma needs to be recognised.

### SHRI RAVINDER KUMAR TYAGI, SUB-INSPECTOR

SI Ravinder Kumar Tyagi alongwith the then DCP/Ajay Kumar, ACP/Sanjeev Kumar Yadav, Inspector Mohan Chand Sharma and SI Dalip Kumar was in advance party who had the position near round-about of stadium gate. When the militant did not pay any heed to the warning of raiding party and opened fire towards raiding party, one of the fired bullets of militant passed close to this daredevil SI. When the militant was firing indiscriminately towards raiding party, SI Ravinder Kumar Tyagi took lying position on the road, covered himself with pavement height and fired closely upon militant causing bullet injuries to militant. SI Ravinder Kumar Tyagi fired 4 rounds from his service pistol causing bullet injuries to militant. SI Ravinder Kumar Tyagi endangered his life for the safety of his team members and displayed a gallant act of the highest order during encounter with hardcore foreigner LeT terrorist.

### SHRI DALIP KUMAR, SUB-INSPECTOR

When the militant opened fire indiscriminately towards police party and jumped in dry drain to take position to fire upon police party to escape, SI Dalip Kumar immediately took his position in the park adjacent to round-about and gave retaliatory firing from right side to check the escape route of militant. The militant fired towards SI Dalip Kumar but a narrow escape for this daredevil SI. SI Dalip Kumar daringly confronted with this LeT militant and disregard to his personal safety, ignoring all the dangers to life undeterred and unfazed fired 4 rounds closely from his service pistol in self-defence causing bullet injuries to the terrorist. SI Dalip Kumar endangered his life for the safety of his team members and displayed the most personal bravery and gallantry of the highest order on the face of terrorism

In this encounter S/Shri Ajay Kumar, Deputy Commissioner of Police, Mohan Chand Sharma, Inspector, Ravinder Kumar Tyagi, Sub Inspector and Dalip Kumar, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/ 5<sup>th</sup> Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 8<sup>th</sup> May, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 80—Pres/2007- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Orissa Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- 1. Tophan Bag,  
Sub Inspector**
- 2. Bankanidhi Nayak,  
Deputy Subedar**
- 3. Ambika Prasad Patra,  
Constable**
- 4. Aditya Ranjan Dash,  
Constable**
- 5. Dharmendra Samal,  
Constable**
- 6. Ajay Kumar Rao,  
Constable**
- 7. Mana Mohan Munda,  
Havildar**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 03.07.2006 morning Superintendent of Police, Deogarh received reliable information that a group of 11-armed CPT (Maoist) cadres had visited Ranigola Village on 2.7.2006 night and organised a meeting at gunpoint and proceeded towards Jharpur side. To verify this information a detailed tactical plan was prepared and police parties were sent to the jungle. The officers and force available were divided into three assault teams. Sub-Inspector Tophan Bag led one assault team Deputy Subedar Banka Nidhi Nayak led another assault team, Constable Ambika Prasad Patra, Constable Aditya Ranjan Dash, Constable Dharmendra Samal, Constable Ajay Kumar Rao and Havildar Mana Mohan Munda were in the front of the teams. They walked for about 4 kms. through the dense forest and mountain under heavy downpour of rain. After reaching the bushy forest area near village Ranigola, they started combing the area from all directions in a very hostile terrain. Shri Tophan Bag, Sub-Inspector noticed a group of Maoists in olive green uniform and carrying rifles in the jungle near Asurkhol. Shri Tophan Bag, Sub-Inspector & Banka Nidhi Nayak, Deputy Subedar were leading the two assault teams quickly prepared a tactical plan for neutralizing the Maoists. Shri Tophan Bag led the team from the left flank and Shri Banka Nidhi Nayak, Deputy Subedar led the team comprising of S/Shri Ambika Prasad Patra, Constable, Aditya Ranjan Dash, Constable, Dharmendra Samal, Constable, Ajay Kumar Rao, Constable and

Mana Mohan Munda, Havildar from the right flank. Shri Tophan Bag, Sub-Inspector asked the Maoist group to surrender in a clear and loud voice. But the Maoist group opened fire from automatic weapons like SLR, Carbines, AK-47 and 303 Rifles. The assault team led by Shri Banka Nidhi Nayak comprising Ambika Prasad Patra, Constable, Aditya Ranjan Dash, Constable, Dharmendra Samal, Constable, Ajay Kumar Rao, Constable and Mana Mohan Munda, Havildar advanced with available cover courageously unmindful of the hail of bullets being showered on them by the Maoist and retaliated the fire in self defence. Shri Tophan Bag leading the other team from the front advanced tactically, retaliated the fire and prevented the escape of the Maoist group from left unmindful of the grave danger to his life. This fierce exchange of fire continued for nearly 30 minutes and resulted in killing of four dreaded Maoist cadres one of whom is the Secretary of the Zonal Committee. Two police personnel received minor injuries in this operation. After the cease fire the police party searched the area and found four male dead bodies of Maoists one of whom is Tofan @ Sushant Meher, Secretary of the Zonal Committee. They were involved in series of cases of Maoist violence and were absconding. Two SLR Gun with loaded magazines, three 303 rifles with loaded magazines and one 12 bore SBBL gun with the live round alongwith 80 rounds of live 7.62 mm SLR ammunitions in total, 60 rounds of live 303 ammunitions in total, 7 rounds of 12 bore ammunitions, one detonator, nine nos. of kit bags, important documents/Maoist literatures/books throwing a lot of light on their organization, cadres and future plans etc., cash of Rs.2505/- and huge quantity of personal belongings were recovered from the scene of exchange of fire. This is subject matter of Deogarh P.S. Case No.223 dt.03.07.2006 u/s 147/148/121/121-A/122/122-A/124/307/149 IPC 25/27 Arms Act / 4 & 5 explosive Substance Act. This classic and fine encounter is one of the most successful encounter with armed cadres of S.D.S. Zonal Committee of the CPI (Maoist) in which casualty has been inflicted on them with recovery of huge quantity of arms and ammunitions. The intelligence input subsequent to this encounter clearly indicated the almost total decimation of the Area Committee of the S.D.S. Zonal Committee of the PLGA operating in Deogarh and adjoining Kuchinda Sub Division of Sambalpur District. This successful operation had dealt a body blow to the CPI (Maoist) movement in the Orissa in general and in Central Orissa in particular and restored public confidence. The determination, bravery, courage, a sense of purpose and devotion to duty shown by Sub-Inspector Tophan Bag led one assault team Deputy Subedar Banka Nidhi Nayak led another assault team, Constable Ambika Prasad Patra, Constable Aditya Ranjan Dash, Constable Dharmendra Samal, Constable Ajay Kumar Rao and Havildar Mana Mohan Munda in leading this successful anti-naxalite operation from the front unmindful of the grave risk to their lives raised the morale of the force to a great height and brought laurels to the Orissa Police.



In this encounter S/Shri Tophan Bag, Sub Inspector, Bankanidhi Nayak, Deputy Subedar, Ambika Prasad Patra, Constable, Aditya Ranjan Dash, Constable, Dharmendra Samal, Constable Ajay Kumar Rao, Constable and Mana Mohan Munda, Havildar displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 3<sup>rd</sup> July, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 81-Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Uttar Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/SHRI**

1. **Pradip Kumar Singh,**  
**Head Constable**
2. **Rizwan,**  
**Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

At 1830 hours on 21.7.2007, information about the location of the Chhota Patel gang, a sub-gang of the dreaded gang of IS-112 Shiv Kumar @ Dadua was brought to the police party by an informer. On this they reached near village Kushmuhi at about 2030 hours, laid an ambush at a suitable place and waited for the dacoits. After some time 12-14 persons were seen coming from the jungle side. On approaching, when challenged, dacoits started indiscriminate firing on the police personnel with an intention to kill. Left with no option the STF team also fired back in self defence in a controlled manner. HC Pradip and Ct. Rizwan left their cover to effectively fire on the gang which was firing on the police party and showed extra ordinary courage and devotion to duty resulting in a tremendous success. On careful search of the area 4 dead bodies were found. They were of 1. Chhota Patel who carried a reward of Rs. 20,000/- from DGP, 2. Phool Chandra @ Dhangu 3. Sarman and 4. Kodauwa. One factory made rifle .315 bore, One DBBL gun 12 bore Factory made, One rifle .315 bore Country made, One Country made pistol .315 bore, 62 live cartridges and 17 empty shells

of .315 bore, 08 live cartridges, 22 empty shells of 12 bore and a huge quantity of articles of daily use were recovered.

In this encounter S/Shri Pradip Kumar Singh, Head Constable and Rizwan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21<sup>st</sup> July, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 82—Pres/2008- The President is pleased to award the 1<sup>st</sup> Bar to Police Medal for Gallantry/ Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Uttar Pradesh Police: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- |    |  |                                    |
|----|--|------------------------------------|
| 1. | <b>Amitabh Yash,</b>                       | <b>(1<sup>st</sup> Bar to PMG)</b> |
|    | <b>Senior Superintendent of Police</b>     |                                    |
| 2. | <b>Anant Deo,</b>                          | <b>(1<sup>st</sup> Bar to PMG)</b> |
|    | <b>Additional Superintendent of Police</b> |                                    |
| 3. | <b>Hrishikesh Yadav,</b>                   | <b>(PMG)</b>                       |
|    | <b>Inspector</b>                           |                                    |
| 4. | <b>Anil Kumar Singh,</b>                   | <b>(1<sup>st</sup> Bar to PMG)</b> |
|    | <b>Inspector</b>                           |                                    |
| 5. | <b>Abhay Pratap Mall,</b>                  | <b>(PMG)</b>                       |
|    | <b>Sub Inspector</b>                       |                                    |
| 6. | <b>Manoj Kumar Chaturvedi,</b>             | <b>(PMG)</b>                       |
|    | <b>Head Operator (Mechanic)</b>            |                                    |

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

Mr. Amitabh Yash, SSP STF and his team consisting of Addl. SP Anant Deo, Inspr. AP Anil Singh, Inspr. CP Hrishikesh Yadav, SI Abhai Pratap Mall, HO (Mechanical) Manoj Chaturvedi along with 16 other police men were camping Manikpur Forest guest house. They had orders to bring the notorious IS - 112 Shiv Kumar @ Dadua gang to justice. This gang has created terror and subverted democratic institutions and halted development process for more than

three decades. At 5.30 AM on 22.07.2007, the information about the location of the gang was brought to the team by an informer. The team moved to the location, a thick thorny bushy jungle on undulating terrain and managed to make contact with the gang, aided by the informer and GPS locator, being handled by HO (Mechanical) Manoj Chaturvedi. They were confronted with heavy automatic and semi automatic fire. Exhortations to the gang for surrendering only brought abuses and more fire. The gang located at a tactically advantageous higher ground, rained effective fire on the STF team. Under grave danger to their lives, Mr. Amitabh Yash, SSP STF, decided to crawl near the gang location and throw grenades. SI Abhai Mall was instructed to provide cover fire. Amitabh Yash, Anant Deo, Anil Singh and Hrishikesh Yadav crawled up to 30 yards of the gang which was doing indiscriminate firing and hurled grenades. This broke the resistance of the surviving gang members who fled using the cover of undulating ground and thick bushes.

On careful search of the area 6 dead bodies were found. They were of 1. Shiv Kumar @ Dadua (Reward Rs. 5,00,000/- from govt. of UP and Rs. 25000/- from govt. of MP), 2. Angad @ Sugriv (Reward Rs. 50,000/- from govt. of UP and 10 thousand from govt. of MP), 3. Sukhchain (Reward Rs. 5000/- from UP and 15000/- from MP) along with 4. Baba @ Babulal, 5. Babli Kol D/O Sukhram, and 6. Ram Dulare s/o Satya Narain. Recoveries included one .375 Magnum rifle, one .3006 semi automatic rifle and 449 cartridges of various bores and large number of empty shells, mobile phones, SIM cards and items of daily use.

In this encounter S/Shri Amitabh Yash, Senior Superintendent of Police, Anant Deo, Additional Superintendent of Police, Hrishikesh Yadav, Inspector, Anil Kumar Singh, Inspector, Abhay Pratap Mall, Sub Inspector and Manoj Kumar Chaturvedi, Head Operator (Mechanic) displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1<sup>st</sup> Bar to Police Medal/ Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22<sup>nd</sup> July, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 83–Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Assam Rifles: -

**NAME & RANK OF THE OFFICER**

**Shri P. Vishiho,  
Rifleman**

**(Posthumously)**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

G/5002213F Late Rifleman General Duty P Vishiho was part of a operational column under Captain Sukhjit Singh comprising of one JCO and 12 Ors tasked to carry out seek and destroy for 48 hours outside the battalion area of responsibility in a thickly forested and remote area of Jaminglong on night 09 may 2007 from the company operating base, Mandai. G/5002213F Late Rifleman General Duty P Vishiho, a daredevil young soldier member of the company special operation team volunteered to be the leading scout of the column. The individual unmindful of the treat to his own personal safety and well being led the column to village Jaminglong where the column deployed tactically on night 10 may 2007. At approximately 1920 hours, the sentry Rifleman General Duty Chitrasen Debbarma observed suspicious move of four armed terrorists moving towards their direction. He immediately rushed to alert Capt. Sukhjit Singh. Late Rifleman/GD P Vishiho who was besides the officer, immediately exhibiting raw courage and nerves of steel rushed out followed by Capt Sukhjit to engage and eliminate the terrorists. The brave soldier was however, hit by a burst bullets fired by the terrorists who had by then closed in on the column. The gallant soldier battled with death for three hours till he succumbed to his injuries while being evacuated to the hospital.

In this encounter Shri (Late) P. Vishiho, Rifleman, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10<sup>th</sup> May, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 84—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Assam Rifles: -

**NAME & RANK OF THE OFFICER**

**Shri Harendra Singh Negi,  
Havildar**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 06 Feb 2007, Havildar General duty Harendra Singh Negi was detailed by Major Netra Bahadur Rokaha, Adjutant, 39 Assam Rifles to lead one of the search parties during Cordon and Search operations in village Saching. On 07.02.2007, at about 0515 hours, Havildar Harendra Singh Negi, and his party started search of the village. During the house to house search, at about 0630 hours, the other search party under Major Netra Bahadur Rokaha came under heavy volume of fire from Manipuri People Army and NSCN(K) militants. Havildar Harendra Singh Negi immediately swung into action and rushed to the spot, through a large number of villagers, Havildar Harendra Singh Negi, displaying a high degree of tactical acumen and marksmanship, returned fire effectively on the UG group, thereby neutralizing their fire, without causing injury to any civilian. Showing utter disregard to personal safety, he kept on firing on the UGs, undeterred by the heavy volume of fire coming towards him. Due to the effective fire support provided by Havildar Harendra Singh Negi, the other party closed in on the militants and in the ensuing fire fight, one hardcore NSCN(K) cadre was killed. On searching the entire area the following recoveries were made:-

- |    |                    |   |         |
|----|--------------------|---|---------|
| 1. | Explosive          | - | 04 Kg   |
| 2. | Radio Set ICOM HF  | - | 01 No.  |
| 3. | Empty case AK-47   | - | 02 Nos. |
| 4. | Handcuff with lock | - | 01 Set  |
| 5. | Magazine Pouch     | - | 01 No.  |
| 6. | Back Pouch         | - | 01 No.  |

In this encounter Shri Harendra Singh Negi, Havildar displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 7<sup>th</sup> February, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 85–Pres/2008– The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Assam Rifles: -

**NAME & RANK OF THE OFFICER**

**Shri Ramesh Kumar,  
Rifleman**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

No.G/115342A Rifleman/GD Ramesh Kumar joined the battalion after basic training on 21 October, 2003. The individual has been at the forefront of all activities and actively participated in a number of operations. On 11<sup>th</sup> March 2007 based on diligently cultivated intelligence, a joint operation was launched with local police by major Ashis Kumar Dube ex Khowai. Rifleman Ramesh Kumar was the buddy of Major Dube. While commencing the search of the target area the column was fired upon by terrorist from a raised ground. Rifleman Ramesh reacted with speed with utter disregard to his personal safety, crawled forwarded using fire and move tactics and brought down effective fire on the terrorists, alongwith Major Ashis Kumar Dube as one of the terrorist tried to lob a hand grenade Rifleman Ramesh Kumar swiftly changed his position and charged and fired on him with great speed and eliminated the terrorist. The other terrorist was eliminated by the officer. One of the slain terrorist was later identified as self styled Sergeant Kachilal Debbarma and one 9mm auto pistol with three live rounds and a Chinese grenade was recovered.

In this encounter Shri Ramesh Kumar, Rifleman displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11<sup>th</sup> March, 2007.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

---

No. 86–Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Border Security Force: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- 1. Biplab Ghosh,  
Constable**
- 2. Manish Kumar Chaudhari,  
Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 14<sup>th</sup> Nov 2006, at about 1900 hrs, Counter Terrorist Base, Sumber, of 04 Bn BSF deployed in Doda District of J&K State, received an Intelligence input regarding presence of militant's in the house of one Israil Gujjar s/o Shri Noordin Gujjar resident of Naka Sumber. Shri Rajendra Pandey, Commandant who was camping at Counter Terrorist Base, Sumber, immediately detailed a special ambush party under command of Sh R P S Rathee, Asstt Comdt, along with 01 SO and 18 other ranks. At about 1930 hrs, the ambush party fully equipped with arms and ammunition, stealthily moved towards the target area/house. Due to darkness, zig zag, slippery and steep height of the terrain, it was very difficult for the party to move towards the target house. In order to maintain surprise and negotiate the tough terrain, the troops were divided into two parties; one was led by the Shri R P S Rathee, Asstt Comdt and the other by SI Santosh Kumar. Upon reaching the target area, they took positions around the suspected house covering all the escape routes. At about 2100 hrs, Const Biplab Ghosh and Const Manish Kumar Chaudhari while stealthily crawling towards the target house, observed some suspicious movement of a person inside the house. Immediately, the Coy Comdr was informed and they challenged the suspected person, who immediately opened heavy volume of fire towards them. Since it was too dark, Const Anil Kumar C, without any loss of time illuminated the area with 51mm Mor, para bombs. In the meantime the suspected person jumped out of the house and took position behind the boulders/ bushes. Const Biplab Ghosh and Const Manish Kumar Chaudhari observed the exact position of militant behind a big boulder. It was extremely difficult for them to directly engage the militant because of darkness, cover of the boulders and bushes. On this, Const Biplab Ghosh, by exhibiting high degree of courage and professionalism crawled very close to the militant, while Const Manish Kumar Chaudhari engaged the militant by sustained firing. The militant was continuously firing towards these Constables, but risking their lives

and with utter disregard to personal safety, both the Constables crawled and reached near the place where the militant had taken position and in a quick reflex and exhibiting high degree of professional acumen and courage, they charged towards the militant and killed him in a close combat. After that, the whole area was kept cordoned off throughout the night. During search at first light, dead body of one militant was recovered from the site who was later identified as Basarat Pir alias Saifullah (aged appx 21 yrs) s/o Ashadullah Pir resident of Sumber, Tehsil, PS-Ramban, District-Doda, Comdr of Hizbul Mujahideen along with the recovery following of arms and amns and other items from the spot :-

i)	5.56mm Insas No.16515305RFI-2002 (modified after- Removing Butt, in small Size)	01
ii)	5.56mm Insas Magazine	- 02
iii)	5.56mm Insas Amn(live)	- 64
iv)	5.56MM Insas(EFCs)	- 12
v)	Chinese Grenade	- 01
vi)	Set YAESU No.5G 943664	- 01
vii)	Indian Currency	Rs.4,020/-
viii)	Amn Pouch	- 01

In this encounter S/Shri Biplab Ghosh, Constable and Manish Kumar Chaudhari, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14<sup>th</sup> November, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.



No. 87—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

- 1. Dinesh Pratap Upadhyay,  
Second-in-Command**
- 2. Udai Nath Sahu,  
Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 20/07/2005, Shri Dinesh Pratap Upadhyay, Second-in-Command, 70<sup>th</sup> battalion, CRPF and No.941261029 CT/GD Udai Nath Sahu of the same battalion, while proceeding for the reconnaissance of area and terrain between villages Gomphakonda and Tekguda of Police Station: Kalimela, District: Malkangiri (Orissa), were fired upon by the naxalites near village Kanaguda (located in the middle of the forest). Immediately, Shri Dinesh Pratap Upadhyay, Second-in-Command and CT/GD Udai Nath Sahu took position. The strength of naxalites was 10-12, but only two naxalites could be clearly seen and the others had taken position behind rocks and thick vegetation. Shri Dinesh Pratap Upadhyay, Second-in-Command, advanced tactically towards the naxalites and CT/GD Udai Nath Sahu followed him. After reaching closer to the position of naxalites, Shri Dinesh Pratap Upadhyay, Second-in-Command, fired FOUR shots rapidly at the nearest naxalite. On being hit with THREE bullets fired by Shri Dinesh Pratap Upadhyay, Second-in-Command, the wounded naxalite fell down and died, instantaneously, on the spot. Further, Shri Dinesh Pratap Upadhyay, Second-in-Command and CT/GD Udai Nath Sahu chased and fired THREE and TWO rounds respectively at the other naxalites. However, the naxalites managed to escape taking advantage of jungle and hilly terrain. In the said encounter, CT/GD Udai Nath Sahu also reacted befittingly, risking his life and had rendered the required back up during the counter-offensive actions against the attacking naxalites and forced them to retreat. One .303 Mark-IV, Bolt Action Rifle (Body No.91C3930-B) Marked "U.S. Property" loaded with seven live rounds, which was used by the killed naxalite against the aforesaid CRPF party, was seized from the place of encounter. The killed naxalite was a hardcore member of the Local Guerilla Squad (LGS) of Kalimela Dalam and had been identified as Padia Madhi alias Budura. His naxalite name was Ramesh. The dead body of the killed naxalite was taken away and disposed of by the naxalites declaring him a martyr.

In this encounter S/Shri Dinesh Pratap Upadhyay, Second-in-Command

and Udai Nath Sahu, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20<sup>th</sup> July, 2005.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 88—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Central Reserve Police Force: -

**NAME & RANK OF THE OFFICER**

**Shri Arvind Kumar,  
Sub Inspector**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On getting specific information, a joint cordon and search operation was launched from 2215 Hrs on 09.09.2006 to 1515 Hrs on 10.09.2006, by two platoons of 5 Bn, CRPF, approximately 35 Kms away from Kulgam town, South Kashmir Valley under the Command of Inspector G P Singh and Sub Inspector Arvind Kumar, under the over all supervision of Shri Santosh Kumar, AC of 5 BN CRPF alongwith elements of SOG Kulgam in the Pir Panjal Hills of Dadran village, under PS: D S Pora, District- Kulgam. After laying the cordon, two search parties were formed out of which one party was under command of No.941421525 Sub Inspector Arvind Kumar of 5 BN CRPF to carry out search. During the search operation, it was noticed by Sub Inspector Arvind Kumar that one terrorist was hiding in house of one Gull Mohammad Gors, S/O Ab Karim, R/O Dadran village. The search party led by SI/GD Arvind Kumar approached the target house very tactfully, but one being spotted by the hiding terrorist, indiscriminate fire was directed upon the approaching CRPF party. The hostile fire lasted for about one hour. In spite of the clear and conspicuous danger to his life, SI/GD Arvind Kumar kept his nerve, advanced towards the target and retaliated the fire effectively resulting in the killing of Mubashir Ahmad Dar, R/O Khandipora, Kulgam @ Saifullah of Hizbul Mujahideen terrorist outfit.

In this encounter Shri Arvind Kumar, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing

the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10<sup>th</sup> September, 2006.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 89—Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Central Reserve Police Force: -

**NAME & RANK OF THE OFFICER**

**Shri Love Kumar,  
Assistant Commandant**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On receiving specific information on 07/6/04 from S.P. Budgam that two hard core terrorists are taking shelter in the house of Abdul Rashid Mir of village Gondipora, under P.S. Beerwah, Distt.- Budgam, Shri Love Kumar, Asstt. Comdt., D/128 Bn CRPF, reached P.S Beerwah with his one platoon and planned operation with Dy.S.P. Operations Shri R.K.Dhar. A strategy was formulated and accordingly troops of SOG Budgam under the charge of Shri R.K.Dhar, one platoon of D/128 Bn under the Command of Shri Love Kumar Asstt.Comdt. and one platoon of D/19 under the Command of Shri Jatin Kumar Asstt. Comdt. were detailed to village Gondipora at 0000 hours with the direction in view of difficult hostile terrain/area utmost care be taken to avoid any civilian causality but at the same time be effective in neutralizing foreign militants. Shri Love Kumar, Asstt.Comdt. with his QRT team was assigned the task of guarding/cordoning the rear of the house, while Shri R.K. Dhar, Dy.SP took responsibility of search of front portion of house. When the troops were zeroing in, militants opened heavy volume of fire in order to escape from the house but the cordoning troops led by Shri Love Kumar, Asstt.Comdt. maintained cool and returned the fire effectively although they had difficult time to retaliate effectively since that could have endangered the life of civilians in that house. Due to heavy pressure from both front and rear sides, both hard core militants tried to make a desperate attempt to escape from rear of the house and managed to jump out of the house under the cover of darkness, but were put down effectively by QRT team led by Shri Love Kumar, Asstt.Comdt., near main road of Gondipora in spite of pitch darkness. Shri Love Kumar, Asstt.Comdt. exhibited great courage and determination and lead personally his team in the midst of heavy firing from the fleeing militants and eliminated two hard core militants later identified as Ali Hussain alias Doctor, Dy.Chief and

Distt.Commander of Al Badar (Both Pakistani) and Shah Nawaz alias Abu Hamza district Commander of Al-Badr Budgam who had let loose reign of terror in the area without caring for his personal safety and at a great risk to his life. From the possession of above dreaded militants, 02 AK-47 Rifles, 06 AK-47 Magazines, 22 AK-47 Rounds, 01 UBGL, 01 W/Set Kenwood damaged and 01 W/Set Icon damaged were recovered.

In this encounter Shri Love Kumar, Assistant Commandant displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 8<sup>th</sup> June, 2004.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

No. 90-Pres/2008- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force: -

**NAME & RANK OF THE OFFICERS**

**S/Shri**

1. **A.K.Singh,  
Second-in-Command**
2. **Surender Kumar,  
Deputy Commandant**
3. **H.S.Chauhan,  
Constable**

**Statement of service for which the decoration has been awarded:**

On 15/01/2005, two fidayeens outfit had managed to enter inside the Passport office building, Srinagar. Incidentally Shri A.K.Singh, 2-I/C 50 Bn was reviewing security arrangements at the adjacent Indoor stadium and suddenly observed mass exodus of children. Exhibiting sharp operational acumen, Shri Singh sensed presence of militants and ordered his men to cordon the Passport Office building. While the cordon was being laid, militants started heavy firing which was duly retaliated. Soon it got dark and it was decided to carry out the storming operation at first light. The militants were kept engaged by intermittent firing through out the night. At about 0630 hrs on 16/01/2005, the militants started heavy firing and set ablaze the building on fire. Taking advantage of thick

smoke, one of the militants managed to enter the adjacent building of DYSS. Shri A.K.Singh, ventured into passport office building inspite of grave threat to his life along with a party of CRPF and JKP and the militant was neutralized after a fierce gun battle. The operation to neutralize the second militant, who had taken refuge on first floor in the DYSS building, commenced. Once again Shri A.K.Singh, took the lead and carried out the storming operation with the help of QRT of 123 BN. Ground floor was occupied amidst heavy exchange of fire and thereafter under the shadow of covering fire a BP bunker was placed below the opposite window and grenades were lobbed inside the rooms. A ladder was fixed on top of bunker and CT/GD H.S. Chauhan entered into the room followed by Shri Surender kumar, DC. The door, which was locked from outside, was broke open with special equipments and exhibiting tremendous courage and valour and without caring for their personal safety, Shri Surender Kumar and CT/GD H.S.Chauhan launched final assault which forced the militant to jump out where he was finally killed. During the entire operation, Shri A.K.Singh exhibited exemplary courage, extraordinary bravery, valour, utmost devotion to duty and conspicuous leadership in commanding troops and neutralized both the fidayeens without causing any collateral damage. Shri Surender Kumar and CT/GD H.S. Chauhan of 123 Bn had exhibited extraordinary courage, valour and bravery in storming the first floor of DYSS building and liquidating the second fidayeen.

In this encounter S/Shri A.K.Singh, Second-in-Command, Surender Kumar, Deputy Commandant and H.S.Chauhan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15<sup>th</sup> January, 2005.

BARUN MITRA  
Joint Secy.

LOK SABHA SECRETARIAT  
(EMPOWERMENT OF WOMEN COMMITTEE BRANCH)

New Delhi-110001, the 26th June 2008

No. 4/3/EWC/2007—The following Members of Rajya Sabha have been nominated to be the Members of the Committee on Empowerment of Women (2007-2008) w.e.f. 28th May, 2008:—

- (i) Dr. Prabha Thakur
- (ii) Dr. C. P. Thakur
- (iii) Shri Banwari Lal Kanchhal
- (iv) Shrimati Kanimozhi
- (v) Shri Gandhi Azad

C. S. JOON  
Director

MINISTRY OF HOME AFFAIRS  
(DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE)

New Delhi, the 2nd July 2008

RESOLUTION

No.1/20012/07/2005-O.L. (Policy-1)

The Committee of Parliament on Official Language was constituted under section 4(1) of the Official Languages Act, 1963. The Committee submitted eighth part of its Report to the President on 16.08.2005 relating to Ministry-wise/region-wise assessment of the use of Hindi, on the basis of review of the compliance of the section 3(3) of the Official Languages Act, 1963 and rule 5 of the Official Languages Rules, 1976 relating to correspondence in Hindi, publications, code-manual and training etc. in Hindi, purchase of Hindi books in Central Government offices, computerization and Hindi, compulsory provision of Hindi knowledge in recruitment rules, availability of Hindi medium in academic and training institutions, expenditure on Hindi advertisements and use of Hindi for commercial activities etc.. In accordance with section 4(3) of the Official Languages Act, 1963, the Report was laid on the Table of the Lok Sabha and Rajya Sabha on 15.05.2007 and 16.05.2007 respectively. Copies of the Report were sent to all Ministries/Departments of the Government of India and to all State/Union Territories. After considering the views expressed by the State/Union Territory Governments and various Ministries/Departments, it has been decided to accept most recommendation in toto and some with modifications. Accordingly, the undersigned is directed to convey the Orders of the President made under section 4(4) of the Official Languages Act, 1963 on the recommendations made in the eighth part of the Report of the Committee as under:

S.N.	Recommendation	President's Order
1.	Effective measures should be taken by the Govt. for the implementation of the Committee's observations as contained in Chapter 2 of Part-1 such as:- (a) All the Central Government Offices should purchase Devnagari mechanical-aids as per the laid down target and also ensure their utilization	This recommendation is accepted.

S.N.	Recommendation	President's Order
	(b) A mention should be made in ACR's of the officers in-charge of the training institutions, indicating what special efforts they made for enhancing the use of Hindi in those institutions	This recommendation is accepted. The recommendation may be implemented in a positive manner for promoting the use of Hindi ensuring that such mention does not affect any other officer adversely.
	(c) More and more Hindi should be used in the courts. To begin with, verdicts should be made in Hindi in region 'A', followed by the other regions.	This recommendation is accepted with the modification that the Department of Official Language may take appropriate decision after consulting the Legislative Department and the 18 <sup>th</sup> Law Commission of India.
	(d) At least three meetings of the Hindi Advisory Committee should be held in a year.	This recommendation has been accepted with the modification that all the Ministries/Departments may hold at least two meetings of Hindi Advisory Committee during a year and make sincere efforts to hold more meetings.
	(e) It should be made obligatory for the Central Government offices to implement the Presidential Orders issued on the recommendations of the Committee of Parliament on Official Language in all its reports.	This recommendation is accepted. All the Ministries/Departments may ensure full implementation of the Presidential Orders issued on the recommendations made by the Committee of Parliament on Official Language in the various parts of its report.
2.	The Committee has observed that in the following Ministries viz. Ministry of Home Affairs, Ministry of Coal & Mines, Ministry of Chemicals & Fertilizers, Ministry of Rural Development, Ministry of Power, Ministry of Steel, more than 25% of the officers/employees are untrained in Hindi. These Ministries should treat this situation seriously. Training should be imparted to the said officers/employees within a period of one year either through computer based programmes on line or correspondence programmes. Department of Official Language should also extend due cooperation by chalking out some special training programme under its Hindi Teaching Scheme for these Ministries.	The Ministries concerned may get trained their remaining untrained employees in Hindi language, Hindi typing and Hindi stenography through the training programs being run by the Central Hindi Training Institute or through LILA software made available on the web-site of the Department of Official Language ( <a href="http://www.rajbhasha.gov.in">www.rajbhasha.gov.in</a> ) for on-line self-learning of Hindi through the medium of various Indian languages.
3.	Secretary (Official Language) should take up the situation of violation of Rule-5 of the Official Languages Rules, 1976 with the Secretaries of the 18 Ministries/Departments concerned.	This recommendation is accepted.

S.N.	Recommendation	President's Order
4.	(a) Keeping in view the large number of Codes/Manuals in English in the Ministry of Health & Family Welfare, Ministry of Defence, Ministry of Shipping & Ministry of Agriculture, the Committee recommends that a special task force consisting of the Central Translation Bureau, Department of Official Language, departmental Hindi Translators and Experts of technical fields, should be set up so that the Hindi translation of these Codes/Manuals is completed within a year.	<b>This recommendation is accepted.</b>
	(b) Department of Atomic Energy, Ministry of Chemicals & Fertilizers, Ministry of Power, Ministry of Commerce & Industry, Ministry of Planning, Ministry of Home Affairs, Ministry of Human Resource Development, Ministry of Petroleum and Natural Gas and Ministry of Civil Aviation should get the Codes/Manuals translated through outside agencies on contract basis and get the work done within a period of 6 to 9 months.	<b>The recommendation is accepted with the modification that to ensure the authenticity of the translation, its vetting may be got done by the Central Translation Bureau, a subordinate office of the Department of Official Language.</b>
	(c) Ministry of Urban Development and Poverty Alleviation, Ministry of Coal & Mines, Ministry of Social Justice and Empowerment, Ministry of Railways, Ministry of Water Resources, Ministry of Youth Affairs & Sports, Ministry of Statistics & Programme Implementation, Ministry of Science & Technology, Ministry of Finance and Ministry of Labour should chalk out a work plan and get all the Codes/Manuals translated within 06 months.	<b>This recommendation is accepted with the modification that to ensure the authenticity of the translation may be got vetted from the Central Translation Bureau, a subordinate office of the Department of Official Language.</b>
	(d) Ministry of Law & Justice, Ministry of External Affairs, Ministry of Personnel, Public Grievances and Pension, Ministry of Environment & Forest, Ministry of Communications & Information Technology, Ministry of Consumer Affairs, Food & Public Distribution, Department of Ocean Development, Ministry of Heavy Industries & Public Enterprises, Ministry of Tribal Affairs, Ministry of Rural Development & Ministry of Textiles should make arrangements for translating Codes/Manuals within 03 months.	<b>This recommendation is accepted with the modification that to ensure the authenticity of the translation may be got vetted from the Central Translation Bureau, a subordinate office of the Department of Official Language.</b>



S.N.	Recommendation	President's Order
5.	The number of English publication is much more than that of Hindi publications in the following Ministries/Departments viz. Ministry of Human Resource Development, Ministry of Culture, Ministry of Water Resources, Ministry of Consumer Affairs, Food & Public Distribution. In this context, the Secretaries of the Ministries concerned should personally focus attention on the establishments under their control to improve the position.	<b>This recommendation is accepted.</b>
6.	Routine entries in service books/records may be made with the help of Hindi/Billigual rubber stamps. These stamps may be standardized for use in Central Offices all over the country. Consequently, the provision in the rules of making all/as far as possible the entries on the basis of region may be deleted.	<b>This recommendation is accepted. The Department of Personnel &amp; Training may take necessary action in this regard.</b>
7.	A minimum percentage of entries in Hindi in the Registers may be fixed for the offices located in Region 'C' and the provision of making entries in Hindi "as far as possible" in the registers may be deleted.	<b>This recommendation is accepted with the partial modification that the Central Government offices situated in region 'C' may continue their efforts in this direction as far as possible.</b>
8.	As the three newly created States of Chattisgarh, Uttaranchal and Jharkhand were parts of States which are included in Region 'A' and the entire work of these States is done in Hindi, these States should be included in Region 'A'. The Department of Official Language may carry out necessary amendments in the Official Languages Rules, 1976 in this regard.	<b>The desired action has already been taken.</b>
9.	To ensure the compliance of Section 3(3) of the Official Language Act, 1963 the monitoring system should be strengthened and check-points, at the level of a senior officer, should be laid down.	<b>This recommendation is accepted.</b>
10.	The Secretaries of Ministries/Departments should personally take up the matter with the Heads of the Offices.	<b>This recommendation is accepted.</b>

S.N.	Recommendation	President's Order
11.	The mandatory compliance of Section 3(3) of the Official Language Act 1963 must be emphasized during the Hindi workshops organized by the offices. Additionally, there should be a detailed discussion on "General Orders" so as to acquaint the participants with the documents covered by this item.	<b>This recommendation is accepted.</b>
12.	The Committee had recommended in the fourth part of its report that in Region "A" all documents, except those being placed before Parliament, should be issued only in Hindi. Keeping in view the present position in Region "A", the Committee reiterates its recommendation that excluding the afore-mentioned documents, the compulsion of the use of English for all the documents under section 3(3) of the Official Language Act 1963 should be dispensed with, in Region "A". The Ministry of Home Affairs should take the initiative and talk to the States where Hindi has not been adopted as the Official Language. These States should be persuaded to grant Hindi the status of the Official Language alongwith their own State's Official Language.	<b>For the present, in respect of this recommendation, compliance in accordance with the provisions of section 3(5) of the Official Languages Act, 1963 will continue.</b>
13.	To ensure that training facilities are available to every office, the Department of Official Language should introduce an intensive drive for training in Hindi Language/Typing/Stenography through the Town Official Language implementation Committees.	<b>This recommendation is accepted with the modification that the Town Official Language Implementation Committees may render all possible assistance in getting trained all the Central Government employees through Central Hindi Training Institute, a subordinate office of the Department of Official Language.</b>
14.	The computer based "on line" training programme of learning Hindi through the medium of South Indian Languages should be given wide publicity in Region 'C'.	<b>The recommendation is accepted.</b>
15.	Arrangement for full time training centre for Hindi Typing and Hindi Stenography under Hindi Teaching Scheme may be made in the cities indicated in the "Annexure" to Chapter — 8.	<b>The recommendation is accepted.</b>

S.N.	Recommendation	President's Order
16.	As greater amount is spent on the conduct of meetings of the Town Official Language Implementation Committees, therefore, the present amount of Rs. 3000/- per meeting may be enhanced to Rs. 10,000/- per meeting or the contribution made by the member offices may be codified, so that member offices do not face any difficulty in getting the amount sanctioned from their Ministries/Headquarters.	The recommendation is accepted with the modification that the ceiling on the expenditure on the meetings of Town Official Language Implementation Committees may be reviewed from time to time with a view to revise it as per requirement.
17.	For effective conduct of the TOLICs, the TOLIC Secretariat may be provided on a permanent basis with adequate human resource and should also be equipped with modern facilities.	The recommendation is accepted with the modification that the Town Official Language Implementation Committees, may mobilize required man-power and other facilities from the internal resources available, with its member-offices for effective organization of their meetings.
18.	In order to enhance the Official Language activities, an annual conference of the Chairmen of the TOLICs should be organized in every region; and their involvement should also be ensured while determining the Official Language policy and the targets.	The recommendation is accepted with the modification that such meeting may be organized annually on regional basis.
19.	Some special schemes may be introduced to encourage publication of Hindi news papers/Hindi magazines and for those Hindi Journalists associated with them in the non-Hindi speaking areas especially in states like Tamilnadu, Kerala and Karnataka.	The recommendation is not accepted.
20.	Representation of a Senior Officer from the Department of Official Language, New Delhi may be made compulsory in the meetings of the TOLICs.	The recommendation is accepted with the modification that as far as possible, the participation of the Senior Officers of the Department of the Official Language may be ensured in the meetings of the Town Official Language Implementation Committees.
21.	Posting of at least one Hindi Staff may be made compulsory in each office of the Central Govt. located in Region "C".	In respect of this recommendation, action may be taken in accordance with the guidelines issued by Department of the Official Language regarding posting of minimum staff.

S.N.	Recommendation	President's Order
22.	The Department of Official Language may take appropriate action on the suggestions received from the Chairmen of TOLICs given in paras 8.33 to 8.45 of Chapter - 8.	<b>The recommendation may be implemented as per provisions of Official Languages Act and Official Languages Rules, and the instructions/orders issued from time to time in this regard.</b>
23.	In the Ministries/Departments and their subordinate offices, besides issuing individual orders to the employees proficient in Hindi to do their specified work in Hindi, steps should also be taken to motivate and encourage them to do their entire work in Hindi.	<b>The recommendation is accepted.</b>
24.	In future no code/manual be prepared only in English; and the codes/manuals which are at present available only in English be made bilingual within a span of one year.	<b>The recommendation is accepted.</b>
25.	A minimum of 50%, 30% and 20% sections in Ministries/Departments and offices of Undertakings/ Corporations, etc located in regions 'A', 'B' and 'C', respectively, be specified for doing their entire work in Hindi. In the Public Sector Undertakings/Corporations, where the concept of sections does not exist, the Committee recommends that 50% in Region 'A', 30% in Region 'B' and 20% in Region 'C' of the work area be specified for doing the entire work in Hindi.	<b>All Central Government Offices /Undertakings/Corporations etc. may take concrete measures towards achieving these targets.</b>
26.	Special emphasis may be given to the purchase of simple, easy and useful Hindi books. Books in Hindi of Freedom Fighters, biographies and autobiographies of patriots and martyrs and other interesting books and epics should be purchased in order to encourage the officers/employees to read.	<b>The recommendation is accepted.</b>

S N.	Recommendation	President's Order
27	<p>The violation of Rule 5 of the Official Language Rules 1976 by offices in Delhi (Region 'A') is completely unacceptable. In particular, the Secretary, Ministry of Human Resource Development should take up the matter of violation of Rule 5 of the Official Language Rules, 1976 with Navodaya Vidyalaya Samiti, New Delhi, Kendriya Vidyalaya Sangathan, New Delhi, Indira Gandhi National Open University, New Delhi and Kendriya Samaj Kalyan Board, New Delhi and ensure that this kind of violation does not take place in future. Similarly, Secretaries, Ministry of Science and Technology should take up with Central Road Research Institute, New Delhi; Secretary, Ministry of Social Justice and Empowerment with National Minority Development and Finance Corporation, New Delhi; Secretary, Ministry of Health &amp; Family Welfare with Central Council for Research in Ayurveda &amp; Siddha, New Delhi and Indian System of Medicine, New Delhi; and Secretary, Ministry of Agriculture with State Farm Corporation of India Ltd., New Delhi; to ensure the implementation of Rule 5 of the Official Languages Rules 1976.</p>	<p><b>The recommendation is accepted.</b></p>
28	<p>For a more effective implementation of the Official Language Policy as well as proper compliance of the Presidential Orders on the recommendations of the Committee of Parliament of Official Language, the Committee recommends that the meetings of the Central Official Language Implementation Committee (COLIC) be held under the Chairmanship of the Cabinet Secretary and the Secretaries of the Ministries/Departments participate as its members. In the event of the Cabinet Secretary being the Chairman of the COLIC, the Secretaries of the other Ministries/Departments would take the matter regarding implementation of Official Languages Rules, etc. with appropriate seriousness.</p>	<p><b>The recommendation is under consideration.</b></p>

S.N.	Recommendation	President's Order
29.	To make Scientific, Technical and Research Literature in Hindi available at one place the Government should immediately establish Book Banks. These Book Banks should make such literature available to the consumers and user organizations, or should provide them with information regarding sources of availability.	The recommendation is accepted with the modification that all the Ministries/Departments may ensure availability of sufficient Hindi literature about their work on technology, scientific research and various subjects relating to research and make available the information on sources of availability of this literature on their web-sites and through other possible means to facilitate its consumers and user organizations in obtaining the same.
30.	Wide publicity should be given to literature available in Hindi on scientific, technical & research subjects, so as to make it easily accessible to consumer organizations. This process must be repeated on regular intervals.	The recommendation is accepted. All Ministries/Departments should make the publicity of available literature on scientific, technical & research subjects, a regular feature of their publicity programs.
31.	A Translation Bureau may be established under the Commission for Scientific and Technical Terminology to make available translations in Hindi, of all literature in English related to Research, Science and Technology. Post Graduates in Science and / or Engineering degree holders well versed in Hindi and capable of providing translation of a high order may be appointed in the Translation Bureau. These technical translation experts may be given a minimum pay scale as that of an Asstt. Director (OL).	The recommendation is accepted with the modification that the Ministry of Human Resource Development may achieve the objective envisaged under this recommendation for providing good quality Hindi translation of the available literature related to research, science and technology through the proposed National Translation Mission.
32.	Provision may be made to award appropriate royalty to those writers who write books originally in Hindi on science/technical/research related subjects and whose books are being used regularly for functional purposes or as a course material in the organizations.	The writing right of each and every author is protected under the Copy-right Act. The royalty received by an author on book (s) is in accordance with the mutual agreement between the author and the publisher. The Central Government have no role in it. Hence the recommendation is not accepted.
33.	Universities in regions "A" & "B" may impart higher education i.e. education of subjects relating to engineering, computers, technology & research etc. through Hindi medium also & syllabus and course books may also be prepared in Hindi.	The recommendation is accepted.

S.N.	Recommendation	President's Order
34.	In the Annual Programme 2004-05 and thereafter the Department of Official Language has modified the target laid down for purchase of Hindi Books to exclude journals and standard reference books. The Committee feels this modification needs to be reviewed, as this exclusion if continued indefinitely will adversely impact the long term goal of Hindi.	<b>At present, status quo may be maintained.</b>
35.	There is no substantial reason for the Non-technical/Administrative offices for not complying with the target of purchase of Hindi Books. Therefore, concerned Ministries/Departments should keep a constant watch on such offices.	<b>The recommendation is accepted.</b>
36.	A training crash course of minimum seven days, in Hindi for use on computers should be organized for those Deputy Secretaries and other higher officers who have been given the facility of computers, and targets may be fixed region-wise for the amount of work to be done in Hindi on the computers by them.	<b>The recommendation is accepted with the modification that shorter duration crash programs may be conducted for Deputy Secretary/ higher officers and they should use more and more Hindi in their work on computers.</b>
37.	A standardised bilingual software be developed through an agency to bring about uniformity in Hindi work in all the Ministries of the Central Government and in their Attached/Subordinate offices.	<b>To ensure the compatibility of the work in Hindi being done in the Ministries/Departments and their attached/subordinate offices, all the Central Government offices may use only standard encoding (i.e.Unicode) compliant fonts for use of devanagari script on computers and Ministries /Departments should procure only those softwares from different agencies, which are capable of being used in accordance with the Unicode encoding standard.</b>
38.	Reserve Bank of India/Ministry of Finance should take effective measures to develop compatible software for data processing in Hindi/bilingual and to bring about uniformity in all the Public Sector Banks.	<b>The recommendation is accepted. Department of Economic Affairs, Ministry of Finance may take necessary action in this regard and ensure use of only those fonts/softwares for working in Hindi which are compatible with the standard Unicode encoding.</b>

S.N.	Recommendation	President's Order
39.	Credit Cards, ATMs and other services offered by the Banks be made in Hindi/bilingual.	<b>The recommendation is accepted for compliance by Public Sectors Banks and financial Institutions.</b>
40.	The Ministry of Finance should take steps to ensure that the insurance policies issued by the state owned insurance companies are issued in Hindi/bilingual.	<b>The recommendation is accepted for compliance by public Sector Insurance Companies. Banking Division, Ministry of Finance, may take action in this regard.</b>
41.	Hindi/Bilingual entries be made in the Bills issued to the public by the MTNL and BSNL.	<b>The recommendation is accepted.</b>
42.	Captions appearing in the programmes telecast by the Hindi Channel of Doordarshan be given in Hindi. Necessary software may be developed for this purpose.	<b>The recommendation is accepted.</b>
43.	Ministry of Railways and Ministry of Civil Aviation should take necessary action for displaying information in Hindi/bilingual on the digital information boards at the Railway Stations and Airports.	<b>The recommendation is accepted.</b>
44.	The Ministries/Departments as well as their Offices/ Undertakings, invariably launch all websites bilingually. All offices who have already launched their websites only in English, should take immediate steps to make their websites bilingual.	<b>The recommendation is accepted.</b>
45.	The Department of Official Language should especially monitor the implementation of the recommendations from Sl. No. 34 to 43 and in case any of the offices face any difficulty in the implementation of these recommendations action should be taken to seek the cooperation of the Ministry of Information Technology, to solve the problem.	<b>The recommendation is accepted.</b>
46.	In the competitive exams conducted for recruitment in the Central Govt. a compulsory question paper of Hindi of the level of Matriculation or equivalent may be prescribed. A candidate not passing this paper may be disqualified.	<b>The recommendation is not accepted.</b>
47.	In the Central Secretariat Official Language service, status-quo may be maintained in respect of the posts of Director (OL) in all the big Ministries/Departments and simultaneously the creation of higher posts of Joint Secretary (OL) may also be considered.	<b>The recommendation is not accepted.</b>



S.N.	Recommendation	President's Order
48.	A separate Official Language Cadre be set up by each Ministry/Department, which would cater to all its Subordinate/Attached/Undertakings/Corporations/Establishments. The Ministry could post Hindi officers/employees from this cadre to its offices, big or small, located all over the country. This would also provide them with greater promotional opportunities.	The recommendation is accepted with the modification that where possible, a cadre may be set up and where setting up of the cadre is not found possible, an alternative system should be put in place for ensuring promotional avenues for the staff.
49.	Special allowance as an incentive may be given for posting of Hindi personnel in Region 'C' and at the same time the posting should be for a limited period only so that candidates from Region 'A' accept postings in Region 'C' without hesitation.	The recommendation is not accepted.
50.	Necessary steps may be taken to bring about uniformity in the designations and pay scales of the cadres (be it in the Ministries/Departments or their subordinate offices) concerned with translation work and implementation of the Official Language policies.	The recommendation is under consideration of the Government.
51.	In all the Kendriya Vidyalaya/Navodaya Vidyalaya alongwith the Government Schools controlled by the State Government situated in Region 'A' & 'B', study of all subjects upto the level of 10 <sup>th</sup> Standard, should immediately be started in Hindi medium. Regional language and English can be taught as a separate subject. After a stipulated interval the situation may be reviewed and this may be extended to Region 'C'.	The recommendation is not accepted.
52.	Matric level knowledge of Hindi may be made compulsory in the recruitment of Lecturers in Universities/Colleges, Research & Professional Educational Institutes, so that after assuming duties, they do not have any difficulty in teaching their subject in Hindi medium.	The recommendation is not accepted.
53.	Hindi Departments may compulsorily be started in all the Central Universities and Post Graduate level Hindi courses should be made available there.	The recommendation is accepted.
54.	In the national education programmes like Sarv Shiksha Abhiyan provision of study should be made only through Hindi medium.	The recommendation is not accepted.

S.N.	Recommendation	President's Order
55.	In the entrance examination of Universities/Technical/Professional/Research Institutions, an option of Hindi medium should be made compulsory.	The recommendation is accepted with the modification that in consultation with the University Grants Commission and after getting the concurrence of the State Governments, the Ministry of Human Resource Development may take an appropriate action for giving option of Hindi, besides other languages, for answering the question papers during the examinations of universities and technical, professional & research institutes etc.
56.	Educational telecast through electronic medias like Radio/TV should be only in Hindi as these medias have a wide coverage.	In view of the language diversity in the country, the recommendation is accepted with the modification that in educational broadcasts sponsored by the Government of India, Hindi broadcasts may be given adequate time.
57.	Organisations like Commission for Scientific and Technical Terminology should prepare subject-wise list of books published by them in Hindi/bilingual and make these available to Schools, Universities, Research and Professional Institutions and should also organize workshops and seminars to disseminate the information regarding availability of such books.	The recommendation is accepted.
58.	All the training courses, except for major technical subjects, should be taught in Hindi medium in the departmental staff training institutes of the Central Government, PSUs, Banks and other institutions.	The recommendation is accepted with the modification that all the in-service trainings may be conducted primarily in Hindi and secondarily in the mixed language.
59.	A mention be made in the Annual Confidential Reports of the Heads of the Training Institutes regarding the efforts made by them to promote the use of Hindi in their institutes.	The recommendation is accepted.
60.	In future, the names of all the undertakings/corporations of the Public Sector should, invariably, be registered only in Hindi. If required keeping in view the international importance of the Undertakings/Corporations, English name, may also be got registered.	The recommendation is accepted.

S.N.	Recommendation	President's Order
61.	In State owned companies the descriptions on all machines and equipment whether indigenous or imported should be written in bilingual form.	The recommendation is accepted.
62.	In future the Undertaking/Corporations should get their logos/monograms prepared either in bilingual or pictorial form.	The recommendation is accepted.
63.	New products and brands of the Undertakings/Corporations/Companies should be named in Hindi. This will also help them to maintain their unique identity at the international level.	The recommendation is accepted with the modification that excepting popular non-Hindi names or names which give a better information/identity to the products/brands, the other names of products/brands may be nomenclatured in Hindi.
64.	Bilingual description should be inscribed on the products meant for exports by the Public Sector Undertaking/Corporation.	The recommendation is accepted.
65.	Printed material of the Undertakings/Corporations such as brochures, bill-vouchers and the publicity material should invariably be printed in bilingual form.	The recommendation is accepted.
66.	All the websites of the Undertakings/Corporations must be prepared in bilingual form and the information on their activities and products should be made available in Hindi & English.	The recommendation is accepted.
67.	To strengthen the translation arrangements Hindi posts should be created as per the requirement of the Undertakings/Corporations; and centralized translation panels should also be prepared in the Undertakings/Corporations at the Headquarter level. This will help to provide immediate translation, if required, to their corporate and other offices and their subsidiary companies.	The recommendation is accepted.
68.	All the computers in the Undertakings/Corporations must have Hindi software and this facility should be made available in their branches abroad also.	The recommendation is accepted.
69.	Advertisement in Hindi can be given in English newspapers and similarly advertisement in English can be given in Hindi Newspapers. Therefore, all the offices should give advertisement in bi-lingual form to Hindi/English newspapers.	The recommendation is not accepted.

S.N.	Recommendation	President's Order
70.	A minimum of 50% of the total amount spent on advertisements be in Hindi and rest 50% be spent on advertisements in English and other regional languages.	<b>The recommendation is accepted with the modification that a certain percentage of total expenditure on Government advertisements to be given in Hindi and English may be decided by Central Ministries /Departments according to their requirements.</b>
71.	The procedure for creation of Hindi posts may be made simple and easy to avoid unnecessary delay in the creation of Hindi posts. Ministry of Finance and Deptt. Of Personnel & Training should not impose any ban on the creation of Hindi posts. In every small or big office, especially in the office's situated in Region 'C', keeping in view the nature of work and necessity, steps should be taken to relax the prescribed norms for creation of Hindi posts.	<b>The recommendation is accepted.</b>
72.	Hindi posts have been created to meet the statutory requirements. Therefore, the newly created posts and the posts already lying vacant be filled-up immediately on priority basis. Ministry of Finance and Department of Personnel & Training should not impose any ban on appointments to the Hindi post which has, for whatever reason, been vacant for three years or more.	<b>After the outcome of the proposal sent in this regard to Cabinet Secretariat for the consideration of the Committee of Secretaries (COS) is available, the Department of Official Language may act accordingly.</b>
73.	The Ministry of External Affairs may provide bilingual facility on the computers in all the Passport Offices so that bilingual entries are made in the passports and the passports could be issued bilingually.	<b>The recommendation is accepted. The Ministry of External Affairs may prepare an action plan for implementation of this recommendation.</b>
74.	In future, a minimum level of Hindi knowledge be fixed for direct recruitment to all the Groups, viz. 'A', 'B', 'C' and 'D', in order to avoid the difficulties and obligations of providing training. The minimum level of knowledge of Hindi necessary for recruitment to Group 'A', 'B' and 'C' may be specified as matriculation or higher. For Group 'D' it can be relaxed to Middle/Eighth class level.	<b>The recommendation is not accepted.</b>

S.N.	Recommendation	President's Order
75.	Details of Hindi knowledge and Hindi work done by the employees should also be reflected in their service books and ACRs respectively. Additionally, the Departmental Promotion Committees constituted for considering the promotions of the different cadres, except Official Language cadre, should award bonus marks for the officer/employee, being considered for promotion, on the basis of Hindi work done by him/her.	The recommendation is not accepted.

### **ORDER**

A copy of this Resolution be sent to all the Ministries and Departments of the Government of India, all State Governments and Union Territories, the President's Secretariat, the Vice President's Secretariat, the Cabinet Secretariat, the Prime Minister's Office, the Planning Commission, the Comptroller and Auditor General of India, the Lok Sabha Secretariat, the Rajya Sabha Secretariat, the Registrar General of Supreme Court, the University Grants Commission, the Law Commission of India & the Bar Council of India etc.

This Resolution be published in the Gazette of India for general information.

P.V. VALSALA G. KUTTY  
Joint Secy

### **MINISTRY OF TEXTILES**

New Delhi-110011, the 24th June 2008

### **RESOLUTION**

No.E.-11011/1/2005-Hindi : In supersession of this Ministry's resolution of even no. dated 4<sup>th</sup> Oct, 2005 and 26<sup>th</sup> April, 2006 Dr. Rajendra Bhatt, 59, Mehul park, Behind college, Jampura Road, Palanpur, Gujrat is hereby nominated as Non-Official Member of the Hindi Salahkar Samiti of the Ministry of Textiles in place of Shri Jag Prasad Prithvipal Pandey (Sr. No. 13) and Dr. Mahavir Singh D. Chauhan (Sr. No. 16).

### **ORDER**

Ordered that a copy of this Resolution be communicated to all State Governments and Union Territory Administrations, Prime Minister's Office, Cabinet Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Planning Commission, President's Secretariat, Comptroller and Auditor General of India, A.G.C.R and all Ministries and Departments of Government of India.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

BHUPENDRA SINGH  
Joint Secy.

New Delhi, the 25th June 2008

No. 1/6/2008—CT-II—

The Government of India has decided to reconstitute the cotton Advisory Board originally set up in October, 1958 and subsequently reconstituted from time to time. The Board as now reconstituted, will consist of following members:-

- |   |          |
|---|----------|
| 1. Textile Commissioner,<br>Government of India<br>Ministry of Textiles, Mumbai   | Chairman |
| 2. Joint Secretary, In-charge of Cotton,<br>Ministry of Textiles, New Delhi   | Member   |
| 3. Representative of Department of Science &<br>Technology Connected with National Remote<br>Sensing Agency.<br>Technology Bhavan,<br>New Mehrauli Road,<br>New Delhi 110016                                      | Member   |
| 4. Shri N.B.Singh<br>Agriculture Commissioner & Mission Director,<br>TMC, Ministry of Agriculture<br>Krishi Bhavan, Dr. Rajendra Prasad Road,<br>New Delhi-110 001  | Member   |
| 5. Dr. B.M. Khadi,<br>Director, CICR-Nagpur & Member Secretary,<br>Standing Committee, TMC(MM-I)<br>P.B. No.2, Shankar Nagar,<br>P.O.Nagpur-440 010   | Member   |
| 6. Director,<br>Directorate of Cotton Development (MM-II),<br>( Deptt. of Agriculture & Co-Operation)<br>Ministry of Agriculture,<br>14, Ramjibhai Kamani Marg, Ballard Estate,<br>P.B. No. 1002, Mumbai- 400038. | Member   |
| 7. Shri S.C. Grover,<br>Chairman-cum-Managing Director,<br>CCI- TMC (MM III & IV),<br>Cotton Corporation of India,<br>Kapas Bhavan, Plot No3/A,<br>Sector No 10, CBD Belapur,<br>Navi Mumbai-400 614              | Member   |

**STATE GOVERNMENTS**

- |     |   |        |
|-----|---|--------|
| 8.  | Commissioner / Director to Govt.,<br>(Incharge of Agriculture),<br>Government of Maharashtra,<br>Shivaji Nagar,<br>Pune 411005                              | Member |
| 9.  | Commissioner / Director to Govt.,<br>(Incharge of Agriculture),<br>Government of Gujarat,<br>Krishi Bhavan, Paldi,<br>Ahmedabad 380006                      | Member |
| 10. | Commissioner / Director to Govt.,<br>(Incharge of Agriculture),<br>Government of Madhya Pradesh,<br>Vindhyachal Bhawan,<br>Bhopal - 462004                  | Member |
| 11. | Commissioner / Director to Govt.,<br>(Incharge of Agriculture),<br>Government of Andhra Pradesh,<br>Opp. Lal Bahadur Stadium,<br>Hyderabad - 500001         | Member |
| 12. | Commissioner / Director to Govt.,<br>(Incharge of Agriculture),<br>Government of Karnataka,<br>No. 1 Sheshadari Road,<br>Bangalore - 560001                 | Member |
| 13. | Commissioner / Director to Govt.,<br>(Incharge of Agriculture),<br>Government of Tamil Nadu,<br>Chepuk, Chennai - 600005                                    | Member |
| 14. | Commissioner / Director to Govt.,<br>(Incharge of Agriculture),<br>Government of Rajasthan,<br>Krishi Bhavan, Bhagwandas Road,<br>Jaipur - 302005           | Member |
| 15. | Commissioner / Director to Govt.,<br>(Incharge of Agriculture),<br>Government of Punjab,<br>S.C.O 85-86, Sector 35,<br>Opp. Pickadily Cinema,<br>Chandigarh | Member |

- |     |   |        |
|-----|---|--------|
| 16. | Commissioner / Director to Govt.,<br>(Incharge of Agriculture),<br>Government of Haryana,<br>Kandi Vikas Bhawan,<br>Sector 21, Panchkula,<br>Haryana - 134109 | Member |
| 17. | Commissioner / Director to Govt.,<br>(Incharge of Agriculture),<br>Government of Orissa,<br>Head of Dept. Building,<br>Bhubaneswar - 751001                   | Member |
| 18. | Commissioner / Director to Govt.,<br>(Incharge of Agriculture),<br>Government of Uttar Pradesh,<br>Krishi Bhavan, Lucknow-260001.                             | Member |

COTTON GROWERS

- |     |  |        |
|-----|--|--------|
| 19  | Dr. Santosh Thakare,<br>Manthan Sharda Nagar,<br>Amaravati - 444605<br>Maharashtra.  | Member |
| 20  | Shri G. Xavier, Head – Agricultural Division<br>/ Shri K.R. Seethapathy, Chief Operating Officer<br>(A leading entity in contract farming)<br>M/s. Super Spinning Mills Ltd.,<br>Elgi Tower, P.B. 7113, Green Fields,<br>737- D, Puliakulam Road,<br>Coimbatore -641045. Tamil Nadu. | Member |
| 21  | Dr. Sanjiv Patil, Msc. (Agri), PhD.<br>(Cotton Breeder)<br>Agricultural Research Station<br>Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth,<br>Jalgaon-425001, Maharashtra  | Member |
| 22. | Shri. Mani Chinnaswamy,<br>Managing Partner of<br>M/s.Appachi Cotton Company,<br>45, Meenkarai' Zamin Uthukuli,<br>Pollachi – 642004<br>Tamil Nadu.<br>Tel 04259-234666/220995/329666<br>Email: <a href="mailto:appachi@vsnl.com">appachi@vsnl.com</a>                               | Member |



**COTTON SEED MANUFACTURERS**

- |    |   |        |
|----|---|--------|
| 23 | Shri Prabhakar Rao,<br>Managing Director,<br>M/s. Nuziveedu Seeds Ltd.,<br>7-C Surya Towers, 105, Sardar Patel Road,<br>Secunderabad -500003.   | Member |
| 24 | Shri R.B. Barwale,<br>Managing Director,<br>M/s. Mahyco Monsanto Ltd.,<br>4 <sup>th</sup> floor, Resham Bhavan,<br>78, Veer Nariman Road,<br>Mumbai -400020.                                      | Member |
| 25 | Shri M. Ramasami, M.D.,<br>M/s. Rasi Seeds (P) Ltd.,<br>273, Kamarajanar Road,<br>Attur - 636102.<br>Salem Dist.,<br>Tel. 4282-241007 , 242007<br>Fax; 4282-242558<br>Website: www. Rasiseeds.com | Member |
| 26 | Representative of Bt cotton seed Manufacturers<br>Mahyco  | Member |

**TEXTILE INDUSTRY**

- |    |  |        |
|----|--|--------|
| 27 | Chairman<br>Confederation of Indian Textile Industry (CITI)<br>6 <sup>th</sup> floor , Narain Manzil,<br>23, Barakhamba Road, New Delhi-110001<br>Email:icmf@vsnl.com  | Member |
| 28 | President<br>All India Federation of Co-operative<br>Spinning Mills Ltd., Canara Building,<br>2 <sup>nd</sup> floor, D.N. Road, Mumbai 400001.   | Member |
| 29 | Shri B. K.Patodia,<br>Vice Chairman & Managing Director of<br>M/s. GTN Textiles Ltd.,<br>228, Nariman Point,<br>Mumbai-400021.<br>&<br>Chairman of the Joint, cotton Committee<br>of International Textile<br>Manufacturer's Federation,<br>Zurich, Switzerland. | Member |

30 Secretary,  
The Southern India Mills' Association  
P.B.3783,  
Coimbatore-641018.  
Tamil Nadu Member

31 Chairman,  
Cotton Textile Export Promotion Council,  
TEXPROCIL,  
5<sup>th</sup> Floor, Engineering Centre,  
9<sup>th</sup> Mathew Road,  
Mumbai-400004. Member

COTTON TRADE

32 Chairman,  
NAFED,  
1, Sidharth Enclave,  
Ashram Chowk, Ring Road,  
New Delhi -110014. Member

33 Managing Director,  
Maharashtra State Co-operative,  
Cotton Growers' Marketing Federation Ltd.,  
Khetan Bhavan, J. Tata Road,  
Churchgate,  
Mumbai - 400020 Member

34 President,  
Cotton Association of India,  
2<sup>nd</sup> Floor, Cotton Exchange Bldg,  
Cotton Green, Mumbai-400033. Member

35 Chairman,  
All India Co-operative Cotton Federation Ltd.,  
Silver Arc, 'A' Block, Behind Town Hall,  
Ellisbridge, Ahmedabad -380006. Member

36 Secretary,  
The South India Cotton Association (SICA),  
Post Box No 3310,  
477, Kamarajar Road,  
Uppilpalayam post,  
Coimbatore - 641015. Member

37 Chairman,  
Forward Market Commission,  
Everest, 3<sup>rd</sup> Floor, 100, Marine Drive,  
Mumbai - 400 002 Member

**GINNING & PRESSING SECTOR**

- |    |   |        |
|----|---|--------|
| 38 | President/Secretary,<br>All Gujarat Cotton Ginning Association,<br>3, Raja Shopping Centre,<br>Thol Road, Kadi-382715<br>Dist. Mehsana, North Gujarat.  | Member |
| 39 | Chairman / Managing Director,<br>All India Cotton Seed Crushers Association<br>(AICSCA), Khetan Bhavan, 6 <sup>th</sup> floor,<br>198, Jamshed Tata Road,<br>Churchgate,<br>Mumbai-400020.                        | Member |
| 40 | Shri Rakesh Rathi,<br>President,<br>Northern India Cotton Association Ltd.,<br>Nai Basti, Gali No. 6,<br>Bhatinda-151001 (Punjab)<br>Tel. No. 0164-2237945<br>Fax No. 0164-2252688<br>Email: nica_bti@yahoo.co.in | Member |
| 41 | President,<br>Tamil Nadu Cotton Ginning Pressing Traders &<br>Growers Federation, Pollachi-642004,<br>Coimbatore District, Tamil Nadu.  | Member |
| 42 | Shri Gautambhai S. Shah,<br>Vice Chairman of M/s Ahmedabad Cotton<br>Merchants Association,<br>3 <sup>rd</sup> floor, Dahyabhai Chambers,<br>Manek Chowk,<br>Ahmedabad 380001.                                    | Member |
| 43 | Shri Punaya Choudhary,<br>President,<br>Andhra Pradesh State Association,<br>Laxmipuram Main Road,<br>Guntur -522007,<br>Andhra Pradesh<br>Tel. No. 0863-2351116, 2244271,  | Member |
| 44 | Shri Dinkar Atmaram Surse<br>Executive Member,<br>Maharashtra Cotton Brokers Association,<br>Tatyaji Sankul,<br>Raut Wadi,<br>Akola-444005 (Maharashtra)<br>Tel. 0724-2400271, 72, 73<br>Mob. 09422161900         | Member |

**COTTON RESEARCH & DEVELOPMENT**

- 45 Director Member  
Central Institute for Research in cotton  
Technology (CIRCOT),  
Adenwala Road, Matunga,  
Mumbai.
- 46 Director Member  
Ahmedabad Textile Industry's  
Research Association (ATIRA),  
P.O. Ambawadi Vistar,  
Ahmedabad-380015.
- 47 Shri Suresh Kotak , Member  
Chairman, Cotton & Allied Products (COTAAP)  
Research Foundation of East India Cotton  
Association, Mumbai.  
&  
Member, ICAC,  
Private Sector Advisory Panel, ICAC,  
Washington, USA.
- 48 Prof. Dr. T.V. Karivaradaraaju, Member  
Chief Adviser, M/S Southern India Mills'  
Association – Cotton Development & Research  
Association (SIMA-CDRA)  
41, Shanmukha Manram,  
Post Box No 3871, Race Course,  
Coimbatore-641018. Tamil Nadu.

**POWERLOOM SECTOR**

- 49 Chairman, Member  
Powerloom Development & Export Promotion  
Council, GC2, Ground Floor, Gundage,  
Onclave, Kherani Road, Sakinaka,  
Andheri (E) , Mumbai.  
Mumbai-400072.

**HANDLOOM SECTOR**

- 50 Chairman, Member  
Handloom Export Promotion Council (HEPC),  
18 Cathedral Gardern Road,  
P.B.No. 461,  
Chennai - 600034

**OTHER NOMINATED MEMBERS**

- |    |  |        |
|----|--|--------|
| 51 | Dr. Purushothama Bharathi,<br>Pala House, Devaswarm Board,<br>Residents Association IA (DBRA)<br>Nanthancode,<br>Thiruvananthapuram – 695003, Kerla State. | Member |
| 52 | Shri Chithakunta Srinivasa Reddy.<br>H.No. 2-5-89,<br>C.P.Thimma Reddy Street,<br>Allagadda, Distt. Karnool,<br>AndhraPradesh.                             | Member |
| 53 | Shri. Yogesh Chhabara,<br>H.P-2, Maurya Enclave,<br>Pritampura,<br>New Delhi – 110034.   |        |
| 54 | Shri Hemchandra Shankerrao Bochara,<br>“Karnaladiya” Radhakrishna Pole,<br>Palace Road, Baroda-390 001.  | Member |

**MEMBER – SECRETARY**

- |     |  |                    |
|-----|--|--------------------|
| 55. | Shri B.A. Patel,<br>Joint Textile Commissioner (Cotton)<br>Office of the Textile Commissioner,<br>Mumbai – 400 020 | Member – Secretary |
|-----|--|--------------------|

2. The Board will advise the Government generally on matters pertaining to production, consumption and marketing of cotton including matters within the purview of Cotton Control Order, 1986 and also provide a forum for liaison between the Cotton Textile Mill Industry, the cotton growers, the cotton trade and the Government.

3. The Members of the reconstituted Board will serve on the Board upto 24.6.2010.

4. The Non-Official Members will be allowed TA/DA for attending the meetings of the Board in accordance with the instructions of the Ministry of Finance.

5. The attendance in the meetings of the Board is restricted to the Members only.

Ordered that the copy of this Notification be communicated to all concerned. Ordered also that it be published in the Gazette of India.

DR. J. N. SINGH  
Joint Secy.

## MINISTRY OF CULTURE

New Delhi, the 19th June 2008

RESOLUTION

No. 32-1/2006-CDN—Sh. Abhijit Sengupta, Secretary (Culture) has been co-opted as member of the Committee constituted for drafting the National Policy on Culture vide Resolution No. 32-1/2006-CDN dated 27th December, 2007.

All other terms and conditions remain unchanged.

R.C. MISHRA

Joint Secy.